खुतबाते मुहर्रम

लेखक
फकीहे मिल्लत मुफ़्ती
जलालुददीन अहमद अमजदी

मुहर्रम् के लिए 12 बयानात का मजमूआ

ख़ुतबाते मुहर्रम

लेखक

फ़क़ीहे मिल्लत

मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

रहमतुल्लाहि तआला अलैह

संस्थापक— मर्कज़ तर्बियते इफ़ता दारुल उलूम अमजदिया अरशदुल उलूम ओझागंज, ज़िला बस्ती (यू. पी.)

प्रकाशक

कुतुब ख़ाना अमजदिया

425/7, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

नाम किताब	:——	**ख़ुतबाते मुहर्रम**
लेखक	:——	फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह)
पृष्ठ	:——	608
पहला एडीशन	:——	1432 हि0 मुताबिक़ 2011 ई0
मूल्य	:——	**.200=00**
प्रकाशक	:——	**कुतुब ख़ाना अमजदिया, दिल्ली-६**

मिलने का पता

कुतुब ख़ाना अमजदिया

425/7, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
Phone & Fax: 011-23243187, Mob: 9136469264
E-mail: kkamjadia@yahoo.co.uk
Website: www.kutubkhanaamjadia.com

शर्फ़े इन्तिसाब

फ़र्ज़न्दे रसूल जिगर गोश-ए-बतूल सैय्यिदुश शुहदा हज़रते
इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
और उन तमाम मुसलमानों के नाम
जिन्हों ने दीन की हिफ़ाज़त के लिये
ख़ुलूस के साथ अपना ख़ून या पसीना बहाया।

और

बिरादरे गिरामी जनाब **निज़ामुद्दीन अहमद** मरहूम
के नाम जो मेरी दस्तार बन्दी से आठ साल क़ब्ल
मुझे आलिमे दीन बनाने की तमन्ना लेकर
दुनिया से रुख़्सत हो गए।
ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस उनकी क़ब्र को अनवार व तजल्लियात से
मामूर फ़रमाए। आमीन

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

खुत्बाते मुहर्रम मुन्द्रजा ज़ैल किताबों से तैयार की गई है

कुरआने मजीद	शर्ह अक़ाइद नसफी	असदुल ग़ावह	कामिल इब्ने असीर
तफ्सीरे कबीर	दुर्रे मुख़्तार	इसाबा फी तम्यीज़िस सहाबा	बिदाया निहाया
तफ्सीर रूहुल बयान	रद्दुल मुहतार	ख़साइसे कुबरा	तारीख़े तबरी
तफ्सीरे ख़ाज़िन	शर्हे विक़ाया	हुज्जतुल्लाहि अलल आलमीन	वफाउल वफा
तफ्सीर मआलिमुत तंज़ील	उम्दतुर रिआ़या	अश्शर्फुल मोअब्बद	तारीख़ुल खुलफा
तफ्सीराते अहमदिया	मराकि़उल फलाह	बरकाते आले रसूल	सवाइक़े मुहर्रक़ा
तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफान	फतावा आलमगीरी	अश्र-ए-मुबश्शरा	नूरुल अबसार
बुख़ारी शरीफ	फतावा अज़ीज़िया	करामाते सहाबा	नुज़्हतुल मजालिस
मुस्लिम शरीफ	फतावा रज़वियह	सियरुस् सहाबियात	रौज़तुश् शुहदा
तिर्मिज़ी शरीफ	बहारे शरीअ़त	तोहफए अस्ना अशरिया	सवानेहे करबला
अबू दाऊद शरीफ	तंबीहुल मकनतुल हैदरिया	अद्दौलतुल मक्किया	शामे करबला
मिश्कात शरीफ	हक्कुल् ऐब	अन्नाहिया	नक़्शे वफा
मोअत्ता इमाम मुहम्मद	अअ़्जबुल इमदाद	अमीरे मुआ़विया पर एक नज़र	शर्हुस् सुदूर
अनवारुल हदीस	अल-इंतिबाह	गुन्यतुत् तालिबीन	फज़ाइले मदीना
ऐनी शर्हे बुख़ारी	हुज्जते दाहिरा	कश्फुल महजूब	अल-मलफूज़
मिर्क़ात शर्हे मिश्कात	नसीमुर रियाज़	मक्तूबात इमामे रब्बानी	इश्क़ की सरफराज़ी
अश्अ़तुल् लमआ़त	मदारिजुन नुबुव्वत	महबूबे यज़दानी	इस्तिक़ामत
शर्ह फिक़्हे अक्बर	शवाहिदुन नुबुव्वत	मसनवी मौलाना रूम	

फेहरिस्त मज़ामीन

***

निगाहे अव्वलीं

मुहर्रम शरीफ की मजालिस का सिलसिला साल-बसला बढ़ता ही जा रहा है कि अब शहरों के अलावा देहातों में भी इस तरह के प्रोग्राम आम होते जा रहे हैं जिन में बारह रोज़ मुसलसल एक ही स्टेज पर बयान करने के लिय नए मुक़र्रिरीन को सख़्त दुश्वारियां पेश आ रही हैं।

इस लिये अरसे से एक ऐसी किताब की शदीद ज़रूरत महसूस की जा रही थी जो मुस्तनद रिवायात पर मुश्तमिल होने के साथ बारह वअ़ज़ों का मज्मूआ हो ताकि मुक़र्रिरीन ग़ैर मोअ़तबर रिवायात बयान करने से बचें और बारह रोज़ मुसलसल वअ़ज़ कहने पर आसानी के साथ क़ादिर हो सकें।

और साथ ही सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, खुलफाए अरबा, हज़रत अमीर मुआ़विया, हज़रत इमाम हसन और सय्यिदुश-शुहदा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन पर बद-मज़्हबों की तरफ से किये गए एतराज़ात के मुदल्लल जवाबात भी हों ताकि अवाम और बाज़ ख़्वास भी जो इन हज़रात की जानिब से ग़लत फहमी में मुब्तला कर दिये गए हैं वह गुमराह होने से बचें और अपनी आक़िबत को बरबाद होने से बचायें।

इन ज़रूरतों के पेशे नज़र हम ने क़लम उठाया, दर्सो-तदरीस और दीगर ज़रूरी कामों से वक़्त निकाल कर थोड़ा-थोड़ा लिखा यहां तक कि अल्हम्दु लिल्लाह किताब मुकम्मल हो गई और किताबत वग़ैरा की बड़ी बड़ी परेशानियों से गुज़रने के बाद ज़ेवरे तबा से आरास्ता होकर आप के हाथों में पहुंची।

अगरचे मैं इस तरह की किताब लिखने का अहल नहीं था इस लिये कि तक़्रीरी किताब लिखने के लिये मुसन्निफ को अदीब होना चाहिये और मुफ्ती उमूमन अदीब नहीं होते। फत्वा नवीसी में अदबी अल्फाज़ से एहतराज़ करते हैं इस तरह मा-फिज़्ज़मीर को मुख़्तसर और जामेअ़ अल्फाज़ में अदा करने के आदी हो जाते हैं।

लेकिन जो लोग कि इसके अहल हैं जब उन्हों ने इस तरफ़ तवज्जोह नहीं की तो हमें मजबूरन इस के लिये क़लम उठाना पड़ा। और किसी तरह किताब मुकम्मल करके हम ने क़ौम के सामने पेश कर दिया। लिहाज़ा जो लोग अदबी अल्फ़ाज़ या बाज़ारी बातों के शाइक़ हैं उनकी तिश्नगी इस किताब से दूर न होगी। सिर्फ़ ठोस मज़ामीन और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत तलाश करने वालों के लिये बेइन्तिहा मुफ़ीद साबित होगी और हत्तल इम्कान मुशकिल अल्फ़ाज़ लिखने से भी बचने की कोशिश की गई है ताकि औरतें और कम पढ़े लिखे लोग भी ज़्यादा से ज़्यादा इस किताब से फ़ायदा उठा सकें।

किताब के आख़िर में हम ने अपने हालात भी दर्ज कर दिये हैं जो बहुत सी मुफ़ीद मज़्हबी और दीनी मालूमात पर मुशतमिल हैं। उनका भी ज़रूर मुतालआ करें।

नबी के अलावा दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा इल्म वाला ऐसा नहीं हुआ है कि जिसे बोलने या लिखने में कहीं लग़ज़िश न हुई हो तो बहुत मुमकिन है कि इस किताब की तरतीब में कहीं हमारा क़लम भी बहक गया हो। इस लिये अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर इस में कोई ग़लत बात नज़र आए तो लोगों में इस किताब की अहमियत न घटायें बल्कि बज़रिये तहरीर हम को मुत्तला करें ताकि नए एडीशन में उसकी तस्हीह कर दी जाए।

अज़ीज़े गिरामी हज़रत मौलाना ग़ुलाम अब्दुल क़ादिर साहब अलवी साहिबज़ादा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने इस किताब का अक्सर हिस्सा पढ़ा और मुफ़ीद मशवरा दिया।

और जनाब मौलाना क़ाज़ी अताउल हक़ साहब उस्मानी गोंडवी की याद देहानी से किताब में बाज़ अहम मज़ामीन का इज़ाफ़ा हुआ।

और मौलवी मुहम्मद शमीम बढ़यावी फ़ाज़िल फ़ैज़ुर रसूल ने बाज़ किताबें फ़राहम कीं जो इस मज्मूए़ की तस्नीफ़ में बहुत मुआ़विन साबित हुईं।

लेकिन जो लोग कि इसके अहल हैं जब उन्हों ने इस तरफ तवज्जोह नहीं की तो हमें मजबूरन इस के लिये क़लम उठाना पड़ा। और किसी तरह किताब मुकम्मल करके हम ने क़ौम के सामने पेश कर दिया। लिहाज़ा जो लोग अदबी अल्फ़ाज़ या बाज़ारी बातों के शाइक़ हैं उनकी तिश्नगी इस किताब से दूर न होगी। सिर्फ ठोस मज़ामीन और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत तलाश करने वालों के लिये बेइन्तिहा मुफीद साबित होगी और हत्तल इम्कान मुशकिल अल्फ़ाज़ लिखने से भी बचने की कोशिश की गई है ताकि औरतें और कम पढ़े लिखे लोग भी ज़्यादा से ज़्यादा इस किताब से फायदा उठा सकें।

किताब के आख़िर में हम ने अपने हालात भी दर्ज कर दिये हैं जो बहुत सी मुफीद मज़्हबी और दीनी मालूमात पर मुशतमिल हैं। उनका भी ज़रूर मुतालआ करें।

नबी के अलावा दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा इल्म वाला ऐसा नहीं हुआ है कि जिसे बोलने या लिखने में कहीं लग़ज़िश न हुई हो तो बहुत मुमकिन है कि इस किताब की तरतीब में कहीं हमारा क़लम भी बहक गया हो। इस लिये अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर इस में कोई ग़लत बात नज़र आए तो लोगों में इस किताब की अहमियत न घटायें बल्कि बज़रिये तहरीर हम को मुत्तला करें ताकि नए एडीशन में उसकी तस्हीह कर दी जाए।

अज़ीज़े गिरामी हज़रत मौलाना गुलाम अब्दुल क़ादिर साहब अलवी साहिबज़ादा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इस किताब का अक्सर हिस्सा पढ़ा और मुफीद मशवरा दिया।

और जनाब मौलाना क़ाज़ी अताउल हक़ साहब उस्मानी गौंडवी की याद देहानी से किताब में बाज़ अहम मज़ामीन का इज़ाफा हुआ।

और मौलवी मुहम्मद शमीम बढ़यावी फाज़िल फ़ैज़ुर रसूल ने बाज़ किताबें फराहम कीं जो इस मज्मूऐ की तस्नीफ में बहुत मुआविन साबित हुईं।

खुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल इन सब के इल्म व अ़मल में रोज़ अफ़्ज़ूं तरक़्क़ी अता फरमाए और ख़ुलूस के साथ दीने मतीन की बेश अज़ बेश ख़िदमत की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ बख़्शे।

और दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस किताब से अहले सुन्नत व जमाअ़त को तक़वियत बख़्शे। आख़िरी दम तक ख़ुलूस के साथ दीन की ख़िदमतें लेता रहे, हमारी औलाद को भी इस्लाम व सुन्नियत की नशर व इशाअ़त का सही जज़्बा अता फरमाए, ईमान पर हमारा ख़ातिमा हो, क़ियामत की हवलनाकियों से महफ़ूज़ रखे और हुज़ूर पुर नूर शाफेए यौमुन नुशूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की शफाअ़त नसीब फरमाए। आमीन

بحرمة النبی الکریم الامین وعلیٰ اله افضل الصلوات واکمل التسلیم۔

बिहुर्मतिन् नबिय्यिल् करीमिल् अमीन व अ़ला आलिही
अफ्ज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्-तस्लीम।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी
25 जमादिउल उख़रा 1408 हि०
14 फरवरी 1988 ई०

मर्तबए शहादत

الحمدلله الذی اکرام الشهداء بالحیاۃ، بقوله وَلَاتَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ۔ والصلوۃ والسلام علی صاحب الشفاعات وعلی اله واصحابه الذین فازوا بالشهادات۔ امابعد فاعوذ باللّٰه من الشیطن الرجیم۔بسم اللّٰه الرحمن الرحیم ۔ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ (پ:٤،ع٨)

صدق اللّٰه العلی العظیم وصدق رسوله النبی الکریم ونحن علی ذٰلك لمن الشاهدین والشاکرین والحمدللّٰه رب العٰلمین۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दरबार दुरर बार में बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلی اللّٰه علی النبی الامی واله صلی اللّٰه تعالی علیه وسلم صلاۃً وسلاماً علیك یارسول اللّٰه۔

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि व सल्लम सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

शहादत आख़िरी मंज़िल है इंसानी सआ़दत की
वो ख़ुश किस्मत हैं मिल जाए जिन्हें दौलत शहादत की

शहादत पा के हस्ती ज़िंदए जावेद होती है
ये रंगीं शाम सुब्हे ईद की तम्हीद होती है

दुनिया के लिहाज़ से इंसान के मुख़्तलिफ दर्जे हैं, कोई चौकीदार है तो कोई कानेस्टबल, कोई सब-इंक्सपेक्टर है तो कोई एस0 पी0 यहां तक कि कोई वज़ीरे आज़म है तो कोई सदर जमहूरिया। और बाज़ इंतिहाई ज़िल्लत व पस्ती में हैं जैसे कोढ़ी वग़ैरा कि इन के घर वाले भी इन से नफरत और घिन करते हैं।

इसी तरह इस्लामी एतबार से भी इंसान की दो क़िस्में हैं, एक मुस्लिम दूसरे काफिर। काफिरों में भी मुख़्तलिफ दर्जे हैं, उन में मुर्तद सब से बदतर काफिर है कि उसे जीने का भी हक़ नहीं है। और मुसलमानों में सब से ऊंचा दर्जा सैय्यिदुर रुसुल नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का है। फिर रुसुले इज़ाम का फिर दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस सलातु वस्सलाम का, फिर सिद्दीक़ीन फिर शुहदा और फिर सालिहीन यानी औलियाए किराम का रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम।

फिर औलियाए किराम में भी ग़ौस, कुतुब और अब्दाल व औताद वग़ैरा मुख़्तलिफ दर्जात हैं और फिर उलमाए इस्लाम हैं वह भी मुख़्तलिफ दर्जे वाले हैं, फिर मोमिन मुत्तक़ी हैं, फिर फासिक़ और मुसलमानों में सब से कम दर्जा गुमराह व बद मज़्हब का है जिस की बद मज़्हबी हद्दे कुफ्र को नहीं पहुंची है।

नबी उस मोहतरम हस्ती को कहते हैं जिस पर अल्लाह तआ़ला की जानिब से वही नाज़िल की गई हो, इबादत व रियाज़त से कोई नबी नहीं हो सकता बल्कि अल्लाह तआ़ला अपने फज़्ल से जिसे चाहता है नुबुव्वत से सरफराज़ फरमाता है। मगर हमारे नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के बाद अब कोई नबी नहीं हो सकता कि वह ख़ातिमुल अंबिया हैं और सिद्दीक़ या वली बनना भी बड़ा मुश्किल काम है, और शहीद बनना आसान भी है और मुश्किल भी।

मुश्किल तो इस लिहाज़ से है कि इंसान को अपनी जान बहुत ज़्यादा प्यारी होती है और आसान इस एतबार से है कि थोड़ी ही देर में दर्जए शहादत हासिल हो जाता है यानी शहीद एक ही जस्त में ज़मीन की पस्ती से आसमान की बुलंदी पर पहुंच जाता है।

अब्दुल क़ैय्यूम का वाक़िआ़

1934 का वाक़िआ़ अब्दुल क़ैय्यूम का मशहूर है जो विक्टोरिया गाड़ी चलाता था, जो कोचवानी करके अपनी और अपने घर वालों की

रोज़ी हासिल करता था, उस की रात झोंपड़े में बसर होती थी और दिन विक्टोरिया चलाने में। घोड़े की लगाम पकड़े पकड़े उसकी हथेलियों का चमड़ा मोटा और खुरदुरा हो गया था। पूरे शहर कराची में जहां वह रहता था कोई उस का हमदर्द व ग़मगुसार नहीं था अगर कोई उस का दोस्त और शनासा था तो उसका प्यारा घोड़ा मोती था।

अब्दुल क़ैय्यूम को मालूम हुआ कि एक शख़्स ने अपनी किताब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की है जिस पर मुक़द्दमा चल रहा है और आज उस की तारीख़ है, वह फौरन विक्टोरिया लेकर कचहरी की तरफ चल पड़ा, एक किनारे अपनी गाड़ी खड़ी की और फातिहाना शान की तरह चल कर जज के कमरे में पहुंच गया जो आदमियों से खछा खछ भरा हुआ था। दो अंग्रेज़ अभी क़ानूनी दफ़आत का चेहरा देखने में लगे हुए थे कि उस ने इस तरह चाकू मारा जो उस की गर्दन में उतरता चला गया लाश तड़प कर ठंडी हो गई और अब्दुल क़ैय्यूम ने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया।

अब्दुल क़ैय्यूम जो अपने ही शहर में अजनबी था और कोई उसे जानता पहचानता न था थोड़ी ही देर में सिर्फ कराची नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान उसे जान गया और सारे मुसलमानों की मुहब्बतों का मर्कज़ बन गया, उस ज़मानत पर छुड़ाया गया और मुक़द्दमा शुरू हुआ, वक़्त के माहिर क़ानून दानों, बड़े बड़े वकीलों और बैनल अक़्वामी शोहरत रखने वाले बैरिस्टरों ने अब्दुल क़ैय्यूम के मुक़द्दमे की पैरवी करनी चाही और उस से कहा बस अपना बयान ज़रा बदल दो हम तुम्हें बचा लेंगे। कहने वालों ने बहुत कहा, मिन्नत समाजत करने वालों ने बहुत मिन्नत समाजत की मगर अब्दुल क़ैय्यूम के पास हर शख़्स के लिये सिर्फ एक ही जवाब था कि मैं ने जान बूझ का मर्तबए शहादत ख़रीदा है, आप इस नेअ्मत से मुझ को महरूम करने की कोशिश न करें मैं इक़्बाले बयान बदल कर अपनी आक़िबत नहीं ख़राब करूंगा।

रोज़ी हासिल करता था, उस की रात झोंपड़े में बसर होती थी और दिन विक्टोरिया चलाने में। घोड़े की लगाम पकड़े पकड़े उसकी हथेलियों का चमड़ा मोटा और खुरदुरा हो गया था। पूरे शहर कराची में जहां वह रहता था कोई उस का हमदर्द व ग़मगुसार नहीं था अगर कोई उस का दोस्त और शनासा था तो उसका प्यारा घोड़ा मोती था।

अब्दुल क़ैय्यूम को मालूम हुआ कि एक शख़्स ने अपनी किताब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी की है जिस पर मुक़द्दमा चल रहा है और आज उस की तारीख़ है, वह फौरन विक्टोरिया लेकर कचहरी की तरफ चल पड़ा, एक किनारे अपनी गाड़ी खड़ी की और फातिहाना शान की तरह चल कर जज के कमरे में पहुंच गया जो आदमियों से खछा खछ भरा हुआ था। दो अंग्रेज़ अभी क़ानूनी दफ़आत का चेहरा देखने में लगे हुए थे कि उस ने इस तरह चाकू मारा जो उस की गर्दन में उतरता चला गया लाश तड़प कर ठंडी हो गई और अब्दुल क़ैय्यूम ने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया।

अब्दुल क़ैय्यूम जो अपने ही शहर में अजनबी था और कोई उसे जानता पहचानता न था थोड़ी ही देर में सिर्फ कराची नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान उसे जान गया और सारे मुसलमानों की मुहब्बतों का मर्कज़ बन गया, उस ज़मानत पर छुड़ाया गया और मुक़द्दमा शुरू हुआ, वक़्त के माहिर क़ानून दानों, बड़े बड़े वकीलों और बैनल अक़्वामी शोहरत रखने वाले बैरिस्टरों ने अब्दुल क़ैय्यूम के मुक़द्दमे की पैरवी करनी चाही और उस से कहा बस अपना बयान ज़रा बदल दो हम तुम्हें बचा लेंगे। कहने वालों ने बहुत कहा, मिन्नत समाजत करने वालों ने बहुत मिन्नत समाजत की मगर अब्दुल क़ैय्यूम के पास हर शख़्स के लिये सिर्फ एक ही जवाब था कि मैं ने जान बूझ का मर्तबए शहादत ख़रीदा है, आप इस नेअ़्मत से मुझ को महरूम करने की कोशिश न करें मैं इक़्बाले बयान बदल कर अपनी आक़िबत नहीं ख़राब करूंगा।

अब्दुल क़ैय्यूम की रिहाई के लिये मस्जिदों में दुआएं की गईं, औरतों ने मिन्नतें मानीं और बूढ़ों के लरज़ते हाथ, नौजवानों के दिल और बच्चों की उदासियों ने मालिके हक़ीक़ी से उस की ज़िंदगी की भीक मांगी मगर अब्दुल क़ैय्यूम ही की तमन्ना पूरी हुई। क़ानून के मुहाफिज़ों ने उस की मौत का हुक्म सुना दिया, वह मौत कि ज़िस पर हर दिल ग़मज़दा और हर घर मातम कदा बना हुआ था जैसे कि यह उसी के घर का अलमिय्या हो।

फिर जब अब्दुल क़ैय्यूम का जनाज़ा उठा तो उस में 25 लाख से ज़्यादा आदमी शरीक हुए, छतों और बाला ख़ानों से औरतें आंचलों से आंसू पोछती जाती थीं और फूल निछावर करती जाती थीं। कराची की तारीख़ गवाह है इस से पहले किसी भी शख़्स के जनाज़े में इतने इंसान नहीं शरीक हुए। फिर यह तो इंसानों की तादाद थी जो 25 लाख से ज़ाइद थी और फिरिश्ते कितने करोड़ थे फिर महबूबे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने किस प्यार व मुहब्बत से अब्दुल क़ैय्यूम को खुश आमदेद कहा होगा? उसे कौन जान सकता है?

रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह।

देखा आप ने वह अब्दुल क़ैय्यूम कि जो विक्टोरिया चलाता था, कोचवान था, पूरे शहर में उसे कोई जानता पहचानता नहीं था, लोगों के लिये अजनबी था, समाज और मुआ़शरे के पस्त तबक़े का एक ना क़ाबिले तवज्जोह आदमी था मगर एकी ही जस्त में रिफ़अ़तों की सारी मंज़िलों को तैय कर लिया और थोड़ी ही देर में उस मक़ामे रफ़ीअ़ को पा लिया कि जहां बरसहा बरस के मुजाहिदों और ज़िंदगी भर की रियाज़तों के बाद भी हर इंसान नहीं पहुंच पाता।

ये रुत्बए बुलंद मिला जिस को मिल गया
हर शख़्स के नसीब में दारो-रसन कहां

और जब अब्दुल क़ैय्यूम जैसा एक मामूली इंसान राहे हक़ में शहीद होकर लोगों के दिलों की धड़कन बन गया तो सैय्यिदश शुहदा

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो महबूबे ख़ुदा सैय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नवासे हैं, अली मुर्तज़ा के लख़्ते जिगर हैं और फ़ातिमा ज़हरा के नूरे नज़र हैं और जो तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब यहां तक कि जवान बेटे अली अक्बर और शीर-ख़्वार साहिब ज़ादे की दर्दनाक शहादत के बावजूद हिम्मत नहीं हारे और राहे हक़ में क़ुर्बान हो गए वह शहीद हो कर हमेशा के लिये मुसलमानों की दिलों की धड़कन बन गए और उनकी मुहब्बतों के मर्कज़ बन गए।

यही वजह है कि हर साल जब उन की तारीख़े शहादत क़रीब आती है और मुहर्रम का चांद नमूदार होता है तो पूरा माहौल सोगवार हो जाता है, उन की याद लोगों के दिलों को तड़पा देती है, जगह जगह उन के ज़िक्र की मज्लिसें क़ाइम होती हैं, खाने खिलाए जाते हैं, खिचड़े पकाए जाते हैं, सबीलें क़ाइम की जाती हैं और तरह तरह से उन की बारगाह में नज़्र व नियाज़ पेश की जाती हैं और इंशा अल्लाह यह सिलसिला क़ियामत तक ऐसे ही जारी रहेगा, यज़ीदियों की हज़ार मुख़ालिफ़तों के बा वजूद कभी नहीं मिटेगा।

रहेगा यूं ही उन का चर्चा रहेगा
पड़े ख़ाक हो जाएं जल जाने वाले

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیك یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

शहीद की क़िस्में

शहीद की तीन क़िस्में हैं:

1- शहीदे हक़ीक़ी, 2- शहीदे फ़िक़्ही और 3- शहीदे हुक्मी।

जो अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाए वह शहीदे हक़ीक़ी है। और शहीदे फ़िक़्ही उसे कहते हैं कि आक़िल बालिग़ मुसलमान जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हो वह तलवार व बंदूक़ वग़ैरा आलए जारिहा से

ज़ुल्मन क़त्ल किया जाए और क़त्ल के सबब माल न वाजिब हुआ हो और न ज़ख़्मी होने के बाद कोई फायदा दुनिया से हासिल किया हो और न ज़िन्दों के अहकाम में से कोई हुकम उस पर साबित हुआ हो।

यानी अगर पागल, ना बालिग़ या हैज़ व निफास वाली औरतें और जुनुब शहीद किये जाएं तो वह शहीदे फिक़्ही नहीं। और अगर क़त्ल से माल वाजिब हुआ हो जैसे कि लाठी से मारा गया या क़त्ले ख़ता कि मार रहा था शिकार को और लग गया किसी मुसलमान को, या ज़ख़्मी होने के बाद खाया पिया, इलाज किया, नमाज़ का पूरा वक़्त होश में गुज़रा और वह नमाज़ पर क़ादिर था या किसी बात की वसिय्यत की तो वह शहीदे फिक़्ही नहीं।

मगर शहीदे फिक़्ही न होने का यह मअ्ना नहीं कि वह शहीद होने का सवाब भी नहीं पाएगा बल्कि इस का मतलब सिर्फ इतना है कि उसे गुस्ल दिया जाएगा और शहीदे फिक़्ही नमाज़े जनाज़ा तो पढ़ी जाएगी मगर उसे गुस्ल नहीं दिया जाएगा वैसे ही ख़ून के साथ दफन कर दिया जाएगा। और जो चीज़ें कि अज़ क़िस्म कफन नहीं होंगी उन्हें उतार लिया जाएगा जैसे ज़िरह, टोपी और हथियार वग़ैरा। और कफन मस्नून में अगर कमी होगी तो उसे पूरा किया जाएगा। पाजामा नहीं उतारा जाएगा और सारे कपड़े उतार कर नए कपड़े नहीं दिये जाएंगे कि मक्रूह है।

और शहीदे हुक्मी वह है कि जो ज़ुल्मन नहीं क़त्ल किया गया मगर क़ियामत के दिन वह शहीदों के गिरोह में उठाया जाएगा। हदीस शरीफ में है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए तआ़ला की राह में शहीद किये जाने के अलावा सात शहादतें और हैं, जो ताऊन में मरे शहीद है, जो डूब कर मर जाए शहीद है, जो ज़ातुल जुनब (नमूनिया) में मरे शहीद है, जो पेट की बीमारी में मर जाए शहीद है, जो आग में जल जाए शहीद है, जो इमारत के नीचे दब कर मर जाए वह शहीद है और जो औरत बच्चे

की पैदाइश के वक़्त मर जाए वह भी शहीद है। (मिश्कात शरीफ़:136)

इन के अलावा और भी बहुत सी सूरतें हैं जिन में शहादत का सवाब मिलता है। उन में से चन्द यह हैं: हालते सफर में मरा, सिल की बीमारी में मरा, सवारी से गिर कर मरा या मिरगी से मरा, बुख़ार में मरा, जान व माल या अहल व अ़याल या किसी हक़ के बचाने में क़त्ल किया गया, इश्क़ में मरा बशर्ते कि पाक दामन हो और छुपाया हो, किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया, बादशाह ने ज़ुल्मन क़ैद किया या मारा और मर गया, किसी मूज़ी जानवर के काटने से मरा, इल्मे दीन की तलब में मरा, मोअज़्ज़िन जोकि तलबे सवाब के लिये अज़ान कहता हो, रास्त-गो ताजिर जिस समन्दर के सफर में मतली कैय आई और मर गया, जो अपने बाल बच्चों के लिये सई (कोशिश) करे उन में अम्रे इलाही क़ाइम करे और उन्हें हलाल खिलाए, जो हर रोज़ 25 बार यह दुआ़ पढ़े: اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِیْ فِی الْمَوْتِ وَفِیْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ जो चाश्त की नमाज़ पढ़े हर महीने में तीन रोज़े रखे ओर वित्र को सफर व हज़र में कहीं तर्क न करे, फसादे उम्मत के वक़्त सुन्नत पर अमल करने वाला उस के लिये सौ शहीदों का सवाब है। जो मर्ज़ में لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ चालीस मर्तबा कहे और उसी मर्ज़ में इन्तेक़ाल कर जाए और अच्छा हो गया तो उस की मग़फिरत हो जाएगी, कुफ्फार से मुक़ाबला के लिये सरहद पर घोड़ा बांधने वाला, जो शख़्स हर रात सूरए यासीन शरीफ पढ़े, जो बा वज़ू सोया और मर गया, जो नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम पर सौ मर्तबा रोज़ाना दुरूद शरीफ पढ़े, जो सच्चे दिल से यह दुआ़ करे कि अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊं और जो शख़्स जुमा के रोज़ इन्तिक़ाल करे। (रद्दुल मोहतार, बहारे शरीअ़त)

इन तमाम क़िस्मों में सब से अअ़्ला शहीद वह है जो अल्लाह की राह में क़त्ल किया गया और शहादते हक़ीक़िय्या से सरफराज़ हुआ। इस के फज़ाइल में कई आयतें और बेशुमार हदीसें वारिद हैं।

शुहदा के फज़ाइल

खुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल शुहदाए किराम की फज़ीलत बयान करते

हुए कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ٥

जो खुदा की राह में क़त्ल किये जाएं उन्हें मुर्दा मत कहना बल्कि वह ज़िंदा हैं लेकिन तुम्हें ख़बर नहीं। (पाराः2 रुकूअ़ः3)

और इरशाद फरमाता हैः

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ٥

जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गए उन्हें मुर्दा हरगिज़ न ख़्याल करना बल्कि वह अपने रब के पास ज़िंदा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं। (पाराः4 रुकूअ़ः8)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने इस आयते करीमा का मअ़्ना रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से दर्याफ्त किया तो आप ने इरशाद फरमाया कि शहीदों की रूहें सब्ज़ परिन्दों के जिस्म में हैं, उन के रहने के लिये अर्शे इलाही के नीचे क़िन्दीलें लटकाई गई हैं। जन्नत में जहां उन का जी चाहता है वह सैर करते हैं और उसके मेवे खाते हैं। (मुस्लिम, मिश्कातः330)

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम शुहदाए इस्लाम की अज़्मत बयान करते हुए इरशाद फरमाते हैं कि शहीद के लिये खुदाए तआ़ला के नज़्दीक छः ख़ूबियां हैंः (1) ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही उसे बख़्श दिया जाता है और रूह निकलने ही के वक़्त उस को जन्नत में उस का ठिकाना दिखा दिया जाता है। (2) क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रहता है। (3) उसे जहन्नम के अज़ाब का ख़ौफ नहीं रहता। (4) उस के सर पर इज़्ज़त व वक़ार का ताज रखा जाएगा कि जिस का बेश बहा याकूत दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर होगा। (5) उस के निकाह में बड़ी-बड़ी आंखों वाली 72 हूरें दी जाएंगी। (6) और उसके अज़ीज़ों में से 70 आदमियों के लिये उस की शफाअ़त क़बूल की जाएगी। (तिर्मिज़ी, मिश्कातः333)

और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि जो लोग लड़ाई में क़त्ल किये जाते हैं उन की

तीन क़िस्में हैं: एक वह मोमिन जो अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में लड़े और दुश्मन से ख़ूब मुक़ाबला करे यहां तक कि क़त्ल कर दिया जाए। यह वह शहीद है जो सब्र और मशक़्क़त के इम्तिहान में कामियाब हुआ। यह शहीद ख़ुदाए तआला के अर्श के नीचे ख़ुदा के ख़ेमे (यानी अल्लाह तआला के हुज़ूर और उस के क़ुर्ब में) होगा। (अश्अतुल् लमआत:3/260) لَا يَفْضُلُهُ النَّبِيُّوْنَ اِلَّا بِدَرَجَةِ النُّبُوَّةِ अंबियाए किराम इस से सिर्फ दर्जए नुबुव्वत में ज़्यादा होंगे यानी मर्तबए नुबुव्वत और उस से जो कमालात मुतअल्लिक़ हैं उन के अलावा हर मर्तबा और हर कमाल उस शहीद को हासिल होगा।

और दूसरा वह मोमिन जिस के आमाल दोनों तरह के हों यानी कुछ अच्छे और कुछ बुरे, वह अपनी जान व माल से ख़ुदा की राह में जिहाद करे, जिस वक़्त दुश्मन से सामना हो उस से लड़े यहां तक कि क़त्ल कर दिया जाए। यह ऐसी शहादत है जो गुनाहों और बुराइयों को मिटाने वाली है। फिर फरमाया: اِنَّ السَّيْفَ مَحَّاءٌ لِلْخَطَايَا وَاُدْخِلَ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ यानी बेशक तलवार गुनाहों को बहुत ज़्यादा मिटाने वाली है और यह शहीद जिस दरवाज़े से चाहेगा जन्नत में चला जाएगा।

और तीसरा वह मुनाफ़िक़ है जिस ने अपनी जान और अपने माल से जिहाद किया और जब दुश्मन से मुक़ाबिला हुआ तो ख़ूब लड़ा यहां तक कि मारा गया। यह शख़्स दोज़ख़ में जाएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: इस लिये कि اِنَّ السَّيْفَ لَا يَمْحُو النِّفَاقَ निफाक़ यानी छिपे हुए कुफ्र को तलवार नहीं मिटाती है। (दारमी, मिश्कात:336)

इस हदीस शरीफ से जहां यह मालूम हुआ कि अल्लाह की रहा में शहीद होने वाला मर्तबए नुबुव्वत और उस के मुतअल्लिक़ा कमालात के अलावा सारे दरजात से सरफराज़ किया जाता है और उस के तमाम गुनाह माफ कर दिये जाते हैं साथ ही यह भी वाज़ेह हुआ कि अगर दिल में कुफ्र छिपाए हो और सिर्फ ज़ाहिर में मुसलमान हो तो चाहे ज़िंदगी भर जिहाद करे यहां तक कि अपनी अज़ीज़ तरीन जान भी क़ुर्बान कर दे मगर वह जंहन्नम ही में जाएगा।

इसी तरह जो लोग महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के बुग़ज़ व अ़दावत का कुफ़्र अपने दिलों में छिपाए हुए हैं और उन की अज़मत के दुश्मन हैं अगर वह दिन रात इबादत करें और ज़िंदगी भर सारी दुनिया में इस्लाम की नशर व इशाअ़त करें और तब्लीग़ करते फिरें यहां तक कि उसी हाल में मर जाएं तो उन का ठिकाना जहन्नम ही होगा। इसी लिये इस तरह की किसी भी नेकी से कुफ़्र नहीं माफ होता।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

शहीद और ऐहसासे ज़ख़्म

मैदाने जंग में शहीद हर तरह से ज़ख़्मी होता है कभी हाथ कटता है, कभी पांव घायल होता है, कभी उस के सीने में नेज़ा दाख़िल किया जाता है, ख़ून का फव्वारा जारी होता है, कभी गर्दन कट के अलग हो जाती है और शहीद ख़ून में नहा कर ज़मीन पर गिर जाता है जिस से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि उस को सख़्त तक्लीफ व अज़िय्यत होती है लेकिन हक़ीक़त यह है कि उस को बहुत मामूली सी तक्लीफ होती है और उसे उन ज़ख़्मों का पूरा ऐहसास नहीं होता। मुख़्बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं:

اَلشَّهِيْدُ لَايَجِدُ اَلَمُ الْقَتْلِ اِلَّا كَمَا يَجِدُ اَحَدُكُمْ اَلَمَ الْقَرْصَةِ۔

शहीद क़त्ल की सिर्फ इतनी ही तक्लीफ महसूस करता है जितनी कि तुम चुटकी भरने या चींवटी के काटने की तक्लीफ महसूस करते हो।

(तिर्मिज़ी, मिश्कात:33)

मुमकिन है कोई कहे कि यह कैसे हो सकता है कि शहीद के हाथ पांव काट दिये गए और उसकी गर्दन भी जुदा कर दी गई मगर उसको सिर्फ इतनी तक्लीफ हुई जितनी चींवटी काटने या चुटकी भरने से होती है।

तो इस शुब्हा का जवाब यह है कि शहीद से वह शहीदे हक़ मुराद है जिस के दिल में अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत इस दर्जा पैदा हो गई हो कि उस का दिल चाहता है कि एक नहीं बल्कि करोड़ों जानें हों तो मैं सब को अपने महबूब पर कुर्बान कर दूं। अअ्ला हज़रत अज़ीमुल बरकत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

करूं तेरे नाम पे जां फिदा न बस एक जां दो जहां फिदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोरों जहां नहीं

जैसे डॉक्टर मरीज़ को दवा सुंघा देता है फिर उस के जिस्म को चीरता और फाड़ता है, हड्डियां तोड़ता है और टांके लगाता है मगर चूंकि दवा का असर उस पर ग़ालिब होता है इस लिये मरीज़ को कोई तक्लीफ नहीं महसूस होती। बिल्कुल इसी तरह वह शहीदे हक़ कि जिस के दिल में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत ग़ालिब हो गई तो उस का जिस्म कटता है, हड्डियां टूटती हैं, ख़ून बहता है और गर्दन जुदा होती है मगर उसे तक्लीफ का ऐहसास नहीं होता।

मिस्र की औरतें

मिस्र के शरीफ घर की औरतों ने जब ज़ुलैख़ा को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की मुहब्बत पर मलामत की और तअ्ना दिया तो ज़ुलैख़ा ने उन औरतों को बुलाया, उन के लिये दस्तर ख़्वान बिछवाया जिस पर तरह तरह के खाने और मेवे चुने गए फिर ज़ुलैख़ा ने हर औरत को फल वग़ैरा काटने के लिये एक-एक छुरी दी और हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया आप इन औरतों के सामने आ जाएं। जब आप तशरीफ लाए और औरतों ने उनके जमाले जहां आरा को देखा तो उन के हुस्न ने औरतों पर इतना असर किया कि बजाए लीमू के उन्हों ने अपने-अपने हाथों को काट लिया और ख़ून बहने लगा मगर उन लोगों को हाथों के कटने का एहसास नहीं हुआ इसी लिये उन्हों ने यह नहीं कहा कि हाए! हम तो अपने हाथ काट लिये बल्कि यह कहा कि यह इंसान नहीं हैं फिरिश्ता हैं। وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَا اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ (सूरए यूसुफ पाराः12, रुकूअ़:14)

और जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के हुस्न का औरतों पर ऐसा असर हुआ कि उन को हाथ कटने की तक्लीफ का ऐहसास नहीं हुआ तो जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम जिन का चेहरए अक़्दस ऐसा रौशन व ताबनाक था कि बक़ौल रावियाने हदीस आप के चेहरे में चांद व सूरज तैरते थे। जिस पर उन के हुस्नो-जमाल का असर होता है और उन की मुहब्बत का ग़लबा होता है उस का सर भी कट जाता है मगर उसे ऐहसास नहीं होता।

हुस्ने यूसुफ पे कटें मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब

☆☆☆

शहादत की लज़्ज़त

दुनिया की बेशुमार नेअ़्मतों से इंसान लुत्फ व लज़्ज़त हासिल करता है, किसी नेअ़्मत को खाता है, किसी को पीता है, किसी को सूंघता है, किसी को देखता है, किसी को सुनता है और इन के अलावा मुख़्तलिफ तरीक़ों से तमाम नेअ़्मतों को इस्तेमाल करता है और उन से महज़ूज़ होता है लेकिन मर्दे मोमिन को शहादत की जो लज़्ज़त हासिल होती है उस के सामने दुनिया की सारी लज़्ज़तें हेच हैं। यहां तक कि शहीद जन्नत की तमाम नेअ़्मतों से फाइदा उठाएगा और उन से लुत्फ अंदोज़ होगा मगर जब उस को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत में सर कटाने का मज़ा याद आएगा तो जन्नत की भी सारी नेअ़्मतों का मज़ा भूल जाएगा और तमन्ना करेगा कि ऐ काश! मैं दुनिया में वापस किया जाऊं और बार-बार शहीद किया जाऊं।

हदीस शरीफ में है सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि जन्नत में दाख़िल होने के बाद फिर कोई जन्नती वहां की राहतों और नेअ़्मतों को छोड़ कर दुनिया में आना पसंद न करेगा कि जो चीज़ें हमें ज़मीन में हासिल थीं वह फिर मिल जाएं।

إِلَّا الشَّهِيْدُ يَتَمَنَّى اَنْ يَّرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ۔

मगर शहीद आरज़ू करेगा कि वह फिर दुनिया की तरफ़ वापस होकर अल्लाह की राह में दस मर्तबा क़त्ल किया जाए। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात:330)

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

बेमिस्ल शहादत

इस्लाम की नशर व इशाअ़त और उस की बक़ा के लिये बेशुमार मुसलमान अब तक शहीद किये गए मगर इन तमाम लोगों में सैय्यिदुश- शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शहादत बेमिस्ल है कि आप जैसी मुसीबतें किसी दूसरे शहीद ने नहीं उठाईं। आप तीन दिन के भूके प्यासे शहीद किये गए, इस हाल में कि आप के तमाम रुफ़क़ा, अज़ीज़ व अक़ारिब व अहल व अ़याल भी सब भूके प्यासे थे और छोटे बच्चे पानी के लिये तड़प रहे थे। यह आप के लिये और ज़्यादा मुसीबत की बात थी इस लिये कि इंसान अपनी भूक व प्यास तो बर्दाश्त कर लेता है लेकिन अहल व अ़याल और ख़ास कर छोटे बच्चों की भूक व प्यास उसे पागल बना देती है।

और जब पानी का वुजूद नहीं होता तो प्यास की तक्लीफ़ कम होती है लेकिन जब कि पानी की बोहतात हो जिसे आम लोग हर तरह से इस्तेमाल कर रहे हों यहां तक कि जानवर भी उस से सैराब हो रहे हों मगर कोई शख़्स जो तीन दिन का भूका प्यासा हो उसे न पीने दिया जाए तो उस के लिये ज़्यादा तक्लीफ़ की बात है।

और मैदाने करबला में यही नक़्शा था कि आदमी और जानवर सभी लोग दरियाए फ़ुरात से सैराब हो रहे थे, मगर इमामे आली मक़ाम और उनके तमाम रुफ़क़ा पर पानी बन्द कर दिया गया था यहां तक कि आप अपने बीमारों और छोटे बच्चों को भी एक क़तरा नहीं पिला सकते थे।

उस की कुद्रत जानवर तक आब से सैराब हों
प्यास की शिद्दत में तड़पे बे ज़बाने अहले बैत

और फिर ग़ैर ऐसा करे तो तक्लीफ का ऐहसास कम होगा और यहां हाल यह है कि खाना पानी रोकने वाले अपने को मुसलमान ही कहलाते हैं, कलमा पढ़ते हैं, नमाज़ें अदा करते हैं और उनके नाना जान का इस्मे गरामी अज़ानों में बुलन्द करते हैं मगर नवासे पर ज़ुल्म व सितम का पहाड़ तोड़ते हैं।

अगर्चे हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर भी पानी बन्द कर दिया गया था मगर वह अपने घर और अपने वतन में थे और इमामे आली मक़ाम अपने घर से दूर और बे वतन हैं, इस के साथ तेज़ धूप, तपती हुई ज़मीन और गर्म हवाओं के थपेड़ें भी हैं।

और आप को यह अंदेशा भी दामनगीर था कि मेरी शहादत के बाद मेरा तमाम साज़ व सामान लूट लिया जाएगा, ख़ेमा जला दिया जाएगा, मस्तूरात बेसहारा हो जायेंगीं और उन्हें क़ैद कर लिया जाएगा।

इन हालात में अगर रुस्तम भी होता तो उस के हौसले पस्त हो जाते और वह अपनी गर्दन झुका देता लेकिन सैय्यिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन मसाइब व आलाम के हुजूम में भी बातिल के मुक़ाबिले के लिये सब्र व रज़ा का पहाड़ बन कर क़ाइम रहे और आप के पाए इस्तिक़्लाल में लग़ज़िश नहीं पैदा हुई यहां तक कि 73 ज़ख़्म खा कर शहीद हो गए और आप की लाशे मुबारक घोड़ों की टापों से रौन्दी भी गई।

आप की यह शहादत बे मिस्ल है जिस ने यज़ीदिय्यत को मुर्दा कर दिया, उसे दुनिया में नहीं फैलने दिया और दीने इस्लाम को मस्ख़ होने से बचा लिया। इसी लिय सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन दीं पनाह अस्त हुसैन

सर दाद, नदाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन

शहीदों की ज़िंदगी

शहीद जो अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाते हैं वह ज़िंदा हैं, पारए दोम, रुकूअ् 3 की आयते करीमा وَلَا تَقُوْلُوْا الخ में खुदावन्दे कुद्दूस ने शहीदों को मुर्दा कहने से रोक दिया और फरमाया कि वह ज़िंदा हैं लेकिन तुम शऊर नहीं रखते हो और नहीं समझते हो कि वह कैसे ज़िंदा हैं।

मगर इंसान जबकि देखता है कि शहीद के हाथ पांव कट गए, उस की गर्दन जुदा हो गई, वह बेहिस व हरकत हो गया और सांस की आमद व रफ्त भी बन्द हो गई फिर उस को ज़मीन के नीचे दफन कर दिया गया, वारिसों ने उस के माल को आपस में तक़्सीम कर लिया और बीवी ने इद्दत गुज़ार कर दूसरा निकाह भी कर लिया तो हो सकता था कि ज़ाहिरी हाल देख कर वह गुमान करता शहीद मुर्दा हैं अल्बत्ता जब अल्लाह तआ़ला ने मना फरमा दिया है तो उसे मुर्दा नहीं कहा जाएगा। तो खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने पारए चहारुम, रुकूअ् 8 की आयते मुबारका وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا में शहीदों को मुर्दा गुमान करने से भी रोक दिया और ताकीद के साथ फरमाया कि ऐसे लोगों को मुर्दा हरगिज़ गुमान मत करना बल्कि वह ज़िंदा हैं और बारगाहे इलाही से रोज़ी दिये जाते हैं।

कुरआने करीम की इन आयाते मुबारका से वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि शुहदाए किराम ज़िंदा हैं, उन को मुर्दा कहना कुरआने मजीद की मुख़ालफत करना है बल्कि उन्हें मुर्दा गुमान करने से भी सख़्ती से रोका गया गया, यानी मुर्दा कहना तो बड़ी बात है उनको मुर्दा ख़्याल भी नहीं कर सकते इस लिये कि वह अल्लाह की राह में क़त्ल हो कर ज़िंदए जावेद हो जाते है, रिज़्क़ आख़िरत से खाते पीते हैं और जहां खुदाए तआ़ला चाहता है जन्नत वग़ैरा की सैर करते हैं।

आवाज़ आ रही है शहीदों की ख़ाक से
मर कर मिली है ज़िंदगिए जाविदां मुझे

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم صلاۃً وسلاماً علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

तीन मुजाहिद

शहीदों की ज़िंदगी के लिये बेशुमार वाक़िआ़त मोअ्तबर किताबों में दर्ज हैं। उन में एक वाक़िआ़ हम आप लोगों के सामने पेश करते हैं जिस को अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने शर्हुस् सुदूर में और अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी ने अपने रिसालए मुबारका "*अल्-इंतिबाह फी हल्लि निदाए या रसूलल्लाह*" में तहरीर फरमाया है।

तीन भाई मुल्के शाम में रहते थे जो बड़े जरी और बहादुर थे, हमेशा अल्लाह की राह में जिहाद किया करते थे, रूमियों ने एक मर्तबा उनको गिरफ्तार कर लिया और अपन ईसाई बादशाह के सामने पेश किया, उसने कहा कि तुम लोग मज़हबे इस्लाम छोड़ दो और ईसाई बन जाओ, उन तीनों ने बयक ज़बान कहा कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता। बादशाह ने कहा اِنِّیۡ اَجۡعَلُ فِیۡکُمُ الۡمُلۡکَ وَاُزَوِّجُکُمۡ بَنَاتِیۡ यानी मैं तुम लोगों को सलतनत दूंगा और अपनी लड़कियों से शादी भी कर दूंगा, तुम लोग ईसाई हो जाओ, मगर मुजाहिदीन इस पर भी ईसाई बनने के लिये तैयार न हुए। बादशाह ने कहा अगर हमारी बात नहीं मानोंगे तो क़त्ल कर दिये जाओगे, मुजाहिदीन ने कहाः

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते
यह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवा नहीं करते

बादशाह ने हुक्म दिया कि तीन देग़ों में ज़ैतून का तेल खौलाया जाए, जब तैल खौल गया तो मुजाहिदीन को उन देग़ों के पास लाया गया और कहा गया कि अगर ईसाई नहीं बनोंगे तो इसी खौलते हुए

तेल में डाल दिये जाओगे, अब भी मौक़ा है ख़ूब सोच लो, उन बहादुरों ने कहा कि हमारी आख़िरी सांस का जवाब यही होगा कि हम जान तो दे सकते हैं मगर मुस्तफा का दिया हुआ ईमान नहीं दे सकते।

उन्हों ने या मुहम्मदाह! पुकारा, फिर ईसाइयों ने बड़े भाई को तेल के खौलते हुए देग में डाल दिया, उस के बाद फिर बाक़ी दोनों भाईयों को समझाने की कोशिश की गई मगर आंखों से अपने भाई का यह अंजाम देखने के बावजूद उन के अन्दर कुछ फर्क़ पैदा नहीं हुआ, वह अब भी ख़ुशी के साथ अल्लाह की राह में शहीद होने के लिये तैयार रहे, आख़िर मंझले भाई को भी खौलते हुए तेल में डाल दिया गया।

छोटे भाई की उभरती जवानी देख कर वज़ीर ने बादशाह से कहा कि इसे हमारे सुपुर्द कर दीजिये, हम एक तरकीब से निहायत आसानी के साथ इस को ईसाई बना लेंगे, बादशाह ने उनको वज़ीर के सुपुर्द कर दिया, वज़ीर ने उन्हें एक मकान में बन्द कर दिया और अपनी हसीन लड़की को उन्हें बहकाने के लिये मुक़र्रर किया, रात के वक़्त लड़की दाख़िल हुई, वह मर्दे मुजाहिद रात भर नफ्ल नमाज़ें पढ़ता रहा और हसीना की तरफ नज़र उठा कर भी न देखा और कैसे देखता, जिन निगाहों में हुस्ने मुस्तफा बस चुका हो वह निगाहें भला किसी और की तरफ कैसे उठ सकती हैं।

दर पर आंख न डाले कभी शैदा तेरा
सब से बेगाना है ऐ प्यारे शनासा तेरा

लड़की के लिये यह मन्ज़र बड़ा ही अजीब था कि जिस की एक झलक देखने के लिये दुनिाय बेताब है, यह जवान उस को एक नज़र भी देखने के लिये तैयार नहीं। सुब्ह के वक़्त वह नाकामी के साथ वापस आई और अपने बाप को बताया कि आज उस की इबादत की कोई रात थी, मगर इसी तरह चालीस रातें गुज़र गईं और वह मर्दे मुजाहिद उस की तरफ मुतवज्जह नहीं हुआ, आख़िर में ख़ुद वह लड़की मुतअस्सिर हो गई और कहा कि ऐ पाकबाज़ नौजवान तू किस का शैदाई और फिदाई है कि मेरी तरफ निगाह उठा कर भी नहीं देखता।

फरमायाः

मैं मुस्तफा के जामे मुहब्बत का मस्त हूं
ये वो नशा नहीं जिसे तुरशी उतार दे

लड़की सिदक़ दिल से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ कर मुसलमान हो गई और अस्तबल से दो घोड़े लाई, रात ही में दोनों वहां से फरार हो गए और अभी ज़्यादा दूर नहीं पहुंचे थे कि पीछे से घोड़ों के आने की आहट मालूम हुई और जल्द ही वह क़रीब आ गए, देखा तो नौजवान के वही दोनों भाई हैं जो खौलते हुए तेल में डाले गए थे, साथ में फिरिश्तों का एक गिरोह भी था, नौजवान मुजाहिद ने हाल पूछा तो उन लोगों ने बताया कि مَا كَانَتْ اِلَّا الْغَطْسَةُ الَّتِىْ رَاَيْتَ حَتّٰى خَرَجْنَا فِى الْفِرْدَوْسِ यानी बस वही तेल का एक ग़ोता था जो तुम ने देखा उस के बाद हम जन्नतुल फिरदौस में पहुंच गए, फिर दोनों भाइयों ने फिरिश्तों की मौजूदगी में उस लड़की का निकाह अपने भाई से कर दिया और वापस चले गए।

ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं हक़ के नाम पर
अल्लाह, अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया

इस वाक़िआ से जहां यह साबित हुआ कि अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने वाले शहीद मरते नहीं हैं बल्कि ज़िंदा हो जाते हैं साथ ही यह भी मालूम हुआ कि मदद के लिये या रसूलल्लाह पुकारना जाइज़ है कि मुजाहिदीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पुकारा था अगर दूर से पुकारना शिर्क होता तो उन्हें जन्नतुल फिरदौस में जगह न मिलती और न छोटे भाई की शादी में फिरिश्तों की शिर्कत होती।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم

صلاةً وسلاماً عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अ़लेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

मुहब्बत वाले

शहीदों के अलावा दूसरे लोग जो अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत रखने वाले हैं, मरने के बाद वह भी ज़िंदा रहते हैं।

1933 ई0 का वाक़िआ है कि इराक़ पर हुक्मरानी के ज़माने में शाह फैसल अव्वल को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, उसी हालत में शाह फैसल से फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सहाबी हुज़ैफा हूं, मुझे और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह को अपनी अपनी क़ब्रों में बेइन्तिहा तक्लीफ पहुंच रही है, हम दोनों को मौजूदा क़ब्रों से निकाल कर दरियाए दजला के कुछ फासिले पर दफ़न किया जाए, मेरी क़ब्र में पानी आ रहा है और जाबिर की क़ब्र में बहुत ज़्यादा नमी आ गई है।

शाह फैसल बेदार हुआ तो हुकूमत के कामों में इस तरह मसरूफ हो गया कि वह रात के ख़्वाब की हिदायत बिल्कुल ही भूल गया। दूसरी रात में हज़रत हुज़ैफा ने फिर उसी तरह हिदायत फरमाई, मगर उस ज़माने में मुल्की और सियासी मामलात में इस क़द्र पेचीदगी पैदा हो गई थी कि शाह फैसल जल्द मुक़द्दस जिस्मों को नई क़ब्रों में मुन्तक़िल न कर सके, उस के बाद हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वाब में इराक़ के मुफ्तिए आज़म को इस तरफ तवज्जोह दिलाई और बताया कि वह दो बार शाह फैसल को भी इस के लिये हिदायत कर चुके हैं मगर अभी तक इस पर अमल नहीं हुआ, इस लिये तुम शाह फैसल के पास जा कर कहो कि उन की राय से हमारे जिस्मों को मुनासिब मक़ाम पर मुन्तक़िल किये जाने का इन्तेज़ाम करो।

दूसरे दिन सुब्ह बेदार होते ही मुफ्तिए आज़म नूरी अस्सईद पहले वज़ीरे आज़म इराक़ के पास पहुंचे और उन को अपने साथ लेकर शाह फैसल के सामने बयान किया, शाह फैसल ने उन की ताईद की और

कहा कि बेशक मुसलसल दो रात मुझे इस की हिदायत की गई है मगर मैं अब तक कुछ तो सियासी उलझनों और कुछ मज़हबी पाबंदियों के सबब इस की तरफ तवज्जोह न कर सका, उस के बाद मुफ्तिए आज़म से कहा गया कि अगर आप इस के मुतअल्लिक़ फत्वा सादिर करें तो मैं फौरन इन हज़राते सहाबा के जिस्मों को मुनासिब मक़ाम पर दफन कराके मज़ार तामीर करने का मुकम्मल इन्तेज़ाम कर दूंगा।

मुफ्तिए आज़म ने अपनी आंखों से उन क़ब्रों को देखा, दर हक़ीक़त क़ब्रों तक दरियाए दजला का पानी पहुंच चुका था और यह अंदेशा पैदा हो गया था कि अगर इन मुक़तद्र सहाबए किराम के जिस्मों को जल्द ही दूसरी जगह मुन्तक़िल न किया गया तो मुम्किन है कुछ दिनों बाद दरियाए दजला का सैलाब इन को बहा ले जाए, इस अंदेशे के पेशे नज़र मुफ्तिए आज़म ने सहाबए किराम के जिस्मों को दूसरे मक़ाम पर दफन करने का फत्वा दे दिया और अख़्बारात के ज़रिये इस का ऐलान भी हो गया कि ख़ास ईदुल अज़्हा के दिन बाद नमाज़े जुहर मज़कूरा सहाबियों की क़ब्रें खोली जायेंगी और उनके बा बरकत जिस्मों को एक दूसरी जगह पर दफन कर दिया जाएगा।

अख़्बारात में ऐलान छपते ही यह ख़बर पूरी दुनियाए अरब में फैल गई, हज का ज़माना था, दुनिया के चारों तरफ से तौहीद व रिसालत के परवाने फरीज़ए हज की अदाइगी और ज़ियारत रौज़ए अनवर की ग़रज़ से मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा में हाज़िर थे लेकिन चूंकि ख़ास ईदुल अज़्हा के दिन सहाबा के जिस्मों को मुन्तक़िल किया जाने वाला था इस लिये जो लोग हज करने गए थे वह इस मौक़े पर शर्फ अंदोज़ नहीं हो सकते थे। तो शाहे इराक़ से दरख़्वास्त की गई कि इन दोनों सहाबियों की क़ब्रों से उन के ज़िस्मों को उस वक़्त निकाला जाए जब हज का ज़माना गुज़र जाए ताकि तमाम मुल्कों के मुसलमान इस सआदत में हिस्सा ले सकें।

शाह ने तारीख़ की तब्दीली की मंज़ूरी कर ली और यह ऐलान कर

दिया गया कि मुक़द्दस जिस्मों को मुन्तक़िल करने का काम 20 ज़िल्-हिज्जा को अंजाम दिया जाएग और साथ ही ऐसा इन्तिज़ाम कर दिया गया कि दरियाए दजला का पानी उन क़ब्रों को कोई मज़ीद नुक़्सान न पहुंचा सके। हस्बे ऐलान 20 ज़िल्-हिज्जा की सुब्ह ही को लाखों मुसलमानों का अज़ीमुश्-शान इज्तिमाअ् इस सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमु की क़ब्रों के गिर्द हो गया। उन तमाम मुसलमानों की मौजूदगी में जब दोनों सहाबियों की क़ब्रें खोली गईं तो वाक़ई हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र शरीफ़ में पानी आ रहा था और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे मुबारक में भी ग़ैर मामूली नमी देखी गई।

जब क़ब्रों से मुक़द्दस जिस्म निकाले गए तो लोगों ने देखा कि तेरह सौ साल की लम्बी मुद्दत गुज़र जाने के बा वजूद भी जिस्म बिल्कुल तरो- ताज़ा हैं और अजीब व ग़रीब खुश्बू से महक रहे हैं। ऐसा मालूम होता था कि इन बुज़ुर्गों को विसाल फरमाए हुए शायद मुश्किल से चन्द घन्टे हुए होंगे। उनके चेहरों पर ऐसा नूर फैला हुआ था कि देखने से क़ल्बो-नज़र को सुरूर हासिल होता था और उन पर नज़र नहीं ठहर सकती थी यहां तक कि कफ़न का कपड़ा भी बिल्कुल ताज़ा मालूम होता था और रीशे मुबारक (दाढ़ी) के बाल बिल्कुल सलामत थे।

और एक बात यह भी निहायत अजीब हुई कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जिस्मे मुबारक को उठाने के लिये स्ट्रीचर का सामने लाया गया तो किसी को हाथ लगाने की ज़रूरत पेश नहीं आई बल्कि वह खुद बखुद स्ट्रीचर पर आ गया और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जिस्मे अक़्दस भी ऐसे ही आ गया, हाथ लगाने की ज़रूरत नहीं हुई। इन दोनों जिस्मों को उस के बाद दो शीशे ताबूतों में रख दिया गया और फिर बड़ी ऐहतियात के साथ नए मज़ारात में दफ़न कर दिया गया।

इस मौक़े पर शाह फ़ैसल अव्वल, मुफ़्तिए आज़म, वज़ीर आज़म

और दूसरे मुल्कों के बड़े-बड़े उमरा व सुफरा भी मौजूद थे। जब यह वाकिआ अख़्बारात के सफहात पर आया तो सारी दुनिया को यह हकीकत तस्लीम करनी पड़ी कि अल्लाह के महबूब बन्दे बादे विसाल भी ज़िंदा रहते हैं।

आसी शहीदे इश्क हूं मुर्दा न जानियो
मर कर मिली है ज़िंदगिए जाविदां मुझे

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم
صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अलेहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

☆☆☆

विसाल रसूले अक्रम

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम

الحمدلله رب العالمين، والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلى اله واصحابه اجمعين۔ اما بعد فقد قال الله تعالى فى القران المجيد والفرقان الحميد اعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم ۔ وَمَامُحَمَّدٌ اِلَّارَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّاللّٰهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَo(پ:٤،ع:٦)

صدق الله العلى العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذلك لمن الشاهدين والشاكرين والحمدلله رب العلمين۔

एक बार आप तमाम हज़रात सारी काइनात के आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاةً وسلاماً عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि व सल्लम, सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

जब कोई शख़्स किसी मक़्सद और किसी ग़र्ज़ से अपना मर्कज़ छोड़ कर दूसरे मक़ाम पर जाता है तो मक़्सद पूरा हो जाने और मतलब हल हो जाने के बाद वह अपने मर्कज़े अस्ली की तरफ वापस हो जाता है हमारे और आप के प्यारे नबी जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दुनिया में तशरीफ लाने का मक़्सद था दीने इस्लाम के अह्काम ख़ुदा के बन्दों तक पहुंचाना और उन को तौहीद परस्त बना कर उन के नुफूस को मुकम्मल तज़्किया फरमाना।

जब आप का मक़्सद पूरा हो गया और ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल ने आयते करीमा اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (पाराः6,रुकूअ़.5) नाज़िल फरमा कर

आप के दीन के कामिल होने की खुशख़बरी सुनाई और अपनी नेअ्मतें आप पर पूरी फरमा दीं तो आप को अपने मर्कज़े अस्ली मक़ामे क़ुदस की तरफ जाने का वक़्त क़रीब आ गया, जिस का इल्म आप को बहुत पहले से था इसी लिये हज्जतुल विदाअ् के मौक़े पर आप ने लोगों से फरमाया कि ''शायद इस के बाद मैं तुम्हारे साथ हज न कर सकूं।''

मिश्कात शरीफ में हैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हमा फरमाते हैं कि जब सूरए *इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि* नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने अपनी लख़्ते जिगर, नूरे नज़र साहिबज़ादी हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को बुलाया और उन से फरमायाः نُعِيَتْ اِلَىَّ نَفْسِىْ यानी मुझ को मेरे सफरे आख़िरत की ख़बर दी गई है। यह सुन कर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा रोने लगीं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया لَاتَبْكِىْ فَاِنَّكِ اَوَّلُ اَهْلِىْ لَاحِقٌ بِىْ यानी ऐ फातिमा! रोओ नहीं, मेरे अहले बैत में तुम ही सब से पहले मुझ से मुलाक़ात करोगी। यह सुन कर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा हंसने लगीं। यह देख कर अज़्वाजे मुतह्हरात में से बाज़ बीवियों ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से दर्याफ्त किया कि पहले हम ने आप को रोते देखा और फिर हंसते देखा, इस का मतलब क्या है? हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने कहा कि हुज़ूर ने मुझ को बताया कि आप को आप के सफरे आख़िरत की ख़बर दी गई है। यह सुन कर मैं रोने लगी। आप ने फरमाया रोओ नहीं, मेरे अहले बैत में सब से पहले तू ही मुझ से मिलेगीं यह सुन कर मैं हंसने लगी।

दारमी शरीफ की हदीस है, हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम अपनी उस अलालत में कि जिस में आप ने विसाल फरमाया घर से बाहर तशरीफ लाए इस हाल में कि अपने सर पर कपड़ा बांधे हुए थे, हम लोग उस वक़्त मस्जिद में थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हो कर मिम्बर की तरफ तशरीफ ले गए और उस पर रौनक़ अफ्रोज़ हुए। फिर आप ने एक ख़ुत्बा दिया और फरमायाः وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ اِنِّیْ لَاَنْظُرُ اِلَی الْحَوْضِ مِنْ مَّقَامِیْ هٰذَا यानी क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है कि मैं इस मिम्बर पर बैठे हुए हौज़े कौसर को देख रहा हूं। फिर फरमायाः ख़ुदा का एक बन्दा है जिस के सामने दुनिया व आख़िरत की ज़ीनत पेश की गई मगर उस ने आख़िरत को इख़्तियार कर लिया।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का बयान है कि हुज़ूर के इस इरशाद को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के अलावा और कोई नहीं समझ सका। उन की आंखों से आंसू जारी हो गए और वह रो पड़े और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम अपने मां-बाप के साथ आप पर क़ुर्बान हो जाएं। सहाबए किराम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की इस बात को सुनकर बहुत मुतअज्जिब हुए कि वह ऐसा क्यों फरमा रहे हैं, यहां तक कि बाज़ लोगों ने कहा कि इस बूढ़े को देखो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम तो एक बन्दे का हाल बयान फरमा रहे हैं कि जिस को ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने दुनिया की तरो-ताज़गी और आख़िरत के दरमियान इख़्तियार दिया है। और वह यह कह रहे हैं कि हम और हमारे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हो जाएं, लेकिन राज़दारे नुबुव्वत फौरन समझ गया था कि वह बन्दा ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम हैं।

अस्दक़ुस्-सादिक़ीन सैय्यिदुल मुत्तक़ीन
राज़दारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

☆☆☆

शुहदाए उहुद को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ फरमाया

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम ने शुहदाए उहुद पर आठ बरस के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। "हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मिर्क़ात में फरमाते हैं कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम या शुहदाए उहुद की खुसूसियात में से है कि आप ने आठ बरस के बाद उनपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी" गोया आप ज़िंदों और मुर्दों को रुख़्सत फरमा रहे हैं। शुहदाए उहुद को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ फरमाने के बाद लौटे तो मिम्बर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और फरमायाः मैं तुम से पहले जा रहा हूं, मैं तुम लोगों के दअ़्वते इस्लाम के क़बूल करने और इताअ़त व फरमां बरदारी के बजा लाने पर गवाह हूं। और तुम से हमारी मुलाक़ात का मक़ाम हौज़े कौसर है। और मैं इस जगह से हौज़े कौसर को देख रहा हूं। और फरमायाः إِنِّی قَدْ أُعْطِيْتُ مَفَاتِيْحَ خَزَائِنِ الْأَرْضِ यानी नी बेशक मुझ को ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां दी गई हैं।

आख़िरी वसिय्यत

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को बुला कर फरमाया कि ऐ बिलाल! जाकर ऐलान कर दो कि सब लोग मस्जिद में जमा हो जाएं, मैं उन को वसिय्यत करूंगा और कह दो कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की यह आख़िरी वसिय्यत होगी, जब हज़रते बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने मदीना शरीफ के बाज़ारों और गलियों में ऐलान किया कि रसूलुल्ला

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आख़िरी वसिय्यत सुनने के लिय मस्जिदे नबवी में सब लोग जमा हो हाज़िर हो जाएं। तो इस ऐलान को सुन कर लोग इस क़द्र घबरा गए कि दुकानों और घरों को ऐसे ही खुले हुए छोड़ कर मस्जिद में हाज़िर हो गए। और इतने लोग जमा हुए कि मस्जिदे नबवी में गुंजाइश न रही। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिम्बर शरीफ पर रौनक़ अफ्रोज़ हुए और तवील खुत्बा फरमाया जो वक़्त और हाल के मुनासिब नसीहत और अह्कामे शरअ़ पर मुश्तमिल था। और फरमाया कि ऐ लोगो! मेरा सफरे आख़िरत क़रीब है, जान व माल और सामान वग़ैरा का कोई भी हक़ किसी शख़्स का मुझ पर हो तो उसका बदला मुझ से ले ले।

(मदारिजुन् नुबुव्वत)

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह ऐलान इस लिये था ताकि हुकूकुल इबाद की अहमियत व ज़रूरत उन की उम्मत पर अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए और वह एक दूसरे के हुकूक़ की पामाली से हमेशा दूर रहे।

हुकूक़ की तफ्सील

बिरादराने मिल्लत! हुकूक़ की दो क़िस्में हैं: एक हुकूकुल्लाह दूसरे हुकूकुल इबाद। फिर हुकूकुल्लाह की दो क़िस्में हैं। एक वह कि अगर उन के बारे में बन्दा से कुसूर वाक़ेअ़ हुआ, तो वह सिर्फ तौबा से माफ हो सकते हैं जैसे कि शहर में जुमा और ईदैन की नमाज़ छूट जाने के गुनाह, या शराब पीने और नाच वग़ैरा देखने के गुनाह। और दूसरे वह जो सिर्फ तौबा से नहीं माफ हो सकते जैसे नमाज़ न पढ़ने, रोज़ा न रखने, ज़कात व फित्रा न अदा करने और हज व कुर्बानी वग़ैरा न करने के गुनाह कि इनके माफ होने की सूरत सिर्फ तौबा नहीं है बल्कि छूटी हुई नमाज़ों और रोज़ों की क़ज़ा करे, जितने सालों की ज़कात और फित्रा न दिया हो अब अदा करे, साहिबे निसाब होकर जितने साल

कुर्बानी न की हो हर साल के बदले एक बकरा की कीमत सदका करें, खुद हज न कर सकता हो तो हज्जे बदल कराए। माल न रह गया हो तो हज्जे बदल कराने की वसिय्यत करे और तौबा करे तो माफ हो सकते हैं। यानी तौबा के साथ उन की अदाइगी भी ज़रूरी है कि यह चीज़ें सिर्फ तौबा से नहीं माफ हो सकतीं।

और रहे हुकूकुल इबाद यानी बन्दों के हुकूक तो वह हुकूकुल्लाह की दूसरी किस्म से भी अहम हैं। इस लिये कि खुदाए तआला अर्हमुर् राहिमीन है अगर वह चाहे तो अपने हर किस्म के हुकूक माफ कर दे लेकिन वह किसी बन्दे का हक हरगिज़ नहीं माफ करेगा जब तक कि वह बन्दा न माफ कर दे कि जिस की हक तल्फी की गई है। इसी लिये सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आखिरी वसिय्यत में खास तौर पर इस की अहमियत को ज़ाहिर फरमाया। और ज़मानए सेहत में भी हमेशा इस की ताकीद फरमाते रहे। मिश्कात शरीफ की हदीस है हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम से दर्याफ्त फरमायाः أَتَدْرُوْنَ مَا الْمُفْلِسُ यानी क्या तुम लोग जानते हो कि मुफ्लिस और कंगाल कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम में मुफ्लिस वह शख्स है कि जिस के पास न पैसे हों और न सामान। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में दरअसल मुफ्लिस वह शख्स है कि जो कियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात वगैरा लेकर इस हाल में आएगा कि उस ने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खा लिया होगा, किसी का खून बहाया होगा और किसी को मारा होगा। तो अब उन लोगों को राज़ी करने के लिये उस शख्स की नेकियां उन मज़्लूमों के दरमियान तक्सीम की जाएंगी। अगर उस की नेकियां खत्म हो जाने के बाद भी लोगों के हुकूक उस पर बाकी रह जाएंगे तो अब हक्दारों के गुनाह लाद दिये जायेंगे यहां तक कि उसे

दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा। العياذ بالله تعالى *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला*

बेशक मेरे सरकार ने सहीह फरमाया, हकीक़त में मुफ्लिस और ग़रीब वही शख़्स है कि जिस के पास क़ियामत के दिन नेकियां नहीं होंगी। या वह बहुत सी नेकियां लेकर आएगा मगर हुकूकुल इबाद में गिरफ्तार होगा। मां-बाप को सताया होगा, पड़ोसी को तक्लीफ दी होगी। भाई का हक़ मार लिया होगा। मां-बाप के मरने पर बहन का हक़ नहीं दिया होगा या दादा के इन्तेक़ाल पर फूफी का हक़ ग़सब कर लिया होगा। तो क़ियामत के दिन उस की सारी नेकियां उन लोगों को दे दी जायेंगी जिस की उस ने हक़ तल्फी की होगी, यहां तक कि उस के पास कोई नेकी नहीं रह जाएगी। तो हकीक़त में ग़रीब वही शख़्स है, इस लिये कि दुनिया का ग़रीब अगर उस के पास खाना न हो तो मांगने से कहीं मिल जाएगा, कपड़ा न हो तो वह भी कहीं से पा जाएगा। सर्दी में रज़ाई या कम्बल न हो तो किसी का रहम आ जाएगा वह भी हासिल हो जाएगा और रहने के लिये घर न हो तो सर छुपाने के लिये कहीं कोई जगह मिल ही जाएगी, लेकिन क़ियामत के दिन जब नेकियां नहीं होंगी तो वह कहीं से नहीं मिलेंगी। पारा:21, रुकूअ्:13 में इरशादे खुदा वन्दी है: يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا यानी ऐ लोगो! अपने रब से डरो, और उस दिन का ख़ौफ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा और न कोई काम वाला बच्चा अपने बाप को कुछ फायदा पहुंचाएगा। और पारए 30 सूरए अबस में इरशादे रब्बे ज़ुल्-जलाल है: يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ यानी क़ियामत का दिन वह हवलनाक दिन होगा कि आदमी अपने भाई से भगेगा, अपने मां-बाप से भागेगा यहां तक कि अपनी बीवी और बेटों से भी राहे फरार इख़्तियार करेगा। उन में से हर एक को उस दिन अपनी नजात की एक फिक्र होगी कि वही उस के लिये बस होगी। मतलब यह है कि कोई किसी की मदद करने और नेकी देने को तैयार न होगा। तो

हक़ीक़त में ग़रीब वही शख़्स है कि जिस के पास क़ियामत के दिन नेकियां न रहेंगी। (दुरूद शरीफ़)

बाज़ लोग इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला हैं कि हज करने से छोटा बड़ा सारा गुनाह माफ़ हो जाता है, ज़िंदगी भर नमाज़ नहीं पढ़ते, रोज़ा नहीं रखते, ज़कात नहीं देते, दूसरों की ज़मीनों, दुकानों और जायदादों पर ना जाइज़ क़बज़ा कर लेते हैं, ग़लत कामों में पूरी ज़िंदगी गुज़ारते हैं और जब देखते हैं कि मरने का वक़्त आ गया तो हज कर लेते हैं और समझते हैं कि सारा गुनाह माफ़ हो गया और हम ऐसे हो गए जैसे कि अभी मां के पेट से पैदा हुए हों।

तो ऐ मुसलमानों! आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने रिसालए मुबारका अअ्ज़बुल इमदाद में इस मस्अले की नफ़ीस तहक़ीक़ फ़रमाई जिस का ख़ुलासा हम आप के सामने पेश करते हैं ताकि हज से गुनाहों की माफ़ी का मस्अला अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए।

वह फ़रमाते हैं कि जिस ने पाक माल, पाक कमाई, पाक नियत से हज किया और उस में लड़ाई झगड़ा नीज़ हर क़िस्म के गुनाह और ना फ़रमानी से बचा फिर हज के बाद फ़ौरन मर गया, इतनी मोहलत न मिली कि जो हुक़ूक़ुल्लाह या हुक़ूक़ुल इबाद उस के ज़िम्मे थे उन्हें अदा करता या अदा करने की फ़िक्र करता तो हज क़बूल होने की सूरत में उम्मीदे क़वी है कि अल्लाह तआला अपने तमाम हुक़ूक़ को माफ़ फ़रमा दे और हुक़ूक़ुल इबाद को अपने ज़िम्मए करम पर लेकर हक़ वालों को क़ियामत के दिन राज़ी करे और ख़ुसूमत से नजात बख़्शे।

और अगर हज के बाद ज़िंदा रहा और हत्तल इम्कान हुक़ूक़ का तदारुक कर लिया, यानी सालहाए गुज़िश्ता मा बक़िया ज़कात अदा कर दी, छूटी हुई नमाज़ और रोज़े की क़ज़ा की, जिस का हक़ मार लिया था उस को या मरने के बाद उसके वारिसीन के दे दिया, जिसे तक्लीफ़ पहुंचाई थी माफ़ करा लिया, जो साहिबे हक़ न रहा उस की तरफ़ से

सदका कर दिया। अगर हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद में से अदा करते करते कुछ रह गया तो मौत के वक़्त अपने माल में से उन की अदाइगी की वसिय्यत कर गया। खुलासा यह कि हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद से छुटकारे हर मुम्किन कोशिश की तो उस के लिये बख़्शिश की और ज़्यादा उम्मीद है। हां अगर हज के बाद कुद्रत होने के बा वजूद इन उमूर से गफ्लत बरती, इन्हें अदा न किया, तो यह सब गुनाह अज़ सरे नौ उस के ज़िम्मे होंगे, इस लिये कि हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद तो बाक़ी ही थे, उन की अदाइगी में ताख़ीर करना फिर ताज़ा गुनाह हुआ जिस के इज़ाले के लिये वह हज काफी न होगा, इस लिये कि हज गुज़रे हुए गुनाहों यानी वक़्त पर नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा अदा न करने की तक़्सीर धोता है। हज से कज़ा शुदा नमाज़ और रोज़ा हरगिज़ नहीं माफ होते और न आइन्दा के लिये परवानए आज़ादी मिलता है। انتہی کلامہ

और हज़रत अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह इस मस्अले पर बहस करने के बाद तहरीर फरमाते हैं। खुलाए कलाम यह है कि कर्ज़ की अदाइगी में देर लगाना और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा को अदा करने में ताख़ीर करना चूंकि यह हुकूकुल्लाह में से हैं इस लिये फक़त ताख़ीर का गुनाह जो माज़ी में हो चुका वह माफ हो जाएगा लेकिन असल कर्ज़ और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा फराइज़ की अदाइगी में जो आइन्दा ताख़ीर होगी वह माफ नहीं होगी। अल्लामा शामी बहरुर राइक़ के हवाले से लिखते हैं कि हज जो गुनाहों का कफ्फारा हो जाता है, उस का यह मतलब नहीं है कि कर्ज़ की अदाइगी और सौम व सलात की कज़ा उसके ज़िम्मे से साकित हो जाती है जैसा कि बहुत से लोगों का वहम है, इस लिये कि उम्मत में से कोई भी इस का काइल नहीं है। फिर अल्लामा शामी तहरीर फरमाते हैं कि तो यकीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि हज उन कबीरा गुनाहों का कफ्फारा हो जाता है जो हुकूकुल्लाह हैं तो फिर भला हुकूकुल इबाद का कफ्फारा क्यों कर

हो सकता है?

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब को पूरे-पूरे हुकूकुल्लाह और हुकूकुल इबाद अदा करने की तौफीके रफ़ीक़ बख़्शे। और दुनिया व आख़िरमत में हमें मुफ्लिसी के अज़ाब से महफूज़ रखे। आमीन

(दुरूद शरीफ)

शेख़ मोहक़्क़िक़ लिखते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने आख़िरी वसिय्यत के खुत्बे में यह भी फरमाया कि ऐ लोगो! जिस शख़्स पर कोई हक़ हो उसे चाहिये कि वह अदा करे और यह ख़्याल न करे कि रुस्वाई होगी इस लिये कि दुनिया की रुस्वाई आख़िरत की रुस्वाई से बहुत आसान हैं। आप के इस ऐलान पर एक सहाबी उठे और उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम ने माले ग़नीमत में ख़्यानत की थी और उस में से तीन दिरम ले लिया था, हुज़ूर ने उन से दरियाफ्त फरमाया कि किस चीज़ ने तुम को ख़्यानत करने पर मजबूर किया, उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे तीन दिरम की ज़रूरत थी, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज़रते फज़ल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को हुक्म फरमाया कि इन से तीन दिरम ले लो। (मदारिजुन नुबुव्वत)

कितने अच्छे थे वह कि उन्हों ने आख़िरत की रुस्वाई से बचने के लिये भरे मजमे में दुनिया की रुस्वाई इख़्तियार की, अपनी ख़्यानत का ऐलान कर दिया और आख़िरत की रुस्वाई से बचने के लिये दुनिया की रुस्वाई में कोई आर नहीं महसूस की। दुआ है कि खुदाए ज़ुल जलाल हम सब को हुज़ूर और उनके सहाबा के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफीक़ मरहमत फरमाए और आख़िरत की रुस्वाई से बचने का पूरा जज़्बा नसीब फरमाए। आमीन (दुरूद शरीफ)

अ़लालत की इब्तिदा

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के मरज़े वफात की कब इब्तिदा हुई? इस के बारे में लोगों ने इख़्तिलाफ किया है। हज़रत शेख़

अब्दुल हक़ मोहद्दिसे देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह तहरीर फ़रमाते हैं कि जब माहे सफ़र के ख़त्म होने में एक या दो रोज़ बाक़ी रह गए थे तब अलालत की इब्तिदा हुई, यानी सर में दर्द पैदा हुआ। और हज़रत सुलैमान तैमी जोकि सिक़ह (मोअ़तबर) लोगों में से हैं उन्हों ने इस बात पर जज़्म किया है कि 22 सफ़र को मिजाज़े मुबारक नासाज़ हुआ। (अश्अ़तुल् लमआ़त)

मिजाज़े अक़्दस की नासाज़ी के ज़माने में आप पांच दिन तक अज़ राहे अद्ल बारी-बारी एक-एक ज़ौजए मोहतरमा के हुजरे में तशरीफ़ ले जाते रहे, जब मरज़ में बहुत शिद्दत पैदा हो गई तो अज़्वाजे मुतह्हरात की इजाज़त से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के हुजरए मुबारका में क़ियाम फ़रमाया और जब तक ताक़त रही आप ख़ुद ही मस्जिदे नबवी में नमाज़ें पढ़ाने के लिये तशरीफ़ लाते रहे।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के मरज़ ने जब ग़लबा किया तो आप ने फ़रमायाः مُرُوْا اَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ यानी अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह नर्म दिल आदमी हैं, आपकी जगह खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे, दोबारा फ़रमायाः अबू बकर से कहो कि वह नमाज़ पढ़ाएं, हज़रत सिद्दीक़ा ने फिर वही उज़्र पेश किया तो हुज़ूर ने तीसरी बार वही हुक्म बताकीद फ़रमाया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने नमाज़ पढ़ाई। हुज़ूर की हयाते ज़ाहिरी में उन्हों ने कुल 17 नमाज़ें पढ़ाईं। उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि इस हदीस में बहुत वाज़ेह दलालत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मुतलक़न तमाम सहाबा से अफ़्ज़ल और ख़िलाफ़त व इमामत के सब से ज़्यादा हक़दार हैं।

हदीसे क़िरतास

बुख़ारी व मुस्लिम में है कि वफ़ात से चार दिन पहले जुमेरात को जब सरकार अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दर्द बहुत बढ़ गया तो आप ने फ़रमाया कि मेरे पास शानह का हड्डी लाओ, मैं तुम्हारे लिये एक तहरीर लिख दूं ताकि उस के बाद तुम न बहको तो सहाबा में इख़्तिलाफ़ हो गया, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि इस वक़्त हुज़ूर को बीमारी की तक्लीफ़ ज़्यादा है, तुम्हारे पास क़ुरआन है, वही अल्लाह की किताब तुम्हारे लिये काफ़ी है। बाज़ लोग कहते थे कि हुज़ूर के पास लिखने का सामान रख दो। और कई लोगों ने कहा مَا شَانُهُ اَهَجَرَ اِسْتَفْهِمُوْهُ यानी हुज़ूर का क्या हाल है? क्या जुदाई का वक़्त क़रीब आ गया? आप से दरयाफ़्त करो। बाज़ सहाबा ने लिखने के बारे में आप से दरयाफ़्त करना शुरू किया तो जवाब में आप ने फ़रमाया कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। इस लिये कि मैं जिस हालत में हूं वह उस से बेहतर है कि जिस की तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो।

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़िलाफ़त का मामला लिखना चाहते थे मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोक देने से यह अहम मामला रह गया तो इस शुब्हा का जवाब यह है कि ख़िलाफ़त का मामला लिखना हरगिज़ मनज़ूर न था, इस लिये कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के मुतअल्लिक़ हुज़ूर न उसी मरज़ में इरादा फ़रमाया था जैसा कि मुस्लिम शरीफ़:2/273, में है कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया कि अपने बाप अबू बकर और अपने भाई को बुलाओ ताकि मैं उन के लिये वसिय्यत नामा लिख दूं। इस लिये कि मैं डरता हूं कि कोई आरज़ू करने वाला आरज़ू करे या कोई कहने वाला कहे कि मैं अफ़ज़ल हूं, हालां कि ख़ुदाए तआला और मोमिनीन अबू बकर के अलावा किसी को क़बूल न करेंगे,

मगर ऐसा इरादा फरमाने के बाद फिर हज़रत उमर या किसी दूसरे की मुमानअ़त के बग़ैर हुज़ूर ने खुद बखुद लिखना मौकूफ कर दिया। और फिर अगर ख़िलाफत के लिये वसिय्यत ही करनी थी तो इस के लिये लिखना ज़रूरी न था बल्कि जो लोग हुजरए मुबारका में मौजूद थे उन के सामने ज़बानी वसिय्यत कर देना ही काफी था।

नोटः इस मस्अले के बारे में हमारा रिसाला ''बाग़े फिदक और हदीसे क़िरतास'' देखें। अमजदी

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि एक दिन जुहर की नमाज़ के वक़्त आप को कुछ इफाक़ा हुआ तो आप खड़े हुए और हज़रत अब्बास व हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के सहारे मस्जिद में तशरीफ लाए, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब उन्हों ने आप की आहट महसूस की तो पीछे हटने लगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन्हें इशारा फरमाया कि न हटो, आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बाईं जानिब बैठ गए, यानी उन को अपने दाहिने किया और इस तरह आप ने बैठ कर नमाज़ पढ़ाई। आप को देख कर हज़रत अबू बकर, और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को देख कर दूसरे लोग नमाज़ के अर्कान अदा करते रहे। नमाज़ के बाद आप ने एक खुत्बा दिया जिस में आप ने सहाबए किराम को बहुत सी वसिय्यतें फरमाईं।

हदीस शरीफ में है जब कि आप की अलालत बहुत सख़्त हो चुकी थी आप को याद आया कि मेरी मिलकियत में 6-7 अशरफियां हैं, आप ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को हुक्म फरमाया कि इसे ख़ैरात कर दें मगर वह मशगूलियत के सबब ख़ैरात न कर सकीं। तो हुज़ूर ने खुद उन अशरफियों को मंगा कर ख़ैरात कर दिया और फरमाया कि अल्लाह का नबी खुदाए तआ़ला से इस हाल में मिले कि अशरफियां उस के क़बज़े में हों तो यह मक़ामे नुबुव्वत के मनाफी है। (अश्अ़तुल् लमआ़त)

मरज़ में कमी बेशी होती रहती थी। दोशंबा के रोज़ जिस दिन आप की वफात हुई, सुब्ह के वक़्त आप की तबीअ़त बज़ाहिर पुर सुकून थी मगर दिन जैसे जैसे बढ़ता जाता था आप पर बार-बार ग़शी तारी होती थी और फिर इफाक़ा हो जाता था।

बुख़ारी शरीफ में है हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि वफात से कुछ पहले मेरे सीने से टेक लगाए बैठे थे कि मेरे भाई अब्दुर रहमान बिन अबू बकर इस हाल में आए कि उन के हाथ में मिस्वाक थी, मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अब्दुर रहमान की तरफ देख रहे हैं, मैं जानती थी कि आप मिस्वाक को बहुत पसंद फरमाते हैं, मैं ने अर्ज़ किया, क्या मैं अब्दुर रहमान से आप के लिये मिस्वाक ले लूं, आप ने सर के इशारे से फरमाया कि हां ले लो, मैं ने अब्दुर रहमान से मिस्वाक लेकर आप को दे दी मगर आप को उस मिस्वाक को चबाना दुश्वार मालूम हुआ इस लिये कि वह सख़्त थी, मैं ने अर्ज़ किया क्या मैं इस मिस्वाक को नर्म कर दूं, आप ने इजाज़त दे दी, तो मैं ने मिस्वाक को नर्म कर दिया और आप ने उस को अपने दांतों पर फेरा। (दुरूद शरीफ)

आप के सफरे आख़िरत का वक़्त क़रीब आ रहा था। सांस की घर- घराहट सीने में महसूस होती थी। इसी दरमियान में लबे मुबारक हिले तो लोगों ने यह अल्फाज़ सुने اَلصَّلٰوۃَ وَمَا مَلَکَتْ اَیْمَانُکُمْ यानी नमाज़ और गुलाम व बांदी।

मिश्कात शरीफ में है कि वफात के दिन हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम आए तो उन के साथ एक फिरिश्ता और था जो एक लाख फिरिश्तों का अफ्सर था जिन में से हर एक फिरिश्ता एक-एक लाख फिरिश्तों का अफ्सर था। उस फिरिश्ते ने हाज़िरी की इजाज़त तलब की, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जिब्रील से उस के बारे में पूछा, हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि यह मौत का फिरिश्ता है, हाज़िरी की इजाज़त चाहता है। और आज से पहले न तो इस ने

किसी से इजाज़त तलब की है और न आइन्दा इस के बाद किसी आदमी से इजाज़त तलब करेगा। आप ने फरमाया उस को बुला लो। तो हज़रत जिब्रील ने उसे बुला लिया, उस ने हाज़िर हो कर सलाम किया और फिर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!

ख़ुदाए तआला ने मुझे आप की ख़िदमत में भेजा है, अगर आप हुक्म देंगे तो मैं आप की रूह को क़ब्ज़ करूंगा वरना छोड़ दूंगा, सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तू मेरी मरज़ी के मुताबिक़ अमल करेगा, मौत के फिरिश्ते ने अर्ज़ किया हां, मुझ को यही हुक्म दिया गया है कि जो कुछ आप फरमाएं उसी के मुताबिक़ अमल करूं। रावी का बयान है कि यह सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील की तरफ देखा, जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! إِنَّ اللّٰهَ قَدِ اشْتَاقَ إِلَى لِقَائِكَ यानी अल्लाह तआला आप की मुलाक़ात का मुश्ताक़ है। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मौत के फिरिश्ते से फरमाया कि जिस बात का तुझ को हुक्म दिया गया उस पर अमल कर।

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब मौत का फिरिश्ता हाज़िर हुआ उस वक़्त हुज़ूर का सरे मुबारक मेरी रान पर था, आप पर ग़शी तारी हुई फिर होश आया तो आप छत की तरफ देखने लगे। और बुख़ारी शरीफ की एक और रिवायत में है कि ऐने विसल के वक़्त हुज़ूर का सरे मुबारक हज़रत आइशा के सीने और हलक़ के दरमियान था और क़रीब में पानी का एक बर्तन रखा हुआ था, आप उस पानी में हाथ डालते और उन को चेहरे पर फेर लेते और फरमाते थे *'लाइलाह इल्लल्लाह'* और मौत के सख़्तियां हैं। फिर हुज़ूर ने आसमान की तरफ हाथ उठाए और फरमाने लगे فِى الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى यानी ऐ अल्लाह! मुझे रफीक़े अअ़्ला में कर दे। या यह मतलब था कि मैं रफीक़े अअ़्ला में आना चाहता हूं। और एक रिवायत में है कि फरमायाः اِخْتَرْتُ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى यानी मैं ने रफीक़े

अअ्ला को इख़्तियार किया। (अश्अतुल् लमआत) यही कहते-कहते हाथ लटक गए और रूहे कुदसी आलमे कुदुस में पहुंच गई। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन*। (दुरूद शरीफ)

विसाल का असर

बिरादराने इस्लाम! सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात हस्रते आयात से अहले बैत और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को जो सद्मा पहुंचा वह बयान से बाहर है। लोग हुज़ूर की मुहब्बत में होश व हवास खो बैठे, उन की समझ में नहीं आता था कि अब क्या करें। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की यह हालत हो गई कि उन पर सक्ता तारी हो गया, बोलने की ताक़त नहीं रह गई, हालते बेक़रारी में इधर से उधर आते जाते थे। मगर किसी से कुछ कहते नहीं थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस क़द्र ग़म से निढाल हो गए कि एक जगह बैठ गए और हिलने की ताक़त नहीं रखते थे। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह हाल हुआ कि वह नंगी तलवार लेकर मदीना शरीफ के बाज़ार और गलियों में घूमते थे और फरमाते थे कि जो कहेगा कि हुज़ूर की वफात हो गई, मैं इसी तलवार से उस की गर्दन उड़ा दूंगा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु विसाल के वक़्त अपने घर थे, जब यह ख़बर सुनी तो रोते हुए और वा मुहम्मदाह! के नारे लगाते हुए मस्जिद शरीफ में हाज़िर हुए, देखा कि सहाबए किराम हैरान व परेशान हैं, आप ने किसी से कुछ बात नहीं की और न किसी की तरफ मुतवज्जह हुए, सीधे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुजरए मुबारका में पहुंचे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुबारक चेहरे से चादर हटाई और पेशानिए अनवर को बोसा दिया, रोते हुए बाहर निकले। ख़ुदाए तआला का उन पर यह ख़ालिस फ़ज़्ल हुआ कि हुज़ूर से इन्तिहाई मुहब्बत के बा वजूद उन के होश व हवास बजा रहे। आप मस्जिद में तशरीफ लाए, उस वक़्त हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मस्जिद में मौजूद थे, आप ने उन से फरमाया ऐ उमर! बैठ जाओ, उन्हों ने इनकार कर दिया और कहा कि हम नहीं बैठेंगे। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन्हें छोड़ दिया और लोगों की तरफ मुतवज्जह होकर ख़ुत्बा देना शुरू किया।

फरमायाः ऐ लोगो! कान खोल कर सुन लो, जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की इबादत करता था तो वह जान ले कि उन का विसाल हो गया और जो ख़ुदाए तआ़ला की इबादत करता था वह सुन ले कि ख़ुदा ज़िंदा है वह कभी नहीं मरेगा, उस पर कभी मौत नहीं तारी हो सकती, फिर आप ने वह आयते करीमा तिलावत फरमाई जिस के पढ़ने का शर्फ हम इब्तिदाए तक़रीर में हासिल कर चुके हैं, وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम तो एक रसूल हैं قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ उन से पहले और रसूल हो चुके, أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ तो क्या अगर वह इन्तिक़ाल फरमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पांव फिर जाओगे? وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا और जो उल्टे पांव फिरेगा तो वह अल्लाह का कुछ नुक़्सान न करेगा وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ और अन्क़रीब अल्लाह तआ़ला शुक्र करने वालों को सिला अ़ता फरमाएगा। यानी जो अपने दीन पर साबित रहेंगे और नहीं फिरेंगे वह गिरोह शाकिरीन में से हैं, ख़ुदाए तआ़ला उन को अज्रे अज़ीम अता फरमाएगा।

बुख़ारी शरीफ में है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस आयते करीमा की तिलावत फरमाने से लोगों को ऐसा मालूम हुआ कि गोया कोई इस आयते करीमा को जानता ही न था, उन से सुन कर अब इसी आयते करीमा को हर शख़्स पढ़ने लगा। और मदारिजुन् नुबुव्वत में है, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मैं ने यह आयते करीमा सुनी तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि इस से पहले मैं ने इस आयते करीमा को सुना ही न था, सुनने के बाद मुझे

मालूम हो गया कि वाक़ई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का विसाल हो गया। इस यक़ीन के बाद मेरे बदन में लर्ज़ा पैदा हुआ और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा का बयान है कि गोया हमारी निगाहों पर पर्दा पड़ा हुआ था जिसको हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़ुत्बे ने उठा दिया, उनसे सुनकर अब इसी आयते करीमा को हर शख़्स पढ़ने लगा जिससे लोगों को कुछ सुकून हासिल हो गया। (दुरूद शरीफ)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जब क़ुरआने मजीद की आयते करीमा पढ़ कर सुनाई तो अगर्चे इस से लोगों को कुछ सुकून हासिल हो गया लेकिन अब इतना वक़्त नहीं बाक़ी रह गया था कि उसी रोज़ तजहीज़ व तक्फ़ीन हो सके, इस लिये दूसरे रोज़ सह शंबा (मंगल) को यह काम अंजाम पाया।

तजहीज़ व तक्फ़ीन

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि वसिय्यत के मुताबिक़ जब अज़ीज़ व अक़ारिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को वफात के बाद ग़ुस्ल देना चाहा तो आवाज़ आई कि अल्लाह के रसूल को ग़ुस्ल न दो कि वह पाक व साफ हैं, उन्हें ग़ुस्ल की हाजत नहीं, आवाज़ किस ने दी और किधर से आई? लोगों ने बहुत छान बीन की मगर कुछ पता नहीं चला, मालूम हुआ कि ग़ैब से अवाज़ आई है तो बाज़ लोगों ने चाहा कि ग़ैबी आवाज़ पर अमल किया जाए और ग़ुस्ल न दिया जाए तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फरमाया कि ऐसी आवाज़ के सबब जिस की हक़ीक़त से हम वाक़िफ नहीं है कि वह कहां से आई है और कहने वाला कौन है हम इस्लाम के तरीक़े को हरगिज़ नहीं छोड़ सकते, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को हम ग़ुस्ल ज़रूर देंगे, इतने में फिर दूसरी ग़ैबी आवाज़ आई कि अल्लाह के रसूल को ग़ुस्ल दिया जाए, पहली आवाज़ इब्लीस की

थी और मैं ख़िज़्र हूं।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की आवाज़ के बाद जब लोगों ने ग़ुस्ल का इरादा किया तो फिर एक दूसरा इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को उनके पैराहन मुबारक में ग़ुस्ल दिया जाए या दूसरे लोगों की तरह बरहना करके नहलाया जाए? अभी कोई फैसला नहीं हो पाया था कि एक तरफ से फिर ग़ैबी आवाज़ आई, अल्लाह के रसूल को बरहना मत करो, उन को उन्हीं के पैराहन मुबारक में ग़ुस्ल दो। अब हज़रत अली, हज़रत अ़ब्बास, हज़रत फज़ल बिन अब्बास, हज़रत कुस्म बिन अब्बास, हज़रत उसामा बिन ज़ैउ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने मिल-जुल कर आप को ग़ुस्ल दिया और हज़रत औस बिन ख़ौला अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पानी का घड़ा भर-भर कर लाते थे, ग़ुस्ल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की नाफे मुबारक और पल्कों पर पानी के जो क़तरे और तरी रह गई थी, जोशे अक़ीदत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसको अपनी ज़बान से चाट कर पी लिया। आप फरमाते थे कि उस की बरकत से मेरा इल्म और कुव्वते हाफिज़ा बहुत बढ़ गई।

अश्अ़तुल् लमआ़त में है कि ग़ुस्ल के बाद हुज़ूर को तीन सफेद सूती कपड़ों का कफन दिया गया जो यमन के एक गांव "सहोल" के बने हुए थे।

क़ब्र शरीफ

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को कहां दफ़न किया जाए, इस के मुतअ़ल्लिक़ सहाबा में इख़्तिलाफ हुआ, एक जमाअ़त ने कहा कि उसी हुजरे में दफन किया जाए जहां आप की वफ़ात हुई, और एक गिरोह ने मशवरा दिया कि मस्जिदे नबवी आप का मदफन होना चाहिये। बाज़ सहाबा ने राय दी कि जन्नतुल बक़ीअ् जो मदीना शरीफ का आम क़ब्रिस्तान है उस में दफन किया जाए और कुछ लोगों ने कहा कि बैतुल मुक़द्दस में आप की क़ब्र होनी चाहिये इस

लिये कि वहां बहुत से अंबियाए किराम की क़ब्रें हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है कि हर नबी वहीं दफन किया गया जहां उस की वफात हुई है। और एक रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रूए ज़मीन पर खुदाए तआला के नज़्दीक उस जगह से बढ़ कर कोई जगह अज़मत और बुज़ुर्गी वाली नहीं है कि जहां अल्लाह के रसूल का विसाल हुआ है। इस गुफ्तगू के बाद तमाम सहाबए किराम हुजरए आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा में हुज़ूर को दफन करने पर मुत्तफिक़ हो गए और वही जगह क़ब्र शरीफ के लिये मुतअय्यन हो गई। (दुरूद शरीफ)

मिश्कात शरीफ में है हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना शरीफ में दो आदमी क़ब्र खोदा करते थे, एक उन में हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, जो मदीना शरीफ के रेवाज के मुताबिक़ लहद यानी बग़ली क़ब्र खोदा करते थे और दूसरे हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे जो बग़ली नहीं खोदते थे, बल्कि शक़ यानी संदूक़ी क़ब्र बनाते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के विसाल पर सहाबा में इख़्तिलाफ हुआ कि किस तरह की क़ब्र खोदी जाए, तो लोगों ने आपस में यह तैय किया कि दोनों साहिबों के पास आदमी भेजा जाए जो उन में से पहले आएगा वह अपना काम करेगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की या रब्बल आलमीन! क़ब्र के बारे में अपने प्यारे रसूल के लिये वह सूरत इख़्तियार फरमा जो तुझे महबूब व पसंदीदा हो। और क़ब्र खोदने वालों के पास बुलाने के लिये आदमी भेजे गए तो पहले हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए जो लहद खोदा करते थे तो उन्हों ने सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिये बग़ली क़ब्र तैयार की।

नमाज़े जनाज़ा

अअ़्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फतावा रज़विया जि0:4 में तहरीर फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जनाज़ए अक़्दस पर नमाज़ के बारे में फुक़हाए किराम की मुख़्तलिफ राएं हैं, बहुत से उलमा आम लोगों की नमाज़े जनाज़ा की तरह मानते हैं। वह फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दस्ते हक़ परस्त पर जब तक बैअ़त न हुई थी लोग फौज दर फौज हुजरए मुबारका में आते और जनाज़ए अक़्दस पर नमाज़ पढ़ते जाते, जब बैअ़त हो गई तो वलिए शरअ़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ हुए, उन्हों ने जनाज़ए मुबारका पर नमाज़ पढ़ी फिर उन के बाद किसी ने नहीं पढ़ी कि वली के पढ़ने के बाद फिर किसी को नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का इख़्तियार नहीं होता। और बाज़ लोग कहते हैं कि जिस तरह नमाज़े जनाज़ा आम तौर पर होती है, हुज़ूर की नमाज़े जनाज़ा उस तरह नहीं हुई बल्कि लोग गिरोह दर गिरोह हाज़िर होते और सलात व सलाम अर्ज़ करते जिस की ताईद हदीस शरीफ से भी होती है। बैहक़ी और तबरानी वग़ैरा में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि जब मेरे गुस्ल व कफन से फारिग़ हो जाओ तो मुझे नअ़्शे मुबारक पर रख कर बाहर चले जाओ, सब से पहले जिब्रील मुझ पर सलात करेंगे फिर मीकाईल फिर इस्राफील फिर मलकुल् मौत अपने सारे लश्करों के साथ और फिर गिरोह दर गिरोह मेरे पास हाज़िर हो कर मुझ पर दुरूद व सलाम अर्ज़ करते जाओ। इन्तहा कलामहू

जिस हुजरए मुबारका में विसाल हुआ, गुस्ल व कफन के बाद वहीं रखा गया, लोग हर चहार तरफ से नमाज़े जनाज़ा के लिये टूट पड़े लेकिन चूंकि हुजरए मुबारका में जगह कम थी इस लिये थोड़े-थोड़े करके पहले मर्द हाज़िर हुए फिर औरतें और फिर बच्चे। इस सबब से

दफ़न में भी ताख़ीर हुई जिस को बाज़ ना समझ दूसरी ग़लत बातों पर महमूल करते हैं।

बहरहाल सब लोग जब नमाज़े जनाज़ा या दुरूद व सलाम पढ़ चुके तो हज़रत अली, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत फज़ल बिन अब्बास और हज़रत कुस्म बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने आप के जिस्मे अक़्दस को क़ब्रे अनवर में उतार कर क़िब्ला रू दाहिने पहलू पर लिटाया। और बाज़ हदीस शरीफ की रिवायतों से मालूम होता है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा भी आप की क़ब्रे मुबारक में उतरे थे।

रब्बि उम्मती-उम्मती

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि आप की क़ब्रे मुबारक से जो आख़िर में निकले वह कुस्म बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। वह फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चेहरए अनवर की जब आख़िरी ज़ियारत हम ने की तो देखा कि आप के लबहाए मुबारक हिल रहे हैं, हम ने अपना कान क़रीब कर दिया तो सुना कि हुज़ूर *"रब्बि उम्मती-उम्मती"* फरमा रहे हैं।

कुर्बान जाइये अपने मेहरबान आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर कि वह हमेशा हम गुनहगारों की फिक्र में रहे, यहां तक कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि उम्मत के गुनाहों के ग़म से हुज़ूर कभी पूरी एक रात बिस्तर पर आराम से नहीं सोए। और कभी ऐसा होता कि रात-रात भर हम लोगों के लिये खुदाए तआला से दुआएं मांगने और बख़्शिश के इन्तिज़ार में रोते थे। अअ्ला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

अश्क शब भर इन्तिज़ारे अफ़्वे उम्मत में बहें
मैं फ़िदा और चांद यूं अख़्तर शुमारी वाह वाह

और एक शाइर यूं कहता है:

तुम्हारे ही लिये था ऐ गुनहगारो सियह कारो
वो शब भर जागना और रात भर रोना मुहम्मद का
(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम)

अगर काली घटा छा जाती तो हमारे मेहरबान आक़ा प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बेचैन हो जाते, कभी हुजरए मुबारका में आते और कभी मस्जिद में पहुंच कर उम्मत की हिफाज़त के लिये दुआ फरमाते। अगर आंधी आती तो बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ हो जाते, देर तक सर न उठाते, अज़ाब से मामून रहने की खुदाए तआला से दुआए करते और इस क़द्र रोते कि ज़मीन आंसुओं से तर हो जाती। ग़रज़ेकि हमेशा हमारी फिक्र में रहे कभी हम को फरामोश नहीं फरमाया। अपने हुजरए मुबारका में रहे तो वहां याद फरमाया, मस्जिद में तशरीफ लाए तो वहां याद फरमाया, जंगल व बियाबान में याद फरमाया, पहाड़ की घाटियों में याद फरमाया, यहां तक कि क़ब्रे अनवर में लिटाए गए तो वहां भी याद फरमाया।

ऐ खुदाए ज़ुल् जलाल! हम गुनहगारों की तरफ से हमारे मेहरबान आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूद व सलाम की डालियां निछावर फरमा। और क़ियामत के दिन हम सब को उन की शफाअत नसीब फरमा कर जहन्नम के अज़ाब से हिफाज़त फरमा और जन्नतुल फिरदौस में बेहतरीन जगह इनायत फरमा (एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)।

अश्अतुल् लमआत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल दो शंबा मबारका को हुआ और सह शंबा यानी मंगल का दिन गुज़र कर रात में सहाबए किराम आप की तजहीज़ व तक्फीन से फारिग़ हुए।

बुख़ारी शरीफ की रिवायत है कि जब सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को दफन कर दिया गया उस के बाद सहाबए किराम हज़रत फातिमा के पास बतौर तअ्ज़ियत आए, तो हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने फरमाया कि अनस! और ऐ सहाबा! तुम को यह कैसे गवारा हुआ कि तुम ने अल्लाह के रसूल पर मिट्टी डाल दी, सहाबा ने कहा ऐ फातिमा! (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) हम भी यही सोचते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम पर कैसे मिट्टी डालें लेकिन अल्लाह के फैसला और शरीअ़त का हुक्म से कोई चारए कार नहीं, इस लिये मजबूरन हम को ऐसा करना पड़ा। फिर हुज़ूर की जुदाई में सब लोग ज़ारो-क़तार रोए।

☆☆☆

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का ग़म

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात का असर यूं तो हर मुसलमान पर बहुत हुआ कि ऐसा मुसीबत का दिन उन्हों ने कभी देखा ही नहीं था। हदीस शरीफ में है, सहाबा फरमाते हैं कि जिस दिन हुज़ूर मदीना में तशरीफ लाए उस से अच्छा और पुरमसर्रत दिन हम ने मदीना शरीफ में कभी नहीं देखा कि इस शहरे मुबारक की हर चीज़ रौशन और ताबनाक हो गई और जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात हुई उस दिन से ज़्यादा अलमनाक और बुरा दिन हम ने मदीना तैय्यिबा में कभी नहीं देखा कि सब चीज़ों पर तारीकी छा गई, हर घर से रोने और गिर्या व ज़ारी की आवाज़ आती थी, पूरा मदीना शरीफ मातम कदा बना हुआ था लेकिन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा था कि उन का हुजरए मुबारका जिस में हुज़ूर का विसाल हुआ था दफन के बाद वह 'बैतुल् हुज़्न वल्-फिराक़' हो गया था कि शबो-रोज़ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा बैठी रोया करती थीं। और ख़ास कर हुज़ूर की लख़्ते जिगर, नूरे नज़र हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को बेइन्तिहा ग़म हुआ कि वह रात

भर और दिन भर हुज़ूर की जुदाई में आंसू बहाया करती थीं। हदीस शरीफ में है कि हुज़ूर के विसाल फरमाने के बाद कभी किसी ने उन को हंसते हुए नहीं देखा। (दुरूद शरीफ)

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि दफन के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप के सरहाने हाज़िर हुईं, मज़ारे मुबारक से थोड़ी मिट्टी उठा कर अश्क आलूद और आंसुओं से भरी हुई अपनी आंखों पर रखा और फरमायाः

مَاذَا عَلٰى مَنْ شَمَّ تُرْبَةَ اَحْمَدَ
اَنْ لَّا يَشُمَّ مَدَى الزَّمَانِ غَوَالِيَا

यानी क्या हरज होता है कि जो शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक को सूंघ ले तो वह कभी बेश क़ीमत ख़ुश्बू को न सूंघे। मतलब यह है कि हुज़ूर की तुर्बते अनवर से ऐसी ख़ुश्बू आ रही है कि जो शख़्स उसे सूंघ ले तो फिर किसी दूसरी ख़ुश्बू को सूंघने की उसे हाजत नहीं।

और फरमायाः

صُبَّتْ عَلَيَّ مَصَائِبُ لَوْاَنَّهَا
صُبَّتْ عَلَى الْاَيَّامِ صِرْنَ لَيَالِيَا

यानी मुझ पर ऐसी मुसीबतें आ गईं कि अगर यह मुसीबतें रोज़े रौशन पर आ जाएं तो वह मारे ग़म के रात बन जाए। (एक बार फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़िये।)

अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं

बाज़ लोगों का अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अब ज़िंदा नहीं बल्कि मर कर मिट्टी में मिल गए, जैसा कि वहाबियों देवबंदियों के पेश्वा मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब तक्वियतुल् ईमान सफ्हा:42 पर लिखा है, मगर यह अकीदा मज़हबे हक़ अहले सुन्नत व जमाअत के ख़िलाफ है और बातिल है।

हदीस शरीफ की मोअ्तमद और मशहूर किताब मिश्कात शरीफ सफ्हा:121 पर है: إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ यानी सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने ज़मीन पर अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम के जिस्मों को खाना हराम फरमा दिया है। लिहाज़ा अल्लाह के नबी ज़िंदा हैं, रिज़्क़ दिये जाते हैं।

अश्अ़तुल् लमआ़त:1/576 पर इस हदीस शरीफ की शरह में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि *"पैग़म्बरे ख़ुदा ज़िंदा अस्त ब हक़ीक़ते हयाते दुन्यावी"* यानी खुदाए तआ़ला के नबी दुनियावी ज़िंदगी की हक़ीक़त के साथ ज़िंदा हैं।

और मिर्क़ात:2/212 पर रईसुल् मोहद्दिसीन हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि لَا فَرْقَ لَهُمْ فِي الْحَالَيْنِ وَلِذَا قِيْلَ أَوْلِيَاءُ اللّٰهِ لَا يَمُوْتُوْنَ وَلٰكِنْ يَنْتَقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ إِلٰى دَارٍ यानी अंबियाए किराम की क़ब्ले विसाल और बादे विसाल की ज़िंदगी में कोई फर्क़ नहीं। इसी लिये कहा जाता है कि महबूबाने खुदा मरते नहीं बल्कि एक दार से दूसरे दार यानी एक घर से दूसरे घर की तरफ मुन्तक़िल हो जाते हैं।

और हदीस की इसी मशहूर किताब मिश्कात शरीफ सफ्हा:120 पर अबू दाऊद, नसाई, दारमी, बैहक़ी और इब्ने माजा यानी हदीस की पांच मोअ्तमद किताबों से रिवायत है إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर खाना हराम फरमा दिया है।

रईसुल् मोहद्दिसीन हज़रत मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि मिर्क़ात:2/209 पर इसी हदीस की शरह में तहरीर फरमाते हैं إِنَّ الْأَنْبِيَاءَ فِي قُبُوْرِهِمْ أَحْيَاءٌ यानी अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अपनी

क़ब्रों में ज़िंदा हैं।

और सैय्यिदुल् मोहक़्क़िक़ीन हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अश्अ़तुल् लमआ़त:1/574 पर इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं कि *"हयाते अंबिया मुत्तफ़क़ अ़लैह अस्त हेच कस रा दर वेय ख़िलाफ़े नीस्त हयाते जिस्मानी दुन्यावी हक़ीक़ी न हयाते मअ़नवी रूहानी चुनां कि शुहदा रास्त"* अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं और उन की ज़िंदगी सब मानते आए हैं, किसी को इस में इख़्तिलाफ़ नहीं है। उन की ज़िंदगी जिस्मानी हक़ीक़ी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ़ मअ़नवी और रूहानी नहीं है।

हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ की इस शरह से यह भी मालूम हुआ कि उन के ज़मानए हयात ग्यारहवीं सदी हिज्री तक यह मस्अला मुत्तफ़क़ अलैह रहा कि अंबियाए किराम बादे विसाल भी ज़िंदा रहते हैं, इस में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं। यानी जो लोग कि अंबियाए किराम को ज़िंदा नहीं मानते चाहे वह देवबंदी हों या वहाबी उन का मज़हब और उन का अक़ीदा नया है। अहले सुन्नत वल जमाअ़त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के फ़रमाने के मुताबिक़ हमेशा यही अक़ीदा रखते रहे कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं और रोज़ी दिये जाते हैं।

और ज़ाहिर है कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अगर बादे वफ़ात ज़िंदा न होते और मर कर मिट्टी में मिल गए होते (मआ़ज़ल्लाहि तआ़ला) तो मेअ़राज की रात हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिये बैतुल मुक़द्दस में कैसे आते। मालूम हुआ कि बेशक अंबियाए किराम अ़लैहिमस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं। एक बार हम सब मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ें।

और यह भी ख़ूब अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि

अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी जिस्मानी हक़ीक़ी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ मअ्नवी और रूहानी नहीं है। यही वजह कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम का तरका नहीं तक़्सीम किया जाता और न उनकी बीवियां दूसरे से निकाह कर सकती हैं। और शहीदों का तरका तक़्सीम होता है और उन की बीवियां इद्दत गुज़ारने के बाद दूसरे से निकाह कर सकती हैं।

और यह भी वाज़ेह रहे कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी बरज़ख़ी नहीं है बल्कि दुनियावी है, बस फर्क़ सिर्फ इतना है कि वह हम जैसे लोगों की निगाहों से ओझल हैं जैसा कि नूरुल् ईज़ाह की शरह मराकिउल फलाह मअ् तहतावी मतबूआ मिस्र सफ्हा:447 में हज़रत हसन शुरुंबलानी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं: وَمِمَّا هُوَ مُقَرَّرٌ عِنْدَ الْمُحَقِّقِيْنَ اَنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَیٌّ يُرْزَقُ مُتَمَتِّعٌ بِجَمِيْعِ الْمَلَاذِّ وَالْعِبَادَاتِ غَيْرَ اَنَّهٗ حُجِبَ عَنْ اَبْصَارِ الْقَاصِرِيْنَ عَنْ شَرِيْفِ الْمَقَامَاتِ यानी यह बात अर्बाबे तहक़ीक़ के नज़्दीक साबित है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम (हक़ीक़ी दुनियावी ज़िंदगी के साथ) ज़िंदा हैं, उनपर रोज़ी पेश की जाती है, सारी लज़्ज़त वाली चीज़ों का मज़ा और इबादतों का सुरूर पाते हैं, लेकिन जो लोग कि बुलंद दर्जों तक पहुंचने से क़ासिर हैं उन की निगाहों से ओझल हैं।

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

और शहाबुल उलूम हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फाजी अलैहिर रहमत नसीमुर रियाज़ शर्ह शिफा क़ाज़ी अ़याज़ 1/196 में तहरीर फरमाते हैं: اَلْاَنْبِيَاءُ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ اَحْيَاءٌ فِیْ قُبُوْرِهِمْ حَيَاةً حَقِيْقَةً यानी अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम हक़ीक़ी ज़िंदगी के साथ अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं।

और रईसुल मोहद्दिसीन हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि मिर्क़ात शर्ह मिश्कात:1/484 में तहरीर फरमाते हैं: لَـــاَ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيٌّ يُرْزَقُ وَيُسْتَمَدُّ مِنْهُ الْمَدَدُ الْمُطْلَقُ यानी बेशक हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़िंदा और बा हयात हैं, उन्हें रोज़ी पेश की जाती है और उन से हर क़िस्म की मदद तलब की जाती है।

और सैय्यिदुल् मोहक़्क़िक़ीन हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि अपने मक्तूब *"सुलूक अक़रबुस् सुबुल बित्तवज्जुहि इला सैय्यिदिर रुसुल" मअ् अख़्बारिल अख़्यार मतबूआ रहीमिया देवबन्द सफ़्हा:161 में फरमाया कि "बा चंदीं इख़्तिलाफ व कस्रते मज़ाहिब कि दर उलमाए उम्मत अस्त यक कस् रा दरीं मस्अला ख़िलाफे नीस्त कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बहक़ीक़ीते हयात बे शाइबा मजाज़ व तवहहुम तावीले दाइम व बाक़ी अस्त व बर आमाले उम्मत हाज़िर व नाज़िर व मर तालिबाने हक़ीक़त रा व मुतवज्जिहाने आं हज़रत रा मुफीज़ व मुरब्बी"* यानी उलमाए उम्मत में इतने इख़्तिलाफात व कस्रत मज़ाहिब के बा वजूद किसी शख़्स को इस मस्अले में कोई इख़्तिलाफ नहीं है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हयाते (दुनियावी) की हक़ीक़त के साथ क़ाइम और बाक़ी हैं। इस हयाते नबवी में मजाज़ की आमेज़िश और तावील का वहम नहीं है। और उम्मत के आमाल पर हाज़िर व नाज़िर हैं। नीज़ तालिबाने हक़ीक़त के लिये और उन लोगों के लिये कि आं हज़रत की जानिब तवज्जोह रखते हैं हुज़ूर उन को फैज़ बख़्शने वाले और उन के मुरब्बी हैं।

और पारा:23 आख़िरी रुकूअ् की आयते करीमा إِنَّكَ مَيِّتٌ में जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिये मौत आने का ज़िक्र फरमाया गया है तो इस से मुराद इस आलमे दुनिया से मुन्तक़िल होना है और अहादीसे करीमा व अक़्वाले अइम्मा में हयात से बाद विसाल की हक़ीक़ी ज़िंदगी मुराद है। (एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)।

हयाते अंबिया अलैहिमुस्सलाम वाक़िआत की रौशनी में

बिरादराने मिल्लत! आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और दीगर अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम बादे विसाल ज़िंदा हैं। इस के बारे में अहादीसे करीमा और अइम्मए इज़ाम के बहुत से अक़्वाल आप लोगों ने सुन लिया। अब हम चन्द वाक़िआत बयान करते हैं जिन से यह बात अच्छी तरह वाज़ेह और रौशन हो जाएगी कि नबी बादे विसाल ज़िंदा रहता है मरता नहीं है।

अल्लामा समहूदी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि अपनी मशहूर किताब "वफ़ाउल् वफ़ा बि- अख़्बारि दारिल् मुस्तफ़ा"1/466 में तहरीर फ़रमाते हैं कि सुल्तान नूरुद्दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह जो आदिल बादशाह और बड़े मुत्तक़ी थे, उन की रात का बहुत सा हिस्सा तहज्जुद और वज़ीफ़े में ख़र्च होता था। 557 ई0 में एक रात जब कि तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के बाद वह सोए तो ख़्वाब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत उन को नसीब हुई, सरकार ने दो कैरी आंख वालों की तरफ़ इशारा करते हुए बादशाह से इरशाद फ़रमाया कि इन दोनों से मेरी हिफ़ाज़त करो, बादशाह घबरा कर उठे, वज़ू किया और जब कुछ नवाफ़िल पढ़ कर दोबारा सोए तो फिर बिऐनिही वही ख़्वाब देखा कि हुज़ूर फ़रमा रहे हैं कि इन दोनों से मेरी हिफ़ाज़त करो। बादशाह फिर बेदार हो गए, वज़ू किया और तीसरी बार कुछ नवाफ़िल पढ़ कर सोए तो फिर वही ख़्वाब देखा, उठ कर फ़रमाया कि अब नीन्द की कोई गुंजाइश नहीं, रात ही को फ़ौरन अपने वज़ीर को बुलाया जो नेक और सालिह आदमी थे, नाम जमालुद्दीन बताया जाता है, उन को सारा क़िस्सा सुनाया, वज़ीर ने कहा अब ताख़ीर का मौक़ा नहीं है, फ़ौरन मदीना मुनव्वरा चलिये मगर इस ख़्वाब का ज़िक्र किसी से न कीजिये। बादशाह ने फ़ौरन रात ही को तैयारी की, वज़ीर और 20 मख़्सूस ख़ादिमों को साथ लेकर तेज़ रफ़्तार

ऊंटनियों पर बहुत सामान और माल व मताअ़ लदवा कर मदीना मुनव्वरा के लिये रवाना हो गए और दिन रात चलते रहे यहां तक कि सोलहवें रोज़ मिस्र से मदीना तैय्यिबा पहुंचे, शहर से बाहर गुस्ल किया और निहायत अदब व ऐहतिराम से मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए, जन्नत की कियारी में दो रकअ़त नमाज़ नफ्ल पढ़ी और हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हो कर सलात व सलाम अर्ज़ किया फिर निहायत मुतफिक्कर हो कर बैठे सोचते रहे कि अब क्या करें? वज़ीर ने ऐलान किया कि बादशाह नूरुद्दीन ज़ियारत के लिये आए हैं और बहुत सा माल अपने हमराह यहां के लोगों पर तक़्सीम करने के लिये लाए हैं। लिहाज़ा सब लोग उन से मुलाक़ात करें। इस ऐलान के बाद लोगों की आमद शुरू हो गई। बादशाह हर आने वाले को निहायत गहरी निगाह से देखते रहे। सब लोग यके बाद दीगरे बादशाह से मुलाक़ातें कीं और अ़ताएं लेकर चले गए मगर कैरी आंख वाले वह दो शख़्स कि जिन को ख़्वाब में देखा था नज़र न आए। बादशाह ने कहा कि और कोई बाक़ी रह गया हो तो उस को भी बुला लिया जाए। मालूम हुआ कि अब कोई नहीं बाक़ी रह गया है। मगर बादशाह के बार-बार कहने पर लोगों ने बहुत ग़ौर व खोज़ किया तो कहा कि दो नेक मर्द निहायत मुत्तक़ी और परहेज़गार मग़्रिबी बुजुर्ग हैं वह किसी से कोई चीज़ नहीं लेते बल्कि खुद ही बहुत कुछ सदक़ात व ख़ैरात अहले मदीना पर करते रहते हैं, गोशा नशीन लोग हैं, सब से अलग थलग रहते हैं। बादशाह ने उन दो आदमियों को भी बुलवाया और जब वह आए तो देखते ही पहचान लिया कि यही वह दो आदमी हैं जो ख़्वाब में दिखलाए गए थे। बादशाह ने उन लोगों से पूछा कि तुम कौन हो? उन लोगों ने कहा कि हम मग़्रिब के बाशिन्दे हैं, हज के लिये आए हुए थे, उस से फारिग़ होकर मदीना तैय्यिबा ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पड़ोस में रहने की तमन्ना हुई तो यहां ठहर गए, बादशाह ने कहा सही-सही बता दो, उन्हों ने जो

पहले कहा फिर उसी जवाब को दोहराया, बादशाह ने सही बात बताने पर बहुत इस्रार किया मगर उन लोगों ने कुछ और नहीं बताया बल्कि हर बार यही कहते रहे कि हम लोग हज के लिये आए थे फिर ज़ियारत के लिय हाज़िर हुए और कुछ रोज़ के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के पड़ोस में कि़याम कर लिया, बादशाह ने उन की कि़यामगाह दरियाफत की, मालूम हुआ कि रौज़ए मुबारक के क़रीब ही एक रिबात में रहते हैं। बादशाह ने हुक्म दिया कि इन दोनों को यहीं रोके रखें और खुद उन की कि़यामगाह पर गए, वहां पहुंच कर बहुत कुछ देखा भाला तो माल व मताअ़् बहुत सा मिला और किताबें भी रखी हुई मिलीं लेकिन कोई ऐसी चीज़ नहीं मिली जिस से ख़्वाब के मज़मून की ताईद होती।

बादशाह बहुत परेशान और मुतफक्किर था कि ख़्वाब सच है, यह दोनों आदमी वही हैं जो ख़्वाब में दिखलाए गए लेकिन इनके हालात से मामले का कोई सुराग़ नहीं मिलता। और मदीना तैय्यिबा के लोगों का हाल यह था कि बहुत से लोग सिफारिश के लिये आए और बयान दिया कि यह दोनों नेक बुजुर्ग दिन भर रोज़ा रखते हैं, हर नमाज़ जन्नत की कियारी में पढ़ते हैं, हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर होकर सलात व सलाम अर्ज़ करते हैं, रोज़ाना जन्नतुल बक़ीअ़् की ज़ियारत करते हैं, हर सनीचर मस्जिदे कुबा जाते हैं, किसी साइल को बग़ैर कुछ दिये हुए वापस नहीं करते। इस क़हत के साल में इन्हों ने मदीना शरीफ वालों के साथ बहुत हमदर्दी और ग़मगुसारी की है, बादशाह उन के हालात सुन कर तअ़ज्जुब करते थे और उन की कि़यामगाह में इधर उधर मुतफिक्कर फिर रहे थे, यका यक उन के मुसल्ले को उठाया जो एक चटाई पर बिछा हुआ था और चटाई के नीचे एक पत्थर बिछा हुआ था, जब उस को उठाया गया तो उस के नीचे एक सुरंग ज़ाहिर हुई जो बहुत गहरी खोदी गई थी और बहुत दूर तक चली गई थी यहां तक कि हुज़ूर की क़ब्रे अनवर तक पहुंच गई थी, यह देख कर सब लोग दंग रह

गए, बादशाह ने उन को इन्तिहाई गुस्से में कांपते हुए मारना शुरू किया और कहा कि सही-सही वाक़िआ बताओ, उन लोगों ने बताया कि वह दोनों नस्रानी हैं, ईसाई बादशाहों ने उन को बहुत सा माल दिया है और आइन्दा बहुत ज़्यादा देने का वादा किया है, हम लोग हाजियों की सूरत बना कर इस लिये आए हैं ताकि क़ब्रे अनवर से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक को निकाल ले जाएं, हम दोनों रात को यह जगह खोदते थे और जो मिट्टी निकलती थी उस को चमड़े की दो मश्कों में भरकर रात ही जन्नतुल बक़ीअ़ में डाल आया करते थे।

बादशाह इस बात पर कि खुदाए अ़ज़्ज़ व जल् ने और उस के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इस ख़िदमत के लिये उन को मुन्तख़ब किया बहुत रोए। उन दोनों को क़त्ल कराया और हुजरए मुबारका के चारों तरफ इतनी गहरी ख़न्दक़ खुदवाई कि पानी निकल आया फिर उस ख़न्दक़ को रांगा या सीसा पिघला कर भरवा दिया ताकि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक तक कभी किसी की रसाई न हो सके। (एक बार हम सब मिल कर उस ज़िंदा नबी पर ज़िंदा दिली के साथ दुरूद शरीफ का नज़्राना पेश करें।)

इस वाक़िआ से रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हमारे आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ज़िंदा हैं अगर वह (मआ़ज़ल्लाह सद बार मआ़ज़ल्लाह) मर कर मिट्टी में मिल गए होते जैसा कि वहाबियों और देबन्दियों का अ़क़ीदा है तो बादशाह नूरुद्दीन को विसाल के तक़रीबन साढ़े पांच सौ साल बाद हिफाज़त का हुक्म देने का सवाल ही नहीं पैदा होता। साबित हुआ कि अल्लाह के रसूल ज़िंदा हैं और वहाबियों और देबन्दियों का अक़ीदा बातिल है। और यह भी मालूम हुआ कि नस्रानियों का भी यह अक़ीदा है कि अल्लाह का नबी विसाल फरमाने

के बाद मिट्टी में नहीं मिल जाता वरना कई सौ साल बाद वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे अक़्दस को निकाल कर ले जाने का प्रोग्राम न बनाते।

एक सवाल और उस का जवाब

रहा यह सवाल कि हमारे अक़ीदे के मुताबिक़ जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ख़ुद दूसरों की मदद करते हैं और मुश्किलें हल फरमाते हैं तो उन्हों ने अपनी हिफाज़त के लिये बादशाह नूरुद्दीन से क्यों कहा और नसानियों को ख़ुद ही क्यों नहीं हलाक कर दिया और जब वह ख़ुद अपनी हिफाज़त नहीं कर सकते और अपने दुश्मनों को हलाक नहीं कर सकते तो वह दूसरों की मदद क्या कर सकते हैं? तो इस सवाल का जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल की अ़ता की हुई ताक़त से अपनी हिफाज़त फरमा सकते थे और बादशाह नूरुद्दीन की मदद के बग़ैर उन के दुश्मन हलाक हो सकते थे, जैसा कि इसी किताब वफाउल् वफा:1/471 में एक दूसरा वाक़िआ़ दर्ज है कि हलब की एक जामअ़त से मदीना का एक हाकिम मिल गया और बहुत सा माल रिश्वत लेकर उन को हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के जिस्मे मुबारक को निकाल ले जाने की इजाज़त दे दी और जब वह लोग ज़मीन खोदने के बहुत से हथियार लेकर बाबुस् सलाम से अन्दर दाख़िल हुए और हुजरह शरीफ की तरफ चले तो हज़रत शैख़ शमसुद्दीन सव्वाब रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह जो ख़ादिमैन हरमे नबवी के अफ्सर थे और इस वाक़िआ़ के रावी हैं वह फरमाते हैं وَاللّٰهِ مَا وَصَلُوا الْمِنْبَرَ حَتّٰى ابْتَلَعَتْهُمُ الْاَرْضُ جَمِيْعَهُمْ بِجَمِيْعِ مَا كَانَ مَعَهُمْ مِنَ الْاٰلَاتِ وَلَمْ يَبْقَ لَهُمْ اَثَرٌ यानी ख़ुदा की क़सम वह लोग अभी मिम्बर शरीफ तक भी न पहुंचे थे कि अचानक उन को और उनके सारे साज़ व सामान को ज़मीन निगल गई और उन का नाम व निशान मिट गया।

तो इसी तरह वह दोनों नस्रानी भी हलाक हो सकते थे, मगर अल्लाह व रसूल (अज़्ज़ व जल्ल व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) बादशाह नूरुद्दीन की किसी नेकी पर सारी दुनियाए इस्लाम में उनके नाम को रौशन व मुनव्वर फरमाना चाहते थे और आख़िरत में उन को मर्तबए जलीला पर फाइज़ करना चाहते थे, इस लिये यह ख़िदमत उन के सुपुर्द फरमाई।

तेकिन अगर अब भी कोई बद बख़्त ना माने और यही बकता रहे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अपने दुश्मनों के हलाक करने की ताक़त नहीं थी इस लिये बादशाह नूरुद्दीन से हलाक करवाया, तो उस बद बख़्त को यह भी मानना पड़ेगा कि अल्लाह तआला को भी अपने महबूब के दुश्मनों को हलाक करने की ताक़त नहीं थी इस लिये वह खुद हलाक नहीं कर सका बल्कि दूसरे से हलाक करवाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बादे विसाल भी ज़िंदा हैं, इस सिलसिले में एक वाक़िआ और समाअ़त फरमाइये। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब अल-हावी में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत सैय्यद अहमद रिफाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो मश्हूर बुज़ुर्ग अकाबिरे सूफिया में से हैं उन का वाक़िआ मशहूर है कि जब वह 555 हि० में हज से फारिग़ हो कर सरकार आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुए और क़ब्रे अनवर के सामने खड़े हुए तो यह दो शेअ्र पढ़े:

فِیْ حَالَۃِ الْبُعْدِ رُوْحِیْ کُنْتُ اُرْسِلُهَا
تُقَبِّلُ الْاَرْضَ عَنِّیْ وَهِیَ نَائِبَتِیْ

यानी मैं दूर होने की हालत में अपनी रूह को ख़िदमते मुबारका में भेजा करता था जो मेरी नाइब बन कर हुज़ूर के आस्तानए मुक़द्दस को चूमा करती थी।

وَهٰــذِهٖ دَوْلَةُ الْاَشْبَــاحِ قَــدْ حَــضَــرَتْ
فَــامْــدُدْ يَمِيْنَكَ كَيْ تَحْظٰى بِهَا شَفَتِيْ

यानी अब जिस्मों की हाज़िरी का वक़्त आया है, लिहाज़ा अपने दस्ते अक़्दस को अता फरमाइये ताकि मेरे होंट उस को चूमें।

हज़रत सैय्यद अहमद रिफाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह की इस अर्ज़ पर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि ने क़ब्रे अनवर से अपने दस्ते मुबारक को बाहर निकाला जिस को उन्हों ने चूमा।

"अल-बुनयानुल् मुशय्यिद" में है कि उस वक़्त कई हज़ार का मजमअ् मस्जिदे नबवी में था जिन्हों ने इस वाक़िआ को देखा और हुज़ूर के दस्ते अक़्दस की ज़ियारत की। उन लोगों में महबूबे सुब्हानी हज़रत शैख़ै अब्दुल क़ादिर जीलानी यानी ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी भी ज़िक्र किया जाता है। खुलासए कलाम यह है किः

अंबिया को भी मौत आनी है — मगर ऐसी कि फक़त आनी है
बस उसी आन के बाद उनकी हयात — मिस्ल साबिक़ वही जिस्मानी है

औलियाउल्लाह भी ज़िन्दा हैं

वहाबियों देबन्दियों को तो अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी के बारे में भी कलाम है यहां तक कि सैय्यिदुल अंबिया और नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा के बारे में यह अक़ीदा रखते हैं कि वह मर कर मिट्टी में मिल गए। हालां कि औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की गुलामी में यह मर्तबा मिला कि वह बादे वफात ज़िंदा रहते हैं, सुबूत के लिये बर वक़्त सिर्फ दो वाक़िआ समाअत फरमाएं।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं उन का वाक़िआ आरिफ बिल्लाह हज़रत मौलाना रूम

रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मस्नवी शरीफ के दफ्तर चहारुम में तहरीर फरमाते हैं कि एक रोज़ बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने मुरीदों के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे कि अचानक शहरे रेय के इलाके में ख़रक़ान की तरफ से उन्हें ख़ुश्बू महसूस हुई, हज़रत उस ख़ुश्बू से इस क़द्र मस्त हुए कि चेहरे का रंग कभी सुर्ख़ होता था और कभी सफेद। एक मुरीद ने अर्ज़ किया हुज़ूर क्या मामला है कि मैं हज़रत के चेहरे का रंग बदलता हुआ पाता हूं? फरमाया कि इस तरफ से एक दोस्त की ख़ुश्बू आ रही है कि जहां दर्जए विलायत व कुतबिय्यत का एक बहुत बड़ा बादशाह इतने साल के बाद फुलां तारीख़ को तशरीफ लाने वाला है, किसी ने पूछा कि उन का नाम क्या है? फरमाया कि उन का नाम अबुल हसन है, फिर सर से लेकर पांव तक उन का पूरा हुलिया बयान फरमाया।

हज़रत के बयान के मुताबिक़ अबुल हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की तारीख़े पैदाइश को नोट कर लिया और जब हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की वफात के बाद वही तारीख़ आई तो ख़रक़ान में हज़रत अबुल हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह पैदा हुए (और सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे) तो लोगों ने उन से बयान किया कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी फरमाया करते थे कि अबुल हसन मेरा अक़ीदत मन्द होगा और मेरी क़ब्र पर आकर मुझ से फैज़ हासिल करेगा। आप ने फरमाया कि मैं ने भी इसी मज़मून का ख़्वाब देखा है, फिर रोज़ाना सुबह के वक़्त हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की क़ब्रे मुबारक के पास हाज़िर होते और चाश्त के वक़्त तक उन के मज़ार के सामने बाअदब खड़े रहते और फैज़ हासिल करते।

एक रोज़ सुबह के वक़्त जबकि आप उस क़ब्रिस्तान में तशरीफ ले गए कि जहां हज़रत का मज़ार था तो देखा कि सारी क़ब्रें बर्फ से छुपी हुई हैं, आप हज़रत की क़ब्रे मुबारक को पहचान नहीं सके जिस के

सबब बहुत परेशान हुए तो फिर उस के बाद क्या हुआ? इसे मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ज़बान से सुनियेः

बांगश आमद अज़ हज़ीरए शेख़ हय्य

هَــــاأَنَـــا أَدْعُــوْكَ كَــيْ تَسْــعٰــي إِلَــيَّ

यानी अचानक बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो ज़िंदा हैं उनकी क़ब्रे मुबारक से आवाज़ आई कि मैं तुम्हें पुकारता हूं तुम मेरी तरफ आओ।

बेशक बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह वफात के बाद भी ज़िंदा हैं। अगर वह मर कर मिट्टी में मिल गए होते और ज़िंदा न होते तो उन की क़ब्रे मुबारक से इस तरह की आवाज़ हरगिज़ न आती।

हयाते जाविदां पाता है 'आसी'
क़तीले तैग़ आबरूए मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

(एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से फिर दुरूद शरीफ पढ़ें)

औलियाए किराम भी बादे विसाल ज़िंदा रहते हैं, इस सिलसिले में दूसरा वाक़िआ यह समाअत फरमाएं। हज़रत मख़्दूम अशरफ जहांगीर समनानी कछौछवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के तज़्किरे में लिखा है कि जब अपने पीर व मुरशिद हज़रत अलाउल हक़ वद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह के आस्तानए मुबारका "पंडोह शरीफ" की हाज़िरी के लिये गुलबरगा शरीफ (दकन) से रवाना हुए तो जिस रोज़ सूबए बिहार में मुनीर शरीफ के क़रीब पहुंचे उसी रोज़ हज़रत शर्फुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का विसाल हुआ। वफात से कुछ पहले उन्हों ने वसिय्यत फरमाई थी कि एक सैय्यद सहीहुन नसब जो तारिके सल्तनत हैं और सातों क़िराअत के हाफिज़ हैं वह अन्क़रीब आने वाले हैं, वही मेरी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएंगे, हज़रत का विसाल हो गया और जनाज़ा भी तैयार हो गया मगर जिनके बारे में हज़रत ने वसिय्यत

फरमाई थी वह नहीं पहुंचे तो शेख़ जिलाई नाम के एक शख़ आप की तलाश में निकले, जब आबादी के बाहर पहुंचे तो उन्हें दूर से एक क़ाफिला आता हुआ नज़र आया, क़ाफिला क़रीब पहुंचा तो शेख़ जिलाई आप को तलाश करने लगे, लोगों की भीड़ में उन को ऐसा चेहरा नज़र आया कि जिन की पेशानी में नूरे विलायत जगमगा रहा था, पूछा कि हुज़ूर सैय्यिद हैं? फरमाया कि हां। फिर सातों क़िराअत के हाफिज़ होने और तर्के सल्तनत के बारे में दरियाफत किया, जब इत्मीनान हो गया कि आप ही के बारे में हज़रत ने वसिय्यत फरमाई है तो बड़े ऐजाज़ व इक्राम के साथ आप को लाए और हस्बे वसिय्यत हज़रत की नमाज़े जनाज़ा आप ने पढ़ाई और वह दफन कर दिये गए।

कुछ वक़्फा बाद मख़दूम साहब को इत्तिलाअ् मिली कि हज़रत शरफुद्दीन मुनीरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का मुबारक हाथ क़ब्र शरीफ से बाहर निकल आया है और बहुत से लोग वहां जमा हो गए हैं मगर किसी की समझ में नहीं आता कि मामला क्या है। हज़रत मख़दूम साहब मज़ार शरीफ के पास पहुंचे, जब क़ब्र के बाहर निकले हुए हाथ को देखा तो आप ने वहीं बैठ कर मुराक़बा फरमाया और जब सर उठाया तो लोगों को बताया कि हज़रत शेख़ मुनीरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को मर्दाने ग़ैब से एक टोपी मिली थी जिस के बारे में हज़रत ने वसिय्यत फरमाई थी कि वह मेरे साथ क़ब्र में रख दी जाए मगर आप लोग भूल गए। हज़रत शेख़ उसी टोपी को तलब फरमा रहे हैं, लोगों ने तस्दीक़ की कि वाक़ई हज़रत ने टोपी के मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत फरमाई थी कि वह मेरे साथ क़ब्र में रख दी जाए जिसे हम लोग भूल गए, अब वह टोपी लाई गई और जब हज़रत शेख़ के मुबारक हाथ पर रखी गई तो आप ने फौरन अपना हाथ अन्दर कर लिया।

यह वाक़िआ़ भी बबांगे दुहल ऐलान कर रहा है कि औलियाए किराम भी बादे विसाल ज़िंदा रहते हैं अगर ज़िंदा न रहते तो हज़रत

शरफुद्दीन यह्या मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह दफन के बाद क़ब्र से बाहर हाथ न निकालते। और औलियाए किराम क्यों न ज़िंदा रहें कि वह तो अल्लाह ही के नाम पर मरते हैं और जो अल्लाह तआ़ला के नाम पर मरते हैं वह हमेशा ज़िंदा रहते हैं।

एक शाइर कहता हैः

ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर
अल्लाह! अल्लाह! मौत को किस ने मसीहा कर दिया

तक़रीर बहुत तवील हो गई, बस दुआ़ है कि ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल हम सब को मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त पर क़ाइम रखे और गुमराही से बचने की तौफीक़े रफीक़ अता फरमाए। आमीन

بحرمة النبی الکریم الامین علیہ وعلی آلہ افضل الصلوۃ واکمل التسلیم

बिहुर्मतिन् नबिय्यिल करीमिल् अमीन
अ़लैहि व अ़ला आलिही अफ्ज़लुस् सलाति
व अक्मलुत् तस्लीम।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمدلله الذى هدانا الى الصراط المستقيم والصلوة والسلام على من اختص بالخُلُقِ العَظِيم وعلى اله واصحابه الذين قاموا بنصرة الدين القويم۔ اما بعد فقد قال الله تعالى فى كتابه العظيم، اعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم بسم الله الرحمٰن الرحيم ۔ وَالَّذِىْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ٥(پ:١٤،ع:١)صدق الله العلى العظيم وبلغنا رسوله النبى الامين وعلى اله افضل الصلوات والتسليم۔

एक बार आप तमाम हज़रात बुलंद आवाज़ से प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरूदो-सलाम का नज़राना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى ال سيدنا ومولانا محمد معدن الجود والكرم وعلى اله واصحابه وبارك وسلم۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव् व अ़ला आलि
सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन् मअ़्दनिल् जूदि वल्करम
व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

एक बाकमाल उस्ताद को जो बहुत सी ख़ूबियों का जामेअ़् होता है अपने जिस शागिर्द में जिस ख़ूबी की मुमताज़ सलाहियत पाता है उसी ख़ूबी में उसे बाकमाल बनाता है, जिस में फक़ीह बनने की ज़्यादा सलाहियत पाता है उसे फक़ीह बनाता है, जिस में मुक़र्रिर बनने की सलाहियत वाज़ेह होती है उसे कामयाब मुक़र्रिर बनाता है और जिस में मुसन्निफ बनने की सलाहियत ग़ालिब होती है उसे बाकमाल मुसन्निफ ही बनाता है तो हमारे आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम ने अपने जिस सहाबी में जिस ख़ूबी की मुमताज़ सलाहियत पाई उसी वस्फे ख़ास में उसे क़ामिल बनाया। लिहाज़ा अपने प्यारे सहाबी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में सिद्दीक़ बनने की सलाहियत को वाज़ेह तौर पर महसूस फरमाया तो उसी वस्फ में उन को मुमताज़ व कामिल

बनाया। और सिद्दीक़ होना ऐसा वस्फ़ है जो बहुत सी ख़ूबियों का जामेअ् है और इस वस्फे ख़ास के सब से ज़्यादा मुस्तहिक़ सिर्फ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी थी इसी लिये वह इस से सरफराज़ फरमाए गए।

अस्दकुस् सादिक़ीन सैय्यिदुल् मुत्तक़ीन
चश्म व गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

आप की ख़िलाफत

आक़ाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की वफात के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि उन का नाइब और ख़लीफा किस को मुक़र्रर किया जाए? हदीस शरीफ की मशहूर किताब बैहक़ी में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत कि ख़िलाफत के मामले को हल करने के लिये सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर जमा हुए, जिन में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा और दूसरे बहुत से अजिल्लाए सहाबा मौजूद थे।

सब से पहले एक अन्सारी खड़े हुए और उन्हों ने लोगों से इस तरह ख़िताब किया कि ऐ मुहाजिरीन! आप लोगों को मालूम है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम आप में से किसी शख़्स को कही आमिल मुक़र्रर फरमाते थे तो अन्सार में से भी एक शख़्स को उस के साथ कर दिया करते थे। लिहाज़ा इसी तरह हम चाहते हैं कि ख़िलाफत के मामले में भी एक शख़्स मुहाजिरीन में से हो और एक अन्सार में से हो। फिर एक दूसरे अन्सारी खड़े हुए और उन्हों ने भी इसी क़िस्म की तक़रीर फरमाई।

इन लोगों की तक़रीरों के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और उन्हों ने फरमाया, हज़रात! क्या आप लोगों को मालूम नहीं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम

मुहाजिरीन में से थे लिहाज़ा उन का नाइब और ख़लीफा भी मुहाजिरीन ही में से होगा और जिस तरह हम लोग पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के मुआ़विन व मददगार रहे अब उसी तरह ख़लीफए रसूल के मददगार रहेंगे यह फरमाने के बाद उन्हों हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा कि अब यह तुम्हारे वाली हैं और फिर हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने आप से बैअ़त की, इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने और फिर तमाम अन्सार व मुहाजिरीन ने आप से बैअ़त की।

इस के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मिम्बर पर रौनक़ अफ्रोज़ हुए और एक निगाह डाली तो उस मजमअ़ में हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को नहीं पाया, फरमाया कि उन को बुलाया जाए, जब हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु आए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उन से फरमाया कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की फूफी के साहिबज़ादे और हुज़ूर के ख़ास सहाबियों में से हैं, मुझे उम्मीद है कि आप मुसलमानों में इख़्तिलाफ नहीं पैदा होने देंगे। यह सुन कर उन्हों ने कहा कि ऐ ख़लीफए रसूलुल्लाह! आप कोई फिक्र न करें, यह कहने के बाद खड़े हुए और आप से बैअ़त कर ली।

फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने मजमअ़ पर एक नज़र डाली तो उस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु मौजूद न थे, फरमाया कि अली भी नहीं हैं, उन को भी बुलाया जाए, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तशरीफ लाए तो आप ने फरमाया कि ऐ अबू तालिब के साहिबज़ादे! आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चचा- ज़ाद भाई और उन के दामाद हैं, मुझे उम्मीद है कि आप इस्लाम को कमज़ोर होने से बचाने में हमारी मदद करेंगे, उन्हों ने भी हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु की तरह कहा कि ऐ ख़लीफए रसूलुल्लाह! आप कुछ फिक्र न करें, यह कह कर उन्हों ने भी बैअत कर ली। (तारीखुल् खुलफा) और मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः قَدَّمَكَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَنِ الَّذِىْ يُؤَخِّرُكَ यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप को आगे बढ़ाया तो फिर कौन शख़्स आप को पीछे कर सकता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस फरमान में उस वाक़िआ की जानिब इशारा है जो सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी अलालत के ज़माने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आगे बढ़ाया और आपही को तमाम सहाबा का इमाम बनाया। यहां तक कि इब्ने जुमआ की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लोगों को हुक्म दिया कि वह अबू बकर के पीछे नमाज़ पढ़ें मगर इत्तिफाक़ से उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद न थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे बढ़े ताकि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः لَا لَا لَا يَاْبَى اللّٰهُ وَالْمُسْلِمُوْنَ اِلَّا اَبَابَكْرٍ يُصَلِّىْ بِالنَّاسِ اَبُوْبَكْرٍ यानी नहीं, नहीं, नहीं अल्लाह और मुसलमान अबू बकर ही से राज़ी हैं वही लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे। (तारीखुल् खुलफा:43)

बहरहाल इस तरह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुत्तफ़क़ा तौर पर ख़लीफा तस्लीम कर लिया गया और किसी ने इख़्तिलाफ नहीं किया। और अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व गुयूब (छुपी और पोशीदा को जानने वाले) जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान हर्फ बहर्फ सही हुआ कि मेरे बाद ख़िलाफ़त के बारे में ख़ुदाए तआला और मोमिनीन अबू बकर के अलावा किसी को क़बूल न करेंगे। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान क्यों न सही हो कि

वह अल्लाह के प्यारे महबूब हैं, तो नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से खिसक सकता है बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के प्यारे महबूब का फरमान नहीं टल सकता है। (एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़े।)

आप की ख़िलाफत पर आयाते कुरआनी

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत का इस्तिदलाल उलमाए किराम की एक जमाअ़त ने इस आयते करीमा से किया है: يَآاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ यानी ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो अन्क़रीब अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को लाएगा कि वह अल्लाह के प्यारे हैं और अल्लाह उन का प्यारा है। वह लोग मुसलमानों पर नर्म होंगे और काफिरों पर सख़्त। अल्लाह की राह में वह लोग जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे। (पाराः6,रुकूअ़ः12)

मुफस्सिरीने किराम इस आयते करीमा की तफ्सीर में फरमाते हैं कि "क़ौम" से मुराद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उन के अस्हाब हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात के बाद जब कुछ अरब इस्लाम से बरगश्ता हो गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उन के अस्हाब ही ने मुरतदों से जिहाद किया और फिर उन को मुसलमान बनाया। और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के विसाल फ़रमाने के बाद जब अरब के कुछ लोग मुरतद हुए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उन से क़िताल फरमाया तो उस ज़माने में हम लोग आपस में कहा करते थे कि आयते करीमाः فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ

يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु और उन के अस्हाब ही की शान में नाज़िल हुई है।

और पाराः26, रुकूअ़ः10 में हैंः قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ यानी इन गवारों से फरमाओ जो कि पीछे रह गए कि अन्क़रीब एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की तरफ बुलाए जाओगे कि उन से लड़ो या वह मुसलमान हो जाएं।

हज़रत सदरुल् अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह इस आयते करीमा की तफ्सीर में तहरीर फरमाते हैं कि उस क़ौम से बनी हुनैफा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमए क़ज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वह मुराद हैं जिन से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने जंग फरमाई और ऐसा ही तबरानी में जुहरी से मरवी है। इसी लिये हज़रत इब्ने अबी हातिम और इब्ने कुतैबा फरमाते हैं कि यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत पर हुज्जत और वाज़ेह दलील है इस लिये कि आप ही ने मुरतदों से क़िताल की तरफ दअ़्वत दी।

और हज़रत शेख़ अबुल हसन अश्अ़री रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह कहते हैं कि मैं ने अबू अब्बास बिन शुरैह को यह फरमाते हुए सुना है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफत कुरआने करीम की इस आयत से साबित है, इस लिये कि तमाम उलमाए किराम का इस बात पर इत्तिफाक़ है कि इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद जिन लोगों ने कि ज़कात अदा करने से इनकार कर दिया यानी उस की फर्ज़िय्यत के मुन्किर हो गए थे और जो लोग कि मुरतद हो गए थे सिर्फ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने लोगों को उन से क़िताल की दअ़्वत दी और उन से जंग की। लिहाज़ा यह आयते करीमा आप की ख़िलाफत पर दलालत करती है और आप की इताअ़त को लोगों पर फर्ज़ करती है। इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा के आख़िर में वाज़ेह अल्फाज़ के

साथ फरमा दिया है कि जो कोई उस को नहीं मानेगा वह दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला होगा।

आप अफ्ज़लुल् बशर बादल् अंबिया हैं

अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम व रज़ियल्लाहुत तआला अन्हु

उलमाए अहले सुन्नत व जमाअत का इस बात पर इज्माअ् व इत्तिफाक़ है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के बाद तमाम लोगों में सब से अफ्ज़ल हैं। हदीस शरीफ में हैं कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَلَا غَرَبَتْ عَلٰى اَحَدٍ اَفْضَلَ مِنْ اَبِی بَکْرٍ اِلَّا اَنْ یَّکُوْنَ نَبِیًّا यानी सिवाए नबी के और कोई शख़्स ऐसा नहीं कि जिस पर आफताब तुलूअ् और गुरूब हुआ हो और वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अफ्ज़ल हो। मतलब यह है कि दुनिया में नबी के बाद उन से अफ्ज़ल कोई पैदा नहीं हुआ। और एक दसूरी हदीस में आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यूं इरशाद फरमाया है: اَبُوْبَکْرِ نِ الصِّدِّیْقُ خَیْرُ النَّاسِ اِلَّا اَنْ یَّکُوْنَ نَبِیًّا यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लोगों में से सब से बेहतर हैं अलावा इस के कि वह नबी नहीं हैं।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अफ्ज़लुन् नास यानी लोगों में सब से अफ्ज़ल हैं, अगर किसी शख़्स ने इस के ख़िलाफ कहा तो वह मुफ्तरी और कज़्ज़ाब है, उस को वह सज़ा दी जाएगी जो इफ्तिरा परदाज़ों के लिये शरीअत ने सज़ा मुक़र्रर की है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं: خَیْرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ بَعْدَ نَبِیِّهَا اَبُوْبَکْرٍ وَّعُمَرُ यानी इस उम्मत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद सब से बेहतर हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु

तआला अन्हुमा हैं। अल्लामा ज़हबी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह क़ौल उन से तवातुर के साथ मरवी है। (तारीखुल् खुलफा:31)

और बुख़ारी शरीफ में है कि हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्यह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में कौन सब से अफ्ज़ल है? قَالَ اَبُوْبَكْرٍ फरमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से अफ्ज़ल हैं, मैं ने अर्ज़ किया कि फिर उन के बाद? قَالَ عُمَرُ फरमाया कि उन के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से अफ्ज़ल हैं। हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्यह फरमाते हैं: خَشِيْتُ اَنْ يَّقُوْلَ عُثْمَانُ यानी मैं डरा कि अब इस के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम लेंगे तो मैं ने कहा कि इस के बाद आप सब से अफ्ज़ल हैं قَالَ مَا اَنَا اِلَّا رَجُلٌ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं तो मुसलमानों में से एक आदमी हूं यानी अज़ राहे इन्किसारी फरमाया कि मैं एक मामूली मुसलमान हूं। (मिश्कात शरीफ:555)

और बुख़ारी शरीफ में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ाहिरी हयात में हम लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बराबर किसी को नहीं समझते थे यानी वही सब से अफ्ज़ल व बेहतर क़रार दिये जाते थे। फिर हज़रत उमर को और उन के बाद हज़रत उस्मान को रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फिर हज़रत उस्मान के बाद हम सहाबए किराम को उन के हाल पर छोड़ देते थे और उन के दरमियान किसी को फज़ीलत नहीं देते थे। (मिश्कात शरीफ:555)

और हज़रत अबू मन्सूर बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि इस बात पर उम्मते मुस्लिमा का इज्माअ् और इत्तिफ़ाक़ है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत

अबू बकर सिद्दीक़, उन के बाद हज़रत उमर फारूक़ फिर हज़रत उस्माने उन के बाद हज़रत अली और फिर अशरए मुबश्शरा के बाक़ी हज़रात सब से अफ्ज़ल हैं। उन के बाद बाक़ी अस्हाबे बद्र फिर बाक़ी अस्हाबे उहद, उन के बाद बैअतुर रिज़्वान के सहाबा फिर दीगर अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तमाम लोगों से अफ्ज़ल हैं। (तारीखुल् खुलफा:30) एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

सिद्दीक़े अक्बर और आयाते कुरआनी

बिरादराने इस्लाम! हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ व तौसीफ में कुरआने मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं, यहां तक कि बहुत से बुज़ुर्गों ने इस मौज़ूअ् पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। हम उन में से चन्द आयाते करीमा आप लोगों के सामने पेश करते हैं

खुदाए अज़्ज़ व जल् इरशाद फरमाता है: وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِہٖ اُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُتَّقُوْنَ यह आयते मुबारका 24वें पारा के पहले रुकूअ् की है जिस की तिलावत का शर्फ हम आज की शुरू तक़रीर में पहले हासिल कर चुके हैं। इस आयते करीमा का मतलब यह है कि जो सच्चाई लाया यानी सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और जिन्होंने उन की तस्दीक़ की यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यही लोग मुत्तक़ी हैं।

इस आयते करीमा की तफ्सीर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ऐसे ही मरवी है اَلَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ यानी से मुराद रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं और صَدَّقَ से मुराद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जिन्हों ने सब से पहले हुज़ूर की तस्दीक़ की। ऐसा ही तफ्सीरे मदारिक में भी है। और इसी को हज़रत इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तरजीह दी है। और तफ्सीरे रूहुल बयान ने भी। लिहाज़ा इन मुफस्सिरीने किराम के बयान

से साबित हुआ कि खुदाए अज़्ज़ व जल् ने इस आयते मुबारका में रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को भी मुत्तक़ी फरमाया है। मालूम हुआ कि वह इस उम्मत के सब से पहले मुत्तक़ी हैं और क़ियामत तक पैदा होने वाले सारे मत्तक़ियों के सरदार और सैय्यिदुल मुत्तक़ीन हैं। इसी लिये अअ़्ला हज़रत फाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं:

अस्दकुस् सादिक़ीन सैय्यिदुल् मुत्तक़ीन
चश्म व गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

और पारा:10, रुकूअ़:11 में है:

إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ٥

तमाम मुफस्सिरीने किराम का इस बात पर इत्तिफाक़ है कि यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शान में नाज़िल हुई है। अब इस आयते करीमा का मतलब मुलाहेज़ा फरमाएं। खुदाए अज़्ज़ जल् इरशाद फरमाता है: إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ यानी ऐ मुसलमानो! अगर तुम लोग मेरे रसूल की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फरमाई जब काफिरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ ले जाना हुआ सिर्फ दो जान से जब वह दोनों यानी हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ग़ार में थे, إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا जब रसूल अपने यारे ग़ार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाते थे कि ग़म न कर बेशक अल्लाह हमारे साथ है, فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا तो अल्लाह ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर अपना सकीना उतारा। यानी उन के दिल को इत्मीनान अता फरमाया और

ऐसी फौजों से उस की मदद फरमाई जिन को तुम लोगों ने नहीं देखा। और वह मलाइका थे जिन्हों ने कुफ्फार के रुख फेर दिये यहां तक कि वह लोग आप को देख ही न सके وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ और काफिरों की बात को नीचे कर दी, यानी उन की दअ्वते कुफ्र व शिर्क को पस्त कर दिया, وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ और अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह गालिब हिक्मत वाला है।

इस आयते करीमा में जो आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह कौल नक़्ल किया गया है कि आप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا यानी गम मत करो कि अल्लाह हमारे साथ है तो इस मौक़े पर हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना गम नहीं था बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का गम था आप फरमाते थे إِنْ أُقْتَلْ فَأَنَا رَجُلٌ وَاحِدٌ وَإِنْ قُتِلْتَ هَلَكَتِ الْأُمَّةُ यानी अगर मैं क़त्ल कर दिया गया तो सिर्फ एक फर्द हलाक होगा और ऐ अल्लाह के रसूल! अगर आप क़त्ल कर दिये गए तो पूरी उम्मत हलाक हो जाएगी।

बहरहाल यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ व तौसीफ में बिल्कुल वाज़ेह है और आप के सहाबी होने पर नस्से क़तई है कि खुदाए अज़्ज़ व जल् ने إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ फरमाया। इसी लिये हज़रत हुसैन बिन फज़ल रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फरमाया कि مَنْ قَالَ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ لَمْ يَكُنْ صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهُوَ كَافِرٌ لِإِنْكَارِهِ نَصَّ الْقُرْآنِ यानी जो शख़्स कहे कि हज़रत अबू बकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबी नहीं थे तो वह नस्से कुरआनी के इनकार करने के सबब काफिर है।

और 23वें पारे सूरए वल्लैल की आयते करीमा है وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ यानी और जहन्नम से बहुत दूर रखा जाएगा वह शख़्स जो कि सब से बड़ा परहेज़गार है जो कि अपना माल देता है खुदाए तआला के नज़्दीक सुथरा होने के लिये न कि रिया, सुमआ या इन के

अलावा किसी दूसरे मक्सद के लिये ख़र्च करता है।

यह आयते मुबारका भी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत में नाज़िल हुई है। हज़रत सदरुल् अफ़ाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत बिलाल को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो कुफ्फार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐसा क्यों किया, शायद बिलाल पर उन का कोई ऐहसान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और ज़ाहिर फरमा दिया गया कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह फेअ्ल मेहज़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये है किसी के ऐहसान का बदला नहीं और उन पर हज़रत बिलाल वग़ैरा कोई ऐहसान है।

इस आयते करीमा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को "اَتْقٰی" यानी सब से बड़ा परहेज़गार फरमाया गया है। और पाराः26, रुकूअ्ः14 की आयते मुबारका है اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ यानी बेशक अल्लाह के यहां तुम में सब से ज़्यादा मुकर्रम और इज़्ज़त वाला वह है जो सब से बड़ा परहेज़गार है। तो इन दोनों आयाते करीमा के मिलाने से मालूम हुआ कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुदाए अज़्ज़ व जल् के नज़्दीक सब से ज़्यादा मुकर्रम और इज़्ज़त वाले हैं।

सिद्दीक़े अक्बर और अहादीसे करीमा

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत और उन की अज़्मत के इज़्हार में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया مَانَفَعَنِىْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَانَفَعَنِىْ مَالُ اَبِىْ بَكْرٍ यानी किसी शख़्स के माल ने मुझ को इतना फाइदा नहीं पहुंचाया जितना फाइदा कि अबू

बकर के माल ने पहुंचाया है। (मिश्कात शरीफ़:555)

और यह हदीस शरीफ भी तिर्मिज़ी में है कि आक़ाए दो आलम ﷺ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से फरमाया أَنْتَ صَاحِبِيْ فِى الْغَارِ وَصَاحِبِيْ فِى الْحَوْضِ यानी ग़ारे सौर में तुम मेरे साथ रहे और हौज़े कौसर पर भी तुम मेरे साथ रहोगे।

और तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से मरवी है कि मेरे वालिदे गिरामी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िमदत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने फरमाया أَنْتَ عَتِيْقُ اللّٰهِ مِنَ النَّارِ यानी तुझे अल्लाह ने जहन्नम की आग से आज़ाद कर दिया है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा फरमाती हैं कि उसी रोज़ से मेरे वालिदे मोहतरम का नाम अतीक़ पड़ गया। (मिश्कात शरीफ़:556)

और अबू दाऊद शरीफ की हदीस है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मुख़ातब करते हुए फरमाया أَمَا إِنَّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِيْ यानी ऐ अबू बकर सुन लो कि मेरी उम्मत में सब से पहले तुम जन्नत में दाख़िल होगे। (मिश्कात शरीफ़:556)

और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि एक चांदनी रात में जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का सरे मुबारक मेरी गोद में था मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या किसी शख़्स की नेकियां इतनी भी हैं जितनी कि आसमान पर सितारे हैं, आप ने फरमाया हां, उमर की नेकियां इतनी ही हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि फिर मैं ने पूछा और अबू बकर की नेकियों का क्या हाल है? हुज़ूर ने फरमाया उमर की सारी उम्र की नेकियां अबू बकर की एक नेकी के बराबर हैं रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा। (मिश्कात शरीफ़:560)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया حُبُّ اَبِی بَکْرٍ وَشُکْرُهٗ وَاجِبٌ عَلٰی کُلِّ اُمَّتِیْ यानी अबू बकर से मुहब्बत करना और उन का शुक्र अदा करना मेरी पूरी उम्मत पर वाजिब है। (तारीखुल खुलफा:40)

और हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे अक्दस में हाज़िर था कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए और सलाम के बाद उन्हों ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे और उमर बिन ख़त्ताब के दरमियान कुछ बातें हो गईं हैं फिर मैं ने नादिम होकर उन से मअ़ज़िरत तलब की लेकिन उन्हों ने मअ़ज़िरत क़बूल करने से इनकार कर दिया। यह सुन कर हुज़ूर ने तीन बार इरशाद फरमाया कि ऐ अबू बकर अल्लाह तआ़ला तुम को माफ फरमाए।

थोड़ी देर के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी हुज़ूर की बारगाह में आ गए, उन को देखते ही हुज़ूर के चेहरए अक्दस का रंग बदल गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को रंजीदा देख कर हज़रत उमर दो ज़ानू बैठे और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इन से ज़्यादा कुसूर वार हूं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया اِنَّ اللّٰهَ بَعَثَنِیْ اِلَیْکُمْ فَقُلْتُمْ کَذَبْتَ وَقَالَ اَبُوْبَکْرٍ صَدَقْتَ وَوَاسَانِیْ بِنَفْسِهٖ وَمَالِهٖ فَهَلْ اَنْتُمْ تَارِکُوْنِیْ صَاحِبِیْ यानी जब अल्लाह ने मुझे तुम्हारी जानिब मब्ऊस फरमाया तो तुम लोगों ने मुझ झुठलाया मगर अबू बकर ने मेरी तस्दीक़ की और अपनी जान व माल से मेरी ग़मख़्वांरी मदद की तो क्या आज तुम लोग मेरे ऐसे दोस्त को छोड़ दोगे? और इस जुमला को हुज़ूर ने दो बार फरमाया। (तारीखुल् खुलफा:37)

हज़रत मिक्दाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हज़रत अकील बिन अबी तालिब ने कुछ सख़्त कलामी की मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुज़ूर की क़राबत दारी का ख़्याल करते हुए हज़रत अकील रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को कुछ नहीं कहा और हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में पूरा वाकिआ़ बयान किया, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से पूरा माजरा सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला व अलैहि व सल्लम मजलिस में खड़े हुए और फरमाया اَلَاتَدَعُوْنَ لِیْ صَاحِبِیْ مَاشَانُکُمْ وَشَانُہٗ فَوَاللّٰہِ مَامِنْکُمْ رَجُلٌ اِلَّاعَلٰی بَابِ بَیْتِہٖ ظُلْمَۃٌ اِلَّابَابُ اَبِیْ بَکْرٍ فَاِنَّ عَلٰی بَابِہِ النُّوْرَ فَوَاللّٰہِ لَقَدْ قُلْتُمْ کَذَبْتَ وَقَالَ اَبُوْبَکْرٍ صَدَقْتَ وَاَمْسَکْتُمُ الْاَمْوَالَ وَجَاءَ لِیْ بِمَالِہٖ وَخَذَلْتُمُوْنِیْ وَوَاسَانِیْ وَاتَّبَعَنِیْ यानी ऐ लोगो! सुन लो, मेरे दोस्त को मेरे लिये छोड़ दो, तुम्हारी क्या हैसियत है? और उनकी हैसियत क्या है? तुम्हें कुछ मालूम हैं? खुदा की क़सम तुम लोगों के दरवाज़ों पर अंधेरा है मगर अबू बकर के दरवाज़े पर नूर की बारिश हो रही है। खुदाए ज़ुलजलाल की क़सम तुम लोगों ने मुझे झुठलाया और अबू बकर ने मेरी तस्दीक़ की, तुम लोगों ने माल ख़र्च करने में बुख़्ल से काम लिया, अबू बकर ने मेरे लिये अपना माल ख़र्च किया और तुम लोगों ने मेरी मदद नहीं की मगर अबू बकर ने मेरी ग़मख़्वारी की और मेरी इत्तिबाअ़ की। (तारीखुल खुलफा:37)

और मिश्कात शरीफ़:556 में है कि एक रोज़ हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ज़िक्र किया गया तो वह रोने लगे और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के ज़ाहिरी ज़माने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक दिन रात में जो अमल और बेहतरीन काम किये हैं काश कि मेरी पूरी ज़िंदगी का अमल उनकी एक दिन रात के अमल के बराबर होता। उन की एक रात का अमल तो यह है कि जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के साथ हिज्रत की रात ग़ारे सौर पहुंचे (जो तक़रीबन ढाई किलो मीटर बुलंद है) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से अर्ज़ किया وَاللّٰہِ لَاتَدْخُلُہٗ حَتّٰی اَدْخُلَ قَبْلَکَ यानी खुदा की क़सम आप ग़ार में दाख़िल नहीं होंगे जब तक कि आप के पहले मैं न दाख़िल हो जाऊं ताकि अगर कोई मूज़ी (तक्लीफ देने वाली) चीज़ सांप

वग़ैरा हो तो उस से तक्लीफ मुझी को पहुंचे और आप महफ़ूज़ रहें। फिर आप ग़ार के अन्दर दाख़िल हुए और उस को ख़ूब साफ किया और जब ग़ार के अन्दर उन को कुछ सुराख़ नज़र आए तो उन को उन्हों ने अपनी लुंगी में से कपड़ा फाड़ कर भर दिया और दो सुराख़ों पर उन्हों ने अपनी ऐड़ियां लगा दीं, इस के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि अब आप अन्दर तशरीफ लाइये, हुज़ूर ग़ार के अन्दर तशरीफ ले गए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की गोद में सर रख कर सो गए, अभी हुज़ूर आराम ही फरमा रहे थे कि उसी हालत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पांव में सूराख़ के अन्दर से सांप ने काट लिया मगर आप ने हरकत नहीं की और उसी तरह बैठे रहे, इस लिये कि कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की आंख न खुल जाए लेकिन सांप के ज़हेर की इन्तिहाई तक्लीफ के सबब आप की आंखों से आंसू निकल पड़े जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चेहरए अक़्दस पर गिरे, हुज़ूर की आंख खुल गई और आप से दरियाफ्त फ़रमाया अबू बकर क्या हुआ? قَالَ لُدِغْتُ فِدَاكَ اَبِيْ وَاُمِّيْ अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान हों मुझ को सांप ने काट लिया है, हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने उन के ज़ख़्म पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया तो फौरन उनकी तक्लीफ जाती रही, मगर अरसए दराज़ के बाद सांप का वही ज़हेर फिर लौट आया जो आप के विसाल का सबब बना यानी उसी ज़हेर की वजह से आप की वफात हुई।

और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के एक दिन का बेहतरीन अमल यह है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वफात के बाद अरब के कुछ लोग मुरतद हो गए और उन्हों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे यानी उस की फर्ज़िय्यत के

मुन्किर हो गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि अगर मुझ को ऊंट की रस्सी जो लोगों पर वाजिब होगी उस के देने से भी इनकार करेंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि उस वक़्त मैं ने उनसे अर्ज़ किया يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَأَلَّفِ النَّاسَ وَارْفُقْ بِهِمْ यानी लोगों के साथ उल्फत से पेश आइये और नर्मी से काम लीजिये तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि तुम अय्यामे जाहिलिय्यत में तो बड़े सख़्त और ग़ज़बनाक थे क्या इस्लाम में दाख़िल हो कर ज़लील व ख़्वार और पस्त हिम्मत हो गए हो إِنَّهُ قَدِ انْقَطَعَ الْوَحْيُ وَتَمَّ الدِّيْنُ أَيَنْقُصُ وَأَنَا حَيٌّ यानी वह़ी का आना बन्द हो गया है और दीने इस्लाम कामिल हो चुका है तो क्या मेरी ज़िंदगी में वह कमज़ोर व नाक़िस हो जाएगा? मतलब यह है कि मैं दीने इस्लाम को अपनी ज़िंदगी में कमज़ोर व नाक़िस हरगिज़ नहीं होने दूंगा और जो लोग कि ज़कात देने से इनकार कर रहे हैं मैं उन से जिहाद ज़रूर करूंगा। एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और उन के अस्हाबे किबार पर दुरूद व सलाम का नज़्राना पेश करें।

यह चन्द हदीसें हम ने आप के सामने अफ्ज़लुल् बशर बादल् अंबियाए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शान में पेश की हैं। इन के अलावा और भी बहुत सी हदीसें इसी क़िस्म के मज़्मून की हज़रत सिद्दीक़े अक्बर की तारीफ व तौसीफ में वारिद हुई हैं। जिन से साफ ज़ाहिर होता है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के नज़्दीक सारे सहाबा में सब से ज़्यादा मुक़र्रब, सब से ज़्यादा प्यारे और सब से ज़्यादा फज़ीलत व अ़ज़्मत वाले हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ही हैं और हुज़ूर ख़ातिमुल् अंबिया सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की जा नशीनी के सब से पहले मुस्तहिक़ वही हैं। *रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु व अर्ज़ाहु अ़न्हु व अ़न् साइरिल मुस्लिमीन।*

आप का नाम व नसब

बिरादराने इस्लाम! आप का नाम अब्दुल्लाह है और अबू बकर से जो आप मशहूर हैं तो यह आप की कुन्नियत है और सिद्दीक़ व अतीक़ आप का लक़ब है। आप के वालिद का नाम उस्मान और कुन्नियत अबु कुहाफा है और आप की वालिदा का नाम सलमा है जिन की कुन्नियत उम्मुल्-ख़ैर है। आप का सिलसिलए नसब सातवीं पुश्त में मुर्रा बिन कअ्ब पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है। आप वाक़िए फील के तक़रीबन ढाई बरस बाद मक्का शरीफ में पैदा हुए।

अ़हदे तिफ्ली में बुत-शिकनी

ज़मानए जाहिलिय्यत में भी आप ने कभी बुत-परस्ती नहीं की है। आप हमेशा इस के ख़िलाफ रहे, यहां तक कि आप की उम्र शरीफ जब चन्द बरस की हुई तो उसी ज़माने में आप ने बुत-शिकनी फरमाई। जैसा कि अअ्ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपने रिसालए मुबारका "तंज़ीहुल् मकानतिल हैदरिया" सफ्हा:13 में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वालिद माजिद हज़रत अबू कुहाफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु (कि वह भी बाद में सहाबी हुए) ज़मानए जाहिलिय्यत में उन्हें बुत-ख़ाना ले गए और बुतों को दिखा कर उन से कहा هٰذِهٖ اٰلِهَتُكَ الشُّمُّ الْعُلٰى فَاسْجُدْ لَهَا यानी यह तुम्हारे बुलंद व बाला ख़ुदा हैं, इन्हें सज्दा करो। वह तो यह कह कर बाहर चले गए। सैय्यिदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु क़ज़ाए मुबरम की तरह बुत के सामने तशरीफ लाए और बराए इज़्हारे इज्ज़े सनम (बुतों की आजिज़ी को ज़ाहिर करने के लिये) व जेहल सनम परस्त (बुतों की पूजा करने वालों की जहालत को ज़ाहिर करने के लिये) इरशाद फरमाया اِنِّىْ جَائِعٌ فَاَطْعِمْنِىْ मैं भूका हूं मुझे खाना दे, वह कुछ न बोला,

फरमाया إِنِّىْ عَارِنٌ فَاكْسُنِىْ यानी मैं नंगा हूं मुझे कपड़ा पहना। वह कुछ न बोला। सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने एक पत्थर हाथ में लेकर फरमाया मैं तुझ पर पत्थर मारता हूं فَإِنْ كُنْتَ إِلٰهًا فَامْنَعْ نَفْسَكَ अगर तू ख़ुदा है तो अपने आप को बचा। वह अब भी निरा बुत बना रहा। आख़िर आप ने बकुव्वते सिद्दीक़ी उस को पत्थर मारा तो वह ख़ुदाए गुमराहां (गुमराहों का ख़ुदा यानी बुत) मुंह के बल गिर पड़ा। उसी वक़्त आप के वालिद माजिद वापस आ रहे थे, यह माजरा देख कर फरमाया कि एक मेरे बच्चे तुम ने यह क्या किया? फरमाया कि वही किया जो आप देख रहे हैं। आप के वालिद उन्हें उन की वालिदा माजिदा हज़रत उम्मुल ख़ैर के पास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा (कि वह भी सहाबिया हुईं) लेकर आए और सारा वाक़िआ उन से बयान किया। उन्हों ने फरमाया इस बच्चे से कुछ न कहो कि जिस रात यह पैदा हुए मेरे पास कोई न था, मैं ने सुना कि हातिफ कह रहा है يَا أَمَةَ اللهِ عَلَى التَّحْقِيْقِ أَبْشِرِىْ بِالْوَلَدِ الْعَتِيْقِ إِسْمُهٗ فِى السَّمَاءِ الصِّدِّيْقُ لِمُحَمَّدٍ صَاحِبٌ وَرَفِيْقٌ यानी ऐ अल्लाह की सच्ची बन्दी! तुझे ख़ुशख़बरी हो उस आज़ाद बच्चे की जिस का नाम आसमानों में सिद्दीक़ है और जो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का यार व रफीक़ है।

روا ہ القاضی ابو حسین احمد بن محمد الزبیدی بسندہ فی معالی الفرش الی عوالی العرش-

आप अहदे जाहिलिय्यत में

ज़मानए जाहिलिय्यत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपनी बिरादरी में सब से ज़्यादा मालदार थे, मुरव्वत व ऐहसान का मुजस्समा थे, क़ौम में बहुत मोअज़्ज़ समझे जाते थे, गुमशुदा की तलाश आप का शेवा रहा और मेहमानों की आप ख़ूब मेज़बानी फरमाते थे। आप का शुमार रुअसाए क़ुरैश में होता थे, वह लोग आप से मशवरा लिया करते थे और आप से बे इन्तिहा मुहब्बत करते थे। आप क़ुरैश के उन ग्यारह लोगों में से हैं जिन को अय्यामे जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में इज़्ज़त व बुज़ुर्गी हासिल रही

कि आप अहदे जाहिलिय्यत में "ख़ूं बहा" और जुर्माने के मुक़द्दमात का फैसला किया करते थे जो उस ज़माने का बहुत बड़ा ऐज़ाज़ समझा जाता था।

आप ने अहदे जाहिलिय्यत में कभी शराब नहीं पी। एक बार सहाबए किराम के मजमअ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरियाफत किया गया कि आप ज़मानए जाहिलिय्यत में शराब पी है, आप ने फरमाया ख़ुदा की पनाह! मैं ने कभी शराब नहीं पी। लोगों ने कहा क्यों? फरमाया كُنْتُ اَصُوْنُ عِرْضِىْ وَاَحْفَظُ مُرُوَّتِىْ यानी मैं अपनी इज़्ज़त व आबरू को बचाता था और मुरव्वत की हिफाज़त करता था। इस लिये कि जो शख़्स शराब पीता है उस की इज़्ज़त व नामूस और मुरव्वत जाती रहती है। जब इस बात की ख़बर हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को पहुंची तो आप ने दोबार फरमाया अबू बकर ने सच कहा, अबू बकर ने सच कहा। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

आप का हुलिया

एक शख़्स ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से अर्ज़ किया आप हम से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सरापा और हुलिया बयान फरमाएं तो हज़रत सिद्दीक़ा ने फरमाया कि आप का रंग सफेद था, बदन एकहरा था, दोनों रुख़्सार अन्दर को दबे हुए थे, पेट इतना बड़ा था कि आप की लुंगी अक्सर नीचे खिसक जाया करती थी, पेशानी पर हमेशा पसीना रहता था, चेहरे पर ज़्यादा गोश्त नहीं था, हमेशा नज़रें नीची रखते थे, पेशानी बुलंद थी, उंगलियों की जड़ें गोश्त से ख़ाली थीं यानी खाइयां खुली रहती थीं, हिना और कतम का ख़िज़ाब लगाते थे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम मदीना तैय्यिबा तशरीफ लाए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अलावा

किसी के बाल सियाह व सफ़ेद मिले हुए खिचड़ी नहीं थे। आप उन खिचड़ी बालों पर हिना यानी मेंहदी और कतम का ख़िज़ाब लगाया करते थे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ाः22) हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में यह जो बयान किया गया है कि आप कतम का ख़िज़ाब लगाते थे, इस से आप के मुतअ़ल्लिक़ सियाह ख़िज़ाब का गुमान करना यह इस से नील और हिना मिले हुए कि मुतलक़न जाइज़ समझ लेना महेज़ ग़लती है। तफ्सील के लिये अअ़्ला हज़रत फ़ाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के रिसालए मुबारका "हक्कुल ऐब फ़ी हुरमति तस्वीदिश् शैब" का मुतालआ़ करें।

आप का क़बूले इस्लाम

बिरादराने मिल्लत! बहुत से सहाबए किराम व ताबईन इज़ाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम फ़रमाते हैं कि सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं। इमाम शअ़बी फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से पूछा कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला कौन है? तो उन्हों ने फ़रमाया हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और सुबूत में हज़रत हस्सान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वह अश्आ़र पढ़े जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तारीफ़ व तौसीफ़ में हैं और उन में सब से पहले आप के इस्लाम लोने का ज़िक्र है। और इब्ने असाकिर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत की है, उन्हों ने फ़रमाया اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ مِنَ الرِّجَالِ اَبُوْبَكْرٍ यानी सब से पहले मर्दों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इस्लाम लाए। और इब्ने सअ़द ने सहाबिए रसूल हज़रत अूब अरवी दौसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत की है उन्हों ने फ़रमाया اَوَّلُ مَنْ اَسْلَمَ اَبُوْبَكْرِ الصِّدِّيْقُ यानी सब से पहले जो इस्लाम लाए वह अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं। यहां तक कि हज़रत मैमून बिन मेहरान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से जब दरियाफ़्त किया गया कि

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ पहले मुसलमान हुए या हज़रत अली? तो उन्हों ने जवाब में फरमाया وَاللّٰهِ لَقَدْ اٰمَنَ اَبُوْبَكْرٍ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ بَحِيْرَا الرَّاهِبِ यानी क़सम है खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बहीरा राहिब ही के ज़माने में नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम पर ईमान ला चुके थे, जब कि हज़रत अली पैदा भी नहीं हुए थे। (तारीखुल खुलफा:23)

और मुहम्मद बिन इस्हाक़ फरमाते हैं कि मुझ से मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान तमीमी ने बयान किया कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने बयान फरमाया कि जब मैं ने किसी को भी इस्लाम की दअ़्वत दी तो उस को तरद्दुद हुआ अलावा अबू बकर के कि जब मैं ने उन पर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने बग़ैर तरद्दुद के इस्लाम क़बूल कर लिया। इमाम बैहक़ी फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साबिक़ुल इस्लाम होने का सबब यह है कि आप नुबुव्वत व रिसालत की निशानियां क़ब्ल अज़् इस्लाम ही मालूम कर चुके थे इस लिये जब उन को इस्लाम की दअ़्वत दी गई तो उन्हों ने फौरन इस्लाम क़बूल कर लिया।

और बाज़ मोहद्दिसीन यूं फरमाते हैं कि ऐलाने नुबुव्वत के क़ब्ल ही हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के दोस्त थे और आप के अख़्लाक़ की उम्दगी, आदत की पाकीज़गी और आप की सच्चाई व दियानतदार पर यक़ीने कामिल रखते थे तो जब सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उनपर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने फौरन क़बूल कर लिया। इस लिये कि जो शख़्स ज़िंदगी के आम हालात में झूठ नहीं बोलता और न ग़लत बात कहता है तो भला वह खुदाए ज़ुल-जलाल के बारे में कैसे झूठ बोल सकता है कि उस ने मुझे रसूल बना कर मब्ऊस फरमाया है। इसी बुनियाद पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फौरन बिला तअम्मुल मुसलमान हो गए।

इन तमाम शवाहिद से मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में सब से पहले इस्लाम कबूल किये हैं। इस लिये बाज़ हज़रात ने यहां तक दअ्वा किया है कि आप के सब से मुसलमान होने पर इज्माअ् है। लेकिन बाज़ लोग कहते हैं कि सब से पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए। और बाज़ लोगों का ख़्याल है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने सब से पहले इस्लाम कबूल किया। तो इन तमाम अक्वाल में हमारे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस तरह ततबीक़ फरमाई है कि मर्दों में सब से पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, औरतों में सब से पहले हज़रत ख़दीजा और लड़कों में सब से पहले हज़रत अली ईमान लाए हैं। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।*

आप का कमाले ईमान

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल था, जिस का सुबूत बहुत से वाकिआत से मिलता है। हुदैबिया में जिन शर्तो पर सुलह हुई उन में एक शर्त यह भी थी कि मक्का के मुसलमानों या काफ़िरों में से अगर कोई शख़्स मदीना चला जाए तो वह वापस कर दिया जाएगा लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीने से मक्का चला आए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा, अभी सुलह नामे पर तरफ़ैन (दोनों गिरोह) के दस्तख़त नहीं हुए थे कि अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो मुसलमान हो चुके थे, मक्का मुअज़्ज़मा से गिरते पड़ते और अपनी बेड़ियां घसीटते हुए हुदैबिया मकाम पर मुसलमानों के दरमियान आ गए, सुहैल बिन अम्र जो अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बाप था और कुफ्फ़ारे मक्का की तरफ से सुलह की गुफ्तगू करने के लिये हुदैबिया आया हुआ था, जब उस ने अपने बेटे को देखा तो कहा कि अबू जन्दल को आप मेरी तरफ वापस कर दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

सल्लम ने फरमाया कि अभी तो सुलह नामे पर फरीकैन के दस्तख़त ही नहीं हुए हैं। लिहाज़ा यह मुआहिदा तुम्हारे और हमारे दस्तख़त हो जाने के बाद ही नाफिज़ होगा। उस ने कहा तो जाइये हम आप से सुलह नहीं करेंगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ सुहैल! अबू जन्दल को मेरे पास रहने की तुम अपनी तरफ से इजाज़त दे दो, उस ने कहा मैं इस बात की हरगिज़ इजाज़त नहीं दे सकता।

जब हज़रत अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा कि अब मैं फिर मक्का लौटा दिया जाउंगा तो उन्हों ने सहाबए किराम से फर्याद की और कहा कि ऐ मुसलमानो! देखो में काफिरों की तरफ लौटया जा रहा हूं, हालां कि मैं मुसलमान हो चुका हूं और आप लोगों के पास आ गया हूं। और हज़रत अबू जन्दल के बदन पर काफिरों की मार के जो निशानात थे आप मुसलमानों को वह निशानात दिखा दिखा कर रोने लगे, तो मुसलमानों को बड़ा जोश पैदा हो गया यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में पहुंच गए और अर्ज़ किया, क्या आप अल्लाह के सच्चे रसूल नहीं हैं? इरशाद फरमाया क्यों नहीं, यानी हां मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूं, फिर हज़रत उमर ने अर्ज़ किया, क्या हम हक़ पर और कुफ्फार बातिल पर नहीं हैं? हुज़ूर ने फरमाया क्यों नहीं? यानी बेशक हम हक़ पर हैं और कुफ्फार बातिल पर हैं। इस जवाब पर हज़रत उमर ने कहा तो फिर हम दीन के मामले में दब कर क्यों सुलह करें? हुज़ूर ने फरमाया ऐ उमर! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं, मैं उस की नाफरमानी कभी नहीं कर सकता और मेरा मददगार वही है। फिर हज़रत उमर ने कहा क्या आप यह नहीं फरमाया करते थे कि हम बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करेंगे? हुज़ूर ने फरमाया ठीक है, मगर हम ने यह कब कहा था कि इसी साल तवाफ करेंगें। हज़रत उमर ने कहा कि हां यह सही है कि आप ने इसी साल के लिये नहीं फरमाया था।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गए और उन से भी इसी क़िस्म की गुफ़्तुगू की, तो हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ने फरमाया اِلْــزَمْ غَــرْزَهٗ यानी उन की रकाब थामे रहो और उन के दामन से लगे रहो, बेशक वह अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह उन का मुआविन और मददगार है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस जवाब से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जोश ठंडा हो गया।

हुदैबिया में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिस तरह सुलह फरमाई उस से मुसलमानों की नागवारी और रंज व ग़म का यह आलम रहा कि तक्मीले मुआहिदा के बाद तीन बार हुज़ूर ने फरमाया कि उठो क़ुर्बानी करो और सर मुंडा कर एहराम खोल दो मगर कोई उठने को तैयार न होता था यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जोश में आकर हुज़ूर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में ऐसी गुफ़्तुगू की कि जिस पर वह ज़िंदगी भर अफ्सोस करते रहे और माफी के लिये बहुत सी नेकियां करते रहे, मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जो जवाब दिया वह ईमान अफरोज़ जवाब बता रहा है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी जगह पर बिल्कुल मुत्मइन थे कि हुज़ूर अल्लाह के रसूल हैं वह जो कुछ कर रहे हैं सब हक़ है। हर हाल में अल्लाह उन की मदद फरमाएगा।

इस वाक़िआ से साफ ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर की रिसालत व नुबुव्वत पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल व अक्मल था जिस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जोश को भी ठंडा कर दिया।

और शबे मेअ़राज की सुबह बहुत से मुश्रिकीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहा कि आप को

कुछ ख़बर है? आप के दोस्त मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम) कह रहे हैं कि उन्हों रात का बैतुल मुक़द्दस और आसमान वग़ैरह की सैर कराई गई है। आप ने कहा क्या वाक़ई वह ऐसा फरमा रहे हैं? उन लोगों ने कहा हां, वह ऐसा ही कह रहे हैं, तो आप ने फरमाया إِنِّي لَأُصَدِّقُهُ بِأَبْعَدَ مِنْ ذٰلِكَ यानी अगर वह इस से भी ज़्यादा बईद अज़ क़यास और हैरत अंगेज़ ख़बर देंगे तो बेशक मैं उस की तस्दीक़ करूंगा।

और ग़ज़्वए बद्र में आप के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुर रहमान कुफ्फारे मक्का के साथ थे। इस्लाम क़बूल करने के बाद उन्हों ने अपने वालिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कहा कि आप जंगे बद्र में कई बार मेरी ज़द में आए लेकिन मैं ने आप से सर्फ़े नज़र की और आप को क़त्ल नहीं किया। इस के जवाब में सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया لَوْ أَهْدَفْتَ لِي لَمْ أَنْصَرِفْ عَنْكَ यानी ऐ अब्दुर रहमान! कान खोल कर सुन लो कि अगर तुम मेरी ज़द में आ जाते तो मैं सर्फ़े नज़र न करता बल्कि तुम को क़त्ल करके मौत के घाट उतार देता।

इन वाक़िआ़त से भी वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल था, बल्कि दर्जए कमाल की इन्तिहा को पहुंचा हुआ था, यहां तक कि इमामे बैहक़ी ने शोअ़बुल ईमान में हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह क़ौल नक़ल किया है कि पूरी ज़मीन के मुसलमानों का ईमान और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ईमान अगर वज़न किया जाए तो हज़रत हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ईमान का पल्ला भारी होगा। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। (तारीख़ुल ख़ुलफा:40)

एक बार हम सब मिल कर सरकारे मदीना और उन के अस्हाब पर बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम की डालियां पेश करें।

आप की शुजाअ़त

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सारे सहाबा में सेब से ज़्यादा शुजाअ़ और बहादुर भी थे। अल्लामा बज़्ज़ार रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह ने अपनी मुस्नद में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लोगों से दरियाफत किया कि बताओ सब से ज़्यादा बहादुर कौन है? उन लोगों ने कहा कि सब से ज़्यादा बहादुर आप हैं, हज़रत अली ने फरमाया मैं तो हमेशा अपने जोड़ से लड़ता हूं, फिर कैसे मैं सब से बहादुर हुआ, तुम लोग यह बताओ कि सब से ज़्यादा बहादुर कौन है? लोगों ने कहा कि हज़रत हम को नहीं मालूम है, आप ही बताएं. आप ने फरमाया कि सब से ज़्यादा शुजाअ़ और बहादुर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, सुनो! जंगे बद्र में हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के लिये एक अरीश यानी झोंपड़ा बनाया था ताकि गर्द व ग़ुबार और सूरज की धूप से हुज़ूर महफ़ूज़ रहें तो हम लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के साथ कौन रहेगा? कहीं ऐसा न हो कि उन पर कोई हमला कर दे فَوَاللهِ مَا دَنَا مِنَّا اَحَدٌ اِلَّا اَبُوْبَكْرٍ यानी तो खुदा की क़सम इस काम के लिये सिवाए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के कोई आगे नहीं बढ़ा, आप शमशीरे बरहना हाथ में लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पास खड़े हो गए फिर किसी दुश्मन को आप के पास आने की जुर्अत नहीं हो सकी और अगर किसी ने जुर्अत भी की तो आप उस पर टूट पड़े। इस लिये अबू बकर सिद्दीक़ ही सब से ज़्यादा शुजाअ़ और बहादुर थे। (तारीखुल खुलफ़ा:25)

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि एक बार का वाक़िआ़ है कि काफिरों ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को पकड़ लिया और कहने लगे कि तुम ही हो जो

कहते हो कि खुदा एक है, हज़रत अली ने फरमाया तो क़सम खुदा की इस मौक़े पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अलावा कोई हुज़ूर के क़रीब नहीं गया, आप आगे बढ़े और काफिरों को मारा और उन्हें धक्के दे दे के हटाया और फरमाया तुम पर अफ्सोस है कि तुम लोग ऐसी ज़ात को तक्लीफ पहुंचा रहे हो जो यह कहता है कि मेरा परवरदिगार सिर्फ अल्लाह है। और हज़रत अली ने फरमाया कि लोग अपने ईमान को छुपाते थे मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने ईमान को अलल् ऐलान ज़ाहिर फरमाते थे इस लिये आप सबसे ज़्यादा बहादुर थे। (तारीखुल खुलफा:25)

और अल्लामा हैसम अपनी मुस्नद में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने खुद फरमायाः لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ اِنْصَرَفَ النَّاسُ كُلُّهُمْ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُنْتُ اَوَّلُ مَنْ فَاءَ कि यानी जंगे उहद के दिन सब लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को तन्हा छोड़ कर इधर उधर हो गए तो सब से पहले मैं हुज़ूर के पास पहुंच कर उन की हिफाज़त की। (तारीखुल खुलफा:25)

इन शवाहिद से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सारे सहाबा में सबसे ज़्यादा शुजाअ् और बहादुर भी थे। *रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु व अरज़ाहु अ़न्ना*

आप की सख़ावत

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने और सख़ावत करने के बारे में भी सारे सहाबा पर फौक़ियत रखते थे। हदीस शरीफ की दो मशहूर किताबें तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हैं, हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ हम लोगों को अल्लाह की राह में सदक़ा और ख़ैरात करने का हुक्म दिया और हुस्ने इत्तिफाक़ से इस मौक़े पर मेरे पास काफी माल

था, मैं ने अपने दिल में कहा कि अगर हज़रत अबू बकर से आगे बढ़ जाना किसी दिन मेरे लिये मुम्किन होगा तो आज का दिन होगा। मैं काफी माल ख़र्च करके आज उन से सब्क़त ले जाउंगा। हज़रत उमर फरमाते हैं तो मैं आधा माल लेकर खिदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से दरियाफ्त फरमाया مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ यानी अपने घर वालों के लिये तुम ने कितना छोड़ा? हज़रत उमर फरमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया कि आधा माल उन के लिये छोड़ दिया है, फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो कुछ उनके पास था सब ले आए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन से पूछा مَا اَبْقَيْتَ لِاَهْلِكَ यानी ऐ अबू बकर! अपने अहल अयाल के लिये क्या छोड़ आए हो? यानी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि उन के लिये मैं अल्लाह और उस के रसूल को छोड़ आया हूं। मतलब यह है कि मेरे और मेरे अहल व अयाल के लिये अल्लाह व रसूल काफी हैं।

परवाने को चिराग़ है बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं قُلْتُ لَا اَسْبِقُهٗ اِلٰى شَيْءٍ اَبَدًا यानी मैं ने अपने दिल में कहा किसी चीज़ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर मैं कभी सब्क़त नहीं ले जा सकूंगा। (मिश्कात शरीफ:556)

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है जिस रोज़ मेरे वालिद बुजुर्गवार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम से मुशर्रफ हुए उस रोज़ आप के पास चालीस हज़ार दीनार मौजूद थे और एक रिवायत में है कि चालीस हज़ार दिरहम थे, आप ने यह सारा माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्म पर ख़र्च कर दिया। और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला

अन्हुमा से मरवी है कि जिस हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए तो उन के पास चालीस हज़ार दिरहम थे और जब आप मदीना तैय्यिबा हिज्रत करके आए तो उस माल में से आप के पास सिर्फ पांच हज़ार बाक़ी रह गए थे। मक्का मोअज़्ज़मा में आप ने 35 हज़ार दिरहम मुसलमान गुलामों के आज़ाद कराने और इस्लाम की मदद में ख़र्च कर डाला था।

हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु राहे खुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये, दस हज़ार रात में, दस हज़ार दिन में, दस हज़ार छुपा कर, दस हज़ार अ़लानिया तो अल्लाह तआला ने उन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल फरमाई: اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ यानी जो लोग अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में, छुपा कर और अलानिया, तो उन के लिये उन के रब के पास उन का अज्र है और न उनको कुछ ख़ौफ होगा और न वह लोग ग़मगीन होंगे। (पारा:3 रुकूअ़:6)

तिर्मिज़ी शरीफ में रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस किसी ने भी मेरे साथ एहसान किया था मैं ने हर एक का एहसान उतार दिया अलावा अबू बकर के एहसान के। उन्हों ने मेरे साथ ऐसा एहसान किया है जिस का बदला क़ियामत के दिन उन को खुदाए तआला ही अता फरमाएगा। وَمَا نَفَعَنِىْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَا نَفَعَنِىْ مَالُ اَبِىْ بَكْرٍ यानी और हरगिज़ किसी के माल ने मुझे इतना फायदा नहीं पहुंचाया जितना फायदा कि अबू बकर के माल ने पहुंचाया है।

(मिश्कात शरीफ:555)

एक बार हम सब मिल कर सरकारे मदीना और उन के अस्हाब पर बुलन्द अवाज़ से दुरूद व सलाम का नज़्राना पेश करें।

हुज़ूर से मुहब्बत

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को बहुत चाहते थे और उनसे बेइन्तिहा मुहब्बत फरमाते थे, शुरू ज़मानए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता था वह हत्तल इम्कान अपने इस्लाम को छुपाए रखता था और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम भी छुपाने की तल्क़ीन फरमाते थे ताकि काफिरों से अज़िय्यत न पहुंचे। जब मुसलमानों की तादाद तक़रीबन 40 हुई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि अब इस्लाम की तब्लीग़ खुल्लम खुल्ला और अलल् ऐलान की जाए, पहले तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इन्कार फरमाया लेकिन जब सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने बहुत इसरार किया तो आप ने क़बूल फरमा लिया और सब लोगों को साथ लेकर मस्जिदे हराम में तशरीफ ले गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने खुत्बा शुरू फरमाया और यह सब से पहला खुत्बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया। हुज़ूर के चचा हज़रत अमीरे हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु उसी रोज़ इस्लाम लाए, खुत्बा का शुरू होना था कि चारों तरफ से मुश्रिकीन मुसलमानों पर टूट पड़े। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की अज़्मत व शराफत मक्का मुअज़्ज़मा में मुसल्लम थी, इस के बावजूद आप को इस क़दर मारा कि पूरा चेहरा और कान व नाक सब लहू लहान हो गए और ख़ून से भर गए और हर तरह से आप को बहुत मारा यहां तक कि बेहोश हो गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के क़बीले बनू तमीम के लोगों को ख़बर हुई तो वह आपको वहां से उठा कर लाए और किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि मुश्रिकीन की इस मार के बाद आप ज़िंदा बच सकेंगे। आप के क़बीले के लोग

मस्जिदे कअ़्बा में आए और ऐलान किया कि अगर हज़रत अबू बकर इस हादिसे में इन्तेक़ाल कर गए तो हम उन के बदले में उत्बा बिन रबीआ़ को क़त्ल करेंगे कि उस ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मारने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था।

शाम तक आप बेहोश रहे और जब होश में हुए तो सब से पहला लफ्ज़ यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का क्या हाल है? लोगों ने आप को बहुत मलामत की कि उन्हीं के साथ रहने की वजह से यह मुसीबत पेश आई और दिन भर बेहोश रहने के बाद बात की तो सब से पहले उन्हीं का नाम लिया। और सब से पहले उन का नाम क्यों न लें कि उन के ख़ून में एक-एक क़त्रा में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत मोजज़न थी। कुछ लोग बद दिली के सबब और बाज़ लोग इस ख़्याल से उठकर चले गए कि जब बोलने लगे हैं तो अब आप की जान बच जाएगी। जाते हुए लोग आप की वालिदा मोहतरमा हज़रत उम्मुल ख़ैर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कि बाद में वह भी मुसलमान हुई) उन से कह गए कि हज़रत अबू बकर के खाने पीने के लिये किसी चीज़ का इन्तिज़ाम कर दें। वह कुछ तैयार करके लाईं और खाने के लिये बहुत कहा मगर आशिक़े सादिक़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वही एक सदा थी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का क्या हाल है? और उन पर क्या गुज़री? आप की वालिदा ने फरमाया कि मुझे कुछ नहीं मालूम कि उन का क्या हाल है? आप ने फरमाया कि हज़रत उमर क़ी बहन उम्मे जमील (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास जाकर दरियाफ्त करो कि हुज़ूर का क्या हाल है? वह अपने साहिबज़ादे की इस बेताबाना दरख़्वास्त को पूरी करने के लिये दौड़ी हुई उम्मे जमील के पास गईं और सैयिदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का हाल दरियाफ्त किया, वह भी उस वक़्त तक अपने इस्लाम को छुपाए हुए थीं, उन्होंने टाल दिया, कोई वाज़ेह जवाब

नहीं दिया और कहा कि अगर तुम कहो तो मैं चल कर तुम्हारे बेटे हज़रत अबू बकर को देखूं कि उन का क्या हाल है, उन्हों ने कहा कि हां चलो। हज़रत उम्मे जमील (रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) उन के घर गईं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु की हालत देख कर बरदाश्त न कर सकीं, बेतहाशा रोने लगीं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने उन से पूछा कि हुज़ूर का क्या हाल है? हज़रत उम्मे जमील ने आप की वालिदा की तरफ इशारा करते हुए फरमाया कि वह सुन रही हैं, आप ने फरमाया कि उन से न डरो, तो उम्मे जमील ने फरमाया कि हुज़ूर बख़ैरो-आफियत हैं, आप ने दरियाफ्त फरमाया कि इस वक़्त कहां हैं? उन्हों ने कहा कि हज़रत अरक़म के घर तशरीफ रखते हैं, फरमाया क़सम है ख़ुदाए ज़ुलजलाल की कि मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं खाउंगा जब तक हुज़ूर की ज़ियारत नहीं कर लूंगा।

आप की वालिदा मोहतरमा तो बहुत ज़्यादा बेक़रार थीं कि आप कुछ खा पी लें मगर आप ने क़सम खा ली जब तक हुज़ूर की ज़ियारत नहीं कर लूंगा कुछ नहीं खाउंगा तो आप की वालिदा ने लोगों की आमदो रफ्त बन्द हो जाने का इन्तेज़ार किया ताकि ऐसा न हो कोई आप को देख कर फिर अज़िय्यत पहुंचा दे, जब रात का बहुत सा हिस्सा गुज़र गया और लोगों की आमदो-रफ्त बन्द हो गई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु को उनकी वालिदा मोहतरमा लेकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु के घर पहुंचीं, हज़रत अबू बकर हुज़ूर से लिपट गए और हुज़ूर भी अपने आशिक़े सादिक़ से लिपट कर रोए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु की हालत देख कर सब रोने लगे। (तारीख़ुल ख़ुलफा वग़ैरा)

इस वाक़िआ़ से साफ ज़ाहिर होता है कि आक़ाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम से हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु को ग़ायत दर्जे मुहब्बत थी और क्यों न होः

मुहम्मद है मताए आलम ईजाद से प्यारा
पिदर मादर बिरादर जानो-माल से प्यारा

मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो गर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम

और हज़रत सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने जैशे उसामा की तन्फीज़ की जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने अहदे मुबारक के आख़िर में शाम की तरफ रवाना फरमाया था, अभी यह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुंचा था और मदीना तैयिबा के क़रीब मक़ामे ज़ी ख़शब ही में था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इस आलम से पर्दा फरमाया, यह ख़बर सुन कर अतराफ मदीना के अरब इस्लाम से फिर गए और मुरतद हो गए, सहाबए किराम ने मुज्तमा होकर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर ज़ोर दिया कि आप उस लश्कर को वापस बुला लें, इस वक़्त उस लश्कर का रवाना करना किसी तरह मस्लहत नहीं। मदीना गिर्द तो अरब के तवाइफे कसीरा मुरतद हो गए और लश्कर शाम को भेज दिया जाए? इस्लाम के लिये यह नाज़ुक तरीन वक़्त था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की वफात से कुफ्फार के हौसले बढ़ गए थे और उन की मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी। मुनाफिक़ीन समझते थे कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया, ज़ईफुल ईमान दीन से फिर गए, मुसलमान एक ऐसे सदमे में शिकस्ता दिल और बेताब व नातवां हो रहे हैं जिस का मिस्ल दुनिया की आंख ने कभी नहीं देखा, उन के दिल घायल हैं और आंखों से अश्क जारी हैं, खाना पीना बुरा मालूम होता, ज़िंदगी एक नागवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के जानशीन को नज़्म क़ायम करना, दीन का संभालना,

मुसलमानों की हिफ़ाज़त करना, इरतिदाद के सैलाब को रोकना किस क़दर दुश्वार था, बावजूद इस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना और मरज़िए मुबारक के ख़िलाफ़ जुर्अत करना सिद्दीक़ सरापा सिदक़ का राब्तए नयाज़मन्दी गवारा न करता था और उस को वह हर मुश्किल से सख़्त तर समझते थे, इस पर सहाबा का इस्रार कि लश्कर वापस बुला लिया जाए और ख़ुद हज़रत उसामा का लौट कर आना और हज़रत अबू सिद्दीक़ से अर्ज़ करना कि क़बाइले अरब आमादए जंग और दरपए तख़्रीबे इस्लाम (यानी इस्लाम को बर्बाद करने पर आमादा) हैं और कार आज़मा बहादुर मेरे लश्कर में हैं, उन्हों इस वक़्त रूम भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मर्दाने जंग से ख़ाली कर देना किसी तरह मुनासिब नहीं मालूम होता, यह हज़रत सिद्दीक़ के लिये और मुश्किलात थीं।

सहाबए किराम ने ऐतिराफ़ किया है कि उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़ की जगह दूसरा होता तो हरगिज़ मुस्तक़िल न रहता और मसाइब व अफ्कार का यह हुजूम और अपनी जमाअ़त की परेशान हालत मबहूत कर डालती। मगर अल्लाहु अक्बर! हज़रत सिद्दीक़ के पाए सबात को ज़र्रा भर लग़ज़िश न हुई और उन के इस्तिक़्लाल में एक शिम्मा (ज़र्रा बराबर) फर्क़ न आया आप ने फरमाया कि अगर परिन्द मेरी बोटियां नोच खाएं तो मुझे यह गवारा है मगर हुज़ूर अनवर सैयिदे आलम की मरज़ीए मुबारक में अपनी राय को दख़ल देना और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रवाना किये हुए लश्कर को वापस करना गवारा नहीं, यह मुझ से नहीं हो सकता। चुनांचे ऐसी हालत में आप ने लश्कर को रवाना फरमा दिया, इस से हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हैरत अंगेज़ शुजाअ़त व लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवांमर्दी के अलावा उन के तवक्कुले सादिक़ का पता चलता है और दुश्मन भी इंसाफन यह कहने पर मजबूर होता है कि ख़ुदाए तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद

ख़िलाफत व जा नशीनी की अऊला क़ाबिलिय्यत व अहलियत हज़रते सिद्दीक़ को अता फरमाई थी।

अब यह लश्कर रवाना हुआ और जो क़बाइल मुरतद होने के लिये तैयार थे वह यह समझ चुके थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के बाद इस्लाम का शीराज़ा ज़रूर दरहम बरहम हो जाएगा और उस की शान व शौकत बाक़ी न रहेगी। उन्हों ने देखा कि लश्करे इस्लाम रूमियों की सर कोबी के लिये रवाना हो गया, उसी वक़्त उन के ख़्याली मन्सूबे ग़लत हो गए और उन्हों ने समझ लिया कि सैयिदे आलाम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने अहदे मुबारक में इस्लाम के लिये ऐसा ज़बर्दस्त नज़्म फरमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दरहम बरहम नहीं हो सकता और वह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअ़त और उस के सामने अक़्वामे आलम को सर निगूं करने के लिये एक ज़बर्दस्त क़ौम पर फौज कशी करते हैं। लिहाज़ा यह ख़्याल ग़लत है कि इस्लाम मिट जाएगा और उस में कुव्वत बाक़ी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिये कि यह लश्कर किस शान से वापस होता है। फ़ज़्ले इलाही से यह लश्कर ज़फ़रे पैकर फतहयाब हुआ, रूमियों को हज़ीमत व शिकस्त हुई, जब यह फातेह लश्कर वापस आया उस वक़्त वह तमाम क़बाइल जो मुरतद होने का इरादा कर चुके थे उस नापाक क़स्द से बाज़ आए और इस्लाम पर सच्चाई के साथ क़ायम हो गए। बड़े-बड़े जलीलुल क़दर साइबुर राय सहाबा जो इस लश्कर की रवानगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ फरमा रहे थे अपनी फिक्र की ख़ता और हज़रत सिद्दीक़ की राय मुबारक के साइब और उनके इल्म की वुस्अ़त के मोअ़तरिफ हुए। (सवानेहे करबाला)

और बैहक़ी व इब्ने असाकिर में है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु ख़लीफा मुक़र्रर न हुए होते तो रूए ज़मीन पर खुदाए तआ़ला की इबादत बाक़ी न रह जाती। इसी तरह क़सम के साथ आप ने तीन बार फरमाया, लोगों ने आप से अर्ज़ किया ऐ अबू हुरैरा! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? आप ने फरमाया कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उसामा को अमीरे लश्कर मुक़र्रर करके शाम की तरफ रवाना फरमाया था और वह अभी ज़ी ख़शब मक़ाम पर थे कि हुज़ूर का विसाल हो गया इस ख़बर को सुन कर अतराफे मदीना के अरब मुरतद हो गए। सहाबए किराम हज़रत अबू बकर की ख़िदमत में आए और इस बात पर ज़ोर दिया कि उसामा के लश्कर को वापस बुला लें, आप ने फरमायाः وَالَّذِیْ لَآاِلٰہَ اِلَّا ھُوَ لَوْ جَرَّتِ الْکِلَابُ بِاَرْجُلِ اَزْوَاجِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَارَدَدْتُ جَیْشًا وَجَّھَہٗ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ यानी क़सम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के पांव कुत्ते पकड़ कर घसीटें तब भी मैं उस लश्कर को वापस नहीं बुला सकता जिस को अल्लाह के रसूल ने रवाना फरमाया था और न मैं उस परचम को सर निगूं करूंगा जिस को मेरे हुज़ूर ने लहराया था।

पस हज़रत उसामा को आगे बढ़ने का हुक्म दिया, वह रवाना हुए तो मुरतद क़बीले दहशतज़दा हो गए यहां तक कि वह सलतनते रूम की हद में पहुंच गए, तरफैन में जंग हुई, मुसलमानों का लश्कर फतहयाब हो कर वापस हुआ तो इस तरह इस्लाम का बोल बाला हो गया।

(तारीखुल खुलफाः51)

महबूबे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को जो बेइन्तहा और ग़ायत दर्जा मुहब्बत थीं उसी मुहब्बत का यह असर है कि ऐसे नाज़ुक वक़्त में सहाबए किराम के ज़ोर डालने के बावजूद हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के लश्कर को वापस बुलाना और प्यारे मुस्तफा के लहराए हुए झण्डे को सरनिगूं करना आप ने गवारा न किया

जिस का नतीजा यह हुआ कि दुश्मनों के हौसले पस्त हो गए और इस्लाम का फिर से बोल बाला हो गया। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि हुज़ूर से हज़रत सिद्दीक़ की मुहब्बत ने इस्लाम को ज़िंदए जावेद बना दिया। एक बार फिर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़िये।

मानिईने ज़कात

रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सल्लम के विसाल फरमाने पर बाज़ लोग तो इस्लाम के सारे अहकाम के मुन्किर हो कर मुरतद हो गए थे और कुछ लोगों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे। यानी उस की फरज़ियत के मुन्किर हो गए और ज़कात की फरज़ियत चूंकि नस्से क़तई से साबित है तो उस के मुन्किर होकर वह भी मुरतद हो गए। इसी लिये शारिहीने हदीस व फुक़हाए किराम मानिईने ज़कात को भी मुरतदीन में शुमार करते हैं।

हज़रत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु ने उन से जिहाद का इरादा फरमाया तो हज़रत उमर और बाज़ दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम ने उन से कहा कि इस वक़्त मुन्किरीने ज़कात से जंग करना मुनासिब नहीं, आप ने फरमाया खुदाए जुलजलाल की क़सम अगर वह लोग एक रस्सी या बकरी का एक बच्चा भी हुज़ूर के ज़माने में ज़कात दिया करते थे और अब उस के देने से इनकार करेंगे तो मैं उन से जंग करूंगा। (तारीखुल खुलफा:51) फिर आप मुहाजिरीन व अन्सार को साथ लेकर अअ्राब की तरफ निकल पड़े और जब वह भाग खड़े हुए तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु को आप अमीरे लश्कर बना कर वापस आ गए, उन्हों ने अअ्राब को जगह-जगह घेरा तो अल्लाह तआ़ाला ने उन्हें हर जगह फतह अता फरमाई। अब सहाबए किराम खुसूसन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु ने आप की राय के सहीह होने का ऐतराफ किया और कहा कि खुदा की क़सम, अल्लाह तआ़ाला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का सीना खोल दिया है और उन्हों ने जो कुछ किया वह हक़ है।

और वाक़िआ भी यही है कि अगर उस वक़्त मानिईने ज़कात की सर कोबी न की जाती और उन्हें छूट दे दी जाती तो फिर कुछ लोग नमाज़ के भी मुन्किर हो जाते और बाज़ लोग रोज़े से भी इनकार कर देते और कुछ लोग बाज़ दूसरी चीज़ों का इनकार कर देते तो इस्लाम अपनी शान व शौकत के साथ बाक़ी न रहता बल्कि खेल बन जाता और उस का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता।

मानिईने ज़कात और उन से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जिहाद के नतीजे में हज़रत सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं: यहां से मुसलमानों को सबक़ लेना चाहिये कि हर हालत में हक़ की हिमायत और ना हक़ की मुख़ालफत ज़रूरी है और जो क़ौम ना हक़ की मुख़ालफत में सुस्ती करेगी वह जल्द तबाह हो जाएगी। आज कल बाज़ सादा लौह बातिल फिरक़ों के रद करने को भी मना करते हैं और कहते हैं कि इस वक़्त आपस की जंग मौकूफ करो, उन्हें हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तरीक़े अमल से सबक़ लेना चाहिये कि आप ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी बातिल की सर शिकनी में तवक़्क़ुफ न फरमाया, जो फिरक़े इस्लाम को नुक़्सान पहुंचाने के लिये पैदा हुए हैं उन से ग़फलत बरतना यक़ीनन इस्लाम की नुक़्सान रसानी है। (सवानेहे करबला)

इस वाक़िआ से यह भी मालूम हुआ कि सिर्फ कलिमा और नमाज़ मुसलमान होने के लिये काफी नहीं बल्कि इस्लाम की सारी बातों को मानना ज़रूरी है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स इस्लाम के सारे अहकाम पर ईमान रखता हो लेकिन ज़रूरियाते दीन में से किसी एक बात का इनकार करता हो तो वह काफिर व मुरतद है जैसे कि मानिईने ज़कात एक बात का इनकार करके काफिर व मुरतद हुए। نعوذ باللہ من ذالك

और मुसैलमा के साथी व मानिईने ज़कात के काफिर व मुरतद होने से यह भी साबित हुआ कि "अरब में काफिर व मुरतद न होंगे" यह कहना ग़लत है।

ग़लत इल्ज़ाम

राफ़ज़ी लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि उन्हों ने हुज़ूर के बाग़ फदक को ग़सब कर लिया और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को नहीं दिया, तो उस का जवाब यह है कि अंबियाए किराम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते वह जो कुछ छोड़ जाते हैं सब सदक़ा होता है, जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हदीस शरीफ़ मरवी है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमायाः لَا نُوْرِثُ مَا تَرَكْنَاهُ صَدَقَةٌ यानी हम गिरोहे अंबिया किसी को अपना वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाते हैं वह सब सदक़ा है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कातः550)

और मुस्लिम शरीफ 2/91 पर है कि हुज़ूर के विसाल फरमा जाने के बाद अज़्वाजे मुतह्हरात ने चाहा कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़रिये हुज़ूर के माल से अपना हिस्सा तक़्सीम करवाएं तो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने फरमायाः أَلَيْسَ قَدْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا نُوْرِثُ مَا تَرَكْنَاهُ صَدَقَةٌ यानी क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने यह नहीं फरमाया है कि हम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाएं वह सब सदक़ा है।

और बुख़ारी 2/575 व मुस्लिम 2/90 पर हज़रत मालिक बिन औस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि मजमए सहाबा जिन में हज़रत अब्बास, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम और हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम मौजूद थे, हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सब को क़सम देकर फरमाया क्या आप लोग जानते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया है कि हम किसी को वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ें वह

फदका है तो सब ने इक़रार किया कि हां हुज़ूर ने ऐसा फरमाया है।

इन अहादीसे करीमा के सहीह होने का सुबूत यह है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफत का ज़माना आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तरका ख़ैबर और फदक वग़ैरा उनके क़बज़े में हुआ और फिर उन के बाद हस्नैन करीमैन वग़ैरा के इख़्तियार में रहा मगर उन में से किसी ने अज़्वाजे मुतह्हरात हज़रत अब्बास और उन की औलाद को बाग़े फदक वग़ैरा से हिस्सा न दिया। लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि नबी के तरके में वरासत जारी नहीं होती। इसी लिये हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बाग़े फदक नहीं दिया न कि बुग़्ज़ व अदावत के सबब जैसा कि राफज़ियों का इल्ज़ाम है। (इस मस्अले के मुतअल्लिक़ मुफस्सल बहस हमारे रिसाला "बाग़े फदक और हदीसे क़िरतास" में देखें।) *अल्-अमजदी*

और आयते करीमा وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ या इसके अलावा कुरआने मजीद व हदीस शरीफ में जहां भी कही अंबियाए कराम की वरासत का ज़िक्र है उस से इल्मे शरीअत व नबुव्वुत ही मुराद है न कि दिरहम व दीनार।

अलालत और वफात

वाक़िदी और हाकिम में है, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बयान फ़रमाया कि वालिदे गिरामी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अलालत की इब्तिदा यूं हुई कि आप ने 7 जुमादल उख़रा, पीर के रोज़ गुस्ल फरमाया, उस रोज़ सरदी बहुत ज़्यादा थी जो असर कर गई। आप को बुख़ार आ गया और 15 दिन आप अलील रहे, इस दरमियान में आप नमाज़ के लिये भी घर से बाहर तशरीफ नहीं ला सके, आख़िर कार बज़ाहिर उसी बुख़ार के सबब 63 साल की उम्र में 2 साल 2 माह से कुछ ज़ाइद उमूरे ख़िलाफत अंजाम देने के बाद 22 जुमादल उख़रा 13 हि0 को आप की वफात हुई

और अकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुबारक पहलू में मदफून हुए। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

आप की करामतें

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कई करामतें ज़ाहिर हुई हैं जिन में चन्द करामतों का ज़िक्र यहां किया जाता है।

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि एक बार मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अस्हाबे सुफ्फा में से तीन आदमियों को अपने घर लाए और उन को खाना खिलाने का हुक्म फरमा कर खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में चले गए, यहां तक कि रात का खाना आप ने हुज़ूर ही के यहां खा लिया और बहुत ज़्यादा रात गुज़र जाने के बाद अपने मकान पर तशरीफ लाए। उन की बीवी ने कहा कि मेहमानों के पास आने से आप को किस चीज़ ने रोक रखा? आप ने फरमाया क्या तुम ने अभी तक मेहमानों को खाना नहीं खिलाया, उन्हों ने अर्ज़ किया कि मैं ने खाना पेश किया था मगर मेहमानों ने आप के बग़ैर खाना खाने से इनकार कर दिया, यह सुन कर आप अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर सख़्त नाराज़ हुए और उन को बहुत बुरा भला कहा कि उस ने मुझ को मुत्तला क्यों नहीं किया, फिर खाना मंगा कर मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए।

रावी का बयान है कि اَيْمُ اللّٰهِ مَا كُنَّا نَأْخُذُ مِنَ اللُّقْمَةِ اِلَّا رَبَا مِنْ اَسْفَلِهَا اَكْثَرُ مِنْهَا यानी खुदा की क़सम हम में जो भी लुक़्मा उठाए उस के नीचे खाना उस से ज़्यादा हो जाता, यहां तक कि हम सब शिकम सैर हो गए और जितना खाना पहले था उस से भी ज़्यादा बच रहा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुतअज्जिब हो कर अपनी बीवी से फरमाया कि यह क्या मामला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ

ज़्यादा नज़र आता है? आप की बीवी ने क़सम खा कर कहा कि बिला शुब्हा यह खाना पहले से तीन गुना ज़्यादा है, फिर वह खाना उठा कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गए, सुबह तक खाना बारगाहे रिसालत में रहा, मुसलमान और काफ़िरों के दरमियान एक मुआहेदा हुआ था जिस की मुद्दत ख़त्म हो गई थी तो उस रोज़ सुबह के वक़्त एक लश्कर तैयार किया गया जिस में बहुत काफी आदमी थे पूरी फौज ने उस खाने को शिकम सैर होकर खाया फिर भी उस बरतन में खाना कम नहीं हुआ। (बुख़ारीः1/506)

मेहमानों के खाने के बाद पहले से भी खाने का तीन गुना ज़्यादा हो जाना और सुबह के वक़्त पूरी फौज का उस खाने को शिकम सैर हो कर खाना फिर भी बरतन में खाने का कम न होना यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़ीम करामत है।

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है उन्हों ने फरमाया कि मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने मरज़े मौत में मुझे वसिय्यत करते हुए इरशाद फरमाया कि मेरी प्यारी बेटी! मेरे पास जो कुछ मेरा माल था आज वह माल वारिसों का हो चुका है, मेरी औलाद में तुम्हारे दो भाई अब्दुर रहमान व मुहम्मद हैं और तुम्हारी दो बहनें हैं। लिहाज़ा मेरे माल को तुम लोग कुरआन मजीद के फरमान के मुताबिक़ तक़सीम करके अपना अपना हिस्सा ले लेना। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज किया कि अब्बा जान! मेरी तो एक ही बहन बीबी अस्मा हैं। यह मेरी दूसरी बहन कौन है? आप ने इरशाद फरमाया कि तुम्हारी सौतेली मां हबीबा बिन्ते ख़ारिजा जो हामिला है उस के पेट में लड़की है वही तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनांचे आप के विसाल फरमाने के बाद आप के फरमान के मुताबिक़ हबीबा बिन्त ख़ारिजा के पैट से लड़की (उम्मे कुलसूम) ही पैदा हुई। (मोअत्ता इमाम मुहम्मद बाबुन नहलीः348)

इस हदीस शरीफ से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की दो करामतें

साबित होती हैं पहली करामत यह कि वफात से पहले आप को इस बात का इल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में इन्तिकाल कर जाऊंगा इसी लिये आप ने वसिय्यत के वक़्त यह फरमाया कि आप मेरा माल मेरे वारिसों का माल हो चुका है। और दूसरी करामत यह साबित होती है कि हामिला के पेट में लड़की है आप यक़ीन के साथ जानते थे इसी लिये हज़रत आइशा सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया कि हबीबा बिन्ते ख़ारिजा जो हामिला है उस के पेट में लड़की है वही तुम्हारी बहन है। और इन दोनों बातों का इल्म यक़ीनन ग़ैब का इल्म है जो बेशक हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो अज़ीमुश शान करामतें हैं।

आप की खुसूसियात

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में बहुत सी खुसूसियात पाई जाती हैं जिन में से चन्द खुसूसियात को हम आप के सामने पेश करते हैं। इब्ने असाकिर हज़रत इमामे शअ़बी से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को खुदाए अज़्ज़ व जल् ने ऐसी चार ख़स्लतों से मुख़्तस फरमाया जिन से किसी को सरफराज़ नहीं फरमाया। अव्वल आप का नाम सिद्दीक़ रखा और किसी दूसरे का नाम सिद्दीक़ नहीं। दूसरे आप रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के साथ ग़ारे सौर में रहे। **तीसरे** आप हुज़ूर की हिज्रत में रफीक़े सफर रहे, **चौथे** सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने आप को हुक्म फरमाया कि आप सहाबए किराम को नमाज़ पढ़ाएं और दूसरे लोग आप के मुक़्तदी बनें। एक बहुत बड़ी खुसूसियत आप की यह भी है कि आप सहाबी, आप के वालिद अबू कुहाफा सहाबी, आप के साहिबज़ादे अब्दुर रहमान सहाबी और उन के साहिबज़ादे अबू अतीक़ मुहम्मद सहाबी। यानी आप की चार नस्ल सहाबी हैं। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम अज्मईन।

सायए मुस्तफा मायए इस्तिफा
इज़्ज़ो-नाज़े ख़िलाफत पे लाखों सलाम

यानी उस अफ्ज़लुल ख़ल्क़ बादर रुसुल
सानिइस नैने हिज्रत पे लाखों सलाम

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल् हम सब को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की सच्ची गुलामी अता फरमाए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

بجاہ حبیبک سید المرسلین صلوات اللہ تعالی وسلامہ علیہ
وعلیہم اجمعین وبرحمتک یا ارحم الراحمین

बिजाहि हबीबिक सैय्यिदिल् मुरसलीन सलवातुल्लाहि तआ़ला व सलामहू अलैहि व अलैहिम अजमईन व बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आज़म

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ كَانَ نَبِيًّا وَّاٰدَمُ بَيْنَ الْمَاۤءِ وَالطِّيْنِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ اَشِدَّاۤءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۤءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا (پ:٢٦، ع:١٢)صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰينا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم الامين عليه وعلى اله اكرم الصلوات والتسليم۔

एक बार हम और आप सब लोग मिल कर तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुरर बार में दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

हकीक़त में कमाल व ख़ूबी वाला वह शख़्स है जो दूसरों को कमाल व ख़ूबी वाला बना दे तो हमारे आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम हकीक़त में कमाल व ख़ूबी वाले है जिन्हों ने बेशुमार लोगों को कमाल व ख़ूबी वाला बना दिया और उनका यह फ़ैज़ हमेशा जारी रहेगा कि क़ियामत तक अपने जां निसारों को कमाल व ख़ूबी वाला बनाते रहेंगे।

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने जिन लोगों को कमाल व ख़ूबी वाला बनाया उन में से एक मशहूर-व मारूफ अमीरुल मोमिनीन उमर फारूके आज़म हैं कि जो अफ्ज़लुल बशर बादल अंबिया हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बाद तमाम सहाबा में सब से अफ्ज़ल हैं।

नाम व नसब

आप का नाम उमर है। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुन्नियत अबू हफ्स और लक़ब फारूके आज़म है। आप के वालिद का नाम ख़त्ताब और मां का नाम अन्तमा है जो हिशाम बिन मुग़ीरा की बेटी यानी अबू जहल की बहन हैं। आठवीं पुश्त में आप का शजरए नसब सराकरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ख़ांदानी शजरा से मिलता है। आप वाक़िए फील के तेरह साल बाद पैदा हुए। नुबुव्वत के छठे साल 27 बरस की उम्र में इस्लाम से मुशर्रफ हुए। आप ने उस वक़्त इस्लाम क़बूल फरमाया जबकि 40 मर्द और ग्यारह औरतें ईमान ला चुकी थीं और बाज़ उलमा का ख़्याल है कि आप ने 39 मर्द और 23 औरतों के बाद इस्लाम क़बूल किया। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस में है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दुआ फरमाते थे या इलाहल आलमीन उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो तुझे प्यारा हो उस से तू इस्लाम को इज़्ज़त अता फरमा। और हाकिम की रिवायत में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से है कि हुज़ूर ने इस तरह दुआ फरमाई: اَللّٰهُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً यानी या अल्लाह! ख़ास तौर से उमर बिन ख़त्ताब को मुसलमान बना कर इस्लाम को इज़्ज़त व कुव्वत अता फरमा। तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की यह दुआ बारगाहे इलाही में मक़्बूल हो गई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम से मुशर्रफ हो गए।

आप के क़बूले इस्लाम का वाक़िआ

दिन बदिन मुसलमानों की तादाद बढ़ते हुए देख कर एक रोज़ कुफ्फारे मक्का जमा हुए और सब ने यह तय किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) को क़त्ल कर दिया जाए। *मआज़ल्लाहि रब्बिल आलमीन*। मगर सवाल पैदा हुआ कि कौन क़त्ल

करे, मजमा में ऐलान हुआ कि है कोई बहादुर जो मुहम्मद को क़त्ल कर दे, सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम, इस ऐलान पर पूरा मजमा तो ख़ामोश रहा मगर हज़रत उमर ने कहा कि मैं उन को क़त्ल करूंगा। लोगों ने कहा बेशक तुम ही उन को क़त्ल कर सकते हो, फिर हज़रत उमर उठे और तलवार लटकाए हुए चल दिये, इसी ख़्याल में जा रहे थे कि एक साहब क़बीलए जुहरा के जिन का नाम हज़रत नुऐम बिन अब्दुल्लाह बताया जाता है और बाज़ लोगों ने दूसरों का नाम लिखा है, बहरहाल उन्हों ने पूछा कि ऐ उमर! कहा जा रहे हो? कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करने जा रहा हूं, हज़रत नुऐम ने कहा इस क़त्ल के बाद तुम बनी हाशिम और बनी जुहरा से किस तरह बच सकोगे, वह तुम्हें उन के बदले में क़त्ल कर देंगे, इस बात को सुन कर वह बिगड़ गए और कहने लगे मालूम होता है कि तुम ने भी अपने बाप दादा का दीन छोड़ दिया है, तो लाओ मैं पहले तुझी को निपटा दूं, यह कह कर तलवार खींच ली और हज़रत नुऐम ने भी यह कहा कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं अपनी तलवार संभाल ली, अन्क़रीब दोनों तरफ से तलवार चलने को थी कि हज़रत नुऐम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कहा कि तू पहले अपने घर की ख़बर ले, तेरी बहन फातिमा बिन्ते ख़त्ताब और बहनोई सईद बिन ज़ैद दोनों अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर मुसलमान हो चुके हैं, यह सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को बे इन्तिहा गुस्सा पैदा हुआ, वहीं से पलट पड़े और सीधे अपनी बहन के घर पहुंचे, वहां हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु दरवाज़ा बन्द किये हुए उन दोनों मियां बीवी का क़ुरआन मजीद पढ़ा रहे थे, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने दरवाज़ा खोलने के लिये कहा, उन की आवाज़ सुन कर हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु घर के एक हिस्से में छुप गए, बहन ने दरवाज़ा खोला, आप घर में दाख़िल हुए और पूछा तुम लोग क्या कर रहे थे? और यह आवाज़ किस की थी? आप

के बहनोई ने टाल दिया और कोई वाज़ेह जवाब नहीं दिया, कहने लगे मुझे मालूम हुआ कि तुम लोग अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिये हो, बहनोई ने कहा हां बाप दादा का दीन बातिल है और दूसरा दीन हक़ है, यह सुनना था कि बेतहाशा टूट पड़े, उन की दाढ़ी पकड़ कर खींची और ज़मीन पर पटख़ कर ख़ूब मारा, उन की बहन छुड़ाने के लिये दौड़ीं तो उन के मुंह पर एक घूंसा इतनी ज़ोर से मारा कि वह ख़ून से तर बतर हो गईं, आख़िर वह भी हज़रत उमर ही की बहन थीं, कहने लगीं कि उमर हम को इस वजह से मार रहे हो कि हम मुसलमान हो गए हैं, कान खोल कर सुन लो कि <u>तुम मार-मार कर हमारे ख़ून का एक-एक कतरा निकाल लो, यह हो सकता है लेकिन हमारे दिलों से ईमान निकाल लो यह हरगिज़ नहीं हो सकता।</u> और आप की बहन ने कहा कि मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। बेशक हम लोग मुसलमान हो गए हैं, तुझ से जो हो सके तू कर ले, बहन के जवाब और उनको ख़ून में तर बतर देख कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गुस्सा ठंडा हुआ, आप ने फरमाया कि अच्छा मुझे वह किताब दो जो तुम लोग पढ़ रहे थे ताकि मैं भी उस को पढ़ूं, आप की बहन ने कहा कि तुम नापाक हो और उस मुक़द्दस किताब को पाक लोग ही हाथ लगा सकते हैं, हज़रत उमर ने हर चन्द इस्रार किया मगर वह बग़ैर गुस्ल के देने को तैयार न हुईं, आख़िर हज़रत उमर ने गुस्ल किया फिर किताब लेकर पढ़ी, उस में सूरए ताहा लिखी हुई थी, उस को पढ़ना शुरू किया जिस वक़्त इस आयते करीमा पर पहुंचेः إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِي यानी बेशक मैं अल्लाह हूं मेरे अलावा कोई माबूद नहीं तो मेरी इबादत करो और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम करो (पाराः16,रुकूअः10) तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहने लगे कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत

में ले चलो, जिस वक़्त हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह बात सुनी तो आप बाहर निकल आए और कहा कि ऐ उमर! मैं तुम को खुशख़बरी देता हूं कि कल जुमेरात की शब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दुआ मांगी थी कि या इलाहल आलमीन! उमर और अबू जहल में जो तुझे महबूब व प्यारा हो उस से इस्लाम को कुव्वत अता फरमा, मालूम होता है कि रसूलुल्लाह की दुआ तुम्हारे हक़ में कबूल हो गई।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम उस वक़्त सफा पहाड़ी की करीब हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में तशरीफ फरमा थे, हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपको साथ लेकर रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िमदत में हाज़िर होने के इरादे से चले, हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरवाज़े पर हज़रत हमज़ा, हज़रत तलहा और कुछ दूसरे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हिफाज़त और निगरानी के लिये बैठे हुए थे, हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप को देख कर फरमाया कि उमर आ रहे हैं, अगर अल्लाह तआला को उन की भलाई मनज़ूर है तब तो यह मेरे हाथ से बच जायेंगे और अगर उनकी नियत कुछ और है तो इस वक़्त उन का क़त्ल करना बहुत आसान है। इसी दरमियान में आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम पर इन हालात के बारे में वही नाज़िल हो चुकी थी, सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने मकान से बाहर तशरीफ लाकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दामन और उन की तलवार पकड़ ली और फरमाया ऐ उमर! क्या यह फसाद तुम उस वक़्त तक बरपा करते रहोगे जब तक कि तुम पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत न हो जाए, यह सुनते ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّكَ عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ यानी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि

आप अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। (तारीखुल खुलफा वग़ैरा)

इस तरह अल्लाह के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम की दुआ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में मक़बूल हुई। आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद
सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम

और फरमाते हैं:

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया
बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद
सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम

चले थे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिये (*मआज़ल्लाहि तआला*) मगर खुद ही क़तीले तेग़ आबरूए मुहम्मद हो गए (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम के जांनिसार हो गए)।

शुद गुलामे कि आबे जू आरद
आबे जू आमद व गुलाम बबुरद

इस वाक़िआ से यह बात वाज़ेह तौर पर मालूम हुई कि इस्लाम बज़ोरे शमशीर नहीं फैला, देखिये इस्लाम क़बूल करने वाले के हाथ में शमशीर है और इस्लाम फैलाने वाले का हाथ शमशीर से खाली है।

(एक मर्तबा सब लोग मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)

फारूक़ लक़ब

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब मैं कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया तो मेरे इस्लाम क़बूल करने की खुशी में उस वक़्त जितने मुसलमान हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर में मौजूद थे इतनी ज़ोर से नारए

तक्बीर बुलन्द किया कि उस को मक्का के सब लोगों ने सुना। मैं ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम हक़ पर नहीं हैं? हुज़ूर ने फरमाया क्यों नहीं? यानी बेशक हम हक़ पर हैं। इस पर मैंने अर्ज़ किया फिर यह पोशीदगी और पर्दा क्यों है। इस के बाद हम सब मुसलमान उस घर से दो सफें बना कर निकले, एक सफ में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, दूसरी सफ़ में मैं था और इसी तरह हम सब सफों की शकल में मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए, कुफ्फारे कुरैश ने मुझे और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जब मुसलमानों के गिरोह के साथ देखा तो उनको बे इन्तिहा मलाल हुआ, उस रोज़ सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फारूक़ का लक़ब अता फरमाया, इस लिये इस्लाम ज़ाहिर हो गया और हक़ व बातिल के दरमियान फर्क़ वाज़ेह हो गया। (तारीखुल खुलफा:78)

इज़्हारे इस्लाम

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं जब मुसलमान हो गया तो उस के बाद अपने मामूं अबू जहल बिन हिशाम के पास पहुंचा, अबू जहल ख़ानदाने कुरैश में बहुत बा असर समझा जाता था और उस को भी रईसे कुरैश की हैसियत हासिल थी, मैं ने उस के दरवाज़े की कुंडी खट खटाई, उस ने अन्दर से पूछा कौन है? मैं ने कहा मैं उमर हूं और मैं तुम्हारा दीन छोड़ कर मुसलमान हो गया हूं, उस ने कहा उमर! ऐसा कभी मत करना, मगर मेरे डर के सबब बाहर नहीं निकला बल्कि अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया, मैं ने कहा यह क्या तरीक़ा है? मगर उस ने कोई जवाब नहीं दिया और न दरवाज़ा खोला, मैं उसी तरह देर तक बाहर खड़ा रहा, फिर वहां से कुरैश के एक दूसरे सरदार और बा असर शख़्स के पास पहुंचा, मैं ने उस को पुकारा, वह निकला तो जो बात मैं ने अपने मामूं अबू जहल से कही थी कि मैं मुसलमान हो गया हूं, वही बात उस से भी कही, तो

उस ने भी कहा ऐसा मत करना, फिर मेरे ख़ौफ से घर के अन्दर दाख़िल होकर दरवाज़ा बन्द कर लिया, मैं ने अपने दिल में कहा यह क्या मामला है कि मुसलमान मारे जाते हैं और मैं नहीं मारा जाता हूं, कोई मुझ से कुछ तआरुज़ नहीं करता, मेरी यह बातें सुन कर एक शख़्स ने कहा कि तुम अपना इस्लाम और दीन इस तरह ज़ाहिर करना चाहते हो, मैंने कहा हां मैं उसी तरह ज़ाहिर करूंगा, उस ने कहा वह देखो पत्थर के पास कुछ लोग बैठे हुए हैं, उन में फुलां शख़्स ऐसा है कि अगर उस से तुम कुछ राज़ की बात कहो तो वह फौरन ऐलान कर देगा, उस से अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ बयान कर दो, हर जगह ख़बर हो जाएगी, एक एक आदमी के घर जाने की ज़रूरत नहीं। मैं वहां पहुंचा और उस से अपने इस्लाम क़बूल करने को ज़ाहिर किया, उस ने कहा क्या वाक़ई तुम मुसलमान हो चुके हो? मैं ने कहा हां बेशक मैं मुसलमान हो चुका हूं, यह सुनते ही उस ने बुलन्द आवाज़ से ऐलान किया कि ऐ लोगो! उमर बिन ख़त्ताब हमारे दीन से निकल गया, यह सुनते ही इधर उधर जो मुश्रिकीन बैठे हुए थे मुझ पर टूट पड़े, फिर देर तक मार पीट होती रही, शोरो-गुल की आवाज़ मेरे मामूं अबू जहल ने सुनी, उस ने पूछा क्या मामला है? लोगों ने कहा कि उमर मुसलमान हो गया है. मेरा मामूं अबू जहल एक पत्थर पर चढ़ा और कहा कि मैं ने अपने भांजे को पनाह दे दी, यह सुनते ही जो लोग मुझसे उलझ रहे थे अलग हो गए मगर यह बात मुझे बहुत नागवार हुई कि दूसरे मुसलमानों से मार पीट हो और मुझ को पनाह दे दी जाए, मैं अबू जहल के पास फिर पहुंचा और कहा: جَوَارُكَ رَدٌّ عَلَيْكَ यानी तेरी पनाह मैं तुझे वापस करता हूं, मुझे तेरी पनाह की ज़रूरत नहीं। फिर कुछ दिनों तक मार पीट का सिलसिला जारी रहा यहां तक कि खुदाए तआला ने इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमाया। (तारीखुल खुलफा:77)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मुसलमान होना

इस्लाम की फतह थी, उन की हिज्रत नुस्रते इलाही थी और उन की ख़िलाफत रहमते ख़ुदावन्दी थी। हम में से किसी की यह हिम्मत व ताक़त नहीं थी कि हम बैतुल्लाह शरीफ के पास नमाज़ पढ़ सकें मगर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुसलमान हो गए तो उन्हों ने मुश्रिकीन से इस क़दर जंग व जिदाल किया कि उन्हों ने आजिज़ आकर मुसलमानों का पीछा छोड़ दिया तो हम बैतुल्लाह शरीफ के पास इत्मिनान से नमाज़ पढ़ने लगे।

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि जिस ने सब से पहले अपना इस्लाम अलल् ऐलान ज़ाहिर किया वह हज़रत उमर फारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं।

और हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ईमान लाए तब इस्लाम ज़ाहिर हुआ, यानी इस से पहले लोग अपना इस्लाम क़बूल करना ज़ाहिर नहीं करते थे, उन के ईमान लाने के बाद लोगों को इस्लाम की तरफ खुल्लम खुल्ला बुलाया जाने लगा और हम बैतुल्लाह शरीफ के पास मजलिसें क़ायम करने, उस का अलानिया तवाफ करने, काफिरों से बदला लेने और उन को जवाब देने के क़ाबिल हो गए। (तारीख़ुल ख़ुलफा:79)

आप की हिज्रत

हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की हिज्रत भी बेमिसाल है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अलावा हम किसी ऐसे शख़्स को नहीं जानते जिस ने अलानिया हिज्रत की हो, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हिज्रत की नियत से निकले तो आप ने अपनी तलवार गले में लटकाई और कमान कंधे पर और तरकश से तीर निकाल कर हाथ में ले लिया फिर बैतुल्लाह शरीफ के पास हाज़िर हुए, वहां बहुत से अशराफे (सरदारे) क़ुरैश बैठे हुए थे, आप ने इत्मिनान से

कअ्बा शरीफ का तवाफ किया, फिर बहुत इत्मिनान से मक़ामे इब्राहीम के पास दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर अश्राफे कुरैश की जमाअ़त के पास आ कर एक एक शख़्स से अलग अलग फरमाया: شَاهَتِ الْوُجُوْهُ यानी तुम लोगों के चेहरे बद शकल हो जायें, बिगड़ जायें और तुम्हारा नास हो जाए, उस के बाद फरमाया مَنْ اَرَادَ اَنْ تَثْكِلَهُ اُمُّهُ وَيُتِّمَ وَلَدُهُ وَتُرَمَّلَ زَوْجَتُهُ فَلْيَلْقَنِيْ وَرَاءَ هٰذَا الْوَادِيْ यानी जो शख़्स कि अपनी मां को बे औलाद, अपने बच्चों को यतीम और अपनी बीवी को बेवा बनाने का इरादा रखता हो तो वह इस वादी के उस तरफ आकर मेरा मुकाबला कर ले, आप के इस तरह ललकारने के बावजूद उन अश्राफे कुरैश में से किसी माई के लाल की हिम्मत न हुई कि वह आप का पीछा करता।

(तारीख़ुल ख़ुलफा:79)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि हमारे पास मदीना तैयिबा में सब से पहले हिज्रत करके मुस्अ़ब बिन उमैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए, फिर हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम और उनके बाद हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बीस सवारों के साथ तशरीफ लाए, हम ने उन से पूछा कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का इरादा क्या है? उन्हों ने फरमाया कि वह पीछे तशरीफ लाएंगे, तो आप के बाद सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम मदीना तैयिबा तशरीफ लाए, हुज़ूर के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी थे।

(तारीख़ुल ख़ुलफा)

इमामे नववी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फरमाते हैं कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के साथ तमाम ग़ज़वात में शरीक रहे और आप वह बहादुर है कि ग़ज़वए उहद में जबकि जंग का नक़्शा बदल गया और मुसलमानों में अफ़रा तफ़री पैदा हो गई तो उस हालत में आप साबित क़दम रहे। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

आप का हुलिया

हज़रत ज़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रंग गंदुमी था, आप के सर के बाल ख़ोद पहनने की वजह से गिर गए थे, क़द आप का लम्बा था, आप का सर दूसरों लोगों के सरों से ऊंचा मालूम होता था, देखने में ऐसा महसूस होता था कि आप किसी जानवर पर सवार हैं।

और अल्लामा वाक़दी फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रंग जो लोग गंदुमी बतलाते हैं उन्हों ने क़हत के ज़माने में आप को देखा होगा, इस लिये कि उस ज़माने में ज़ैतून का तेल इस्तेमाल करने के सबब रंग आप का गंदुमी हो गया था।

और इब्ने सअ़द ने रिवायत की है कि हज़रत इब्ने उमर ने अपने बाप हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुलिया इस तरह बयान किया है कि आप का रंग सुरख़ी माइल सफेद था, आख़िरी उम्र में सर के बाल झड़ गए थे और बुढ़ापे के आसार ज़ाहिर थे। और इब्ने रजा से इब्ने असाकिर ने रिवायत की है उन्हों ने फरमाया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तवीलुल कामत और मोटे बदन के आदमी थे, सर के बाल बहुत ज़्यादा झड़े हुए थे, रंग बहुत गोरा था, जिस में सुरख़ी झलकती थी, आप के गाल अन्दर को धंसे हुए थे, मूंछों के किनारे का हिस्सा बहुत लम्बा था और उन के अतराफ में सुरख़ी थी। (तारीखुल खुलफा:89)

फारूके आज़म और अहादीसे करीमा

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत में बहुत सी हदीसें वारिद हुई हैं, तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है, सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: لَوْ كَانَ بَعْدِىْ نَبِىٌّ لَكَانَ عُمَرَبْنُ الْخَطَّابِ यानी अगर मेरे बाद नबी होते तो उमर होते। (मिश्कात शरीफ:558) सुब्हानल्लाह! यह है मर्तबा हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का कि अगर नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ख़ातिमुन नबिय्यीन न होते तो आप नबी होते। इस हदीस शरीफ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की फज़ीलत का अज़ीमुश शान बयान है।

और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः إِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَى شَيَاطِينِ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ قَدْ فَرُّوا مِنْ عُمَرَ यानी मैं बिला शुब्हा निगाहे नुबुव्वत से देख रहा हूं कि जिन्न के शैतान भी और इंसान के शैतान भी दोनों मेरे उमर के ख़ौफ से भागते हैं रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु (मिश्कात शरीफ:558) यह रुअ़ब व दबदबा है हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का कि चाहे जिन्न का शैतान हो या इंसान का दोनों उन के डर से भाग जाते हैं।

और मदारिजुन नुबुव्वत:2/426 में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि _उमर बा मन अस्त व मन बा उमरम व हक़ बा उमर अस्त हर जा कि बाशद_ यानी उमर मुझ से हैं और मैं उमर से हूं और उमर जिस जगह भी होते हैं हक़ उन के साथ होता है रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

और हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से बुख़ारी और मुस्लिम में रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं सो रहा था कि ख़्वाब देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं और मुझ को दिखाए जा रहे हैं, वह सब कुरते पहने हुए थे, जिन में कुछ लोगों के कुरते ऐसे थे जो सिर्फ सीने तक थे और बाज़ लोगों के कुरते उस से नीचे थे। फिर उमर बिन ख़त्ताब को पेश किया गया जो इतना लाम्बा कुर्ता पहने हुए थे कि ज़मीन पर घिस्टते हुए चलते थे। लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस ख़्वाब की ताबीर क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दीन। (मिश्कात शरीफ:557) इस हदीसे शरीफ में इस बात

का वाज़ेह बयान है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दीनदारी और तक्वा शिआरी में बहुत बढ़े हुए थे।

और तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إِنَّ اللّٰهَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهٖ यानी अल्लाह तआला ने उमर की ज़बान और क़ल्ब पर हक़ को जारी फरमा दिया है। (मिश्कात शरीफ:557) मतलब यह है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा हक़ ही बोलते हैं उन के क़ल्ब और ज़बान पर बातिल कभी जारी नहीं होता।

और तबरानी औसत में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ यानी जिस शख़्स ने उमर से दुश्मनी रखी उस ने मुझ से दुश्मनी रखी और जिस ने उमर से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की। और खुदाए तआला ने अरफ़ा वालों पर उमूमन और उमर पर खुसूसन फख़र व मुबाहात की है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। और जितने अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलाम दुनिया में मबऊस हुए (भेजे गए), हर नबी की उम्मत में एक मुहद्दिस ज़रूर हुआ है। और अगर कोई मोहद्दिस मेरी उम्मत में है तो वह उमर हैं। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुहद्दिस कैसा होता है? हुज़ूर ने फरमाया कि जिस की ज़बान से मलाइका बात करें वह मुहद्दिस होता है। (तारीखुल खुलफा:81)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: لَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الْاُمَمِ مُحَدَّثُوْنَ فَاِنْ يَّكُ فِيْ اُمَّتِيْ اَحَدٌ فَاِنَّهٗ عُمَرُ यानी तुम से पहले उम्मतों में मुहद्दिस हुए हैं। अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (मिश्कात शरीफ:556)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया नहीं आई और न उन्हों ने इस की ख़्वाहिश व तमन्ना फरमाई मगर हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया बहुत आई लेकिन उन्हों ने उसे क़बूल नहीं किया बल्कि ठुकरा दिया। (तारीखुल खुलफा:82) बेशक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया आई कि उन के ज़मानए ख़िलाफत में बहुत ममालिक फतह हुए और बेशुमार शहरों पर क़बज़ा हुआ जहां से बेइन्तिहा माले ग़नीमत हासिल हुआ और वहां से इस क़द्र माले ग़नीमत हासिल हुआ कि इस से पहले किसी शहर के फतह होने पर नहीं हासिल हुआ था। शहरे मदाइन के माले ग़नीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि उस शहर के फतह करने वाले लश्कर के सिपाही साठ हज़ार थे, बैतुल माल का पांचवां हिस्सा निकालने के बाद हर सिपाही को बारह हज़ार दिरहम नक़द मिला था। और यह माल किसरा बादशाह के उस फर्श के अलावा था जो सोने चांदी और जवाहेरात से बना हुआ था जिस को मख़्सूस दरबारों में किसरा बादशाह के लिये बिछाया जाता था, यह फर्श लश्कर की इजाज़त से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में भेज दिया गया, इस फर्श की क़ीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि इस के एक बालिशत मुरब्बा टुक्ड़े की क़ीमत हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बीस हज़ार की रक़म मिली थी। तो इस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया आती थी मगर आप हमेशा उसे ठुकराते रहे।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तहरीर फरमाया कि लोगों को उन की तन्ख़्वाहें और उस के साथ अतियात के तौर पर भी माल तक़्सीम कर दो, उन्हों ने आप को लिखा कि मैं ने ऐसा ही किया है लेकिन इस के बावजूद अभी

माल बहुत ज़्यादा मौजूद है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनको तहरीर फरमाया कि कुल माल "माले ग़नीमत" है जो खुदाए तआला ने मुसलमानों को दिया है लिहाज़ा वह सब माल उन्हीं पर तक्सीम कर दो, वह माल उमर या उस की औलाद का नहीं है। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।* (तारीखुल खुलफा:98)

आप की राय से कुरआन की मुवाफकत

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक बहुत बड़ी फज़ीलत यह है कि कुरआन मजीद आप की राय के मुवाफिक़ नाज़िल होता था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि कुरआने करीम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राय मौजूद हैं और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि अगर किसी मामले में लोगों की राय दूसरी होती और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राय दूसरी तो कुरआने मजीद हज़रत उमर की राय के मुवाफिक़ नाज़िल होता था। हज़रत मुजाहिद से मरवी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किसी मामले में जो कुछ मशवरा देते थे, कुरआन शरीफ की आयतें उसी के मुताबिक़ नाज़िल होती थीं। (तारीखुल खुलफा:83) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि उन के रब ने उनसे 21 बातों में मुवाफकत फरमाई है, उन में चन्द बातों का आप लोगों के सामने ज़िक्र किया जाता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने सरकार अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर! आप की ख़िदमत में हर तरह के लोग आते जाते हैं और हुज़ूर की ख़िदमत में अज़्वाजे मुतह्हरात भी होती हैं, बेहतर है कि आप उन को पर्दा करने का हुक्म फरमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मेरी इस अर्ज़ के बाद उम्महातुल मोमिनीन के पर्दा के बारे में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ

حِجَابٍ यानी और जब तुम उम्महातुल मोमिनीन से इस्तेमाल करने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो। (पारा:22,रुकूअ:4)(तारीखुल खुलफा)

मुल्के शाम से एक क़ाफिले के साथ अबू सुफियान के आने की ख़बर पाकर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने अस्हाब के साथ उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हुए, मक्का मुअज़्ज़मा से अबू जहल कुफ्फारे क़ुरैश का एक भारी लश्कर लेकर क़ाफिला की इमदाद के लिये रवाना हुआ। अबू सुफियान तो रास्ते से हट कर अपने क़ाफिला के साथ समन्दर के साहिल की तरफ चल पड़े। तो अबू जहल से उस के साथियों ने कहा कि क़ाफिला तो बच गया अब मक्का मुअज़्ज़मा वापस चलो मगर उस ने इनकार कर दिया और हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से जंग करने के इरादे से बद्र की तरफ चल पड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से जंग करने के बारे में मश्वरा किया तो बाज़ लोगों ने कहा कि हम इस तैयारी से नहीं चले थे, न हमारी तादाद ज़्यादा है, न हमारे पास काफी सामान अस्लिहा है, मगर उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बद्र की तरफ निकल कर काफिरों से मुक़ाबला करने ही का मश्वरा दिया तो यह आयते करीमा नाज़िल हुई: كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَارِهُونَ यानी ऐ महबूब! तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से हक़ के साथ (बद्र की तरफ) बर आमद किया और बेशक मुसलमानों का एक गिरोह इस पर नाखुश था। (पारा:9, रुकूअ:15) (तारीखुल खुलफा)

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू यअ़ला बयान फ़रमाते हैं कि एक यहूदी हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मिला और आप से कहने लगा कि जिब्रील फिरिश्ता जिस का तज़्किरा तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) करते हैं, वह हमारा सख़्त दुश्मन है, उस के जवाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

फरमाया: مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ यानी जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उस के फिरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफिरों का।

(पारा:1, रुकूअ:12) (तारीखुल खुलफा:84)

तो जिन अल्फाज़ के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यहूदी को जवाब दिया बिल्कुल उन्हीं अल्फाज़ के साथ कुरआने मजीद की यह आयते करीमा नाज़िल हुई। आयते मुबारका के आखिरी जुम्ला: فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ से मालूम हुआ कि अंबिया व मलाइका की अदावत कुफ्र है और महबूबाने हक़ से दुश्मनी करना खुदाए तआला से दुश्मनी करना है।

पहली शरीअतों में रोज़ा इफ्तार करने के बाद खाना पीना और हम-बिस्तरी करना इशा की नमाज़ तक जाइज़ था। बाद नमाज़े इशा यह सारी चीज़ें रात में भी हराम हो जाती थीं। यह हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़मानए मुबारका तक बाकी रहा, यहां तक कि रमज़ान शरीफ की रात में बाद नमाज़े इशा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हम-बिस्तरी हो गई, जिस पर वह बहुत शर्मिन्दा हुए, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और वाक़िआ बयान किया तो इस पर यह आयते मुबारका नाज़िल हुई: اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ इस आयते करीमा का मतलब यह है कि रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना (यानी उनसे हम-बिस्तरी करना) तुम्हारे लिये हलाल हो गया।

(पारा:2,रुकूअ:7)

बिशर नामी एक मुनाफिक़ था, उस का एक यहूदी से झगड़ा था, यहूदी ने कहा चलो सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से फैसला करा लें, मुनाफिक़ ने ख़्याल किया हुज़ूर हक़ फैसला करेंगे, कभी किसी की तरफदारी और रिआयत न फरमायेंगे जिस से उस का मतलब हासिल न हो सकेगा, इस लिये उस ने मुद्दईये ईमान होने (यानी

ईमान का दावा करने) के बावजूद कहा कि हम कअ़ब बिन अशरफ यहूदी को पंच बनायेंगे। यहूदी जिस का मामला था वह ख़ूब जानता था कि कअ़ब रिश्वत ख़ोर है और जो रिश्वत ख़ोर होता है उस से सहीह फैसले की उम्मीद रखना ग़लत है। इस लिये कअ़ब के हम मज़हब होने के बावजूद यहूदी ने उस को पंच तस्लीम करने से इनकार कर दिया तो मुनाफ़िक़ को फैसले के लिये सरकारे अक़्दस के यहां मजबूरन आना पड़ा, हुज़ूर ने जो हक़ फैसला किया वह इत्तिफ़ाक़ से यहूदी के मुवाफ़िक़ और मुनाफ़िक़ के मुख़ालिफ हुआ। मुनाफ़िक़ हुज़ूर का फैसला सुनने के बाद फिर यहूदी के दरपै हुआ और उसे मजबूर करके हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास लाया, यहूदी ने आप से अर्ज़ किया कि मेरा और इस का मामला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम तय फरमा चुके हैं लेकिन यह हुज़ूर के फैसले को नहीं मानता, आप से फैसला चाहता है, आप ने फरमाया ठहरो मैं अभी आकर फैसला किये देता हूं, यह फरमा कर मकान में तशरीफ ले गए और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ मुद्दई को क़त्ल कर दिया और फरमाया <u>जो अल्लाह और उस के रसूल के फैसले को न माने उस के मुतअ़ल्लिक़ मेरा यही फैसला है।</u> तो बयाने वाक़िआ के लिये यह आयते करीमा नाज़िल हुई: اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا (प:5,रु:6) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दावा है कि वह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी तरफ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा, फिर चाहते हैं कि अपना पंच शैतान को बनाएं और उन को तो यह हुक्म था कि उसे हरगिज़ न मानें और इब्लीस यह चाहता है उन्हें दूर बहका दे। (तफ्सीरे जलालैन व सावी)

फिर किसी ने सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी कि हज़रत उमर ने उस मुसलमान को क़त्ल कर दिया जो हुज़ूर के दरबार में फैसले के लिये हाज़िर हुआ था, आप ने फरमाया

कि मुझे उमर से ऐसी उम्मीद नहीं कि वह किसी मोमिन के क़त्ल पर हाथ उठाने की जुर्अत कर सके तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फिर मन्द्रजा ज़ैल आयते मुबारका नाज़िल फरमाई। (तारीखुल खुलफा:84)

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

तर्जमाः यानी ऐ महबूब! तुम्हारे रब की क़सम, वह लोग मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़ों में तुम्हें हाकिम न तस्लीम कर लें। फिर जो कुछ तुम हुक्म फरमा दो, अपने दिलों में उसे रुकावट न पाएं और दिल से मान लें। (पाराः5,रुकूअ़:6)

इन वाकिआत से खुदावन्दे कुद्दूस की बारगाह में हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इज़्ज़त व अ़ज़्मत का पता चलता है कि उन की बातों के मुवाफिक़ वही-ए-इलाही और क़ुरआने मजीद की आयतें नाज़िल होती थीं, मज़ीद तफ्सील जानने के लिये तारीखुल खुलफा वग़ैरा का मुतालेआ़ करें।

एक बार सब मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

आप की ख़िलाफत

हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िलाफत का वाकिआ़ अल्लामा वाक़िदी की रिवायत के मुताबिक़ यूं है कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तबीअ़त अलालत के सबब बहुत ज़्यादा नासाज़ हो गई तो आप ने हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुलाया जो अशरए मुबश्शरा (वह दस सहाबए किराम जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने दुनिया में ही जन्नती होने की खुशख़बरी दी थी, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ उन्हीं) में से हैं और उन से फरमाया कि उमर के बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्हों ने कहा कि मेरे ख़्याल

में तो वह उस से बढ़ कर हैं जितना कि आप उन के बारे में ख़्याल फरमाते हैं, फिर आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुला कर उन से भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में दरियाफ्त फरमाया, उन्हों ने भी यही कहा कि मुझ से ज़्यादा आप उन के बारे में जानते हैं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इरशाद फरमाया कि कुछ तो बतलाओ, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि उन का बातिन उन के ज़ाहिर से अच्छा है और हम लोगों में उन का मिस्ल कोई नहीं। फिर आप ने सईद बिन ज़ैद, उसैद बिन हुज़ैर और दीगर अंसार व मुहाजिरीन हज़रात से भी मश्वरा लिया और उन की राएं मालूम कीं। हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि खुदाए तआ़ला ख़ूब जानता है कि आप के बाद हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) सबसे अफ़ज़ल हैं, वह अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहते हैं और अल्लाह जिस से नाखुश होता है उस से वह भी नाखुश रहते हैं, उन का बातिन उन के ज़ाहिर से भी अच्छा है और कारे ख़िलाफत के लिये उन से ज़्यादा मुस्तइद और क़वी शख़्स कोई नज़र नहीं आता, फिर कुछ और सहाबए किराम आए, उन में से एक शख़्स ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कहा कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की सख़्त मिज़ाजी से आप वाकिफ हैं इस के बावजूद अगर आप उन को ख़लीफा मुक़र्रर करेंगे तो खुदाए तआ़ला के यहां क्या जवाब देंगे? आप ने फरमाया ख़ुदा की क़सम तुम ने मुझ को ख़ौफ ज़दा कर दिया मगर मैं बारगाहे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ करूंगा कि या इलाहल आलमीन! मैं ने तेरे बन्दों में से बेहतरीन शख़्स को ख़लीफा बनाया है और ऐ ऐतराज़ करने वाले यह जो कुछ मैं ने कहा है तुम दूसरे लोगों को भी पहुंचा देना।

उस के बाद आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

को बुला कर फरमाया लिखिये: *बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम,* यह वसियत नामा है जो अबू बकर बिन कुहाफा ने अपने आख़िरी ज़माने में दुनिया से रुख़्सत होते वक़्त और अहदे आख़िरत के शुरू में आलमे बाला में दाख़िल होते वक़्त लिखाया है, यह वह वक़्त है जबकि एक काफिर भी ईमान ले आता है, एक फासिक़ व फाजिर भी यक़ीन की रौशनी हासिल कर लेता है और एक झूठा भी सच बोलता है, मुसलमानों! अपने बाद मैं ने तुम्हारे ऊपर उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफा मुन्तख़ब किया है, उन के अहकाम को सुनना और उन की इताअ़त व फरमां बरदारी करना, मैं ने हत्तल इम्कान खुदा व रसूल, दीन और अपने नफ्स के बारे में कोई तक़्सीर व ग़लती नहीं की है और जहां तक हो सका तुम्हारे साथ भलाई की है, मुझे यक़ीन है कि वह (यानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अदल व इंसाफ से काम लेंगे, अगर उन्हों ने ऐसा किया तो मेरे ख़्याल के मुताबिक़ होगा और अगर उन्हों ने अदल व इंसाफ को छोड़ दिया और बदल गए तो हर शख़्स अपने किये का जवाबदेह होगा। और ऐ मुसलमानों! मैं ने तुम्हारे लिये नेकी और भलाई ही का क़सद किया है: وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ (प:19-रु:15) यानी और ज़ालिम अन्क़रीब जानेंगे कि व किस करवट पर पलटा खायेंगे। *वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।*

फिर आप ने उस वसियत नामा को सर बमोहर करने का हुक्म फरमाया, जब वह मोहर बन्द हो गया, तो आप ने उसे हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हवाले कर दिया, जिसे लेकर वह गए, लोगों ने राज़ी ख़ुशी से हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की। उस के बाद आप ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को तन्हाई में बुला कर कुछ वसियतें फ़रमाईं और जब वह चले गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बारगाहे इलाही में दुआ़ के लिये हाथ उठाया और अर्ज़

किया या इलाहल आलमीन! यह जो कुछ मैं ने किया है इस से मेरी नियत मुसलमानों की फलाह व बहबूद है, तू इस बात से ख़ूब वाक़िफ है कि मैं ने फित्ना व फसाद रोकने के लिये ऐसा काम किया है, मैं ने इस के बारे में अपनी राय के इज्तिहाद से काम लिया है, मुसलमानों में जो सब से बेहतर है, मैं ने उस को उन का वाली बनाया है और वह उन में सब से क़वी और नेकी पर हरीस है।

और या इलाहल आलमीन! मैं तेरे हुक्म से तेरी बारगाह में हाज़िर हो रहा हूं, खुदावन्दा तू ही अपने बन्दों का मालिक व मुख़्तार है और उन की बाग डोर तेरे ही दस्ते कुद्रत में है, या इलाहल आलमीन उन लोगों में दुरुस्तगी और सलाहियत पैदा करना और उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को खुलफाए राशिदीन में से करना और उन के साथ उन की रअय्यत को भी अच्छी ज़िंदगी बसर करने की तौफीक़े रफीक़ अता फरमा।

एक ऐतराज़ और उस का जवाब

राफज़ी लोग कहते हैं कि (हज़रत) अबू बकर ने जो अपनी ज़िंदगी में ख़लीफा मुन्तख़ब किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुख़ालफत की इस लिये कि हुज़ूर ने अपनी ज़ाहिरी ज़िंदगी में किसी को ख़लीफा नहीं बनाया हालां कि वह अच्छाई व बुराई को ख़ूब जानते थे और अपनी उम्मत पर पूरी पूरी शफ्क़त व राफत रखते थे मगर इस के बावजूद आप ने उम्मत पर किसी को ख़लीफा नामज़द नहीं किया और (हज़रत) अबू बकर ने (हज़रत) उमर को अपनी ज़िंदगी में ख़लीफा नामज़द कर दिया जो हुज़ूर की खुली हुई मुख़ालफत है।

इस ऐतराज़ के तीन जवाब हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मोहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाए हैं और वह यह हैं। पहला जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का अपनी ज़ाहिरी ज़िंदगी में उम्मत पर ख़लीफा न बनाना खुला हुआ झूठ और बोहतान है इस लिये कि राफज़ी सब के सब इस बात

के क़ाइल हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफा बनाया था। लिहाज़ा अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी सुन्नते नबवी की पैरवी में ख़लीफा मुन्तख़ब कर दिया तो इस में मुख़ालफत कहां से लाज़िम आ गई। और अगर जवाब की बुनियाद मज़्हबे अहले सुन्नत पर रखें तो अहले सुन्नत के मुहक़्क़िक़ीन इस बात के क़ाइल हैं कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ और हज में अपना नाइब व ख़लीफा बनाया है। और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रमज़ शनास (इशारा पहचानने वाले), आप के कामों की बारीकियों से आगाह और आप के इशारों को अच्छी तरह समझते थे उन के लिये इतना ही इशारा काफी था और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सिर्फ इस नुक्तए नज़र से ख़िलाफत नामा लिखवाया कि अरब व अजम के नौ मुस्लिम बग़ैर तस्रीह व तन्सीस के इस से वाक़िफ न हो सकेंगे।

और दूसरा जवाब यह है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस वजह से ख़लीफा नहीं मुक़र्रर फरमाया कि आप वही-ए-इलाही से पूरे यक़ीन के साथ जानते थे कि आप के बाद हज़रत अबू बकर ही ख़लीफा होंगे, सहाबा उन्हीं पर इत्तिफाक़ करेंगे और कोई दूसरा उस में दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकेगा। चुनांचे अहादीसे करीमा जो अहले सुन्नत की किताबों में मौजूद हैं इस बात पर वाज़ेह तरीक़े से दलालत करती हैं मसलन हुज़ूर ने फरमाया: يَـأْبَـى اللّـٰهُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ إِلَّا اَبُوْبَكْر यानी अल्लाह और मुसलमान अबू बकर के सिवा किसी को क़बूल न करेंगे। और हदीस शरीफ में है: فَإِنَّهُ الْخَلِيْفَةُ مِنْ بَعْدِى यानी मेरे बाद अबू बकर ख़लीफा होंगे रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यक़ीने कामिल था कि ख़लीफा

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही होंगे तो खिलाफ़त नामा लिखने की कोई हाजत न थी। चुनांचे मुस्लिम शरीफ में है कि मरज़े वफ़ात में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके साहिबज़ादे को बुलाया ताकि ख़िलाफत नामा लिखें, फिर फरमाया कि खुदाए तआला और मुसलमान अबू बकर के अलावा किसी और को ख़लीफा नहीं बनाएंगे, लिखने की हाजत क्या है? तो आप ने इरादा तरक फरमाया दिया। बख़िलाफ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कि आपके पास वही नहीं आती थी और न आप को इस बात का कतई इल्म था कि मेरे बाद लोग बिला शुब्हा उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफा बनाएंगे और अपनी अक्ल से इस्लाम और मुसलमानों के लिये हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफत को अच्छा समझते थे इस लिये उन पर ज़रूरी था कि जिस चीज़ में उम्मत की भलाई देखें उस पर अमल करें, *बिहम्दिल्लाहि तआला* आप की अक्ल ने सहीह काम किया कि इस्लाम की शौकत, इन्तिज़ाम उमूरे सल्तनत और काफिरों की ज़िल्लत जिस क़द्र हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथों हुई तारीख़ उस की मिसाल पेश करने से आजिज़ है।

और तीसरा जवाब यह है कि ख़लीफा न बनाना और चीज़ है और ख़लीफा बनाने से मना करना और चीज़ है, मुख़ालफत जब लाज़िम आती कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़लीफा बनाने से रोके होते और हज़रत अबू बकर ख़लीफा बना देते और अगर ख़लीफा बनाना हुज़ूर की मुख़ालफत करना है तो लाज़िम आएगा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत इमाम हसन को ख़लीफा बना कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुख़ालफत की। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।* (तोहफए इस्ना अशरिया)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर

फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने बाद ख़लीफा बना कर निहायत अक्ल और दानिशमन्दी से काम लिया। इस लिये कि वह जानते थे, इस्लाम अपनी सच्चाई की बिना पर रोज़ बरोज़ फैलता ही जाएगा, बड़ी-बड़ी सल्तनतें ज़ेरे नगीं होंगी और बड़े-बड़े ममालिक फत्ह होंगे, जहां से बहुत माले ग़नीमत आएगा, लोग ख़ुशहाल व मालदार हो जायेंगे और मालदारी के बाद अक्सर दुनियादारी आ जाती है दीनदारी कम हो जाती है, इस लिये अब मेरे बाद उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जैसे शख़्स को ख़लीफा होना ज़रूरी है जो दीन के मामले में बहुत सख़्त हैं और शरीअत के मामले में किसी की परवाह नहीं करते हैं।

हज़रत सुफियाने सौरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जिस शख़्स ने यह ख़्याल कया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से ज़्यादा ख़िलाफत के मुस्तहिक़ और हक़दार हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे तो उस ने हज़रत अबू बकर व हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को ख़ताकार ठहराने के साथ तमाम अन्सार व मुहाजिरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को भी ख़ताकार ठहराया। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।* (तारीखुल खुलफा:83)

आप की करामतें

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बहुत सी करामतें भी ज़ाहिर हुई हैं जिन में से चन्द करामतों का ज़िक्र आप के सामने किया जाता है। अल्लामा अबू नुऐम ने दलाइल में हज़रत उमर बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जुमा का खुत्बा फरमा रहे थे यका यक आप ने दरमियाने खुत्बा छोड़ कर तीन बार यह फरमायाः يَاسَارِيَةُ الْجَبَل यानी ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ, ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ, ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ। इस तरह हज़रत

सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पुकार कर पहाड़ की तरफ जाने का हुक्म दिया और उस के बाद फिर खुत्बा शुरू फरमा दिया। हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बाद नमाज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया कि आप तो खुत्बा फ़रमा रहे थे फिर यका यक बुलंद आवाज़ से कहने लगे يَاسَارِيَةُ الْجَبَل तो यह क्या मामला था? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः क़सम है खुदाए ज़ुल जलाल की मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था رَأَيْتُهُمْ يُقَاتِلُوْنَ عِنْدَ جَبَلٍ يُؤْتُوْنَ مِنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ فَلَمْ اَمْلِكْ اَنْ قُلْتُ يَاسَارِيَةُ الْجَبَل यानी मैं ने मुसलमानों को देखा कि वह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और कुफ्फार उन को आगे और पीछे से घेरे हुए हैं, यह देख कर मुझ से ज़ब्त न हो सका और मैं ने कह दिया ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ।

इस वाक़िआ के कुछ रोज़ बाद हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ासिद एक ख़त लेकर आया जिस में लिखा था कि हम लोग जुमा के दिन कुफ्फार से लड़ रहे थे और क़रीब था कि हम शिकस्त खा जाते कि ऐने जुमा की नमाज़ के वक़्त हम ने किसी की आवाज़ सुनी يَاسَارِيَةُ الْجَبَل ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ हट जाओ, इस आवाज़ को सुन कर हम पहाड़ की तरफ चले गए तो खुदाए तआला ने काफिरों को शिकस्त दी, हम ने उन्हें क़त्ल कर डाला, इस तरह हम को फत्ह हासिल हो गई। (तारीखुल खुलफा:86)

हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु निहावन्द में लड़ाई कर रहे थे जो ईरान के सूबए आज़र बाइजान के पहाड़ी शहरों में से है और मदीना तैयिबा से इतनी दूर है कि उस ज़माने में वहां से चल कर एक माह के अन्दर निहावन्द नहीं पहुंच सकते थे, जैसा कि हाशिया अश्अतुल् लम्आत:4/601 में है कि "<u>निहावन्द दर (ईरान) सूबा आज़र बाइजान अज बिलादे जिबाल अस्त कि अज़ मदीना बयक माह आंजा</u> *<u>[illegible] रसीद</u>" तो जब निहावन्द मदीना तैयिबा से इतनी दूर है कि उस*

ज़माने में आदमी वहां से चल कर एक माह में निहावन्द नहीं पहुंच सकता था मगर हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मस्जिद नबवी में खुत्बा फरमाते हुए हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को निहावन्द में लड़ते हुए मुलाहेज़ा फरमाया और आप ने यह भी देखा कि दुश्मन मुसलमानों को आगे पीछे से घेरे हुए हैं और पहाड़ क़रीब में है, फिर आप ने उन्हें आवाज़ देकर पहाड़ की तरफ जाने का हुक्म फरमाया और बग़ैर किसी मशीन की मदद के अपनी आवाज़ को वहां तक पहुंचा दिया, यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की खुली हुई करामत है।

हर कि इश्क़े मुस्तफा सामाने ऊस्त
बहरो-बर दर गोशए दामाने ऊस्त

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इस करामत को इमाम बैहक़ी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से भी रिवायत है की है जो हदीस की मशहूर व मोअ़्तमद किताब मिश्कात शरीफ पेजः 546 पर भी लिखी हुई है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने एक शख़्स से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा कि जुमरा यानी चिंगारी, फ़िर आप ने उसके बाप का नाम दरियाफत फरमाया तो उस ने कहा शिहाब यानी शोला। फिर आप ने उस से पूछा तुम्हारे क़बीले का नाम क्या है? उस ने कहा हरक़ा यानी आग और जब आप ने उस के रहने की जगह दरियाफत की तो उस ने हुर्रा बताया यानी गरमी। आप ने पूछा कि हुर्रा कहां है? उस ने कहा ज़ाते लज़ा यानी शोले वाली जगह में, इन सारे जवाबात को सुनने के बाद हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमायाः أَدْرِكْ أَهْلَكَ فَقَدِ احْتَرَقُوْا यानी अपने अहल व अयाल की ख़बर लो कि वह सब जल कर मर गए, जब वह शख़्स अपने घर वापस हुआ तो देखा वाक़ई उस के घर को आग लग गई थी और सब

लोग जल कर मर गए थे। (तारीखुल खुलफा:86)

हज़रत अबुश शैख़ किताबुल इस्मत में हज़रत कैस बिन हज्जाज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मानए ख़िलाफत में मिस्र को फत्ह किया तो अहले अजम एक मुक़र्ररा दिन पर हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहा: يَاأَيُّهَاالْأَمِيْرُ إِنَّ لِنِيْلِنَا هٰذَا سُنَّةً لَايَجْرِىْ إِلَّابِهَا यानी एक हाकिम! हमारे इस दरियाए नील के लिये एक पुराना तरीक़ा चला आ रहा है कि जिस के बग़ैर जारी नहीं रहता है बल्कि खुश्क हो जाता है और हमारी खेती का दारो मदार इसी दरियाए नील के पानी पर ही है। हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन लोगों से दरियाफत फरमाया कि दरियाए नील के जारी रहने का वह पुराना तरीक़ा क्या है? उन लोगों ने कहा कि ज़ब उस महीने की चांद की ग्यारहवीं तारीख़ आती है तो हम लोग एक कुंवारी लड़की को मुन्तख़ब करके उस के मां बाप को राज़ी करते हैं फिर उसे बेहतरीन क़िसम के ज़ेवरात और कपड़े पहनाते हैं, उस के बाद लड़की को दरियाए नील में डाल देते हैं। हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: إِنَّ هٰذَا لَايَكُوْنُ أَبَدًا فِى الْإِسْلَامِ यानी इस्लाम में ऐसा कभी नहीं हो सकता है, यह तमाम बातें लग़्व और बेसरो-पा हैं, इस्लाम इस क़िस्म की तमाम बातिल बातों को मिटाने आया है, वह लड़की को दरियाए नील में डालने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दे सकता, आप के इस जवाब के बाद लोग वापस चले गए, कुछ दिनों के बाद वाक़ई दरियाए नील बिल्कुल खुश्क हो गया, यहां तक कि बहुत से लोग वतन छोड़ने पर आमादा हो गए। हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह मामला देखा तो एक ख़त लिख कर हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सारे हालात से मुत्तला (आगाह) किया, आप ने ख़त पढ़ने के बाद हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तहरीर फरमाया

कि तुम ने मिस्रियों को बहुत उम्दा जवाब दिया, बेशक इस्लाम इस क़िसम की तमाम लग़व और बेहूदा बातों को मिटाने के लिये आया है। मैं इस ख़त के हमराह एक रुक़आ रवाना कर रहा हूं तुम इस को दरियाए नील में डाल देना।

जब वह रुक़आ हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को पहुंचा तो आप ने उसे खोल कर पढ़ा उस में लिखा हुआ था कि:

مِنْ عَبْدِاللّٰهِ عُمَرَ اَمِيْرِالْمُؤْمِنِيْنَ اِلٰى نِيْلِ مِصْرَ اَمَّا بَعْدُ فَاِنْ كُنْتَ تَجْرِىْ مِنْ قَبْلِكَ فَلَاتَجْرِ

وَاِنْ كَانَ اللّٰهُ يُجْرِيْكَ فَاَسْاَلُ اللّٰهَ الْوَاحِدَ الْقَهَّارِ اَنْ يُجْرِيْكَ۔

यानी अल्लाह के बन्दे उमर अमीरुल मोमिनीन की तरफ से मिस्र के दरियाए नील को मालूम हो कि अगर तू बज़ाते ख़ुद जारी होता है तो मत जारी हो। और अगर ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल तुझ को जारी फरमाता है तो मैं अल्लाह वाहिदुल क़ह्हार से दुआ करता हूं कि वह तुझे जारी फरमा दे।

हज़रत अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के उस रुक़आ को रात के वक़्त दरियाए नील में डाल दिया। मिस्र वाले जब सुबह को नीन्द से बेदार हुए तो देखा कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस को इस तरह जारी फरमा दिया कि सोला हाथ पानी ऊपर चढ़ा हुआ है। फिर दरियाए नील उस तरह कभी नहीं सूखा और मिस्र वालों को यह जाहिलाना रस्म हमेशा के लिये ख़त्म हो गई। (तारीख़ुल ख़ुलफा:87)

यह हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बहुत बड़ी करामत है कि आप ने दरियाए नील के नाम ख़त लिखा और ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल से दुआ की, तो वह दरियाए नील जो हर साल एक कुंवारी लड़की की जान लिये बग़ैर जारी नहीं होता था हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़त से हमेशा के लिये जारी हो गया। मालूम हुआ कि आप बहरो-बर दोनों पर हुकूमत फरमाते थे। एक

शायर ने बहुत ख़ूब कहा है:

याद ऊ गर मोनिस जानत बूद
हर दो अलाम ज़ेरे फरमानत बूद

ख़िलाफते फारूकी का ज़माना था एक अजमी शख़्स मदीना तैयिबा आया जो हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तलाश कर रहा था, किसी ने बताया कि कहीं आबादी के बाहर कहीं सो रहे होंगे, वह शख़्स आबादी के बाहर निकल कर आप को तलाश करने लगा, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस हालत में पाया कि वह ज़मीन पर सर के नीचे ज़िरह रखे हुए सो रहे थे, उसने सोचा कि सारी दुनिया में इस शख़्स की वजह से फित्ना बरपा है इस लिये कि उस वक़्त ईरान और दूसरे मुल्कों में इस्लामी फौजों ने तहलका मचा रखा था, लिहाज़ा इस को क़त्ल कर देना ही मुनासिब है और आसान भी है, इस लिये कि आबादी के बाहर सोते हुए शख़्स को मार डालना कोई मुश्किल बात नहीं, यह सोच कर उस ने नियाम से तलवार निकाली और आप की ज़ात बा बरकात पर वार करना ही चाहता था कि अचानक ग़ैब से दो शेर नमूदार हुए और उस अजमी की तरफ बढ़े, इस मन्ज़र को देख कर वह चीख़ पड़ा, उस की आवाज़ से हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जाग उठे, आप के बेदार होने पर उस ने अपना सारा वाक़िआ बयान किया और फिर मुसलमान हो गया। (सीरत खुलफाए राशिदीन)

यह भी आप की एक करामत है कि शेर जो इंसानों के जान लेवा हैं वह आप की हिफाज़त के लिये नमूदार हो गए और क्यों न हो कि: مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ यानी जो अल्लाह तआला का हो जाता है अल्लाह तआला उस का हो जाता है और हर तरह उस की हिफाज़त फरमाता है।

मक़ामे रफीअ़

हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह सूरए

कहफ की आयते करीमा की तफ्सीर में बुख़ारी शरीफ की हदीसः فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا (मिश्कात शरीफः197) नक़्ल फरमाने के बाद तहरीर फरमाते हैं: اَلْعَبْدُ إِذَا وَاظَبَ عَلَى الطَّاعَاتِ بَلَغَ الْمَقَامَ الَّذِي يَقُولُ اللّٰهُ كُنْتُ لَهُ سَمْعًا وَبَصَرًا فَإِذَا صَارَ نُورُ جَلَالِ اللّٰهِ سَمْعًا لَهُ سَمِعَ الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ وَإِذَا صَارَ ذَالِكَ النُّورُ بَصَرًا لَهُ رَأَى الْقَرِيْبَ وَالْبَعِيْدَ وَإِذَا صَارَ ذٰلِكَ النُّورُ يَدًا لَهُ قَدَرَ عَلَى التَّصَرُّفِ فِي السَّهْلِ وَالصَّعْبِ وَالْقَرِيْبِ وَالْبَعِيْدِ (तफ्सीरे कबीर:5/480) यानी जब कोई बन्दा नेकियों पर हमेशगी इख़्तियार करता है तो उस मक़ामे रफीअ़ तक पहुंच जाता है कि जिस के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला ने كُنْتُ لَهُ سَمْعًا وَّ بَصَرًا फरमाया है। तो जब अल्लाह के जलाल का नूर उस की समअ़ हो जाता है तो वह दूर व नज़्दीक की आवाज़ को सुन लेता है। और जब यही नूर उस की बसर हो जाता है तो वह दूर व नज़्दीक की चीज़ों को देख लेता है और जब यही नूरे जलाल उस का हाथ हो जाता है तो वह बन्दा आसान व मुश्किल और दूर व नज़्दीक की चीज़ों में तसर्रुफ करने पर क़ादिर हो जाता है।

☆☆☆

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
और
ग़स्सानी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम

औस व ख़ज़रज के बाज़ क़बीलों ने मुल्के शाम में एक चश्मे पर जिस का नाम ग़स्सान था डेरा डाला और उस इलाके के कुछ शहरों पर कब्ज़ा कर लेने के बाद एक अज़ीमुश शान सल्तनत क़ाइम कर दी और मुलूके ग़स्सानिया के मुअज़्ज़ज़ नाम से मश्हूर हो गए। मुलूके ग़स्सान में सब से पहला बादशाह जुफ्ना हुआ और सब से आख़िरी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम। वह पहले बुत-परस्त थे, फिर रूमी बादशाहों के साथ तअ़ल्लुक़ की वजह से अपना क़दीम मज़हब छोड़ कर ईसाई हो गए थे। कुरैशे मक्का के बाद सब से ज़्यादा जिन को इस्लाम की कुव्वत तोड़ देने और उस को सफ्हए हस्ती से मिटा देने की फिक्र थी वह मुलूक ग़स्सान थे, अरब के दूसरे क़बीले अगर्चे मुक़ाबले के लिये आमादा हुए थे लेकिन उन के पास बाक़ाइदा लश्कर न था और न किसी क़िस्म का अहम साज़ो-सामान था मगर ग़स्सानियों की सल्तनत निहायत बाक़ाइदा और मुनज़्ज़म थी, उन का लश्कर भी आरास्ता था और सब से ज़्यादा यह कि एक ज़बर्दस्त बादशाह क़ैसरे रूम से उन के तअ़ल्लुक़ात थे जो हर वक़्त उनकी इम्दाद पर आमादा और मुस्तइद था।

मलिके (बादशाहे) ग़स्सान मुसलमानों को सफ्हए हस्ती से मिटाने के लिये सोच ही रहा था कि इसी दरमियान में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के क़ासिद हज़रत शुजाअ़ बिन वहब अल-अस्अ़दी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु उसके नाम हुज़ूर का ख़त लेकर ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि क़ैसरे रूम किस्रा के मुक़ाबले से फारिग़ होकर शुक्राना अदा करने के लिये बैतुल मुक़द्दस आया हुआ था और ग़स्सान का बादशाह उस की दअ़्वत में मश्ग़ूल था, इसी सबब से कई रोज़ तक हुज़ूर के क़ासिद हज़रत शुजाअ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को

वहां ठहरना पड़ा और कई रोज़ तक रसाई न हो सकी। आख़िर किसी तरह एक रोज़ हुज़ूर के क़ासिद मलिक ग़स्सान के सामने पेश हुए और उन्हों ने जो नामए (ख़ते) मुबारक उस को दिया उस का मज़्मून यह था: إِنِّيْ أَدْعُوْكَ إِلَى أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ وَحْدَهُ يَبْقَى لَكَ مُلْكُكَ यानी मैं तुम को सिर्फ एक खुदा पर ईमान लाने की तरफ बुलाता हूं, अगर तुम ईमान ले आए तो तुम्हारा मुल्क तुम्हारे लिये बाक़ी रहेगा।

शाहे ग़स्सान सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ख़त पढ़ कर भड़क उठा और गुस्से से कहा कि मेरा मुल्क कौन छीन सकता है? मैं खुद मदीना पर हम्ला करूंगा और उस की ईंट से ईंट बजा दूंगा और क़ासिद से कहा कि जाकर यही बात मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) से कह देना।

हज़रत शुजाअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना तैयिबा पहुंच कर जब मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ग़स्सान के बादशाह की पूरी कैफियत बयान की तो हुज़ूर ने इरशाद फरमाया: بَادَ مُلْكُهُ यानी उस का मुल्क तबाह व बरबाद हो गया।

सीरते हलबिया में है कि हुज़ूर का नामए मुबारक हारिस ग़स्सानी के नाम था और इब्ने हिशाम वग़ैरा दूसरे मुवर्रिख़ीन ने लिखा है कि हज़रत शुजाअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर का नामए मुबारक जब्ला बिन अल-ऐहम के यहां लेकर गए थे।

अलग़रज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नामए मुबारक भेजने का यह असर हुआ कि जो आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी वह भड़क उठी और मलिके ग़स्सान अपनी पूरी कुव्वत के साथ आमदए जंग हुआ, यहां तक कि ग़स्सानियों ही की अदावत के नतीजे में मूता का सख़्त तरीन मारिका हुआ (जंग हुई) जिस में मुसलमानों को बहुत बड़ा नुक़्सान उठाना पड़ा कि बहुत से सिपाही और कई एक चीदा और बरगुज़ीदा सिपह सालार इस जंग में शहीद हो गए।

मदीना तैयिबा पर ग़स्सानी बादशाह के हम्ले की ख़बर जब क़ासिद

के ज़रिये पहुंची तो मुसलमान बहुत तश्वीश और फिक्र में हुए कि अगर्चे अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व ग़ुयूब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ मलिक ग़स्सान ख़ाइब व ख़ासिर होगा और उस का मुल्क तबाह व बरबाद होगा लेकिन मदीना शरीफ पर उस के हम्ले से न मालूम कितनी जानें ज़ाए होंगी, कितनी औरतें बेवा हो जायेंगी और न मालूम कितने बच्चे यतीम हो जायेंगे, मगर अल्लाह तआ़ला ने उस के हम्ले से मदीना तैयिबा को महफ़ूज़ रखा। ग़स्सानी बादशाह जिस के मदीना शरीफ पर हम्ले की ख़बर गर्म थीं वह हारिस था या जब्ला बिन अल-ऐहम? इस में इख़्तिलाफ है, तब्रानी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से जो रिवायत है उस से मालूम होता है कि वह ग़स्सानी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम था।

अलग़रज़ जब्ला बिन अल-ऐहम ने मुसलमानों से दुश्मनी ज़ाहिर करने में कोई कमी नहीं रखी मगर इसके बावजूद इस्लाम की ख़ूबियों से वाक़िफ था, उसके कानों तक इस्लाम की अच्छाइयां पहुंचती रहती थीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की सच्चाई की दलीलों और निशानियों का भी इल्म उसे होता रहा था। अंसार हज़रात का मुसलमान होकर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को अपने यहां ठहराना और उन की हिफ़ाज़त व हिमायत में जान व माल का कुर्बान कर देना भी आहिस्ता आहिस्ता उस के अन्दर इस्लाम की मुहब्बत पैदा कर रहा था इस लिये अंसार और जब्ला दोनों एक ही क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते थे। बिल-आख़िर इस्लाम की मुहब्बत उस के दिल में बढ़ती गई, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में वह मुहब्बत इस क़द्र बढ़ गई कि उस ने ख़ुद हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को लिखा कि मैं इस्लाम में दाख़िल होने के लिये आप की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहता हूं, आप ने निहायत ख़ुशी से तहरीर फरमाया कि तुम बिला खटक चले आओ

لك ما لنا وعليك ما علينا यानी हर हाल में तुम हमारी तरह हो जाओगे।

जब्ला बादशाह अपने क़बीलए उक और ग़स्सान के पांच सौ आदमियों को हमराह लेकर रवाना हुआ, जब मदीना मुनव्वरा सिर्फ दो मंज़िल रह गया तो उस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में इत्तिला भेजी कि मैं हाज़िर हो रहा हूं और अपने लश्कर के दो सौ सवारों को हुक्म दिया कि ज़र्बफ्त व हरीर (रेशम व कामख़ाब) की सुर्ख़ व ज़र्द वरदियां पहनें और घोड़ों पर दीबाज की झूलें डाल कर उन के गले में सोने के तौक़ पहनाएं और अपना ताज सर पर रख कर पूरी शान दिखलाने के लिये अपने ख़ानदान की बेहतरीन और माया नाज़ क़ुर्ते मारिया ताज में लगायें, मारिया तमाम ग़स्सानी बादशाहों की दादी थी, उस के पास दो बालियां थीं, जिन में दो मोती कबूतर के अन्डे के बराबर लगे हुए थे, यह बालियां अपनी ख़ूबसूरती और बेश क़ीमत मोतियों की वजह से बेमिस्ल समझी जाती थीं। कहा जाता है कि पूरी दुनिया के बादशाहों के ख़ज़ानों में ऐसे मोती और ऐसी बालियां नहीं थीं। मुलूके ग़स्सान को उन पर फख़्र था और वह उन बेश क़ीमत और नादिर होने के अलावा अपनी साहिबे इक़्बाल दादी की यादगार समझ कर उन बालियों का निहायत ऐहतराम करते थे और इसी वजह से जब्ला ने यह दिखलाने को कि अपनी उस शाहाना हैसियत और हालते आज़ादी व खुद मुख़्तारी छोड़ कर दीने इस्लाम में दाख़िल होकर अमीरुल मोमिनीन की पैरवी को गवारा करता हूं; उन बेश क़ीमत बालियों को भी अपने ताज में लगा लिया था। इस तरह बड़ी शान व शौकत के साथ मदीना तैयिबा में दाख़िल होने के लिये तैयार हुआ।

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मुसलमानों को जब्ला के इस्तेक़्बाल करने और ताज़ीम व तकरीम के साथ उतारने का हुक्म दिया। मदीना मुनव्वरा में खुशी और मसर्रत का जोश फैला हुआ था, बच्चे और बूढ़े सभी उस जुलूस के नज़्ज़ारे को देखने के लिये अपने अपने घरों से निकल पड़े। मुसलमानों के लिये हक़ीक़त में इस से

बढ़ कर खुशी की और कौन सी बात हो सकती थी कि मज़हबे इस्लाम जिस के फैलाने की ख़िदमत उन के सपुर्द हुई थी, उस के अन्दर इस तरह राज़ी और खुशी से बड़े बड़े बादशाह दाख़िल हों। मगर उस वक़्त यह खुशी इस वजह से और ज़्यादा दोबाला हो रही थी कि वही ग़स्सान का बादशाह जिस के हम्ले का चर्चा मदीना तैयिबा में घर घर था और जिस के डर से सब सहम रहे थे, आज वही बादशाह इस तरह सरे तस्लीम ख़म किये हुए मदीना तैयिबा में दाख़िल हो रहा है। यह ख़ुदाए तआ़ला की क़ुद्रत और इस्लाम की एक करामत थी और इसी वजह से सब छोटे बड़े उस जुलूस को देखने के लिये निकल खड़े हुए।

अलगरज़ बड़ी शान व शौकत और निहायत ताज़ीम व तक्रीम से इस्तक्बालिया जमाअ़त के झुर्मुट में शाहाना जुलूस के साथ जब्ला मदीना तैय्यिबा में दाख़िल हुआ, हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मेहमान दारी के मरासिम में कोई कसर न रखी और मदीना तैयिबा में उन नए मेहमानों की आमद से ख़ूब चहल पहल रही। इत्तिफ़ाक़ से ज़मानए हज क़रीब था, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हर साल हज के लिये मक्कए मोअ़ज़्ज़मा हाज़िर हुआ करते थे, इस साल जब वह हज के लिये निकले तो जब्ला भी साथ में रवाना हुआ, वहां बद क़िस्मती से यह बात पेश आ गई कि तवाफ़ की हालत में जब्ला की लुंगी पर जो बवजह शाने बादशाही ज़मीन पर घिसटती हुई जा रही थी, क़बीलए फज़ारा के एक शख़्स का पैर पड़ गया, जिस के सबब लुंगी खुल गई, जब्ला को गुस्सा आया और उस ने इतनी ज़ोर से मुंह पर घूंसा मारा कि उस की नाक टेढ़ी हो गई।

यह मुक़द्दमा ख़िलाफ़त की अदालत में पेश हुआ, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बग़ैर किसी रिआ़यत के हक़ फैसला करते हुए जब्ला से फरमाया कि या तो तुम किसी तरह मुद्दई को राज़ी कर लो वरना बदला देने के लिये तैयार हो जाओ, जब्ला जो अपने को बड़ी शान व शौकत वाला समझता था यह ख़िलाफ़े उम्मीद फैसला उसे सख़्त

नागवार गुज़रा। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब जानते थे कि जब्ला को यह फैसला नागवार गुज़रेगा मगर आप उस की कोई परवाह न की और बादशाह का लिहाज़ किये बग़ैर हक़ फैसला सुना दिया, उस ने कहा एक मामूली आदमी के ऐवज़ मुझ से बदला लिया जाएगा, मैं बादशाह हूं और वह एक मामूली आदमी है। हज़रत ने फरमाया कि बादशाह और रिअय्यत (जनता) को इस्लाम ने अपने अहकाम में बराबर कर दिया है। किसी को किसी पर फज़ीलत है तो तक़्वा और परहेज़गारी के सबब إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ (पारा:26, रुकूअ:14)

जब्ला ने कहा मैं तो यह समझ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुआ था कि मैं पहले से ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ और मोहतरम होकर रहूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि इस्लामी क़ानून का फैसला यही है जिस की पाबंदी हम पर और तुम पर लाज़िम है, इस के ख़िलाफ कुछ हरगिज़ नहीं हो सकता, तुम को अपनी इज़्ज़त क़ाइम रखनी है तो उस को किसी तरह राज़ी कर लो वरना आम मज्मअ् में बदला देने को तैयार हो जाओ। जब्ला ने कहा तो मैं फिर ईसाई हो जाउंगा, आप ने फरमाया तो अब इस सूरत में तेरा क़त्ल ज़रूरी होगा, इस लिये कि जो मुरतद हो जाता है इस्लाम में उस की सज़ा यही है। जब्ला ने कहा कि अपने मामले में ग़ौर व फिक्र करने के लिये आप मुझे एक रात की मोहलत दें। हज़रत ने उस की यह दरख़्वास्त मनज़ूर फरमा ली और उसे एक रात की मोहलत दे दी, तो जब्ला उसी रात को अपने लश्कर के साथ पोशीदा तौर पर मक्का मुअ़ज़्ज़मा से भाग गया और कुस्तुंतुनिया पहुंच कर नस्रानी बन गया। *अल-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला।*

यह हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेमिसाल अदालत कि आप ने एक मामूली आदमी के मुक़ाबले में ऐसी शान व शौकत वाले बादशाह की कोई परवाह न की, उसे मुद्दई को राज़ी करने के या बदला देने पर मजबूर किया और इस बात का ख़्याल

बिल्कुल न फरमाया कि ऐसे जलीलुल् क़दर बादशाह पर इस फैसला का रद्दे अमल क्या होगा। लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि खुलफाए राशिदीन ने अपनी इस क़िस्म की ख़ूबियों से इस्लाम की जड़ों को मज़्बूत फरमाया और उसे ख़ूब रौशन और ताबनाक बनाया। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।*

इंतिबाह

बाज़ लोग आप के अदल व इंसाफ की तारीफ करते हुए बयान करते हैं कि आप के साहिब ज़ादे अबू शहमा ने शराब पी और फिर उसी नशे की हालत में ज़िना किया, इन बातों पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन को कोड़े लगवाए, यहां तक कि उसी तक्लीफ से बीमार होकर उनका इन्तेक़ाल हो गया। तो हज़रत अबू शहमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जानिब ज़िना और शराब नोशी की निस्बत ग़लत है। मशहूर और मोतबर किताब मज्मउल बिहार में है कि ज़िना की निस्बत सहीह नहीं, अल्बत्ता उन्हों ने नबीज़ पी थी और नबीज़ उस पानी को कहते हैं जिस में खजूर भिगाई गई हो और उस की मिठास पानी में उतर आई हो। उम्दतुर रिआया हाशिया शरह विक़ाया जिल्द अव्वल मजीदी, पेज:87 में है: هو الماء الذي تنبذ فيه تمرات فتخرج حلاوتها और नबीज़ दो तरह की होती है एक वह कि उस में नशा नहीं होता ऐसी नबीज़ हलाल व पाक है और हज़रत सैयिदना इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक उस से वज़ू बनाना भी जाइज़ है बशर्ते कि रिक़्क़त व सैलान बाक़ी हो (शरहे विक़ाया में उसी सफ्हा पर है) और एक नबीज़ वह होती है जिस में नशा पैदा हो जाता है और वह हराम व नजिस होती है। हज़रत अबू शहमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नबीज़ पी यह समझ कर कि यह हलाल है, नशा वाली नहीं है मगर वह नशा वाली साबित हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनकी गिरिफ्त फरमाई और अज़ राहे अदल व इंसाफ उन्हें सज़ा दी।

गवर्नरों से शराइत

हज़रत इब्ने साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब किसी को कहीं का वाली मुक़र्रर फरमाते तो उस से चन्द शरतें लिखवा लेते थे, अव्वल यह कि वह तुरकी घोड़े पर सवार नहीं होगा दूसरे यह कि वह अअ्ला दर्जे का खाना नहीं खाएगा, तीसरे यह कि वह बारीक कपड़ा नहीं पहनेगा, चौथे यह कि हाजत वालों के लिये अपने दरवाज़े को बन्द नहीं करेगा और दरबान नहीं रखेगा।

फिर जो शख़्स इन शराइत की पाबन्दी नहीं करता था उस के साथ निहायत सख़्ती से पेश आते थे। हाकिमे मिस्र अयाज़ बिन ग़नम के बारे में मालूम हुआ कि वह रेशम पहनता है और दरबान रखता है तो आप ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को हुक्म दिया कि अयाज़ बिन ग़नम को जिस हालत में भी पाव गिरफ्तार करके ले आओ, जब अयाज़ ख़लीफतुल मुस्लिमीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने लाए गए तो आप ने उन को कम्बल का कुर्ता पहनाया और बकरियों का एक रेवड़ उन के सुपुर्द किया और फरमाया कि जाओ इन बकरियों को चराओ, तुम इंसानों पर हुकूमत के करने के क़ाबिल नहीं हो। यानी अयाज़ बिन ग़नम को गवर्नर से एक चरवाहा बना दिया। यही वजह है कि पूरी मम्लकते इस्लामिया के हुक्काम और गवर्नर आप की हैबत से कांपते रहते थे। आप फरमाया करते थे कि ख़िलाफत का कारोबार उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक कि उस में इतनी शिद्दत न की जाए जो जबर न बन जाए और इतनी नरमी न बरती जाए जो सुस्ती से ताबीर हो।

इमाम शअ्बी फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह तरीक़ा था कि जब आप किसी हाकिम को किसी तौर पर मुक़र्रर फ़रमाते तो उस के तमाम माल व असासे की फेह्रिस्त लिखवा कर अपने पास महफ़ूज़ कर लिया करते थे। एक बार आप ने अपने

तमाम उम्माल को हुक्म फरमाया कि वह अपने अपने मौजूद माल व असासे की एक एक फेहरिस्त बना कर उन को भेज दें, उन्हीं उम्माल में हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी थे जो अशरए मुबश्शरा में से हैं, जब उन्हों ने अपने असासों की फेहरिस्त बना कर भेजी तो हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन के सारे माल के दो हिस्से किये जिन में से एक हिस्सा उन के लिये छोड़ दिया और एक हिस्सा बैतुल माल में जमा कर दिया।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:96)

रातों में गश्त

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिआ़या की ख़बरगीरी के लिये बदवी का लिबास पहन कर मदीना तैयिबा के अतराफ में रातों को गश्त लगाया करते थे, एक बार हस्बे मामूल आप गश्त लगा रहे थे कि उन्हों ने सुना एक औरत कुछ अश्आ़र पढ़ रही है, जिस का ख़ुलासा यह है कि:

"रात बहुत हो गई और सितारे चमक रहे हैं मगर मुझे यह बात जगा रही है कि मेरे साथ कोई खेलने वाला नहीं है। तो मैं ख़ुदाए तआ़ला की क़सम खा कर कहती हूं कि अगर मुझे अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ न होता तो इस चारपाई की चूलें हिलतीं लेकिन मैं अपने नफ्स के साथ उस निगहबान और मोअक्किल से डरती हूं जिस का कातिब कभी नहीं थकता।"

अश्आ़र को सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस औरत से दरियाफ्त फरमाया कि तेरा क्या मामला है कि इस क़िस्म के अश्आ़र पढ़ रही है? उस ने कहा कि मेरा शौहर कई माह से जंग पर गया हुआ है, उसी की मुलाक़ात के शौक़ में यह अश्आ़र पढ़ रही हूं। सुबह होते ही आप ने उस के शौहर को बुलाने के लिये क़ासिद रवाना फरमा दिया और चूंकि आप की ज़ौजए मोहतरमा वफात पा चुकी थीं इस लिये आप ने अपनी साहिब ज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से दरियाफ्त फरमाया कि औरत कितने ज़माने तक शौहर के बग़ैर रह सकती है? इस सवाल को सुन कर हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने शर्म से अपना सर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया, आप ने फरमाया कि खुदाए तआ़ला हक़ बात में शर्म नहीं करता, तो हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने हाथ के इशारे से फरमाया कि तीन महीने या ज़्यादा से ज़्यादा चार, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुक्म जारी फरमा दिया कि: لَا يُحْبَسُ الْجُيُوْشُ فَوْقَ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ यानी चार महीने से ज़्यादा किसी सिपाही को जंग में न रोका जाए। (तारीखुल खुलफा)

एक रात आप गश्त फरमा रहे थे कि एक मकान से आवाज़ आई बेटी दूध में पानी मिला दे, दूसरी आवाज़ आई जो लड़की की थी, मां अमीरुल मोमिनीन का हुक्म तुझ को याद नहीं रहा जिस में ऐलान किया गया है कि दूध में कोई शख़्स पानी न मिलाए, मां ने कहा अमीरुल मोमिनीन यहां देखने नहीं आयेंगे, पानी मिला दे, लड़की ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकती कि ख़लीफा के सामने इताअ़त का इक़रार और पीठ पीछे नाफरमानी। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु थे, आप ने उन से फरमाया कि इस घर को याद रखो और सुबह के वक़्त हालात मालूम करके मुझे बताओ। हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दरबारे ख़िलाफत में रिपोर्ट पेश की कि लड़की बहुत नेक जवान और बेवा है, कोई मर्द उन का सरपरस्त नहीं है, मां बेसहारा है, आप ने उसी वक़्त अपने लड़कों को बुला कर फरमाया कि तुम में से जो चाहे उस लड़की से निकाह कर ले तो हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तैयार हो गए, आप ने उस बेवा लड़की को बुला कर हज़रत आसिम से अक़्द करके अपनी बहू बना लिया। (अशरए मुबश्शरा)

इस वाक़िआ़ को एक ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी ने एक जल्सा में बयान करने के बाद इन लफ़्ज़ों में तब्सिरा किया कि देखो! हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इतने अअ्ला ख़ानदान के होते हुए अपने लड़के की शादी एक गुवालन से कर दी, लिहाज़ा हनफियों का कुफ्व वाला मस्अला ग़लत है, इत्तिफाक़ से उस जल्से की तक़रीर सुनने के लिये एक सुन्नी हनफी मौलवी भी गए थे, ग़ैर मुक़ल्लिद की इस तक़रीर से मुतअस्सिर होकर उन्हों ने यह ख़्याल क़ायम कर लिया कि वाक़ई कुफ्व का मस्अला ग़लत मालूम होता है, यह बात उन्हों ने एक सुन्नी हनफी मुफ्ती से बयान की, तो हज़रत मुफ्ती साहब ने फरमाया कि ग़ैर मुक़ल्लिद ने फरेब से काम लिया जिसे आप भांप न सके, हनफियों के यहां लड़के की तरफ से कुफ्व होने का ऐतबार नहीं है, वह छोटी से छोटी बिरादरी और बहुत कम दर्जे की लड़की से भी निकाह कर सकता है। कुफ्व होने का ऐतबार सिर्फ लड़की की तरफे से है कि बालिग़ होने के बावजूद अपने वली की रज़ा के बग़ैर वह ग़ैर कुफ्व से निकाह नहीं कर सकती जैसा कि फिक़्हे हनफी की आम किताबों में मज़्कूर है, तो मौलवी साहब ने इक़रार किया कि वाक़ई मैं ग़ैर मुक़ल्लिद के फरेब में आ गया था, इस पर हज़रत मुफ्ती साहब ने फरमाया कि इसी लिये बद मज़्हबों की तक़रीर सुनने से मना फरमाया गया है कि जब आप दस साल इल्मे दीन हासिल करने के बावजूद उस के फरेब में आ गए तो अवाम का क्या हाल होगा, किसी मौलवी की तक़रीर का सुनना भी दीन का हासिल करना है और हदीस शरीफ में है: اُنْظُرُوْا عَمَّنْ تَاْخُذُوْنَ دِيْنَكُمْ यानी देख लो कि तुम अपना दीन किस से हासिल कर रहे हो।

(रवाहु मुस्लिम, मिश्कात:37)

लिहाज़ा किसी बद मज़्हब की तक़रीर सुनना हराम व ना जाइज़ है। और जो लोग यह कहते हैं कि हम पर किसी बद मज़्हब की तक़रीर का असर नहीं हो सकता वह बहुत बड़ी ग़लत फहमी में मुब्तला हैं, जब दस साल के पढ़े हुए मौलवी पर बद मज़्हब की तक़रीर का असर पड़ गया तो दूसरे लोगों की क्या हक़ीक़त है। बस दुआ है कि ख़ुदाए तआला ऐसे लोगों को समझ अता फरमाए और बद मज़्हबों की तक़रीर

से दूर रहने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

बैतुल माल से वज़ीफा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दिन रात ख़िलाफत के काम अंजाम देते थे मगर बैतुल माल से कोई ख़ास वज़ीफा नहीं लेते थे, जब आप ख़लीफा बनाए गए तो कुछ दिनों के बाद आप ने लोगों को जमा करके इरशाद फरमाया कि मैं पहले तिजारत किया करता था और अब तुम लोगों ने मुझ को ख़िलाफत के काम में मश्गूल कर दिया है तो अब गुज़ारे की सूरत क्या होगी, लोगों ने मुख़्तलिफ मिक़्दारें तज्वीज़ (मुक़र्रर) कीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि मुतवस्सित तरीक़े पर जो आप के घर वालों के लिये और आप के लिये काफी हो जाए वहीं मुक़र्रर फरमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस राय को पसंद फरमाया और क़बूल कर लिया, इस तरह बैतुल माल से मुतवस्सित मिक़्दार आप के लिये मुक़र्रर हो गई। कुछ दिनों के बाद एक मजलिस जिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी थे यह तय पाया कि ख़लीफतुल मुस्लिमीन के वज़ीफे में इज़ाफा करना चाहिये कि गुज़र में तंगी होती है मगर किसी की हिम्मत न हुई कि वह आप से कहता तो उन लोगों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा को वसीला बनाया और ताकीद कर दी कि हम लोगों का नाम न बताइयेगा, जब हज़रत हफ्सा ने आप से इस का तज़किरा किया तो आप का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा, आप ने लोगों के नाम दरियाफ्त किये, हज़रत हफ्सा ने कहा पहले आप की राय मालूम हो जाए, आप ने फरमाया कि अगर मुझे उन के नाम मालूम हो जाते तो मैं उन को सख़्त सज़ा देता। यानी आप ने लोगों की राय के बावजूद वज़ीफे के इज़ाफे को मनज़ूर नहीं फरमाया बल्कि उनपर और नाराज़गी ज़ाहिर फरमाई। رضی اللہ تعالی عنہ وارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना व अन् साइरिल् मुस्लिमीन।

वसीला

आप के ज़मानए ख़िलाफत में एक बार ज़बर्दस्त क़हत पड़ा, आप ने बारिश तलब करने के लिये हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा फरमाई। हज़रते इब्ने औन फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ा और उस को बुलंद करके इस तरह बारगाहे इलाही में दुआ की: اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّكَ اَنْ تُذْهِبَ عَنَّا الْمَحْلَ وَاَنْ تَسْقِيَنَا الْغَيْثَ यानी या इलाहल आलमीन! हम तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चचा को वसीला बना कर तेरी बारगाह में अर्ज़ करते हैं क़हत और खुश्कसाली को ख़त्म फरमा दे और हम पर रहमत वाली बारिश नाज़िल फरमा, यह दुआ मांग कर अभी आप वापस भी नहीं हुए थे कि बारिश शुरू हो गई और कई रोज़ तक मुसलसल होती रही। (तारीख़ुल ख़ुलफा:90) मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से निस्बत रखने वालों को अपनी किसी हाजत के लिये वसीला बनाना शिर्क नहीं है बल्कि हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तरीक़ा और उन की सुन्नत है और हुज़ूर का इरशादे गरामी है: عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ यानी मेरी और मेरे ख़ुलफाए राशिदीन की सुन्नत को इख़्तियार करो। (मिश्कात शरीफ:30)

आप की शहादत

बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे इलाही में दुआ की: اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ شَهَادَةً فِيْ سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِيْ فِيْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ यानी या इलाहल आलमीन! मुझे अपनी राह में शहादत अता फरमा और अपने रसूल के शहर में मुझे मौत नसीब फरमा। (तारीख़ुल ख़ुलफा:90)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ इस तरह क़बूल हुई कि हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मजूसी ग़ुलाम अबू लूअ़लू ने आप से शिकायत की कि उस के आक़ा हज़रत

मुग़ीरा रोज़ाना उस से चार दिरहम वसूल करते हैं आप उस में कमी करा दीजिये, आप ने फरमाया कि तुम लोहार और बढ़ई का काम ख़ूब अच्छी तरह जानते हो और नक़्क़ाशी भी बहुत उम्दा करते हो तो चार दिरहम यौमिया तुम्हारे ऊपर ज़्यादा नहीं हैं, इस जवाब को सुन कर वह गुस्से से तिलमिलाता हुआ वापस चला गया, कुछ दिनों के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसे फिर बुलाया और फरमाया कि तू कहता था कि "अगर आप कहें तो मैं ऐसी चक्की तैयार कर दूं जो हवा से चले" उसने तेवर बदल कर कहा कि हां, मैं आप के लिये ऐसी चक्की तैयार कर दूंगा जिस का लोग हमेशा ज़िक्र किया करेंगे। जब वह चला गया तो आप ने फरमाया कि यह लड़का मुझे क़त्ल की धमकी देकर गया है। मगर आप ने उस के ख़िलाफ कोई कारवाई नहीं की। अबू लुअ्लू ने आप के क़त्ल का पुख़्ता इरादा कर लिया, एक ख़न्जर पर धार लगाई और उस को ज़हेर में बुझा कर अपने पास रख लिया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फज्र की नमाज़ के लिये मस्जिदे नबवी तशरीफ ले गए और उनका तरीक़ा था कि वह तक्बीर तहरीमा से पहले फरमाया करते थे कि सफें सीधी कर लो, यह सुन कर अबू लुअ्लू आप के बिल्कुल क़रीब सफ में आकर खड़ा हो गया और फिर आप के कंधे और पहलू पर ख़न्जर से दो वार किया जिस से आप गिर पड़े, उस के बाद उस ने और नमाज़ियों पर हम्ला करके 13 आदमियों को ज़ख़्मी कर दिया, जिन में से बाद में छः अफ्राद का इन्तेक़ाल हो गया, उस वक़्त जब्कि वह लोगों को ज़ख़्मी कर रहा था एक इराक़ी ने उस पर कपड़ा डाल दिया और जब वह उस कपड़े में उलझ गया तो उस ने उसी वक़्त ख़ुदकुशी कर ली। चूंकि अब सूरज निकलना ही चाहता था इस लिये हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दो मुख़्तसर सूरतों के साथ नमांज़ पढ़ाई। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को आप के मकान पर लाए, पहले आप को नबीज़ पिलाई गई, जो ज़ख़्मों के रास्ते से बाहर

निकल गई, फिर दूध पिलाया गया मगर वह भी ज़ख़्मों से बाहर निकल गया। किसी शख़्स ने आप से कहा कि आप अपने फर्ज़न्द अब्दुल्लाह को अपने बाद ख़लीफा मुक़र्रर कर दें, आप ने उस शख़्स को जवाब दिया कि अल्लाह तआला तुम्हें ग़ारत करे, तुम मुझे ऐसा ग़लत मशवरा दे रहो जिसे अपनी बीवी को सहीह तरीक़े से तलाक़ देने का सलीक़ा भी न हो, क्या मैं ऐसे शख़्स को ख़लीफा मुक़र्रर कर दूं? फिर आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ और सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की इन्तिख़ाबे ख़लीफा के लिये एक कमेटी बना दी और फरमाया कि इन्हीं में से किसी को ख़लीफा मुक़र्रर किया जाए। उस के बाद आप ने अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह से फरमाया कि बताओ हम पर कितना क़र्ज़ है, उन्हों ने हिसाब करके बताया कि तक़रीबन 86 हज़ार क़र्ज़ है, आप ने फरमाया कि यह रक़म हमारे माल से अदा कर देना, अगर उस से पूरा न हो तो बनू अदी से मांगना और अगर उन से भी पूरा न हो तो क़ुरैश से लेना, फिर आप ने फरमाया कि जाओ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से कहो कि उमर अपने दोनों दोस्तों के पास दफ्न होने की इजाज़त चाहता है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पास गए और अपने बाप की ख़्वाहिश को ज़ाहिर की, उन्हों ने फरमाया कि यह जगह तो मैं ने अपने लिये महफ़ूज़ कर रखी थी, मगर मैं आज अपनी ज़ात पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को तरजीह देती हूं, जब आप को यह ख़बर मिली तो आप ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया। 26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी, बुध के दिन आप ज़ख़्मी हुए, तीन दिन बाद 10 बरस, छेः माह चार दिन उमूरे ख़िलाफत को अंजाम देकर 63 साल की उम्र में वफात पाई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

वह उमर जिस के अअ़्दा पे शैदा सक़र

उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

तर्जुमाने नबी हमजुबाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

हज़रत उर्वा बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि ख़लीफा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और लोगों ने उस की तामीर (87 हिजरी में) शुरू की तो (बुनियाद खोदते वक़्त) एक क़दम (घुटने तक) ज़ाहिर हुआ तो सब लोग घबरा गए और लोगों को ख़्याल हुआ कि शायद रसूलुल्लाह ﷺ का क़दम मुबारक है और वहां कोई जानने वाला नहीं मिला तो हज़रत उर्वा बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा لَا وَاللّٰہِ مَا ھِیَ قَدَمُ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا ھِیَ اِلَّا قَدَمُ عُمَرَ यानी खुदा की क़सम यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का क़दम शरीफ नहीं है बल्कि यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दम मुबारक है।

(बुख़ारी शरीफ:1/186)

ख़ुलासा यह कि तक़रीबन 64 बरस के बाद हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का जिस्मे मुबारक बदस्तूर साबिक़ रहा, उस में किसी क़िस्म की तब्दीली नहीं हुई थी और न कभी होगी। एक शायर ने ख़ूब कहा है किः

ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर
अल्लाह, अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया

وصلی اللہ تعالی علی خیر خلقہ سیدنا محمد وعلی الہ واصحابہ
وذریاتہ اجمعین برحمتک یاارحم الراحمین

व सल्लल्लाहु तआ़ला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही सैय्यिदिना मुहम्मदिंव्
व अला आलिही व अस्हाबिही व ज़ुर्रियातिही अजमईन
बिरहमतिक या अरहमर् राहिमीन।

☆☆☆

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمدلله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده الله فلامضل له ومن يضلله فلاهادية له ونشهد ان لااله الاالله وحده لاشريك له ونشهد ان سيدنا ونبينا محمدا عبده ورسوله۔ اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا (پ:٢٦،ع:١٢)صَدَقَ الله العلى العظيم وبلغنا رسوله النبى الكريم ونحن على ذالك من الشاهدين والشاكرين والحمدلله رب العالمين۔

एक बार सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरूदो-सलाम का नज़्राना पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

तक़रीबन एक लाख 24 हज़ार अंबियाए किराम इस दुनिया में मब्ऊस फरमाए गए, या कुछ कमो-बेश 2 लाख 24 हज़ार अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ने अपने कुदूमे मैमनत लुज़ूम (तशरीफ लाने की बरकत) से इस दुनिया को सरफराज़ फरमाया, वह लोग साहिबे औलाद भी हुए, लड़का वाले हुए और लड़की वाले भी हुए, तो जिन लोगों के साथ अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ने अपनी साहिब ज़ादियों को मन्सूब फरमाया वह यक़ीनन इज़्ज़त व अज़मत वाले हुए, इस लिये कि अल्लाह के नबी का दामाद होना एक बहुत बड़ा मर्तबा है, जो खुशनसीब इंसानों ही को नसीब हुआ है, मगर

इस सिलसिले में जो खुसूसियत और जो इन्फिरादियत हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को हासिल है वह किसी को नहीं, कि हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से लेकर हुज़ूरे ख़ातिमुल अंबिया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम तक किसी के निकाह में नबी की दो बेटियां नहीं आई हैं लेकिन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के निकाह में सिर्फ नबी नहीं बल्कि नबिय्युल अंबिया और सैयिदुल अंबिया जनाब अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की दो साहिब ज़ादियां यके बाद दीगरे निकाह में आईं।

और सिर्फ यही नहीं बल्कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से यहां तक रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह इरशाद सुना है कि आप हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फरमा रहे थे कि अगर मेरी चालीस लड़कियां भी होतीं तो यके बाद दीगरे मैं उन सब का निकाह ऐ उस्मान तुम से कर देता, यहां तक कि कोई भी बाक़ी न रहती। (तारीखुल खुलफा:104)

और बैहक़ी ने अपनी सुनन में लिखा है कि अब्दुल्लाह जौफी बयान फरमाते हैं कि मुझ से मेरे मामू हुसैन जौफी ने दरियाफ्त किया कि तुम्हें मालूम है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का लक़ब ज़ुन्नूरैन क्यों है? मैं ने कहा कि नहीं। उन्हों कहा कि हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से लेकर क़ियामत तक हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अलावा किसी शख़्स के निकाह में किसी नबी की दो साहिब ज़ादियां नहीं आयेंगी, इसी लिये आप को ज़ुन्नूरैन कहते हैं, अअ्ला हज़रत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि फरमाते हैं:

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का

हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने क़ब्ले ऐलाने नुबुव्वत अपनी साहिब ज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का निकाह आप से किया था जो ग़ज़्वए बद्र के मौक़ा पर बीमार थीं और उन्हीं की तीमारदारी के सबब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उस जंग में शिरकत नहीं फ़रमा सके और सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की इजाज़त से मदीना तैयिबा ही में रह गए थे, मगर चूंकि हुज़ूर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बद्र के माले ग़नीमत से हिस्सा अ़ता फ़रमाया था इसी लिये आप बद्रियों में शुमार किये जाते हैं। ग़ज़्वए बद्र में मुसलमानों के फ़तह पाने की ख़ुशख़बरी लेकर जिस वक़्त हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मदीना मुनव्वरा पहुंचे उस वक़्त हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को दफ़न किया जा रहा था। उन के इन्तेक़ाल फ़रमा जाने के बाद हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी साहिब ज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का निकाह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कर दिया तो उन का भी 9 हिजरी में विसाल हो गया। ग़रज़ कि इस तरह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ज़ुन्नूरैन हुए। आप के एक साहिब ज़ादे हज़रत बीबी रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे जिन का नाम 'अ़ब्दुल्लाह' था, वह अपनी मां के बाद 6 बरस की उम्र पाकर इन्तेक़ाल कर गए और हज़रत बीबी उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से आप की कोई औलाद नहीं हुई।

एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़े।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

नाम व नसब

आप का नाम उस्मान, कुनिय्यत अबू उमर और लक़ब ज़ुन्नूरैन है। आप का सिलसिलए नसब इस तरह है: उस्माने बिन अफ्फ़ान अबुल आ़स बिन उमैया बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ यानी पांचवीं पुश्त में आप का सिलसिलए नसब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है। आप की नानी उम्मे हकीम जो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के वालिदे गरामी हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ एक ही पेट से पैदा हुई थीं, इस रिश्ता से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वालिदा हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थीं, आप की पैदाश आम्मुल फील के छः साल बाद हुई। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु।

क़बूले इस्लाम और मसाइब

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उन हज़रात में से हैं जिन को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस्लाम की दअ़्वत दी थी, आप क़दीमुल इस्लाम हैं यानी इब्तिदाए इस्लाम ही में ईमान ले आए थे। इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि आप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत अली, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के बाद इस्लाम कुबूल किया।

इब्ने सअ़द मुहम्मद बिन इब्राहीम से रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब हल्क़ए बगोश इस्लाम हुए उन का पूरा ख़ानदान भड़क उठा, यहां तक आप का चचा हिकम बिन अबिल आ़स इस क़दर नाराज़ और बरहम हुआ कि आप को पकड़ कर एक रस्सी से बांध दिया और कहा कि तुम ने अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर एक दूसरा नया मज़हब इख़्तियार कर लिया है, जब तक कि तुम इस नए मज़हब को नहीं छोड़ोगे, हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे, इसी तरह

बांध कर रखेंगे। यह सुन कर आप ने फरमाया: وَاللّٰهِ لَا اُفَارِقُهُ اَبَدًا وَلَا اُفَارِقُ यानी खुदाए जुल जलाल की क़सम मज़्हबे इस्लाम को मैं कभी नहीं छोड़ सकता और न कभी इस दौलत से दस्तबरदार हो सकता हूं, मेरे जिस्म के टुक्ड़े टुक्ड़े कर डालो यह हो सकता है मगर दिल से दीने इस्लाम निकल जाए यह हरगिज़ नहीं हो सकता। हिकम बिन अबिल आस ने जब इस तरह आप का इस्तिक़्लाल देखा तो मजबूर होकर आप को रिहा कर दिया।

आप का हुलिया

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का हुलिया और सरापा इब्ने अ़साकिर चन्द तरीक़ों से इस तरह बयान करते हैं कि आप दरमियानी क़द के ख़ूबसूरत शख़्स थे, रंग में सफेदी के साथ सुरख़ी भी शामिल भी, चेहरे पर चेचक के दाग़ थे, जिस्म की हड्डियां चौड़ी थीं, कंधे काफी फैले हुए थे, पिंडलियां भरी हुई थीं, हाथ लम्बे थे जिन पर काफी बाल थे, दाढ़ी बहुत घनी थी, सर के बाल घुंघरियाले थे, दांत बहुत ख़ूबसूरत थे और सोने के तार से बंधे हुए थे, कंपटियों के बाल कानों से नीचे तक थे और पीले रंग का ख़िज़ाब किया करते थे

और इब्ने असाकिर अब्दुल्लाह बिन हज़म माज़नी सें रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि मैं ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को देखा: فَمَا رَأَيْتُ قَطُّ ذَكَرًا وَلَا اُنْثٰى اَحْسَنَ وَجْهًا مِنْهُ यानी मैं ने औरतें और मर्दों में से किसी को उन से ज़्यादा हसीन व ख़ूबसूरत नहीं पाया।

(तारीख़ुल ख़ुलफा)

और इब्ने असाकिर हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत करते हैं वह फरमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने गोश्त का एक बड़ा प्याला देकर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास भेजा, जब मैं आप के घर में दाख़िल हुआ तो हज़रत बीबी रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा भी बैठी हुई थीं, मैं कभी हज़रत बीबी रुक़य्या के चेहरे

की तरफ देखता और कभी हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सूरत देखता था, जब मैं आप के घर से वापस होकर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुबारका में हाज़िर हुआ तो रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से दरियाफ्त फरमाया कि उस्मान (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के घर के अन्दर तुम गए थे, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जी हां, मैं घर के अन्दर गया था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः तुम ने उन मियां बीवी से हसीन व ख़ूबसूरत किसी मियाँ बीवी को देखा है? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! कभी नहीं देखा। (तारीखुल खुलफा)

यह वाकिआ गालिबन आयते हिजाब के नाज़िल होने से पहले का है।

और इब्ने अदी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ अपनी साहिबज़ादी उम्मे कुल्सूम का निकाह किया तो उनसे फरमाया कि तुम्हारे शौहर उस्माने गनी तुम्हारे दादा हज़रत इब्राहीम और तुम्हारे बाप मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) से शक्लो-सूरत में बहुत मुशाबह हैं। (तारीख़ुल खुलफा)

हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और आयाते कुरआनी

हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में भी कुरआन मजीद की आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। जंगे तबूक का वाक़िआ ऐसे वक़्त में पेश आया जबकि मदीना मुनव्वरा में सख़्त कहत पड़ा हुआ था और आम मुसलमान बहुत ज़्यादा तंगी में थे, यहां तक कि दरख़्त की पत्तियाँ खा कर लोग गुज़ारा करते थे, इसी लिये उस जंग के लश्कर को जैशे उसरा कहा जाता है यानी तंगदस्ती का

लश्कर। तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अब्दुर रहमान इब्ने ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में उस वक़्त हाज़िर था जबकि आप जैशे उस्रा की मदद के लिये लोगों को जोश दिला रहे थे। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आप के पुर जोश लफ्ज़ सुन कर खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं सौ ऊंट पालान और समान के साथ खुदाए तआ़ला की राह में पेश करूंगा, उसके बाद फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को सामाने लश्कर के बारे में तरग़ीब दी और इम्दाद के लिये मुतवज्जह फ़रमाया, तो फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं दो सौ ऊंट मअ़ साज़ व सामान अल्लाह के रास्ते मे नज़्र करूंगा। उसके बाद फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने सामाने जंग की दुरुस्तगी और फराहमी की तरफ मुसलमानों को रग़बत दिलाई, फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं तीन सौ ऊंट पालान और सामान के साथ खुदाए तआ़ला की राह में हाज़िर करूंगा। हदीस़ के रावी हज़रत अब्दुर रहमान बिन ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतरते जाते थे और फरमाते जाते थे: مَاعَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ، مَاعَلٰى عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ यानी एक ही जुम्ला को हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने दो बार फरमाया, इस जुम्ला का मतलब यह है कि अब उस्मान को वह अमल कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगा जो इस के बाद करेंगे।

मुराद यह है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह अमले ख़ैर ऐसा अअ़्ला, इतना मक़्बूल है कि अब और नवाफिल न करें जब भी यह उन के मदारिजे उलिया (ऊंचा मर्तबा) के लिये काफी

है और इस मक्बूलियत के बाद कोई उन्हें अंदशाए ज़रर नहीं है।

(मिश्कात शरीफ:561)

तफ्सीरे ख़ाज़िन और तफ्सीरे मआलिमुत तंज़ील में है कि आप ने साज़ व सामान के साथ एक हज़ार ऊंट इस मौक़ा पर चन्द दिया थ।

और हज़रत अब्दुर रहमान बिन समुरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैशे उस्रा की तैयारी की ज़माने में एक हज़ार दीनार अपने कुर्ते की आस्तीन में भर कर लाए (दीनार साढ़े चार माशा सोने का होता है), उन दीनारों को आप ने रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की गोद में डाल दिया। रावीए हदीस हज़रत अब्दुर रहमान बिन समुरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं ने देखा कि नबीए करीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन दीनारों को अपनी गोद में उलट पलट कर देखते जाते थे और फरमाते थे जाते थे: مَا ضَرَّ عُثْمَانَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ مَرَّتَيْنِ यानी आज के बाद उस्मान को उन का कोई अमल नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा। सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के बारे में इस जुम्ला को दो बार फरमाया। मतलब यह है कि फर्ज़ कर लिया जाए कि अगर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कोई ख़ता वाक़ेअ् हो जाए तो आज का उन का यह अमल उन की ख़ता के लिये कफ्फारा बन जाएगा। (मिश्कात शरीफ:561)

तफ्सीरे ख़ाज़िन और तफ्सीरे मआलिमुत तंज़ील में है कि जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जैशे उस्रा की इस तरह मदद फरमाई कि एक हज़ार ऊंट साज़ो-सामान के साथ पेश फरमाया और एक हज़ार दीनार भी चन्दा दिया और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सदक़ा के चार हज़ार दिरहम बारगाहे रिसालत में पेश किये तो इन दोनों हज़रात के बारे में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَا اَنْفَقُوْا

مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ यानी जो लोग कि अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, फिर देने के बाद न ऐहसान रखते हैं और न तक्लीफ देते हैं तो उन का अज्र व सवाब उन के रब के पास है और न उन पर कोई ख़ौफ तारी होगा और न वो ग़म्गीन होंगे। (पारा:3, रुकूअ:4)

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि ने भी अपनी तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफान में तहरीर फरमाया कि आयते मुबारका हज़रत उस्माने ग़नी और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के हक़ में नाज़िल हुई।

एक बार सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें:

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक रोज़ नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला व सल्लम, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फारूके आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम उहुद पहाड़ पर थे कि यका यक वह हिलने लगा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला व सल्लम ने फरमाया: اُثْبُتْ اُحُدُ فَمَا عَلَيْكَ اِلَّا نَبِيٌّ اَوْ صِدِّيْقٌ اَوْ شَهِيْدَانِ यानी ऐ उहुद! तू ठहर जा, कि तेरे ऊपर सिर्फ एक नबी या सिद्दीक़ या दो शहीद हैं। (तफ्सीर मआ़लिमुत तंज़ील:6/216)

इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला व सल्लम पहाड़ों पर भी अपना हुक्म नाफ़िज़ फरमाते थे और यह भी साबित हुआ कि ख़ुदाए तआ़ला ने आप को इल्मे ग़ैब अता फरमाया थे कि बरसों पहले हज़रत उमर फारूके आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के शहीद होने के

बारे में हुज़ूर ख़बर दे रहे हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैंः

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब जानते थे कि नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला व सल्लम का फरमान नहीं टल सकता, इस लिये आप अपनी शहादत का इन्तेज़ार फरमा रहे थे, तो यह और उन के अलावा दूसरे लोग जो अपनी शहादत के मुन्तज़िर थे जैसे कि दुल्हा दुल्हन अपनी शादी की तारीख़ के मुन्तज़िर होते हैं, तो उन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल हुईः فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ यानी तो उन में से कोई वह है जो अपनी मिन्नत पूरी कर चुका (जैसे हज़रत हम्ज़ा व मुसअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा कि यह लोग जिहाद पर साबित रहे, यहां तक कि जंगे उहद में शहीद हो गए) और उन में से कोई वह है जो अपनी शहादत का इन्तेज़ार कर रहा है (जैसे हज़रत उस्मान और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)।

और हज़रत अल्लामा इस्माईल हक्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि मदीना मुनव्वरा में एक मुनाफ़िक़ रहता था, उस का दरख़्त एक अंसारी पड़ोसी के मकान पर झुका हुआ था जिस का फल उन के मकान में गिरता था, अंसारी ने सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला व सल्लम से इसका ज़िक्र किया, उस वक़्त तक मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ लोगों पर ज़ाहिर नहीं हुआ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला व सल्लम ने उस से फरमाया कि तुम दरख़्त अंसारी के हाथ के बेच डालो, उस के बदले तुम्हें जन्नत का दरख़्त मिलेगा, मगर मुनाफ़िक़ ने अंसारी को दरख़्त देने से इनकार कर दिया, जब इस वाक़िआ की ख़बर हज़रत

उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को हुई कि मुनाफिक़ ने हुज़ूर के फरमान को मन्ज़ूर नहीं किया तो आप ने पूरा एक बाग़ देकर दरख़्त को उस से ख़रीद लिया और अंसारी को दे दिया, इस पर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तारीफ और मुनाफिक़ की बुराई में यह आयते करीमा नाज़िल हुईः سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى यानी अन्क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उस से वह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में जायेगा।

(पाराः30,रुकूअ़ः12)

इस आयते मुबारका में مَنْ يَّخْشٰى से मुराद हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं और الْاَشْقَى से मुराद उस दरख़्त का मालिक मुनाफिक़ है। (तफ्सीर रूहुल बयानः10/408)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और अहादीसे करीमा

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फज़ाइल व मनाक़िब में बहुत सी हदीसें भी वारिद हैं। तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में हज़रत मुर्रा बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ज़मानए आइन्दा में होने वाले फित्नों का ज़िक्र फरमा रहे थे कि इतने में एक साहब सर पर कपड़ा डाले हुए उधर से गुज़रे तो हुज़ूर ने फरमाया कि यह शख़्स उस रोज़ हिदायत पर होगा। हज़रत मुर्रा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर से यह अल्फाज़ सुन कर मैं उठा और उस शख़्स की तरफ गया तो देखा कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं। फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की तरफ उन का रुख़ किया और पूछा क्या यह शख़्स उन फित्नों में हिदायत पर होंगे? तो हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि हां यही।

और तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से

रिवायत है, वह फरमाते हैं कि रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुस्तक़्बिल में होने वाले फित्नों का ज़िक्र किया तो इरशाद फरमाया कि यह शख़्स उस फित्ने में ज़ुल्म से क़त्ल किया जाएगा, यह कहते हुए आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ इशारा फरमाया।

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं मदीना तैयिबा के एक बाग़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के हम्राह था कि एक साहब आए और उस बाग़ का दरवाज़ा खुलवाए तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ यानी दरवाज़ा खोल दो और आने वाले शख़्स को जन्नत की बशारत दो, मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, मैं ने उन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के फरमान के मुताबिक जन्नत की ख़ुशख़बरी दी। इस पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़ुदाए तआ़ला का शुक्र अदा किया और उस की हम्द व सना की। फिर एक साहब और आए और उन्हों ने दरवाज़ा खुलवाया, हुज़ूर ने उन के बारे में भी फरमायाः اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ यानी इनके लिये भी दरवाज़ा खोल दो और इन को भी जन्नत की बशारत दो, मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, मैं ने उन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की ख़ुशख़बरी से मुत्तला किया, उन्हों ने ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल की हम्दो-सना की और उस का शुक्र अदा किया। फिर एक तीसरे साहब ने दरवाज़ा खुलवाया तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझ से इरशाद फरमायाः اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلٰى بَلْوٰى تُصِيْبُهٗ यानी आने वाले के लिये दरवाज़ा खोल दो और उन मुसीबतों पर जो इस शख़्स को पहुंचेंगी जन्नत की ख़ुशख़बरी दो। राविए हदीस हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि आने वाले शख़्स हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं, मैं ने उन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ खुशख़बरी दी और हुज़ूर के फरमान से उनको आगाह किया, उन्हों ने खुदाए तआ़ला की हम्द व सना की, उसका शुक्र अदा किया और फरमाया: اَللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ यानी आने वाली मुसीबतों पर अल्लाह तआ़ला से मदद तलब की जाती है।

और मुस्लिम शरीफ में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है वह फरमाती हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अपने मकान में लेटे हुए थे और आप की रान[1] या पिंडली मुबारक से कपड़ा हटा हुआ था, इतने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आए और उन्हों ने हाज़िरी की इजाज़त चाही, हुज़ूर ने उन को बुला लिया और वह अन्दर आ गए मगर हुज़ूर उसी तरह लेटे रहे और गुफ्तगू फरमाते रहे। उसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी आ गए, उन्हों ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की, हुज़ूर ने उन को भी इजाज़त दे दी और वह भी अन्दर आ गए लेकिन हुज़ूर फिर भी बदस्तूर उसी तरह लेटे रहे यानी रान या पिंडली से कपड़ा हटा रहा। फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आ गए और आप ने अन्दर आने की इजाज़त चाही तो आप उठ कर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया, उस के बाद हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अंदर आने की इजाज़त मरहमत फरमाई।

रावियए हदीस हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फरमाती हैं कि जब यह लोग चले गए तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला

1-शक रावी अस्त पस इस्तिदलाल नबूद हर कसे रा कि रफ्ता अस्त बआं कि फख़्ज़े औरत नेस्त ज़ेरा कि मोहतमल सलाहियते हुज्जते नदारद, व बाज़े तावील करदा अन्द कश्फ आं रा कि अज़ क़मीस बूद न मीज़ रौ गुफ्ता अन्द कि ज़ाहिर अज़ हाल शरीफ वय सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ईस्त। والله اعلم, (अश्अ़तुल लमआ़त:4/655)

अलैहि व सल्लम से दरियाफ्त फरमाया या रसूलल्लाह! क्या वजह है कि मेरे बाप हज़रत सिद्दीके अकबर आए तो आप बदस्तूर लेटे रहे, फिर हज़रत फारूके आज़म आए मगर आप बदस्तूर लेटे रहे और जुंबिश नहीं फरमाई लेकिन जब हज़रत उस्माने ग़नी आए तो आप उठकर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के इस सवाल के जवाब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اَلَا اَسْتَحْیِیْ مِنْ رَجُلٍ تَسْتَحْیِیْ مِنْہُ الْمَلَائِکَۃُ यानी क्या मैं उस शख़्स से हया न करूं जिस से फिरिश्ते भी हया करते हैं।

सुब्हानल्लाह! हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का दर्जा क्या ही बुलंद व बाला और अज़्मत वाला है कि फिरिश्ते आप से हया करते हैं यहां तक कि सैय्यिदुल अंबिया और नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम भी आप से हया फरमाते हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मक़ामे हुदैबिया में बैअ़ते रिज़्वान का हुक्म फरमाया उस वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के क़ासिद की हैसियत से मक्का मुअज़्ज़मा गए हुए थे, लोगों ने हुज़ूर के हाथ पर बैअ़त की, जब सब लोग बैअ़त कर चुके तो रसूले मक़्बूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उस्मान खुदा और रसूले खुदा के काम से गए हुए हैं, फिर अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर मारा यानी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ से खुद बैअ़त फरमाई, लिहाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का मुबारक हाथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के लिये उन हाथों से बेहतर है जिन्हों ने अपने हाथों से अपने लिये बैअ़त की।

हज़रत शैख़ मोहद्दिसे देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि व सल्लम अश्अ़तुल लमआ़त में इस हदीस के तहत फरमाते हैं कि सरकार अक़्दास सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने दस्ते मुबारक को हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का हाथ क़रार दिया। यह वह फज़ीलत है जो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ ख़ास है यानी इस फज़ीलत से उनके सिवा और कोई दूसरा सहाबी कभी मुशर्रफ नहीं हुआ।

तिर्मिज़ी शरीफ और इब्ने माजा में हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फरमाया कि ऐ उस्मान! ख़ुदाए तआ़ला तुझ को एक क़मीस पहनाएगा यानी ख़िल्अ़ते ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाएगा, फिर अगर लोग उस क़मीस के उतारने का तुझ से मुतालेबा करें तो उन की ख़्वाहिश पर उस क़मीस को मत उतारना यानी ख़िलाफत को मत छोड़ना। इसी लिये जिस रोज़ उन को शहीद किया गया उन्हों ने हज़रत अबू सहला रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझ को ख़िलाफत के बारे में वसियत फरमाई थी, इसी लिये मैं उस वसियत पर क़ाइम हूं और जो कुछ मुझ पर बीत रही है उस पर सब्र कर रहा हूं।

हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत की है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दो बार जन्नत ख़रीदी है, एक बार तो बिअ़रे रोमा ख़रीद कर और दूसरी बार जैशे उस्रा के लिये सामान देकर। जैशे उस्रा के लिये जो सामान आप ने फराहम किया था उस का बयान पहले हो चुका है। और बिअ़रे रोमा की ख़रीदारी का वाक़िआ़ यह है कि जब सरकार अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मक्का मुअ़ज़्ज़मा से हिज्रत फरमा कर मदीना तैयिबा तशरीफ लाए तो उस ज़माने में वहां पर बिअ़रे रोमा के अलावा

और किसी कुंएं का पानी मीठा न था, यह कुंआं वादिए अक़ीक़ के किनारे एक पुर-फिज़ा बाग़ में है जो मदीना तैयिबा से तक़रीबन चार किलो मीटर के फ़ासिले पर है, इस कुंएं का मालिक यहूदी था जो उस का पानी फरोख़्त किया करता था और मुसलमानों को पानी की सख़्त तक्लीफ थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरग़ीब पर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आधा कुंआं बारह हज़ार दिरहम में ख़रीद कर मुसलमानों पर वक़्फ कर दिया और तय यह पाया कि एक रोज़ मुसलमान पानी भरेंगे और दूसरे दिन यहूदी, मगर जब यहूदी ने देखा कि मुसलमान एक रोज़ में दो रोज़ का पानी भर लेते हैं और मेरा पानी ख़ातिर ख़्वाह नहीं बिकता तो परेशान होकर बक़िया आधा भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ आठ हज़ार दिरहम में बेच दिया। उस कुंएं को आज कल बिअ्रे हज़रत उस्मान कहते हैं। رضی اللہ تعالی عنہ وارضاہ عنا وعن سائر المسلمین

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्ना व अन् साइरिल् मुस्लिमीन।

हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मिस्र का रहने वाला एक शख़्स हज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ आया, उस ने एक जगह कुछ लोगों को बैठे हुए देखा तो पूछा कि यह कौन लोग हैं? जवाब दिया गया कि यह लोग कुरैश हैं, उस ने पूछा कि इन लोगों का शैख़ कौन है? जवाब दिया गया कि इन लोगों के शैख़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। अब उस ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की तरफ मुतवज्जह होकर कहा कि ऐ इब्ने उमर! मैं कुछ सवाल करना चाहता हूं आप उसका जवाब दें, क्या आप को मालूम है कि उस्मान उहद की जंग से भाग गए थे, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि हां ऐसा हुआ था, फिर उस शख़्स ने दरियाफ्त किया क्या आप को मालूम है कि बद्र की लड़ाई से उस्मान ग़ाइब थे और मअ्रिकए बद्र में वह शरीक न हुए थे, हज़रत इब्ने उमर

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने जवाब दिया कि हां वह बद्र के मअ़रिके में मौजूद न थे। फिर उस शख़्स ने पूछा क्या आप को मालूम है कि उस्मान बैअ़ते रिज़्वान के मौक़े पर भी ग़ाइब थे और उस में शरीक न हुए थे, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फरमाया कि हां वह बैअ़ते रिज़्वान के मौक़े पर मौजूद न थे और उस में शामिल न थे। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से तीनों बातों की तस्दीक़ सुन कर उस शख़्स ने *अल्लाहु अक्बर* कहा। बज़ाहिर उस मिस्री शख़्स का सवाल था लेकिन हक़ीक़त में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़ाते गरामी पर उस का ऐतराज़ था, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने उस से फरमाया कि इधर आ, मैं तुझ से हक़ीक़ते हाल बयान करके तेरे शुब्हात दूर कर दूं। उहद के मअ़रिके से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के भाग जाने के मुतअ़ल्लिक़ मैं तुझ से यह कहता हूं कि खुदाए ज़ुलजलाल ने उन की ग़लती को माफ फरमा दी जैसा कि कुरआन मजीद में इरशादे खुदावंदी है: إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ यानी बेशक वह लोग जो तुम से फिर गए जिस दिन दोनों फौजें मिली थीं, उन के बाज़ आमाल के सबब उन्हें शैतान ही ने लग़ज़िश दी और बेशक अल्लाह ने उन्हों माफ फरमा दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है। (पाराः4 रुकूअ़ः7)

और जंगे बद्र में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का मौजूद न होना उस का वाक़िआ़ यह है कि हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की साहिबज़ादी और हज़रत उस्माने ग़नी की बीवी उस ज़माने में बीमार थीं, हुज़ूर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को उन की देख भाल के लिये मदीना तैयिबा में छोड़ दिया था और फरमाया कि उस्माने ग़नी को जंगे बद्र में शरीक होने वालों में से एक मुजाहिद का सवाब मिलेगा और माले ग़नीमत में से भी एक शख़्स का हिस्सा दिया

जाएगा। अब रहा मामला बैअ़ते रिज़्वान से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ग़ाइब होना तो उसकी वजह यह है कि अगर मक्का मुअ़ज़्ज़मा हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा बा इज़्ज़त और हर दिल अज़ीज़ कोई और शख़्स होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम उसी को मक्का मोअ़ज़्ज़मा भेजते मगर चूंकि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा हरदिल अज़ीज़ और बा इज़्ज़त मक्का शरीफ वालों की निगाह में कोई और शख़्स न था इस लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन्हीं को मक्का मोअ़ज़्ज़मा रवाना फरमाया ताकि वह आप की तरफ से कुफ्फारे मक्का से बात-चीत करें, तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के हुक्म से मक्का मोअ़ज़्ज़मा चले गए थे इस तरह उनकी ग़ैर मौजूदगी में बैअ़ते रिज़्वान का वाक़िआ़ पेश आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने बैअ़ते रिज़्वान के वक़्त अपने दाहिने हाथ को उठा कर फरमाया कि यह उस्मान का हाथ है और फिर उस हाथ को अपने दूसरे हाथ पर मार कर फरमाया कि यह उस्मान की बैअ़त है। उसके बाद हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने फरमाया कि अभी जो मैं ने तेरे सामने बयान किया है तू इस को ले जा कि यही तेरे सवालात के मुकम्मल जवाबात हैं। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। (बुख़ारी शरीफ)

आप की ख़िलाफत

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह अपनी मशहूर किताब तारीख़ुल खुलफा में तहरीर फरमाते हैं कि ज़ख़्मी होने के बाद हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तबीअ़त जब ज़्यादा नासाज़ हुई तो लोगों ने आप से अर्ज़ किया कि या अमीरल मोमिनीन आप हमें कुछ वसियतें फरमाइये और ख़िलाफत के

लिये किसी का इन्तिख़ाब फरमा दीजिये, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इरशाद फरमाया कि ख़िलाफत के लिये अलावा उन छेः सहाबा के जिन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम राज़ी हौर खुश रह कर इस दुनिया से तशरीफ ले गए हैं मैं किसी और को मुस्तहिक़ नहीं समझता हूं। फिर आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ और हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के नाम लिये और फरमाया कि मेरे लड़के अ़ब्दुल्लाह मज्लिसे शूरा में उन के साथ रहेंगे लेकिन ख़िलाफत से उन्हें कोई सरोकार न होगा। अगर सअ़द बिन वक़्क़ास का इन्तेख़ाब हो जाए तो वह उस का हक़ रखते हैं, वरना उन छेः सहाबियों में से जिस को चाहें मुन्तख़ब कर लें और मैं ने सअ़द बिन वक़्क़ास को किसी आजिज़ी और ख़्यानत की वजह से मअ़ज़ूल नहीं किया था। फिर आप ने फरमाया कि मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफा को वसियत करता हूं कि वह अल्लाह तआ़ला से डरता रहे और सब अंसार व मुहाजिरीन और सारी रिआ़या के साथ भलाई से पेश आता रहे।

जब हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का विसाल हो गया और लोग उन की तज्हीज़ व तक्फीन से फारिग़ हो गए तो तीर रोज़ बाद ख़लीफा को मुन्तख़ब करने के लिये जमा हुए, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लोगों से फरमाया कि पहले तीन आदमी अपना हक़ तीन आदमियों को देकर दस्त बरदार हो जाएं, लोगों ने इस बात की ताईद की, तो हज़रत ज़ुबैर हज़रत अली को, हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास हज़रत अब्दुर रहमान को और हज़रत तल्हा हज़रत उस्मान को अपना हक़ देकर दस्त बरदार हो गए *रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अजमईन।*

यह तीनों हज़रात राय मश्वरा करने के लिये एक तरफ चले गए, वहां हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने

फरमाया कि मैं अपने लिये ख़िलाफत पसंद नहीं करता, अब आप लोगों में से भी जो ख़िलाफत की ज़िम्मेदारी से दस्त बरदार होना चाहे वह बता दे, इस लिये कि जो बरी होगा हम ख़िलाफत उसी के सुपुर्द कर देंगे। और जो शख़्स ख़लीफा हो उस के लिये ज़रूरी है कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की उम्मत में सब से अफ्ज़ल हो और इस्लाहे उम्मत की बहुत ख़्वाहिश रखता हो। इस बात के जवाब में हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा यानी दोनों हज़रात चुप रहे, तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि अच्छा आप लोग इस इन्तिख़ाब का काम हमारे सुपुर्द कर दें, क़सम ख़ुदा की मैं आप लोगों में से बेहतर और अफ्ज़ल शख़्स का इन्तिख़ाब करूंगा, दोनों हज़रात ने फरमाया कि हमें मन्ज़ूर है, हम इन्तिख़ाबे ख़लीफा का काम आप के सुपुर्द करते हैं।

अब इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लेकर एक तरफ गए और उनसे कहा कि ऐ अली! आप इस्लाम क़बूल करने में साबिक़ीन अव्वलीन में से हैं और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के क़रीबी अज़ीज़ हैं, लिहाज़ा अगर आप को अगर मैं ख़लीफा मुक़र्रर कर दूं तो आप क़बूल फरमा लें और अगर मैं किसी दूसरे को आप पर ख़लीफा मुक़र्रर कर दूं तो उस की इताअत करें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मुझे मनज़ूर है।

इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लेकर एक तरफ गए और उनसे भी तन्हाई में उसी क़िस्म की गुफ्तगू की तो उन्हों ने भी दोनों बातों को तस्लीम कर लिया, जब इन दोनों हज़रात से हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस क़िस्म का अहद व पैमान ले लिया तो उस के आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली और उन के बाद

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी बैअत कर ली।

तारीखुल खुलफा में इब्ने असाकिर के हवाले से है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बजाए हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस लिये ख़लीफा मुन्तख़ब किया कि जो भी साइबुर राय तन्हाई में उन से मिलता वह यही मश्वरा देता कि ख़िलाफत हज़रत उस्मान ही को मिलनी चाहिये, वह उस के लिये सब से ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। चुनांचे एक रिवायत में यूं आया है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम्दो-सलात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया ऐ अली! मैं ने सब लोगों की राय मालूम कर ली है, ख़िलाफत के बारे में सब की राय हज़रत उस्मान के लिये है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह कह कर आप ने हज़रत उस्मान का हाथ पकड़ा और कहा कि मैं सुन्नते खुदा, सुन्नते रसूल और दोनों खुलफा की सुन्नत पर आप से बैअत करता हूं। इस तरह सब से पहले हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत की, फिर तमाम मुहाजिरीन व अंसार ने उन से बैअत की।

और मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस तरह मरवी है, उन्हों ने फरमाया कि मैं ने हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया कि आप ने हज़रत अली को छोड़ कर हज़रत उस्मान से क्यों बैअत की? उन्हों ने फरमाया कि इस में मेरा क़ुसूर नहीं है, मैं ने पहले हज़रत अली ही से कहा कि मैं किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह और हज़रत अबू बकर व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सुन्नत पर आप से बैअत करता हूं, तो उन्होंने फरमाया कि मैं इस की इस्तिताअत नहीं रखता। उस के बाद मैं ने हज़रत उस्मान से इसी किस्म की गुफ्तगू की तो उन्हों ने क़बूल कर लिया। (तारीखुल खुलफा:24)

गुनियतुत तालिबीन जो हज़रत ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तस्नीफ मशहूर है उस में भी यही रिवायत मज़्कूर है।

तो इस रिवायत की बुनियाद पर यह कहा जाएगा कि ग़ालिबन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस वक़्त ख़िलाफत से इस लिये इनकार कर दिया कि उन पर सहाबा का रुजहान ज़ाहिर हो चुका था कि वह मेरे बजाए हज़रत उस्मान को ख़लीफा मुक़र्रर करना चाहते हैं तो आप ने सहाबा की मरज़ी के ख़िलाफ ज़बर्दस्ती उन का ख़लीफा बनना पसंद न फरमाया। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम।

और एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत अ़ब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं ने तन्हाई में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरियाफ्त किया कि अगर मैं आप से बैअ़त न करूं तो मुझे आप किस से बैअ़त करने का मश्वरा देंगे? उन्हों ने फरमाया कि अली से। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फिर मैं ने इसी तरह तन्हाई में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कहा कि अगर मैं आप की बैअ़त न करूं तो आप मुझे किस की बैअ़त का मश्वरा देंगे? उन्हों ने फरमाया उस्मान से, रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु। फिर मैं ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुला कर इसी तरह तख़्लिया में उन से दरियाफ्त किया कि अगर मैं आप की बैअ़त न करूं तो आप मुझे किस से बैअ़त करने की राय देंगे? उन्हों ने फरमाया कि हज़रत अली या हज़रत उस्मान से। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा हज़रत अ़ब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि फिर मैं ने हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुलाया और उन से कहा कि मेरा और आप का इरादा ख़लीफतुल मुस्लिमीन बनने का तो है नहीं तो फिर आप मुझे किस से बैअ़त करने का मश्वरा देते हैं? उन्हों ने फरमाया कि हज़रत उस्मान से। रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फिर हज़रत अ़ब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने तमाम मुहाजिरीन व अंसार से मश्वरा किया तो अक्सर लोगों की राय

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में पाई। इसलिये उन्हों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत की।

एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर दुरूद व सलाम की डालियां निछावर करें।

☆☆☆

एक ऐतराज़ और उस का जवाब

राफ़ज़ी कहते हैं कि सब से पहले ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे मगर लोगों ने उन के हक़ को ग़सब कर लिया, पहले (हज़रत) अबू बकर फिर (हज़रत) हज़रत उमर और फिर (हज़रत) उस्मान को ख़लीफ़ा बनाया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) इस तरह मुसलसल हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हक़ तल्फ़ी की गई।

फिर राफ़ज़ी इसी पर इक्तिफ़ा नहीं करते बल्कि हज़राते ख़ुलफ़ाए सलासा और दीगर सहाबए किराम को जिन्हों ने उन को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया उन सब से बुग़ज़ व अदावत रखते हैं और उन को बुरा भला कहते हैं।

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पहले जो लोग ख़लीफ़ा हुए और जिन्हों ने उन को ख़लीफ़ा बनाया यह वह लोग जिन की ख़ुदाए तआला ने मदह फ़रमाई है और उन की तारीफ़ व तौसीफ़ में क़ुरआन मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। मसलन पाराः 27, रुकूअ़:17 में हैः لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوْا وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى यानी तुम में बराबर नहीं वह जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से पहले ख़र्च और जिहाद किया, वह मर्तबा में उन से बड़े हैं, जिन्हों ने फ़त्हे मक्का के बाद ख़र्च और जिहाद किया, और उन सब से अल्लाह जन्नत का वादा फ़रमा चुका।

और पारा:11, रुकूअ़:2 में है: وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ यानी और सब में अगले पहले मुहाजिरीन और अंसार और जो भलाई के साथ उन की इत्तिबाअ़ किये अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए।

और पारा:28, रुकूअ़:4 में है: لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ यानी हिज्रत करने वाले फकीरों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए, अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रज़ा चाहते हैं और अल्लाह व रसूल की मदद करते हैं, वही लोग सच्चे हैं।

फिर इसी पारा:28, रुकूअ़:4 में है: وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ यानी और जिन लोगों ने पहले से इस (मदीना मुनव्वरा) शहर में और ईमान में घर बना लिया, वह दोस्त रखते हैं उन लोगों को जो उन की तरफ हिज्रत कर गए। और वह लोग अपने दिलों में कोई हाजत नहीं पाते, उस चीज़ की जो (मुहाजिरीन और माले ग़नीमत) दिये गए हैं और (अंसार) अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोहताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वही कामयाब है।

और पारा:4, रुकूअ़:8 में है: لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ यानी बेशक अल्लाह का मुसलमानों पर बड़ा ऐहसान हुआ कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर खुदाए तआ़ला की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता है।

हज़रात! इस क़िस्म की और भी बहुत सी आयाते करीमा हैं जिन में खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने अपने प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के अस्हाब की वाज़ेह लफ्ज़ों में तारीफ़ व तौसीफ फरमाई है मगर हम बर वक़्त इन्हीं चन्द आयात पर इक्तिफा करते हैं।

अब आप लोग ग़ौर कीजिये! पहली आयते करीमा जो हम ने

तिलावत की उस में फरमाया गया हैः وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى यानी फत्हे मक्का से पहले और उस के बाद अल्लाह की राह में ख़र्च करने और लड़ाई करने वाले हर एक सक अल्लाह तआला ने भलाई का वादा फरमाया है। और दूसरी आयते मुबारका में हैः رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ यानी अल्लाह तआला उन से राज़ी हुआ और वह अल्लाह तआला से राज़ी हैं।

और तीसरी आयते करीमा में फरमाया गयाः اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ यानी वही लोग सच्चे हैं।

और चौथी आयते मुबारका में हैः فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ यानी वह लोग फलाह याफ्ता और कामयाब हैं।

और पांचवीं आयते करीमा में फरमाया गयाः وَيُزَكِّيْهِمْ नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उनका तज़्किया फरमाते हैं, यानी ना पसंदीदा ख़स्लतों और बुरी बातों से उन को पाक व साफ करते हैं और सालेह बनाते हैं।

अल्लाह तआला ने इस आयते मुबारका में ख़बर दी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुज़क्की हैं तो इस बात पर ईमान लाना ज़रूरी है कि सहाबए किराम के कुलूब का उन्हों ने तज़्किया फरमाया इस लिये कि अगर उनके कुलूब का तज़्किया नहीं फरमाया तो वह मुज़क्की नहीं हो सकते। और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के कुलूब का तज़्किया फरमाया तो मानना पड़ेगा कि वह नेकोकार और सालेह हैं। उन के अख़्लाक़ बुलंद हैं और औसाफ़े हमीदा वाले हैं, उन की नियतें सहीह हैं और उन का अमल हमारे लिये मश्अले राह है।

लिहाज़ा सहाबए किराम कि जिन से अल्लाह तआला ने भलाई का वादा फरमाया, अल्लाह तआला उन से राज़ी और वह अल्लाह तआला से राज़ी। और ऐसे लोग जो फलाह याफ्ता और सच्चे हैं और जिन के कुलूब मज़क्का व मुजल्ला हैं उनके बारे में यह फासिद ऐतिक़ाद रखना कि उन्हों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ को ग़सब

कर लिया, इन्तिहाई बद नसीबी और बद बख़्ती है बल्कि क़ुरआन शरीफ को झुठलाना है। *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।*

बादशाह जिस जमाअ़त से राज़ी हो और उन की तारीफ व तौसीफ बयान करता हो उस जमाअ़त से बुग़्ज़ व अदावत रखना और उन की बुराई करना बादशाह की नाराज़गी का सबब होगा। तो ख़ुदाए ज़ुल जलाल जो सहाबा से राज़ी है और अपनी किताब क़ुरआने मजीद में जगह जगह उन की तारीफ व तौसीफ बयान फरमाता है उस मुबारक जमाअ़त से बुग़्ज़ व अदावत रखना और उन की बुराई करना ख़ुदाए तआ़ला की सख़्त नाराज़गी का सबब है।

हज़रत अल्लामा अबू ज़ुरआ़ राज़ी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो तबए ताबिईन में से हैं उन्हों ने इस सिलसिले में निहायत ही उम्दा बात फरमाई है, फरमाते हैं: إِذَا رَأَيْتَ الرَّجُلَ أَنَّهُ يَنْتَقِصُ أَحَدًا مِّنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم فَاعْلَمْ أَنَّهُ زِنْدِيْقٌ, यानी जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के अस्हाब में से किसी की तन्क़ीस करता है, उन में नक़्स निकालता है तो जान लो कि वह ज़िन्दीक़ और बे दीन है। इस लिये कि क़ुरआन और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का हर फरमान हमें सहाबा ही के वास्ते से मिला है तो उन की ज़ात में बुराई साबित करना और उन का ग़लत ठहराना क़ुरआन व हदीस को बातिल क़रार देना है, *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला।* (अल-इसाबा:1/11)

एक बार आप सब लोग मिल कर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में दुरूद शरीफ की डालियां पेश करें।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَآلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप का पहला खुत्बा

तारीखुल खुलफा में इब्ने सअ्द के हवाले से है कि ख़लीफा मुन्तख़ब होने के बाद जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु खुत्बा देने के लिये खड़े हुए तो आप कुछ बयान न कर सके। सिर्फ इतना फरमाया कि ऐ लोगो! पहली मर्तबा घोड़े पर सवार होना बड़ा मुश्किल होता है, आज के बाद बहुत से दिन आयेंगे अगर मैं ज़िंदा रहा तो इन्शाअल्लाह आप लोगों के सामने ज़रूर खुत्बा दूंगा। हमारे ख़ानदान में लोग ख़तीब नहीं हुए हैं। खुदाए तआला से उम्मीद है कि वह अन्क़रीब हमें खुत्बा देने पर कुद्रत अता फरमाएगा।

अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं किः मिम्बर के तीन ज़ीने थे, अलावा ऊपर के तख़्ते के कि जिस पर बैठते हैं। हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम दर्जए बाला पर खुत्बा फरमाया करते। सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने दूसरे पर पढ़ा। फारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने तीसरे पर। जब ज़माना जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का आया, फिर अव्वल पर खुत्बा फरमाया, सबब पूछा गया, फरमाया अगर दूसरे पर पढ़ता तो लोग गुमान करते कि में सिद्दीक़ का हमसर हूं और तीसरे पर तो वहम होता कि फारूक़ के बराबर हूं। लिहाज़ा वहां पढ़ा जहां यह ऐहतमाल मुतसव्वर ही नहीं। (फतवा रज़्वियह:3/700)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के जुम्ले क़ाबिले ग़ौर हैं, वह फरमाते हैं कि अगर दूसरे पर पढ़ता तो लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक़ का हमसर हूं। सवाल यह पैदा होता है कि अगर लोग उन को हज़रत सिद्दीक़ का हमसर गुमान करते तो क्या उस में कोई ख़राबी थी? हां बेशक ख़राबी थी। इस लिये कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को यह हरगिज़ मन्ज़ूर नहीं था कि लोग उन को सिद्दीक़ का हमसर गुमान करें। इसी तरह उन को यह भी गवारा

नहीं था कि लोग उन के बारे में वहम करें कि वह फ़ारूक़े आज़म के बराबर हैं। इसी लिये फरमाया कि अगर तीसरे पर पढ़ता तो वहम होता कि फ़ारूक़ के बराबर हूं।

मालूम हुआ कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ से बराबरी का दावा करना तो बहुत दूर की बात है उन को इतना भी गवारा नहीं था कि उन के बारे में कोई यह वहम व गुमान करे कि वह हज़राते शेख़ैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के हमसर व बराबर हैं। इसी लिये वह सब से ऊपर वाले दर्जे पर ख़ुत्बा पढ़े।

फिर हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह जुम्ला भी क़ाबिले तवज्जोह है कि मैं ने वहां ख़ुत्बा पढ़ा जहां यह (यानी हमसरी व बरारबी का) ऐहतिमाल मुतसव्वर ही नहीं। मतलब यह हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन में से कोई भी यह तसव्वुर कर ही नहीं सकता था कि हज़रत उस्माने ग़नी हुज़ूर से बराबरी व हमसरी का दावा कर सकते हैं।

साबित हुआ कि अगर कोई आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से बराबरी व हमसरी का दावा करे तो वह गुस्ताख़ व बेअदब है और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन के रास्ते से अलग है। और हदीस शरीफ مَا اَنَا عَلَيْهِ وَاَصْحَابِیْ के मुताबिक़ उन्हीं के रास्ते पर चलने वाले जन्नती हैं, बाक़ी सब जहन्नमी।

आप के ज़मानए ख़िलाफत की फ़ुतूहात

हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़मानए ख़िलाफत में भी इस्लामी फ़ुतूहात का दाइरा बराबर वसीअ़ होता रहा। चुनांचे आप के ज़मानए ख़िलाफत के पहले साल यानी 24 हिजरी में "रय" फतह हुआ। रय ख़ुरासान का एक शहर है जो आज कल ईरान का दारुस सल्तनत है और उसे तेहरान कहते हैं। 26 हिजरी में शहर

साबूर फतह हुआ।

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफत में मुल्के शाम के गवर्नर थे उन्हों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कई बार यह दरख़्वास्त पेश की थी कि बहरी बेड़ा के ज़रिये क़ुब्रस पर हम्ला की इजाज़त दी जाए मगर आप ने इजाज़त न दी लेकिन जब हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इस्रार बहुत ज़्यादा हुआ तो आप ने हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि आप समन्दर और बादबानी जहाज़ों की कैफियत मुफस्सल तरीक़े से लिख कर मुझे रवाना करें। उन्हों ने लिखा कि मैं ने बादबानी जहाज़ों को देखा है जो एक बड़ी मख़्लूक़ है और उस पर छोटी मख़्लूक़ सवार होती है, जब वह जहाज़ ठहर जाता है तो लोगों के दिल फटने लगते हैं और जब वह चलता है तो अक़्लमंद लोग भी ख़ौफ ज़दा हो जाते हैं, उस में अच्छाइयां कम और ख़राबियां ज़्यादा हैं। उस में सफर करने वालों की हैसियत कीड़े मकोड़ों जैसी है, अगर यह सवारी किसी तरफ झुक जाए तो उमूमन लोग डूब जाते हैं और अगर बच जाते हैं तो इस हाल में साहिल तक पहुंचते हैं कि कांपते रहते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त इस मज़्मून का पढ़ा तो हज़रत अमीरे मुआविाया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि: [illegible] यानी क़सम है खुदाए तआला की मैं ऐसी सवारी पर मुसलमानों को कभी सवार नहीं कर सकता। (तारीखुल खुलफा:106)

इस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफत में क़ुब्रस पर मुसलमानों का हम्ला नहीं हो सका। लेकिन जब हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़मानए ख़िलाफत आया तो उन के हुक्म से 27 हिजरी में जहाज़ के ज़रिये हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लश्कर ले जा कर क़ुब्रस पर हम्ला किया,

उस को फतह कर लिया और जिज़्या लेने की शर्त मन्ज़ूर कर ली।

जिस लश्कर ने बहरी रास्ते से जाकर क़ब्रस पर हम्ला किया था उस लश्कर में मशहूर व मारूफ सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी अहलिया मोहतरमा हज़रत उम्मे हराम बिन्ते मिल्हान अंसारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ मौजूद थे, आप की बीवी जानवर से गिर कर इन्तेक़ाल कर गईं तो उन को वहीं क़ब्रस में दफन कर दिया गया। उस लश्कर के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफा व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने पेशीन गोई फरमाई थी कि उबादा बिन सामित की बीवी भी उस लश्कर में होगी और क़ब्रस ही में उस की क़ब्र बनेगी। चुनांचे यह पेशीन गोई हर्फ बहर्फ सहीह हुई। और क्यों न हो कि नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है बल्कि बड़ा से बड़ा पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का फरमान नहीं टल सकता।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

और इसी 27 हिजरी में जुर्जान और दारे बजर्रर फतह हुए। और इसी साल जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअ़द बिन अबी सरह को मिस्र का गवर्नर बनाया तो उन्हों ने मिस्र पहुंच कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हुक्म से अफ्रीक़ा पर हम्ला किया और उस को फतह करके सारी सल्तनतों को हुकूमते इस्लामिया में शामिल कर लिया। इस जंग में इस क़द्र माले ग़नीमत मुसलमानों को हासिल हुआ कि हर सिपाही को एक एक हज़ार दीनार और बाज़ रिवायात के मुताबिक़ तीन तीन हज़ार दीनार मिले। दीनार साढ़े चार माशा सोने का एक सिक्का होता है। इस

फत्हे अज़ीम के बाद इसी 27 हिजरी में स्पेन यानी हस्पानिया भी फतह हो गया और 29 हिजरी में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से उस्तुख़र, क़सा और इन के अलावा बाज़ दूसरे ममालिक भी फतह हुए।

और 30 हिजरी में जौर, खुरासान और नेशापूर सुलह के ज़रिये फतह हुए। इसी तरह मुल्के ईरान के दूसरे शहर तूस, सरख़्स, मर्व और बैहक़ भी सुलह के फतह हुए। इस क़द्र फुतूहात से जब बेशुमार माले ग़नीमत हर तरफ से दारुल ख़िलाफत में पहुंचने लगा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इन मालों की हिफाज़त के लिये कई महफूज़ ख़ज़ाने बनवाने पड़े और लोगों में इस फराख़ दिली से माल तक़्सीम फरमाया कि एक-एक शख़्स को एक-एक लाख बदरे मिले जबकि एक बदरा दस हज़ार दिरहम का होता है। (तारीख़ुल ख़ुलफाः106)

आप की करामतें

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कई करामतों को ज़ुहूर हुआ जिन में चन्द करामतें आप हज़रात के सामने पेश की जाती हैं।

अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी किताब "तबक़ात" में तहरीर फरमाया है कि एक शख़्स ने रास्ता चलते हुए एक अज्नबी औरत को घूर-घूर कर ग़लत निगाहों से देखा, उस के बाद यह शख़्स अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ, उस शख़्स को देख कर हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फरमाया कि तुम लोग ऐसी हालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में ज़िना के असरात होते हैं, शख़्से मज़्कूर ने जल भुन कर कहा कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद आप पर वही उतरने लगी है? आप को यह कैसे मालूम हो गया कि मेरी आंखों में ज़िना के असरात हैं?

अमीरुल मोमिनीन ने इरशाद फरमाया कि मेरी ऊपर वही तो

नाज़िल नहीं होती है लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है यह बिल्कुल ही क़ौले हक़ और सच्ची बात है और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मुझे एक ऐसी फ़रासत (नूरानी बसीरत) अता फरमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के हालात व ख़्यालात को मालूम कर लेता हूं।

(करामाते सहाबा बहवाला हुज्जतुल्लाहि आलमीन:2/862)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा रावी हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मस्जिदे नबवी शरीफ के मिम्बरे अक़्दस पर ख़ुत्बा पढ़ रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक एक बद नसीब और ख़बीसुन नफ़्स इंसान जिस का नाम "जहजाह ग़िफ़ारी" था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक अ़सा छीन कर उस को तोड़ डाला, आप पे अपने हिल्मो-हया की वजह से उस से कोई मवाख़ज़ा नहीं फरमाया लेकिन ख़ुदाए तआ़ला की क़ह्हारी व जब्बारी ने इस बे अदबी और गुस्ताख़ी पर उस मर्दूद को यह सज़ा दी कि उस के हाथ में कैंसर का मर्ज़ हो गया और उस का हाथ गल सड़ कर गिर पड़ा और वह यह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया।

(करामाते सहाबा बहवाला हुज्जतुल्लाहि अल-आलमीन:2/862)

और हज़रत अबू किलाबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि मैं मुल्के शाम की सर ज़मीन में था, मैं ने एक शख़्स को बार-बार यह सदा लगाते हुए सुना, हाए अफ्सोस! मेरे लिये जहन्नम है, मैं उठ का उस के पास गया तो यह देख कर हैरान रह गया कि उस शख़्स के दोनों हाथ और पांव कटे हुए हैं और वह दोनों आंखों से अंधा है, और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर औन्धा पड़ा हुआ बार-बार लगातार यही कह रहा है कि "हाए अफ्सोस मेरे लिये जहन्नम है" यह मन्ज़र देख कर मुझ से रहा न गया और मैं ने उस से पूछा कि ऐ शख़्स तेरा क्या हाल है? और क्यों और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यक़ीन है? यह सुन कर उस ने यह कहा कि ऐ शख़्स! मेरा हाल न पूछ, मैं उन बद नसीब लोगों में से हूं जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत

उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को क़त्ल करने के लिये उन के मकान में घुस पड़े थे, मैं जब तल्वार लेकर उन के क़रीब पहुंचा तो उन की बीवी साहिबा ने मुझे डांट कर शोर मचाना शुरू किया तो मैं ने उन की बीवी साहिबा को एक थप्पड़ मार दिया, यह देख कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दुआ़ मांगी कि "अल्लाह तआ़ला तेरे दोनों हाथों और पांव को काट डाले और तेरी दोनों आंखों को अंधी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे ऐ शख़्स! मैं अमीरुल मोमिनीन के पुर जलाल चेहरे को दख कर और उन की इस क़ाहिराना दुआ़ को सुन कर कांप उठा और मेरे बदन का एक-एक रोंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ व दहशत से कांपते हुए वहां से भाग निकला।

अमीरुल मोमिनीन की चार दुआ़ओं में से तीन दुआ़ओं की ज़द में तो आ चुका हूं, तुम देख रहे हो कि मेरे दोनों पांव कट चुके हैं, दोनों आंखें अंधी हो चुकीं, अब सिर्फ चौथी दुआ़ यानी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है और मुझे यक़ीन है कि यह मामला भी यक़ीनन होकर रहेगा। चुनांच अब मैं उसी का इन्तिज़ार कर रहा हूं और अपने जुर्म को बार-बार याद करके नादिम व शर्मसार हो रहा हूं और अपने जहन्नमी होने का इक़रार करता हूं।

(करामाते सहाबा बहवाला इज़ालतुल ख़िफा मक़्दस:2, पेज:227)

मज़्कूरा बाला तीनों वाक़िआत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की अज़ीम करामतें हैं जो उन की जलालते शान और बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन की मक़्बूलियत और विलायत की वाज़ेह निशानियां हैं।

आप की शहादत

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का दौरे ख़िलाफत कुल 12 साल रहा, शुरू के छः बरसों में लोगों को आप से कोई शिकायत नहीं हुई, बल्कि इन बरसों में वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

से भी ज़्यादा लोगों में मक़्बूल व महबूब रहे, इस लिये कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मिज़ाज़ कुछ सख़्ती थी और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मिज़ाज में सख़्ती का वजूद न था, आप बहुत बा मुरव्वत थे, लेकिन आख़िरी छः बरसों में बाज़ गवर्नरों के सबब लोगों को आप से शिकायत हो गई, आप ने अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया, अभी अब्दुल्लाह के तक़र्रुर को सिर्फ़ दो साल गुज़रे थे कि मिस्र के लोगों को उन से शिकायतें पैदा हो गईं, उन्हों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दादरसी चाही, आप ने बज़रिये तहरीर अब्दुल्लाह को सख़्त तंबीह फरमाई और ताकीद की कि ख़बरदार! आइन्दा तुम्हारी शिकायत मेरे पास न पहुंचे, मगर अब्दुल्लाह ने आप के ख़त की कुछ परवाह न की बल्कि मिस्र के जो लोग दारुल ख़िलाफत मदीना शरीफ में शिकायत लेकर आए थे उन को क़त्ल कर दिया, इस से मिस्र की हालत और ज़्यादा ख़राब हो गई, यहां तक कि वहां से 700 अफ़राद मदीना शरीफ आए, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अब्दुल्लाह की ज़्यादतियां बयान कीं और दूसरे सहाबए किराम से भी शिकायतें कीं, तो बाज़ सहाबा ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सख़्त कलामी की और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने आप के पास कहला भेजा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा आप के पास आए हैं और अब्दुल्लाह बिन अबी सरह जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम है उस की माज़ूली और बर तरफ़ी का आप से मुतालेबा करते हैं, मगर आप उन की बातों पर तवज्जोह नहीं करते, आप को चाहिये कि ऐसे शख़्स को मुनासिब सज़ा दें।

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ लाए, उन्हों ने भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि यह लोग क़त्ले नाहक़ के सबब मिस्र के गवर्नर की माज़ूली चाहते हैं, आप इस मामले में इंसाफ कीजिये, अब्दुल्लाह बिन अबी सरह की जगह पर किसी दूसरे को गवर्नर मुक़र्रर कर दीजिये, आप ने मिस्र के लोगों से

फरमाया कि: إِخْتَارُوْا رَجُلًا وَلِّيْهِ عَلَيْكُمْ مَكَانَهُ यानी आप लोग खुद ही किसी को गवर्नर चुन लीजिये, मैं अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को माज़ूल करके आप लोगों के चुने हुए गवर्नर को मुक़र्रर कर दूंगा, उन लोगों ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साहिबज़ादे यानी मुहम्मद बिन अबू बकर को मुन्तख़ब किया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन लोगों के इन्तेख़बा को मन्ज़ूर फरमा लिया और हज़रत मुहम्मद बिन अबू बकर के लिये परवाना तक़र्रुरी अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के बारे में माज़ूली की तहरीर लिख दी। मुहम्मद बिन अबू बकर मिस्र से आए हुए 700 अफराद और कुछ अंसार व मुहाजिरीन के साथ मिस्र के लिये रवाना हुए।

मदीना मुनव्वरा से अभी यह क़ाफिला तीसरी ही मंज़िल पर था, उन को एक हबशी गुलाम सांडनी पर बैठा हुआ निहायत तेज़ी के साथ मिस्र की तरफ जाता हुआ नज़र आया, उस के रंग ढंग और उस की तेज़ रफ्तारी से मालूम होता था कि यह ग़ुलाम या तो अपने मालिक से भागा हुआ है, या तो किसी का क़ासिद है, क़ाफिला वालों ने उसे बढ़ कर पकड़ लिया और पूछा कि तू कौन है? तू कहीं से भागा है या तुझे किसी की तलाश है? उस ने कहा में अमीरुल मोमिनीन उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ग़ुलाम हूं, फिर कहा कि मैं मरवान का ग़ुलाम हूं। एक शख़्स ने उसे पहचान लिया और बताया कि यह अमीरुल मोमिनीन ही का ग़ुलाम है। हज़रत मुहम्मद बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उस से दरियाफ्त फरमाया कि तुम्हें कहा भेजा गया? उस ने कहा मुझे मिस्र के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के पास भेजा गया है, उस की तलाशी ली गई तो उस के खुश्क मश्कीज़ा से एक ख़त निकला जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ से आमिले मिस्र अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के नाम था। मुहम्मद बिन अबू बकर ने सब लोगों को जमा किया और उन के सामने ख़त खोला जिस में लिखा हुआ था कि

إِذَا أَتَاكَ مُحَمَّدٌ وَفُلَانٌ وَفُلَانٌ فَاحْتَلْ فِي قَتْلِهِمْ وَأَبْطِلْ كِتَابَهُ وَقِرَّ عَلَى عَمَلِكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ رَأْيِي यानी जब मुहम्मद बिन अबू बकर और फुलां फुलां तुम्हारे पास पहुंचें तो उन को किसी हीले से क़त्ल कर दो और ख़त को कलअ़दम क़रार दो और जब तक कि मेरा दूसरा हुक्म नामा न पहुंचे अपने उहदा पर बरक़रार रहो।

इस ख़त को पढ़ कर क़ाफ़िले वाले सब लोग दंग रह गए। मुहम्मद बिन अबू बकर ने इस ख़त पर साथ के चन्द ज़िम्मेदार लोगों की मोहरें लगवा दीं और उसे एक शख़्स की तहवील में दे दिया और सब लोग वहीं से मदीना मुनव्वरा वापस हो गए, जब वहां पहुंचे तो हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द और दीगर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन को इकट्ठा करके उन के सामने ख़त खोल कर सब को पढ़वाया और उस हबशी गुलाम का सारा वाक़िआ़ सुनाया, इस पर सब लोग बहुत सख़्त बरहम हुए और तमाम सहाबए किराम ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए अपने घरों को वापस हो गए। मगर मुहम्मद बिन अबू बकर अपने क़बीला बनू तमीम और मिस्रियों के साथ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के घर को घेर लिया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जब यह सूरते हाल देखी तो हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द, हज़रत अम्मार और दीगर अकाबिर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन के साथ अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मकान पर तशरीफ़ ले गए, उन के साथ वह ख़त, गुलाम और ऊंटनी भी थी, जो रास्ते में पकड़ी गई थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया क्या यह गुलाम आप का है? उन्हों ने फ़रमाया हां यह गुलाम मेरा है। फिर उन्हों ने पूछा क्या यह ऊंटनी भी आप ही की है? उन्हों ने जवाब में फ़रमाया हां, यह ऊंटनी भी हमारी है। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने वह ख़त पेश फ़रमाया और पूछा क्या यह ख़त आप ने लिखा है? उन्हों ने फ़रमाया नहीं और ख़ुदाए तआ़ला की

कसम खा के कहा कि न मैं ने इस ख़त को लिखा है, न किसी को लिखने का हुक्म दिया है और न मुझे इस के बारे में कोई इल्म है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नें फरमाया बड़े तअज्जुब की बात है कि ऊंटनी भी आप की, और ख़त पर मोहर भी आप की, जिसे आप का ही गुलाम यहां से लेकर जा रहा था, मगर आप को कोई इल्म नहीं। फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला की क़सम खा के फरमाया कि न मैं ने इस ख़त को लिखा है, न किसी से लिखवाया है, न मैं ने गुलाम को यह ख़त देकर मिस्र की तरफ रवाना किया है।

जब हज़रत उस्मानें ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़सम खा कर अपनी बराअत ज़ाहिर फरमाई तो हर शख़्स को यक़ीन हो गया कि इनका दामन इस जुर्म से पाक है। लोगों ने तहरीर को बग़ौर देखा, यह ख़्याल क़ाइम किया कि तहरीर मरवान की है और सारी शरारत उसी की ज़ात से है। मरवान उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन के मकान में मौजूद था, लोगों ने उन से कहा कि आप उसे हमारे हवाले कर दीजिये, आप ने इनकार कर दिया, इस लिये कि वह लोग ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए थे। मरवान को सज़ा देते और उसे क़त्ल कर देते। हालांकि तहरीर से यक़ीने कामिल नहीं होता इस लिये कि: الخط يشبه الخط यानी एक तहरीर दूसरी तहरीर के मुशाबह होती है, तो उन्हें मरवान की तहरीर होने का सिर्फ शुब्हा था और शुब्हा का फाइदा हमेशा मुल्ज़िम को पहुंचता है, इस लिये हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मरवान के उन के सपुर्द नहीं किया। अलावा इस के सपुर्द करने में बहुत बड़े फित्ने का अंदेशा भी था।

बहर हाल जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मरवान को लोगों के हवाले करने से इनकार कर दिया तो सहाबए किराम उन के यहां से उठ कर चले गए और आपस में यह कह रहे थे कि हज़रत उस्मान कभी झूठी क़सम नहीं खा सकते, मगर कुछ लोग

यह भी कह रहे थे कि वह शक से बरी नहीं हो सकते, जब तक मरवान को हमारे सपुर्द न कर दें और हम उस से तहक़ीक़ न कर लें और यह मालूम न हो जाए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के सहाबियों को क़त्ल करने का हुक्म क्यों दिया गया? अगर यह बात साबित हो गई कि ख़त उन्हों ने ही लिखा है तो हम उन्हें ख़िलाफ़त से अलग कर देंगे और अगर यह बात पाए सुबूत को पहुंची कि हज़रत उस्मान की तरफ से मरवान ने खत लिखा है तो हम उसे सज़ा देंगे।

मुहासरा में सख़्ती

जब अकाबिरे सहाबा अपने-अपने घर चले गए तो बलवाइयों ने मुहासरा में और सख़्ती पैदा कर दी, यहां तक कि उन पर पानी को बन्द कर दिया। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ऊपर से झांक कर मजमा से दरियाफ़्त फरमाया क्या तुम में अली हैं? लोगों ने कहा नहीं, फिर आप ने पूछा क्या तुम में सअ़द मौजूद हैं, जवाब दिया गया कि सअ़द भी नहीं मौजूद हैं, यह जवाब सुन आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे, उस के बाद फरमाया कोई शख़्स अली को यह ख़बर पहुंचा दे कि वह हमारे लिये पानी मुहैया कर दें, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को यह ख़बर पहुंच गई तो उन्हों ने आप के लिये पानी से भरे हुए तीन मश्कीज़े भिजवा दिये, मगर वह पानी बमुश्किले तमाम आप तक पहुंचा कि उस के सबब बनी हाशिम और बनी उमैया के कई गुलाम ज़ख़्मी हो गए। इस वाक़िआ़ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को इस बात का अंदाज़ा हुआ कि लोग हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को क़त्ल करना चाहते हैं तो आप ने अपने दोनों साहिब ज़ादगान यानी हज़रत इमामे हसन और इमामे हुसैन से फरमाया कि तुम दोनों अपनी-अपनी तल्वारें लेकर हज़रत उस्माने ग़नी के दरवाज़े पर जाओ, पहरे दारों की तरह होशियार खड़े रहो और ख़बरदार किसी भी बलवाई को अन्दर हरगिज़ न जाने

दे। इसी तरह हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर और दीगर अकाबिरे सहाबा ने अपने-अपने साहिब ज़ादगान को अमीरुल मोमिनीन के दरवाज़ा पर भेज दिया जो बराबर निहायत मुस्तइद्दी के साथ उन की हिफाज़त करते रहे।

(तारीखुल खुलफा)

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मोहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब बलवाइयों ने मुहासरा सख़्त कर दिया तो अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा चन्द मुहाजिरीन के साथ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौलत ख़ाना पर तशरीफ लाए और उन से कहने लगे कि यह जिस क़द्र बलवाई आप पर चढ़ आए हैं, यह वही हैं जो हमारी तलवारों से मुसलमान हुए हैं और अब भी डर के मारे कपड़े ही में पाख़ाना किये देते हैं, यह सब शेख़ियां और ऊंची-ऊंची उड़ानें इस सबब हैं कि कलिमा पढ़ते हैं और आप कलिमा की हुर्मत का पास व लिहाज़ करते हैं, अगर आप हुक्म दें तो हम इन को इन की हक़ीक़त मालूम करा दें और इनकी भूली हुई बात फिर इन को याद दिला दें। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, ख़ुदा की क़सम! ऐसी बात न कहो, सिर्फ मेरी जान की ख़ातिर इस्लाम में हरगिज़ फूट न पैदा करो।

फिर आप के सारे गुलाम जो एक फौज के बराबर थे, अस्बाब व हथियार से तैयार होकर आप के सामने आए और बड़ी बेचैनी व बेक़रारी के साथ आप से कहने लगे, हम वही तो हैं जिन की तलवारों की ताब खुरासान से अफ्रीक़ा तक कोई न ला सका, अगर आप इजाज़त फरमाएं तो हम मग़रूरों को उन के काम का तमाशा दिखा दें। गुफ्तगू और बात चीत से उन की दुरुस्तगी नहीं हो सकती। वह लोग जानते हैं कि कलिमा की हुर्मत के सबब हमें कोई नहीं छेड़ेगा इसी लिये वह राहे रास्त पर नहीं आते और आप की नेज़ दीगर सहाबए किराम की बातों को ज़र्रा बराबर अहमियत नहीं देते। लिहाज़ा आप हमें इन से लड़ने की इजाज़त दीजिये।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने गुलामों से फरमाया कि अगर तुम लोग मेरी राज़ा और खुश्नूदी चाहते हो और मेरी नेअ्मत का हक़ अदा करना चाहते हो तो हथियार खोल दो और अपनी-अपनी जगहों पर जा कर बैठो और सुन लो कि तुम लोगों में से जो गुलाम भी हथियार खोल दे उस को मैं ने आज़ाद कर दिया। وَاللّٰهِ لَأَنْ أُقْتَلَ قَبْلَ الدِّمَاءِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُقْتَلَ بَعْدَ الدِّمَاءِ यानी अल्लाह की क़सम, ख़ून्रेज़ी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़्यादा महबूब है इस से कि मैं ख़ून्रेज़ी के बाद क़त्ल किया जाऊं। मतलब यह है कि मेरी शहादत लिख दी गई है और अल्लाह के रसूल प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस की बशारत मुझ को दे दी है। अगर तुम लोगों ने बलवाइयों से जंग भी की तो भी मैं ज़रूर क़त्ल कर दिया जाउंगा। लिहाज़ा इनसे लड़ने में कोई फाइदा नहीं है। (तोहफए इस्ना अशरिया)

बल्वाइयों का आप को शहीद कर देना

मुहम्मद बिन अबू बकर ने जब देखा कि दरवाज़े पर ऐसा सख़्त पहेरा है कि अन्दर पहुंचना बहुत मुश्किल है तो उन्हों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर तीर चलाना शुरू किया, जिस में से एक तीर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लग गया, आप ज़ख़्मी हो गए, एक तीर मरवान को भी लगा। मुहम्मद बिन तल्हा भी ज़ख़्मी हो गए। और एक तीर से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के गुलाम क़म्बर भी ज़ख़्मी हो गए। मुहम्मद बिन अबू बकर ने जब इन लोगों को ज़ख़्मी देखा तो उन को ख़ौफ लाहिक़ हुआ कि बनी हाशिम अगर हज़रत हसन और दूसरे लोगों को ज़ख़्मी देख लेंगे तो वह बिगड़ जायेंगे इस तरह एक नई मुसीबत पैदा हो जाएगी। लिहाज़ा उन्हों ने दो आदमियों के हाथ पकड़ कर उनसे कहा कि अगर बनी हाशिम इस वक़्त आ गए और उन्हों ने हज़रत हसन को ज़ख़्मी हालत में देख लिया तो हम से उलझ पड़ेंगे और हमारा सारा मन्सूबा ख़ाक में मिल

जाएगा। लिहाज़ा हमारे साथ चलो, हम पड़ोस के मकान में पहुंच कर (हज़रत) उस्मान के घर में कूद पड़ेंगे और उन्हें क़त्ल कर देंगे। इस गुफ़्तगू के बाद मुहम्मद बिन अबू बकर अपने दो साथियों के हमराह एक अंसारी के मकान में घुस गए और वहां से छत फांद कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में पहुंच गए, इन लोगों के पहुंचने की दूसरे लोगों को ख़बर न हुई इस लिये कि जो लोग घर पर मौजूद थे वह छत पर थे, नीचे अमीरुल मोमिनीन के पास सिर्फ़ उन की अहलिया हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बैठी हुई थीं, सब से पहले मुहम्मद बिन अबू बकर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास पहुंच कर उन की दाढ़ी पकड़ ली तो अमीरुल मोमिनीन ने उन से फ़रमाया अगर तुम्हारे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तुझे मेरे साथ ऐसी गुस्ताख़ी करते हुए देखते तो वह क्या कहते, इस बात को सुन कर मुहम्मद बिन अबू बकर ने उन की दाढ़ी छोड़ दी लेकिन उसी दरमियान में उन के दो साथी आ गए जो अमीरुल मोमिनीन पर झपट पड़े और उन को निहायत बेदर्दी के साथ शहीद कर दिया। انا لله وانا اليه راجعون *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हम्ला हुआ और दुश्मन उन को शहीद कर रहे थे, उस वक़्त आप की अहलिया मोहतरमा हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बहुत चीख़ीं, चिल्लाईं, लेकिन बल्वाइयों ने चूंकि बड़ा शोरो-ग़ोग़ा कर रखा था इसी लिये आप की चीख़ व पुकार को किसी ने नहीं सुना। आप की शहादत के बाद वह कोठे पर गईं और लोगों को बताया कि अमीरुल मोमिनीन शहीद कर दिये गए। लोगों ने नीचे उतर कर देखा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पूरा जिस्म ख़ून आलूद था और उन की रूह परवाज़ कर चुकी थी।

बाज़ रिवायतों में है कि शहादत के वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कुरआन मजीद की तिलावत फरमा रहे थे जब तल्वार लगी तो आयते करीमाः فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللهُ पर चन्द ख़ून के क़त्रे पड़े और आप की बीवी साहिबा हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने तलवार के वार को जब अपने हाथों से रोका तो उन की उंगलियां कट गईं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की बरहमी

जब हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत सअ़द और दीगर सहाबा व अहले मदीना रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम अज्मईन को आप की शहादत की ख़बर मिली तो सब के होश उड़ गए, आप के मकान पर आए, आप को शहीद देख कर सब ने *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को इस सूरते हाल से इतना गुस्सा पैदा हुआ कि हज़रत इमाम हसन को एक तमांचा और हज़रत इमाम हुसैन ने सीने पर एक घूंसा मारा और फरमाया किः كَيْفَ قُتِلَ اَمِيْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْتُمْ عَلَى الْبَابِ यानी जबकि तुम दोनों दरवाज़ा पर मौजूद थे तो अमीरुल मोमिनीन कैसे शहीद कर दिये गए। फिर आप ने हज़रत तल्हा के साहिब ज़ादे मुहम्मद और हज़रत ज़ुबैर के साहिब ज़ाद अब्दुल्लाह को भी सख़्त सुस्त और बुरा-भला कहा।

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को मालूम हुआ कि क़ातिल दरवाज़े से नहीं दाख़िल हुए थे बल्कि पड़ोस के मकान से कूद कर आए थे तो आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की अहलिया मोहतरमा से दरियाफ्त फरमाया कि अमीरुल मोमिनीन को किस ने शहीद किया? उन्हों ने कहा कि मैं उन लोगों को तो नहीं जानती जिन्हों ने अमीरुल मोमिनीन को शहीद किया अल्बत्ता उन के साथ मुहम्मद बिन अबू बकर थे जिन्हों ने अमीरुल मोमिनीन की दाढ़ी पकड़ी थी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने मुहम्मद बिन अबू बकर को बुला कर क़त्ल के बारे में उन से दरियाफ्त फ़रमाया तो उन्हों

ने कहा हज़रत नाइला सच कहती हैं, बेशक मैं घर के अन्दर ज़रूर दाख़िल हुआ था और क़त्ल का इरादा भी किया था लेकिन जब उन्हों ने मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तज़्किरा किया तो मैं उन को छोड़ कर हट गया, मैं अपने फ़ेअ़्ल पर नादिम व शर्मिन्दा हूं और अल्लाह तआ़ला से तौबा व इस्तिग़फार करता हूं। खुदा की क़सम मैं ने उन को क़त्ल नहीं किया है। इब्ने असाकिर ने कनाना वग़ैरा से रिवायत किया है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जिस ने शहीद किया वह मिस्र का रहने वाला था, उस की आंखें नीली थीं, उस का नाम "हिमार" था।

(तारीखुल खुलफा)

बाज़ मोअर्रिख़ीन ने लिखा है कि आप के क़ातिल का नाम 'अस्वद' था। बहुत मुम्किन है कि मुहम्मद बिन अबू बकर के साथ दो बलवाई जो आप के मकान में कूदे थे उस में से एक का नाम 'हिमार' और दूसरे का नाम 'अस्वद' रहा हो। والله تعالیٰ اعلم

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु 35 हिजरी माहे ज़िल-हिज्जा के अय्यामे तश्रीक़ में शहीद हुए जबकि आप की 82 साल की थी। आप के जनाज़े की नमाज़ हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने पढ़ाई और हशे कौकब के मक़ाम पर जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किये गए।

दुर्रे मन्सूर क़ुरआं की सल्क भी
ज़ौज दो नूरे इफ़्फ़त पे लाखों सलाम
यानी उस्मान साहिबे क़मीसे हुदा
हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

وصلی اللہ تعالیٰ علی النبی الکریم سیدنا محمد وعلی الہ واصحابہ اجمعین۔

व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लन् नबिय्यिल् करीम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव्
व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन

☆☆☆

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुरतज़ा

कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल् करीम

الحمدلله رب العالمين والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلى اله واصحابه وازواجه وذرياته واهل بيته اجمعين اما بعد، فقد قال الله تعالى فى القرآن المجيد والفرقان الحميد اعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا (پ:۲۶،ع:۱۲)صَدَقَ الله مولينا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم الامين۔ عليه وعلىٰ اله افضل الصلوات واكمل التسليم۔

एक बार हम सब मिल कर सारी काइनात के आक़ा व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में बुलंद आवाज़ से झूम-झूम कर दुरूद शरीफ का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुंव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

हज़रात! दुनिया में बेशुमार इंसान पैदा हुए जिन में से अक्सर ऐसे हुए कि उन में कोई कमाल व ख़ूबी नहीं और बाज़ लोग ऐसे हुए जो सिर्फ चन्द ख़ूबियां रखते थे मगर हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम की वह ज़ाते गरामी है जो बहुत से कमाल और ख़ूबियों की जामेअ़ है कि आप शेरे ख़ुदा भी हैं और दामादे मुस्तफा भी, हैदरे कर्रार भी और साहिबे ज़ुल फिक़ार भी। हज़रत फातिमा ज़हरा के शौहरे नामदार भी और हसनैन करीमैन के वालिदे बुज़ुर्गवार भी। साहिबे सख़ावत भी और साहिबे शुजाअ़त भी। इबादत व रियाज़त वाले भी और फसाहत व बलाग़त वाले भी। इल्म वाले भी और हिल्म वाले भी। फातिहे ख़ैबर भी और मैदाने ख़िताबत के शहसवार भी। ग़रज़े कि

आप बहुत से कमाल व ख़ूबियों के जामेअ् हैं और हर एक में मुम्ताज़ व यगानए रोज़गार हैं। इसी लिये दुनिया आप को मज़हरुल अ़जाइब वल-ग़राइब से याद करती है और क़ियामत तक इसी तरह याद करती रहेगी।

मुरतज़ा शेरे हक़ अश्जउल अश्जईन
बाबे फ़ज़्लो-विलायत पे लाखों सलाम
शेरे शमशीरे ज़न् शाहे ख़ैबर शिकन
परतवे दस्ते क़ुद्रत पे लाखों सलाम

नाम व नसब

आप का नामे नामी "अली बिन अबी तालिब" और कुन्नियत "अबुल हसन व अबू तुराब" है। आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब के साहिब ज़ादे हैं यानी हुज़ूर के चचा ज़ाद भाई हैं। आप की वालिदा मोहतरमा का इस्मे गरामी फातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम है। और यह पहली हाशमी ख़ातून हैं जिन्हों ने इस्लाम क़बूल किया और हिज्रत फरमाई।

(तारीख़ुल ख़ुलफा:113)

आप का सिलसिलए नसब इस तरह हैः अली बिन अबू तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ। आप 30 आम्मुल फील में पैदा हुए और ऐलाने नुबुव्वत से पहले ही मौलाए कुल जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की परवरिश में आए कि जब क़ुरैश क़हत में मुब्तला हुए थे तो हुज़ूर ने अबू तालिब पर अ़याल का बोझ हल्का करने के लिये हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम को ले लिया था इस तरह हुज़ूर के साये में आप ने परवरिश पाई और उन्हीं की गोद में होश संभाला, आंख खुलते ही हुज़ूर का जमाले जहां आंरा देखा, उन्हीं की बातें सुनीं और उन्हीं की आ़दतें सीखीं, इस लिये बुतों की नजासत से आप का दामन कभी आलूदा न हुआ। यानी आप ने कभी बुत परस्ती न की

और इसी लिये कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम आप का लक़ब हुआ। (तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया वग़ैरा)

आप का क़बूले इस्लाम

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम नौ उम्र लोगों में सब से पहले इस्लाम से मुशर्रफ हुए। तारीख़ुल ख़ुलफा में है कि जब आप ईमान लाए उस वक़्त आप की उम्रे मुबारक दस साल थी बल्कि बाज़ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ नौ साल और बाज़ कहते हैं कि आठ साल और कुछ लोग इस से भी कम बताते हैं। और अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तन्ज़ीहुल मकानतुल हैदरिया में तहरीर फरमाते हैं कि बवक़्त इस्लाम आप की उम्र आठ दस साल थी।

आप के इस्लाम क़बूल करने की तफ्सील मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने इस तरह बयान किया है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, जब यह लोग नमाज़ से फारिग़ हो गए तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा कि आप लोग यह क्या कर रहे थे? हुज़ूर ने फरमाया कि यह अल्लाह तआला का ऐसा दीन है कि जिस को उस ने अपने लिये मुन्तख़ब किया है और उसी की तब्लीग़ व इशाअ़त के लिये अपने रसूल को भेजा है लिहाज़ा मैं तुमको भी ऐसे माबूद की तरफ बुलाता हूं जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। और मैं तुम को उसी की इबादत का हुक्म देता हूं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने कहा कि जब तक मैं अपने बाप अबू तालिब से दरियाफ्त न कर लूं इस के बारे में कोई फैसला नहीं कर सकता। चूंकि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को राज़ फाश होना मनज़ूर न था इस लिये आप ने फरमाया ऐ अली! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते हो तो अभी इस मामले

को पोशीदा रखो किसी पर ज़ाहिर न करो।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अगर्चे उस वक़्त रात में ईमान नहीं लाए मगर अल्लाह तआ़ला ने आप के क़ल्ब में ईमान को रासिख़ कर दिया था, दूसरे रोज़ सुबह होते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप की पेश की हुई सारी बातों को क़बूल कर लिया और इस्लाम ले आए।

आप की हिज्रत

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जब ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ मक्का मुअ़ज़्ज़मा से मदीना तैयिबा की हिज्रत का इरादा फरमाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुला कर फरमाया कि मुझे ख़ुदाए तआ़ला की तरफ से हिज्रत का हुक्म हो चुका है लिहाज़ा मैं आज मदीना रवाना हो जाउंगा तुम मेरे बिस्तर पर मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर सो रहो, तुम्हें कोई तक्लीफ न होगी, क़ुरैश की सारी अमानतें जो मेरे पास रखी हुई हैं उनके मालिकों को देकर तुम भी मदीना चले आना।

यह मौक़ा बड़ा ही ख़ौफनाक और निहायत ख़तरे का था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मालूम था कि कुफ्फ़ारे क़ुरैश सोने की हालत में हुज़ूर के क़त्ल का इरादा कर चुके हैं, इसी लिये ख़ुदाए तआ़ला ने आप को अपने बिस्तर पर सोने से मना फरमा दिया है। आज हुज़ूर का बिस्तर क़त्ल गाह है लेकिन अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व ग़ुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के इस फरमान से कि "तुम्हें कोई तक्लीफ न होगी, क़ुरैश की अमानतें देकर तुम भी मदीने चले आना" हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को पूरा यक़ीन था कि दुश्मन मुझे कोई तक्लीफ नहीं पहुंचा सकेंगे, मैं ज़िंदा रहूंगा और मदीना ज़रूर पहुंचूंगा। लिहाज़ा सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर जो बज़ाहिर आज कांटों का बिछौना था वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु के लिये फूलों की सेज बन गया, इस लिये कि उन का अक़ीदा था कि सूरज पूरब के बजाए पच्छिम से निकल सकता है मगर हुज़ूर के फरमान के ख़िलाफ नहीं हो सकता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि मैं रात भर आराम से सोया, सुबह उठ कर लोगों की अमानतें उन के मालिकों को सौंपना शुरू किया और किसी से नहीं छुपा। इसी तरह मक्का में तीन दिन रहा फिर अमानतों के अदा करने के बाद मैं भी मदीना की तरफ चल पड़ा। रास्ते में भी किसी ने मुझ से कोई तआ़रुज़ न किया यहां तक कि मैं कुबा में पहुंचा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के मकान में तशरीफ फरमा थे, मैं भी वहीं ठहर गया।

एक बार फिर हम और आप सब मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ की डालियां पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातुंव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

उख़ुव्वते रसूल

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बहुत सी खुसूसियात में से एक खुसूसियत यह भी है कि आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दामाद और चचाज़ाद भाई होने के साथ "अ़क़्दे मुवाख़ात" में भी आप के भाई हैं जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जब मदीना तैयिबा में उख़ुव्वत यानी भाई चारा क़ाइम किया कि दो-दो सहाबा को भाई-भाई बनाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रोते हुए

बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप ने सारे सहाबा के दरमियान उख़ुव्वत क़ाइम की। एक सहाबी को दूसरे सहाबी का भाई बनाया मगर मुझ को किसी का भाई न बनाया, मैं यूं ही रह गया, तो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया: اَنْتَ اَخِیْ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ यानी तुम दुनिया व आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो। (मिश्कात शरीफ़:564)

आप की शुजाअ़त

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शुजाअ़त और बहादुरी शोहरए आफाक़ (मशहूरे ज़माना) है, अरब व अजम में आप की कुव्वते बाज़ू के सिक्के बैठे हुए हैं। आप के रुअ़ब व दबदबे से आज भी बड़े-बड़े पहलवानों के दिल कांप जाते हैं। जंगे तबूक के मौक़े पर सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने आप को मदीना तैयिबा पर अपना नाइब मुक़र्रर फरमा दिया था इस लिये उस में हाज़िर न हो सके बाक़ी तमाम ग़ज़वात व जिहाद में शरीक होकर बड़ी जांबाज़ी के साथ कुफ्फार का मुक़ाबला किया और बड़े-बड़े बहादुरों को अपनी तल्वार से मौत के घाट उतार दिया।

जंगे बद्र में जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अस्वद बिन अल-असद मख़्ज़ूमी को काट कर जहन्नम में पहुंचाया तो उसके बाद काफिरों के लश्कर का सरदार उत्बा बिन रबीआ़ अपने भाई शैबा बिन रबीआ़ और अपने बेटे वलीद बिन उत्बा को साथ लेकर मैदान में निकला और चिल्ला कर कहा कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) अशराफे कुरैश में से हमारे जोड़ के आदमी भेजिये। हुज़ूर ने यह सुन कर फरमाया ऐ बनी हाशिम! उठो और हक़ की हिमायत में लड़ो जिस के साथ अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नबी को भेजा है। हुज़ूर के इस फरमान को सुन कर हज़रत हम्ज़ा, हज़रत अली और हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम दुश्मन की तरफ बढ़े, लश्कर का सरदार उत्बा, हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुक़ाबिल

हुआ और ज़िल्लत के साथ मारा गया। वलीद जिसे अपनी बहादुरी पर बड़ा नाज़ था वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़ाबले के लिये मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ आगे बढ़ा और डींगें मारता हुआ आप पर हम्ला किया मगर शेरे ख़ुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने थोड़ी ही देर में उसे मार गिराया और ज़ुलफ़िक़ारे हैदरी ने उस के घमंड को ख़ाक व ख़ून में मिला दिया। इस के बाद आप ने देखा कि उत्बा के भाई शैबा ने हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़ख़्मी कर दिया है तो आप ने झपट कर उस पर हम्ला किया और उसे भी जहन्नम में पहुंचा दिया।

और जंगे उहुद में जबकि मुसलमान आगे और पीछे से कुफ़्फ़ार के बीच में आ गए जिस के सबब बहुत से लोग शहीद हुए तो उस वक़्त सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम भी काफ़िरों के घेरे में आ गए और उन्हों ने ऐलान कर दिया कि ऐ मुसलमानों! तुम्हारे नबी क़त्ल कर दिये गए, इस ऐलान को सुन कर मुसलमान बहुत परेशान हो गए यहां तक कि इधर उधर तितर बितर हो गए बल्कि उन में से बहुत से लोग भाग भी गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब काफ़िरों ने मुसलमानों को आगे पीछे से घेर लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम मेरी निगाह से ओझल हो गए तो पहले मैं ने हुज़ूर को ज़िन्दों में तलाश किया मगर नहीं पाया फिर शहीदों में तलाश किया वहां भी नहीं पाया तो मैं ने अपने दिल में कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि हुज़ूर मैदाने जंग से भाग जाएं, लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने रसूले पाक को आसमान पर उठा लिया। इस लिये अब बेहतर यही है कि मैं भी तल्वार लेकर काफ़िरों में घुस जाऊं यहां तक कि लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊं। फ़रमाते हैं कि मैं ने तल्वार लेकर ऐसा सख़्त हम्ला किया कि कुफ़्फ़ार बीच में से हटते गए और मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम को देख लिया तो मुझे बेइन्तिहा ख़ुशी हुई और मैं ने

यक़ीन किया कि अल्लाह तआला ने फिरिश्तों के ज़रिये अपने हबीब की हिफ़ाज़त फरमाई। मैं दौड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम के पास जा कर खड़ा हुआ, कुफ्फार गिरोह दर गिरोह हुज़ूर पर हम्ला करने के लिये आने लगे, आप ने फरमाया अली इन को रोको, तो मैं ने तन्हा उन सब का मुक़ाबला किया और उन के मुंह फेर दिये और कई एक का क़त्ल भी किया। उस के बाद फिर एक गिरोह और हुज़ूर पर हम्ला करने की नियत से बढ़ा आप ने फिर मेरी तरफ इशारा फरमाया तो मैं ने फिर उस गिरोह का अकेले मुक़ाबला किया। उस के बाद हज़रत जिब्रील ने आकर हुज़ूर से मेरी बहादुरी और मदद की तारीफ की तो आप ने फरमायाः إِنَّهُ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُ यानी बेशक अली मुझ से है और मैं अली से हूं। मतलब यह है कि अली को मुझ से कमाले कुर्ब हासिल है। नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इस फरमान को सुन कर हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया: وَأَنَا مِنْكُمَا यानी मैं तुम दोनों से हूं।

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम को न पा कर हज़रत अली का शहीद हो जाने की नियत से काफिरों के जत्थे में घुस जाना और हुज़ूर पर हम्ला करने वाले गिरोह दर गिरोह से अकेले मुक़ाबला करना आप की बेमिसाल बहादुरी और इन्तिहाई दिलेरी की ख़बर देता है साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम से आप के इश्क़ और सच्ची मुहब्बत का भी पता चलता है। رضی اللہ تعالیٰ عنہ وارضاہ عنا *रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्ना।*

हज़रत कअ़ब बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि जंगे ख़न्दक़ के रोज़ अम्र बिन अब्दे वुद (जो एक हज़ार सवार के बराबर माना जाता था) एक झण्डा लिये हुए निकला ताकि वह मैदाने जंग को देखे, जब वह और उस के साथ सवार एक मक़ाम पर खड़े हुए तो उस से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने फरमाया कि ऐ अम्र! तू क़ुरैश से अल्लाह की क़सम

देकर कहा करता था कि जब कभी मुझ को कोई शख़्स दो अच्छे कामों की तरफ बुलाता है तो मैं उस में एक को ज़रूर इख़्तियार करता हूं, उस ने कहा हां मैं ने ऐसा कहा था और अब भी कहता हूं, आप ने फरमाया कि मैं तुझे अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) और इस्लाम की तरफ बुलाता हूं, अम्र ने कहा मुझे इन में से किसी की हाजत नहीं, हज़रत अली ने फरमाया तो अब मैं तुझ को मुक़ाबले की दावत देता हूं और इस्लाम की तरफ बुलाता हूं। अम्र ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! किस लिये मुक़ाबले की दावत देता है, खुदा की क़सम मैं तुझ को क़त्ल करना पसंद नहीं करता। हज़रत अली ने फरमाया लेकिन खुदा की क़सम मैं तुझ को क़त्ल करना पसंद करता हूं, यह सुन कर अम्र का ख़ून गर्म हो गया और हज़रत अली की तरफ मुतवज्जह हुआ, दोनों मैदान में आ गए और थोड़ी देर मुक़ाबला होने के बाद शेर खुदा ने उसे मौत के घाट उतार कर जहन्नम में पहुंचा दिया।

और मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं कि अम्र बिन अब्दे वुद मैदान में इस तरह पर निकला कि लोहे की ज़िरहें पहने हुए था और उस ने बुलंद आवाज़ से कहा, है कोई जो मेरे मुक़ाबले में आए, इस आवाज़ को सुन कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु खड़े हुए और मुक़ाबला के लिये हुज़ूर से इजाज़त तलब की, आप ने फरमाया बैठ जाओ, यह अम्र बिन अब्दे वुद है। दूसरी बार अम्र ने फिर आवाज़ दी कि मेरे मुक़ाबले के लिये कौन आता है? और मुसलमानों को मलामत करनी शुरू की, कहने लगा तुम्हारी वह जन्नत कहा हैं जिस के बारे में तुम दावा करते हो कि जो भी तुम में से मारा जाता है वह सीधे उस में दाख़िल हो जाता है, मेरे मुक़ाबले के लिये किसी को क्यों नहीं खड़ा करते हो, दोबारा फिर हज़रत अली ने खड़े हो कर हुज़ूर से इजाज़त तलब की मगर आप ने फिर वही फरमाया बैठ जाओ। तीसरी बार अम्र ने फिर वही आवाज़ दी और कुछ अश्आ़र भी पढ़े। रावी का बयान है

कि तीसरी बार हज़रत अली ने खड़े हो कर हुज़ूर से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं इस के मुक़ाबला के लिये निकलूंगा आप ने फरमाया कि यह अम्र है। हज़रत अली ने अर्ज़ किया चाहे अम्र ही क्यों न हो। तीसरी बार हुज़ूर ने आप को इजाज़त दे दी, हज़रत अली चल कर उसके पास पहुंचे और चन्द अश्आर पढ़े जिनका मतलब यह है:

ऐ अम्र! जल्दी न कर, जो आजिज़ नहीं है वह तेरे पास तेरी आवाज़ का जवाब देने वाला सच्ची नियत और बसीरत के साथ आ गया और हर कामियाब होने वाले को सच्चाई ही निजात देती है, मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं तेरे जनाज़े पर ऐसी ज़र्बे वसीअ् से नौहा करने वालियों को क़ाइम करूंगा कि जिस का ज़िक्र लोगों में बाक़ी रहेगा।

अम्र ने पूछा कि तू कौन है? आप ने फरमाया कि मैं अली हूं, उस ने कहा अब्दे मनाफ के बेटे हो? आप ने फरमाया कि मैं अली बिन अबी तालिब हूं, उस ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! तेरे चचाओं में से ऐसे तो भी हैं जो उम्र में तुझ से ज़्यादा हैं, मैं तेरा ख़ून बहाने को बुरा समझता हूं। हज़रत अली ने फरमाया मगर खुदा की क़सम मैं तेरा ख़ून बहाने को क़तअ़न बुरा नहीं समझता, यह सुन कर वह गुस्से से तिलमिला उठा, घोड़े से उतर कर आग के शोला जैसी तलवार सौंत ली, हज़रत अली की तरफ लप्का और ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि आपने ढाल पर रोका तो तल्वार उसे फाड़ कर घुस गई यहां तक कि आप के सर पर लगी और ज़ख़्मी कर दिया, अब शेरे खुदा ने संभल कर उसके कंधे की रग पर ऐसी तल्वार मारी कि वह गिर पड़ा और गुबार उड़ा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने नारए तक्बीर सुना जिस से मालूम हुआ कि हज़रत अली ने उसे जहन्नम में पहुंचा दिया। शेरे खुदा की इस बहादुरी और शुजाअ़त को देख कर मैदाने जंग का एक-एक ज़र्रा ज़ुबाने हाल से पुकार उठा:

शाहे मरदां शेरे यज़्दां कुव्वते परवरदिगार

لَا فَتٰى اِلَّا عَلِىْ لَا سَيْفَ اِلَّا ذُوالْفِقَار

यानी हज़रत अली बहादुरों के बादशाह, खुदा के शेर और कुव्वते परवरदिगार हैं। उन के सिवा कोई जवान नहीं और जुलफिक़ार के अलावा कोई तल्वार नहीं।

एक बार हम सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में दुरूद शरीफ का नज़्राना पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیك یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

इसी तरह जंगे ख़ैबर के मौक़ा पर भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने शुजाअ़त और बहादुरी के वह जौहर दिखाए हैं जिस का ज़िक्र हमेशा बाक़ी रहेगा और लोगों के दिलों में जोश व वलवला पैदा करता रहेगा।

ख़ैबर का वह क़िला जो मुरह्हब का पाए तख़्त था उस का फत्ह करना आसान न था, उस क़िला को सर करने के लिये सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने एक दिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को झण्डा इनायत फरमाया और दूसरे दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अता फरमाया लेकिन फातिहे ख़ैबर होना तो किसी और के लिये मुक़द्दर हो चुका था इस लिये इन हज़रात से वह फत्ह न हुआ, जब इस मुहिम में बहुत ज़्यादा देर हुई तो एक दिन सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं यह झण्डा कल एक ऐसे शख़्स को दूंगा जिस के हाथ खुदाए तआ़ला फत्ह अता फरमाएगा, वह शख़्स अल्लाह व रसूल को दोस्त रखता है और अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) उस को दोस्त रखते हैं।

हुज़ूर की इस खुश्ख़बरी को सुन कर सहाबए किराम ने वह रात बड़ी बेक़रारी में काटी, इस लिये कि हर सहाबी की यह तमन्ना थी ऐ

काश! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम कल सुब्ह हमें झण्डा इनायत फरमा दें तो इस बात की सनद हो जाती कि हम अल्लाह व रसूल को महबूब रखते हैं और अल्लाह व रसूल हमें चाहते हैं और इस नेअ्मते उज़्मा व सआ़दते कुब्रा (आला नेअ्मत व बड़ी खुश्ख़बरी) से भी सरफराज़ हो जाते कि फातिहे ख़ैबर बन जाते इस लिये कि वह सहाबी थे, वहाबी नहीं थे, उन का यह अकी़दा हरगिज़ नहीं था कि कल क्या होने वाला है, हुज़ूर को उस की क्या ख़बर? बल्कि उन का अकी़दा यह था कि अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व गुयूब जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने जो कुछ फरमाया है वह कल होकर रहेगा, उस में ज़र्रा बराबर फर्क़ नहीं हो सकता।

जब सुब्ह हुई तो तमाम सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने उम्मीदें लिये हुए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अदब के साथ देखने लगे कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम आज किस को सरफराज़ फरमाते हैं। सब की अरमान भरी निगाहें हुज़ूर के लबे मुबाकर की जुंबिश पर कुर्बान हो रही थीं कि सरकार ने फरमायाः اَیْنَ عَلِیُّ بنْ اَبِی طَالب यानी अली बिन अबी तालिब कहां हैं? लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह आशोबे चश्म में मुब्तला हैं, उन की आंखें दुखती हैं, आप ने फरमाया कोई जाकर उन को बुला लाए, जब हज़रत रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अली लाए गए तो रहमते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने उन की आंखों पर लुआ़बे दहेन लगा दिया तो वह बिल्कुल ठीक हो गईं। हदीस शरीफ के अस्ल अल्फाज़ यह हैं: فَبَصَقَ رسول اللّٰه صلی اللّٰہ تعالی علیه وسلم فِیْ عَیْنَیْهِ فَبَرَأَ और उन की आंखें इस तरह अच्छी हो गईं गोया दुखती ही न थीं। फिर हुज़ूर ने उन को झण्डा इनायत फरमाया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूं जब तक कि वह हमारी तरह मुसलमान न हो जाएं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि

व सल्लम ने फरमाया कि नर्मी से काम लो, पहले उन्हें इस्लाम की तरफ बुलाओ और फिर बतलाओ कि इस्लाम क़बूल करने के बाद उन पर क्या हुक़ूक़ हैं, ख़ुदा की क़सम अगर तुम्हारी कोशिश से एक शख़्स को भी हिदायत मिल गई तो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से भी बेहतर होगा। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात:564)

इस्लाम क़बूल करने या सुलह करने के बजाए हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मुक़ाबला करने के लिये मुरह्हब यह रज्ज़ (जंगी अश्आ़र) पढ़ता हुआ क़िला से बाहर निकला:

قَدْ عَلِمَتْ خَيْبَرُ أَنِّي مُرَحَّبُ

شَاكِي السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبُ

यानी बेशक ख़ैबर जानता है कि मैं मुरह्हब हूं, हथियारों से लैस बहादुर और तजुर्बेकार हूं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस के जवाब में रज्ज़ का यह शअ़्र पढ़ा:

أَنَا الَّذِي سَمَّتْنِي أُمِّي حَيْدَرَهْ

كَلَيْثِ غَابَاتٍ كَرِيْهِ الْمَنْظَرَهْ

यानी मैं वह शख़्स हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम "शेर" रखा है, मेरी सूरत झाड़ियों में रहने वाले शेर की तरह ख़ौफनाक है।

मुरह्हब बड़े घमंड से आया था लेकिन शेरे ख़ुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस ज़ोर से तल्वार मारी कि उस के सर को काटती हुई दांतों तक पहुंच गई और वह ज़मीन पर ढेर हो गया। उस के बाद आप ने फत्ह का ऐलान फरमा दिया।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है उस रोज़ आप ने ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पीठ पर उठा लिया था और उस पर मुसलमानों ने चढ़ कर क़िला को फतह कर लिया था, आप ने वह दरवाज़ा फेंक दिया, जब लोगों ने उसे घसीट कर दूसरी जगह डालना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उसे उठा न सके।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:114)

और इब्ने असाकिर ने अबू राफ़ेअ़ से रिवायत की है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जंगे ख़ैबर में किला का फाटक हाथ में लेकर उस को ढाल बना लिया, वह फाटक बराबर उन के हाथ में रहा और वह लड़ते रहे यहां तक कि अल्लाह तआ़ला ने उन के हाथों ख़ैबर को फत्ह फरमाया। उस के बाद फाटक आप ने फेंक दिया। लड़ाई से फारिग़ होने के बाद हमारे साथ कई आदमियों ने मिल कर उसे पलटना चाहा मगर वह नहीं पलटा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:114)

एक बार आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

صلى الله على النبي الامي واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप का हुलिया

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जिस्म के फर्बा थे। अक्सर ख़ोद (लोहे की टोपी) इस्तेमाल करने की वजह से सर के बाल उड़े हुए थे। आप निहायत कवी और मियाना क़द माइल ब-पस्ती थे। आप का पेट दीगर अअ़्ज़ा के ऐतबार से किसी क़दर भारी था, मूंढों के दरमियान का गोश्त भरा हुआ था। पेट से नीचे का जिस्म भारी था। रंग गंदुमी था। तमाम जिस्म पर लम्बे-लम्बे बाल आप की रीश मुबारक घनी और दराज़ थी।

मश्हूर है कि एक यहूदी की दाढ़ी बहुत मुख़्तसर थी, ठोढ़ी पर सिर्फ चन्द गिन्ती के बाल थे। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की दाढ़ी मुबारक बड़ी घनी और लम्बी थी, एक दिन वह यहूदी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कहने लगा ऐ अली! तुम्हारा यह दावा है कि कुरआन में सारे उलूम हैं और तुम बाबे मदीनतुल इल्म हो तो बताओ कुरआन में तुम्हारी घनी दाढ़ी और मेरी मुख़्तसर दाढ़ी का भी ज़िक्र है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया हां, सूरए अअ़्राफ में है: وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا यानी

जो अच्छी ज़मीन है उस की हरियाली अल्लाह के हुक्म से ख़ूब निकलती है और जो ख़राब है उस में से नहीं निकलती मगर थोड़ी बमुश्किल। (पारा:8 रुकूअ़:14)

तो ऐ यहूदी! वह अच्छी ज़मीन हमारी ठोढ़ी है और ख़राब ज़मीन तेरी ठोढ़ी।

मालूम हुआ कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इल्म बहुत वसीअ़ था कि अपनी घनी दाढ़ी और यहूदी की मुख़्तसर दाढ़ी का ज़िक्र आप ने कुरआन मजीद में साबित कर दिखाया और यह भी साबित हुआ कि सारे उलूम का ख़ज़ाना है। मगर लोगों की अक़्लें उस के समझने से क़ासिर हैं। एक शाइर ने बहुत ख़ूब कहा है:

جَمِيْعُ الْعِلْمِ فِى الْقُرْاٰنِ لٰكِنْ
تَقَاصَرَ عَنْهُ اَفْهَامُ الرِّجَالِ

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और अहादीसे करीमा

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम की फज़ीलत में बहुत सी हदीसें वारिद हैं बल्कि इमाम अहमद रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं कि जितनी हदीसें आप की फज़ीलत में हैं किसी और सहाबी की फज़ीलत में इतनी हदीसें नहीं हैं। बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत सअ़द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि ग़ज़्वए तबूक के मौक़ा पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मदीना तैयिबा में रहने का हुक्म फरमाया और अपने साथ नहीं लिया तो उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप मुझे यहां औरतों और बच्चों पर अपना ख़लीफा बना कर छोड़े जाते हैं तो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اَمَا تَرْضٰى اَنْ تَكُوْنَ مِنِّىْ بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسٰى यानी क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस तरह छोड़े जाता हूं कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारून

अलैहिस्सलाम को छोड़ गए। अल्बत्ता फर्क सिर्फ इतना है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।

मतलब यह है कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर पर जाने के वक़्त चालीस दिन के लिये अपने भाई हज़रत हारून अलैहिस् सलाम को बनी इस्राईल पर अपना ख़लीफा बनाया था, इस तरह जंगे तबूक की रवानगी के वक़्त में तुम को अपना ख़लीफा और नाइब बना कर जा रहा हूं लिहाज़ा जो मर्तबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के नज़्दीक हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का था वही मर्तबा हमारी बारगाह में तुम्हारा है। इस लिये ऐ अली! तुम्हें खुश होना चाहिये। तो ऐसा ही हुआ कि इस खुशख़बरी से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तसल्ली हो गई।

राफज़ी इस हदीस शरीफ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ख़लीफए बिला फस्ल होने का इस्तिदलाल करते हैं जो सहीह नहीं, इस लिये कि हुज़ूर ने उन को ख़लीफए मुत्लक़ नहीं बनाया था बल्कि उनकी ख़िलाफत महेज़ ख़ानगी उमूर की निगरानी और अहलो-अयाल की देख-भाल के लिये थी। इसी सबब से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को मदीना तैयिबा का सूबादार, हज़रत सिबाअ् अरफता को मदीना मुनव्वरा का कोतवाल और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को अपनी मस्जिद का इमाम बनाया था।

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम)

मज़ीद जवाबात के लिये तोहफए इस्ना अशरिया का मुतालिआ करें।

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अली से मुनाफिक़ मुहब्बत नहीं करता और मोमिन अली से बुग़ज़ व अदावत नहीं रखता। (तिर्मिज़ी)

सुब्हानल्ला! हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क्या ही बुलंद व बाला शान है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप से मुहब्बत न करने को मुनाफिक होने की अलामत ठहराय और आप से बुग़्ज़ व अदावत रखने को मोमिन न होने का मेअ्यार करार दिया यानी जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत न करे वह मुनाफिक है और जो उन से बुग़्ज़ व अदावत रखे वह मोमिन नहीं।

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः مَنْ سَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ سَبَّنِيْ यानी जिस ने अली को बुरा भला कहा तो तहकीक उस ने मुझ को बुरा भला कहा। (मिश्कात)

यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इतना कुर्ब और नज़्दीकी हासिल है कि जिस ने उन की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी की तो गोया कि उस ने हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी की। खुलासा यह है कि उन की तौहीन करना हुज़ूर की तौहीन करना है। العياذ بالله تعالى *अलइयाज़ु बिल्लाहि तआला*

और हज़रत अबुत तुफैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक खुले हुए मैदान में बहुत से लोगों को जमा करके फरमाया कि मैं अल्लाह की क़सम देकर तुम लोगों से पूछता हूं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यौमे ग़दीर खुम में मेरे मुतअल्लिक क्या इरशाद फरमाया था? तो उस मज्मअ् से तीस आदमी खड़े हुए और उन लोगों ने गवाही दी कि हुज़ूर ने उस रोज़ फरमाया थाः مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ اَللّٰهُمَّ وَالِ مَنْ وَالَاهُ وَعَادِ مَنْ عَادَاهُ यानी मैं जिस का मौला हूं अली भी उस के मौला हैं। या इलाहल आलमीन! जो शख़्स अली से मुहब्बत रखे तू भी उस से मुहब्बत रख और जो शख़्स अली से अदावत रखे तू भी उस से अदावत रख। (तारीखुल खुलफा)

और तब्रानी व बज़्ज़ार हज़रत जाबिर से और तिर्मिज़ी व हाकिम हज़रत अली से[1] रिवायत करते हैं कि रसूले अक्रम ने फरमायाः اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا यानी मैं इल्म का शहर हूं और अली उस के दरवाज़ा हैं। अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यह हदीस हसन है और जिन्हों ने इस को मौज़ूअ् कहा है उन्हों ने ग़लती की है। (तारीखुल खुलफाः116)

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः مَنْ اَحَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ اَحَبَّنِىْ यानी जिस ने अली से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की وَمَنْ اَحَبَّنِىْ فَقَدْ اَحَبَّ اللّٰه और जिस ने मुझ से मुहब्बत की उस ने अल्लाह तआला से मुहब्बत की وَمَنْ اَبْغَضَ عَلِيًّا فَقَدْ اَبْغَضَنِىْ وَمَنْ اَبْغَضَنِىْ فَقَدْ اَبْغَضَ اللّٰه यानी जिस ने अली से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की और जिस ने मुझ से दुश्मनी की उस ने अल्लाह से दुश्मनी की।

(तारीखुल खुलफा, बहवाला तब्रानी)

और बज़्ज़ार, अबू यअ्ला और हाकिम हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे बुलाया और फरमाया कि तुम्हारी हालत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसी है कि यहूदियों ने उस ने यहां तक दुश्मनी की कि उन की वालिदा हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाई और नसारा ने उन से मुहब्बत की तो इस क़द्र हद से बढ़ गए कि उन को अल्लाह या अल्लाह का बेटा कह दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया तो कान खोल कर सुन लो, मेरे बारे में भी दो गिरोह हलाक होंगे, एक मेरी मुहब्बत में हद से तजावुज़ करेगा और मेरी ज़ात से उन बातों को मन्सूब करेगा जो मुझ में नहीं हैं। और दूसरा गिरोह इस क़द्र बुग़ज़ व अदावत रखेगा

---

[1] فيحصل علم رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم بوسيلة على رضى الله عنه وبغيره لان مدينة يكون لها فى العادة ابواب ولا توجد مدينة لها باب واحد فمدينة العلم اوسع المدائن ينبغى ان يكون لها ابواب كثيرة۔ (حاشيه تاريخ الخلفاء:١١٦)

कि मुझ पर बोहतान लगाएगा। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

इस हदीस शरीफ की पेशीन गोई हर्फ़ बहर्फ़ सहीह हुई। बेशक हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में दो फिरक़े गुमराह होकर हलाक हुए, एक राफ़िज़ी और दूसरे ख़ारिजी। राफ़िज़ी इस लिये हलाक हुए कि उन्हों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हद से बढ़ाया, यहां तक कि उन को ख़ुदा कह दिया। (देखिये तोह्फ़ए इस्ना अशरिया बाबे अव्वल) और ख़ारिजियों ने उन से इस क़द्र बुग़ज़ व अदावत रखा कि उन को काफिर कह दिया। معاذالله رب العالمين

मआज़ल्लाहि रब्बल आलमीन

अबू तुराब

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक कुन्नियत अबू तुराब भी है जैसा कि शुरू में बताया जा चुका है। जब कोई शख़्स आप को अबू तुराब कह कर पुकारता तो आप बहुत ख़ुश होते थे और रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लुत्फ़ो- करम के मज़े लेते थे इस लिये कि यह कुन्नियत आप को हुज़ूर ही से इनायत हुई थी, इस का वाक़िआ यह है कि एक रोज़ आप मस्जिद में आ कर लेटे हुए थे और आप के जिस्म पर कुछ मिट्टी लग गई थी कि इतने में रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और अपने मुबारक हाथों से आप के बदन की मिट्टी झाड़ते हुए फ़रमाया: قُمْ يَا أَبَا تُرَابٍ यानी ऐ मिट्टी वाले! उठो, उस रोज़ से आप की कुन्नियत अबू तुराब हो गई। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

ख़ुलफ़ाए सलासा और हज़रत अली
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़ुलफ़ाए सलासा में से हर एक की ख़िलाफ़त को बख़ुशी मंज़ूर फ़रमाया है और किसी की ख़िलाफ़त से इनकार नहीं किया है। जैसा कि इब्ने असाकिर ने हज़रत

हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हवाले से लिखा है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बसरा तशरीफ लाए तो इब्नुल कव्वा और कैस बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा ने खड़े होकर आप से पूछा कि आप हमें यह बतलाइये कि बाज़ लोग कहते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने आप से वादा फरमाया था कि मेरे बाद तुम ख़लीफा होगे तो यह बात कहां तक सच है, इस लिये कि आप से ज़्यादा इस मामले में सहीह बात और कौन कह सकता है, आप ने फरमाया यह ग़लत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मुझ से कोई वादा फरमाया था जब मैं ने सब से पहले आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ की तो अब मैं ग़लत बात आप की तरफ मन्सूब नहीं कर सकता। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इस तरह का कोई वादा मुझ से किया होता तो मैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को हुज़ूर के मिम्बर पर न खड़ा होने देता, मैं उन दोनों को इन्हीं हाथों से क़त्ल कर डालता चाहे मेरा साथ देने वाला कोई न होता। यह तो सब लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को अचानक किसी ने क़त्ल नहीं किया और न आप का यका यक विसाल हुआ बल्कि कई दिन तक आप की तबीअ़त नासाज़ रही और जब आप की बीमारी ने ज़ोर पकड़ा और मोअज़्ज़िन ने आप को नमाज़ के लिये बुलाया तो आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फरमाया और मुशाहेदा फरमाते रहे। मोअज़्ज़िन ने फिर आप को नमाज़ के लिये बुलाया, हुज़ूर ने फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को नमाज़ पढ़ाने के लिये फरमाया। आप की अज़्वाजे मुतह्हरात में से एक ने (यानी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने) हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को इमामत से बाज़ रखना चाहा तो आप ने नाराज़गी ज़ाहिर की और फरमाया कि तुम लोग तो यूसुफ़ अलैहिस् सलाम के ज़माने की

औरतें हो, अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया तो हम ने ख़िलाफत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करने के बाद फिर उन्हीं को अपनी दुनिया के लिये इख़्तियार कर लिया जिस को प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने हमारे दीन यानी नमाज़ के लिये मुन्तख़ब फरमाया था, चूंकि नमाज़ दीन की अस्ल है और हुज़ूर दीन व दुनिया दोनों के क़ाइम फरमाने वाले थे इस लिये हम सब ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हाथ पर बैअ़त कर ली। और सच्ची बात यही है कि वही उसके अहल भी थे। इसी लिये किसी ने आप की ख़िलाफत में इख़्तिलाफ़ नहीं किया और न किसी ने किसी को नुक़सान पहुंचाने का इरादा किया और न किसी ने आपकी ख़िलाफत से रूगर्दानी की, इसी बिना पर मैंने भी आपका हक़ अदा किया और आपकी इताअ़त की। मैं ने आप के लश्कर में शरीक होकर काफिरों से जंग की। माले ग़नीमत या बैतुल माल से जो आपने दिया वह हमने बखुशी क़बूल किया और जहां कहीं आप मुझे जंग के लिये भेजा मैं गया और दिल खोल कर लड़ा यहां तक कि उन के हुक्म से शरई सज़ाएं भी दीं यानी हुदूद जारी किये।

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अपना ख़लीफा बनाया और वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के बेहतरीन जानशीन और सुन्नते नबवी पर अमल करने वाले थे, तो हम ने उन के हाथ पर बैअ़त कर ली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ख़लीफा बनाने पर भी किसी शख़्स ने बिल्कुल इख़्तिलाफ नहीं किया और न कोई किसी को नुक़सान पहुंचाने के दरपै हुआ और एक फर्द भी आपकी ख़िलाफत से बेज़ार नहीं हुआ। मैं ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु के हुकूक़ भी अदा किये और पूरे तौर उनकी इताअत की और उनके लश्कर में भी शरीक होकर दुश्मनों से जंग की और उन्होंने जो कुछ मुझे दिया मैं ने खुशी से ले लिया। उन्हों ने मुझे लड़ाइयों पर भेजा, मैं ने दिल खोल कर काफिरों से मुक़ाबला किया और आप के ज़मानए ख़िलाफत में भी अपने कोड़ों से मुर्जिमों को सज़ाएं दी।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना बयान जारी रखते हुए फरमाया कि फिर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ अपनी क़राबत, इस्लाम लाने में सबक़त और अपनी दूसरी फज़ीलतों की जानिब दिल में ग़ौर किया तो मुझे यह ख़्याल ज़रूर पैदा हुआ कि अब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मेरी ख़िलाफत के बारे में कोई ऐतराज़ न होगा, लेकिन ग़ालिबन हज़रत उमर को यह ख़ौफ हुआ कि वह कहीं ऐसा ख़लीफा नामज़द न कर दें कि जिस के आमाल का खुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़ब्र में जवाब देना पड़े, इस ख़्याल के पेशे नज़र उन्हों ने अपनी औलाद को भी ख़िलाफत के लिये नामज़द नहीं फरमाया बल्कि ख़लीफा मुक़र्रर करने का फैसला 6 क़ुरैशियों के सुपुर्द किया जिन में से एक मैं भी था, जब उन 6 मिम्बरों ने इन्तिख़ाबे ख़लीफा के लिये कमेटी तलब की तो मुझे ख़्याल पैदा हुआ कि अब ख़िलाफत मेरे सुपुर्द कर दी जाएगी, यह कमेटी मेरे बराबर किसी दूसरे को हैसियत नहीं देगी और मुझी को ख़लीफा मुन्तख़ब करेगी, जब कमेटी के सब अफराद जमा हो गए तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ ने हम लोगों से वादा लिया कि अल्लाह तआला हम में से जिस को ख़लीफा मुक़र्रर फरमा दे हम सब उस की इताअत करेंगे और उस के अह्काम को खुशी से बजा लायेंगे। इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत की, उस वक़्त मैं ने सोचा कि मेरी इताअत मेरी बैअत पर

ग़ालिब आ गई और मुझ से जो वादा लिया गया था वह अस्ल में दूसरे की बैअ़त के लिये था। बहर हाल मैं ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के हाथ पर भी बैअ़त कर ली और ख़लीफ़ए अव्वल व दोम की तरह उन की इताअ़त भी क़बूल कर ली, उन के हुक़ूक़ अदा किये, उनकी सर-कर्दगी में जंगें लड़ीं, उनके अतियात को क़बूल किया और मुर्जिमों को शरई सज़ाएं भी दीं।

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शहादत के बाद मुझे ख़्याल पैदा हुआ कि वह दोनों ख़लीफा जिन से मैं ने नमाज़ के सबब बैअ़त की थी, विसाल फरमा चुके और जिन के लिये मुझ से वादा लिया गया था वह भी रुख़्सत हो गए, लिहाज़ा यह सोच कर मैं ने बैअ़त लेनी शुरू कर दी, मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना तैयिबा के बाशिंदों ने और कूफा व बसरा के रहने वालों ने मेरी बैअ़त कर ली, अब ख़िलाफत के लिये मेरे मुक़ाबिल वह शख़्स खड़ा हुआ है (यानी हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जो क़राबत, इल्म और सबक़ते इस्लाम में मेरे बराबर नहीं, इस लिये मैं उस शख़्स के मुक़ाबिला में ख़िलाफत का ज़्यादा मुस्तहिक़ हूं। (तारीखुल खुलफाः121)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस तफ्सीली बयान से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपने बाद उन को ख़िलाफत के लिये नामज़द नहीं फरमाया था और न उन से इस क़िसम का कोई वादा फरमाया था, इसी लिये आप ने ख़ुलफाए सलासा की बैअ़त से इनकार नहीं किया और न उन की मुख़ालफत की बल्कि हर तरह से उन का तआ़वुन किया और उनके अतियात को क़बूल फरमाया।

दर अस्ल राज़ यह है कि अगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की वफात के बाद बिला फस्ल ख़लीफा मुन्तख़ब हो जाते तो ख़ुलफाए सलासा (तीनों ख़लीफा) महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की

ख़िलाफ़त व नियाबत की नेअ्मत से सरफ़राज़ न हो पाते, सब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अहद ही में इन्तेक़ाल कर कर जाते, हालां कि इल्मे इलाही में यह मुक़द्दर हो चुका था कि वह तीनों हज़रात भी हुज़ूर की नियाबत से सरफ़राज़ होंगे। तो ख़ुदाए तआ़ला ने सहाबए किराम के दिलों में यह बात डाल दी कि उसी तरतीब से ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करें कि जिस तरतीब के साथ वह दुनिया से रुख़्सत होने वाले हैं ताकि उन में से कोई हुज़ूर की नियाबत से महरूम न रहे।

रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अज्मईन

आप का इल्म

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम इल्म के ऐतबार से उलमाए सहाबा में बहुत ऊंचा मक़ाम रखते हैं। सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बहुत सी हदीसें आप से मरवी हैं। आप के फ़तावा और फ़ैसले इस्लामी उलूम के अन्मोल जवाहिर पारे हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि हम ने जब भी आप से किसी मस्अला को दरियाफ़्त किया तो हमेशा दुरुस्त ही जवाब पाया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के सामने जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ज़िक्र हुआ तो आप ने फ़रमाया कि अली से ज़्यादा मसाइले शरइय्या का जानने वाला कोई और नहीं है। और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मदीना तैयिबा में इल्मे फ़राइज़ और मुक़द्दमात के फ़ैसले करने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा इल्म रखने वाला कोई दूसरा नहीं था। और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के सहाबा में सिवाए हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के कोई यह कहने वाला नहीं था कि जो कुछ पूछना हो मुझ से पूछ लो। और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से यह भी मरवी है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में कोई

मुश्किल मुक़द्दमा पेश होता और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मौजूद न होते तो अल्लाह तआ़ला की पनाह मांगा करते थे कि मुक़द्दमा का फैसला कहीं ग़लत न हो जाए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

मश्हूर है कि हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने एक ऐसी औरत पेश की गई कि जिसे ज़िना का हमल था, सबूते शरई के बाद आप ने उस के संगसार (पत्थर मारने) का हुक्म फरमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने याद दिलाया कि हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम का फरमान है कि हामिला औरत को बच्चा पैदा होने के बाद संगसार किया जाए। इस लिये ज़िना करने वाली औरत अगर्चे गुनहगार होती है मगर उस के पेट का बच्चा बेक़ुसूर होता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की याद देहानी के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने फैसले से रुजूअ़ कर लिया और फरमाया: لَوْلَا عَلِيٌّ لَهَلَكَ عُمَرُ अगर अली न होते तो उमर हलाक हो जाता। अली की मौजूदगी ने उमर को हलाकत से बचा लिया। (रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)।

आप के फैसले

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फैसले ऐसे अजीब व ग़रीब और नादिरे रोज़गार हैं कि जिन्हें पढ़ कर बड़े-बड़े अक़्ल मन्दों और दानिश्वरों की अक़्लें हैरान हैं। और यह सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक और उन की दुआ़ की बरकत है। खुद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने मुझे यमन की जानिब क़ाज़ी बना कर भेजना चाहा तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं अभी नातजुर्बे कार जवान हूं, मामलात तय करना नहीं जानता हूं और आप मुझे यमन भेजते हैं। यह सुन कर हुज़ूर ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फरमाया: इलाहल आलमीन! इस के क़ल्ब को रौशन फरमा दे। और इस की ज़बान में तासीर अ़ता फरमा दे, क़सम है उस ज़ात

की जो छोटे बीज से बड़ा दरख़्त पैदा करता है, इस दुआ के बाद से फिर कभी मुझे किसी मुक़द्दमा के फैसले में कोई तरद्दुद नहीं रहा, बग़ैर किसी शक व शुब्हा के मैं ने हर मुक़द्दमे का तस्फ़िया कर दिया।

अब आप हज़रात सैयिदना हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चन्द फैसले मुलाहेज़ा फरमाएं।

आक़ा और गुलाम

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि यमन के एक शख़्स ने अपने गुलाम को अपने लड़के के साथ कूफा भेजा, इत्तिफाक़ से रास्ते में दोनों ने झगड़ा किया, लड़के ने गुलाम को मारा और गुलाम ने उसे गालियां दीं, कूफा पहुंच कर गुलाम ने दावा किया कि यह लड़का मेरा ग़ुलाम है और उसे बेचना चाहा, यह मुक़द्दमा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अदालत में पहुंचा, आप ने ख़ादिम क़म्बर से फरमाया कि इस कमरे की दीवार में दो बड़े-बड़े सूराख़ बनाओ और इन दोनों से कहो कि अपने-अपने सर इन सूराख़ों से बाहर निकालें। जब यह सब हो गया तो आपने फरमाया ऐ क़ुंबुर, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तल्वार लाओ, हज़रत क़म्बर तलवार ले आए तो आप ने फरमाया फौरन गुलाम का सर काट लो, इतना सुनता ही गुलाम ने फौरन अपना सर अन्दर खींच लिया और दूसरा नौजवान अपनी हालत पर क़ाइम रहा, इस तरह आप के इजलास में बग़ैर किसी गवाह व शहादत के फैसला हो गया कि आक़ा कौन है और गुलाम कौन है, आपने गुलाम को सज़ा दी और उसे यमन भेज दिया। (अश्रए मुबश्शरा)

हक़ीक़ी मां

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा दो औरतें एक लड़के के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ा करती हुई हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आईं, दोनों का कहना था कि यह लड़का हमारा है, आप ने पहले उन दोनों को बहुत

समझाया लेकिन जब उन की हंगामा आराई जारी रही तो आप ने हुक्म दिया कि आरा लाओ, उन्हों ने पूछा कि आरा किस लिये मंगा रहे हैं? आप ने फरमाया कि इस लड़के के दो टुक्ड़े करके दोनों को आधा-आधा दूंगा, हकीकत में उस लड़के की जो मां थी, यह सुन कर बेक़रार हो गई और उसके चेहरे से ग़मग़ीनी ज़ाहिर हुई, उस ने निहायत आजिज़ी से अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं इस लड़के को नहीं लेना चाहती, यह इसी औरत का है, आप इसी को दे दीजिये मगर ख़ुदा के वास्ते इस को क़त्ल न कीजिये, आप ने वह लड़का उसी बेक़रार औरत को दे दिया और जो औरत ख़ामोश खड़ी रही आप ने उससे फरमाया कि तुम को शर्म आनी चाहिये कि तुम ने मेरे इजलास में झूठा बयान दिया, यहां तक कि उस औरत ने अपने जुर्म का इक़रार कर लिया। (अशरए मुबश्शरा)

एक शख़्स की वसिय्यत

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा एक शख़्स ने मरते वक़्त अपने एक दोस्त को दस हज़ार दिरहम दिये और वसिय्यत की कि जब तुमसे और मेरे लड़के से मुलाक़ात हो तो इसमें से जो तुम चाहो वह उसको दे दना। इत्तिफाक़ से कुछ रोज़ बाद उस का लड़का वतन में आ गया, इस मौक़े पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस शख़्स से पूछा कि बताओ तुम मरहूम के लड़के को कितना दोगे? उस ने कहा एक हज़ार दिरहम, आप ने फरमाया कि अब तुम उस को नौ हज़ार दो, इस लिये कि जो तुम ने चाहा वह नौ हज़ार हैं और मरहूम ने यह वसिय्यत की है कि जो तुम चाहो वह उस को दे देना। (अशरए मुबश्शरा)

सत्तरा (17) ऊंट

हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहुल करीम की ख़िदमत तीन शख़्स आए, उन के पास 17 ऊंट थे, उन लोगों ने आप से अर्ज़ किया कि इन ऊंटों को आप हमारे दरमियान तक़्सीम कर दें। हम में एक

शख़्स आधे का हिस्सेदार है, दूसरा तिहाई का और तीसरा नवें हिस्से का। मगर शर्त यह है कि पूरे पूरे ऊंट हर शख़्स को मिलें, काट कर तक़्सीम न करें और न किसी से कुछ पैसा दिलाएं।

बड़े-बड़े दानिश्वर जो आप के पास बैठे हुए थे उन्हों ने आपस में कहा यह कैसे हो सकता है कि पूरे-पूरे ऊंट हर शख़्स को मिलें और वह काटे न जाएं, न किसी से कुछ पैसे दिलाए जायें। इस लिये कि जो शख़्स आधे का हिस्सेदार है उसे 17 में से साढ़े आठ (8-1/2) मिलेगा और जो शख़्स तिहाई का हक़दार है वह 5-2/3 ऊंट पाएगा। 17 में से पूरा 6 उसे भी नहीं मिलेगा और जिस का हिस्सा नवां है, 17 में से वह भी दो से कम ही पाएगा। तो एक दो नहीं बल्कि तीन ऊंटों को ज़िब्ह किये बग़ैर 17 ऊंटों की तक़्सीम इन लोगों के दरमियान हरगिज़ नहीं हो सकती।

मगर क़ुर्बान जाइये हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अक़्ल व दानाई और उन की कुव्वते फ़ैसला पर कि आप ने बिला तअम्मुल फ़ौरन उन के ऊंटों को एक लाइन में खड़ा करवा दिया और अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि हमारा एक ऊंट इसी लाइन के आख़िर में लाकर खड़ा कर दो, जब आप के ऊंट को मिला कर कुल 18 ऊंट हो गए, तो जो शख़्स आधे का हिस्सेदार था आप ने उसे 18 में से 9 दिया और तिहाई हिस्से वाले को 18 में से 6, फिर नवें के हिस्सेदार को 18 में से दो दिया अपने ऊंट को फिर अपनी जगह पर भिजवा दिया।

इस तरह आप ने न तो कोई ऊंट काटा और न ही किसी को कुछ नक़द पैसा दिलवाया और 17 ऊंटों को उन की शर्त के मुताबिक़ तक़्सीम फ़रमा दिया जिस पर किसी शख़्स को कोई ऐतराज़ नहीं हुआ।

आप के इस फ़ैसले को देख कर सारे हाज़िरीन दंग हो गए और सब बयक ज़बान पुकार उठे बेशक आप का सीना फ़ज़्ल व कमाल का ख़ज़ीना, हिक्मतो-अदालत का सफ़ीना और इल्मे नुबुव्वत का मदीना है।

كرم الله تعالى وجهه الكريم

आठ रोटियां

दो आदमी सफर में एक साथ खाना खाने के लिये बैठे, उन में से एक की पांच रोटियां थीं, दूसरे की तीन, इतने में एक शख़्स उधर से गुज़रा, उस ने उन दोनों से सलाम किया, उन्हों ने उस को भी अपने साथ खाने पर बिठा लिया और तीनों ने मिल कर वह सब रोटियां खाईं। खाने से फ़ारिग़ होकर उस तीसरे शख़्स ने आठ दिरहम दिये और कहा कि आपस में बांट लेना, जब वह शख़्स चला गया तो पांच रोटियों वाले ने कहा कि मैं पांच दिरहम लूंगा कि मेरी पांच रोटियां थीं और तुम तीन दिरहम लो कि तुम्हारी तीन ही थीं, तीन रोटी वाले ने कहा नहीं बल्कि आधे दिरहम हमारे हैं और आधे तुम्हारे इस लिये कि हम दोनों ने मिल कर रोटियां खाई हैं लिहाज़ा का दोनों का हिस्सा बराबर चार-चार दिरहम होगा। जब दोनों में मामला तय न हुआ तो इस झगड़े का फैसला कराने के लिये दोनों हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इज्लास में पहुंचे, आप ने सारा वाक़िआ सुनने के बाद तीन रोटी वाले से फरमाया कि तुम्हारा साथी जो तीन दिरहम तुम को दे रहा है ले लो, इस लिये कि तुम्हारी रोटियां कम थीं, तीन रोटियों वाले ने कहा कि मैं इस ग़ैर मुन्सिफाना फैसले पर राज़ी नहीं हूं। आप ने फरमाया यह ग़ैर मुन्सिफाना फैसला नहीं है, हिसाब से तो तुम्हारा एक ही दिरहम होता है, उस ने कहा आप हिसाब हमें समझा दीजिये तो हम एक ही दिरहम ले लेंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया कान खोल कर सुनो! तुम्हारी तीन रोटियां थीं और उस की पांच। कुल आठ रोटियां हुईं। और खाने वाले कुल तीन थे तो उन आठ रोटियों के तीन-तीन टुक्ड़े करो तो कुल 24 टुक्ड़े हुए, अब उन 24 टुक्ड़ों को तीन खाने वालों पर तक़्सीप करो तो आठ-आठ टुक्ड़े सब के हिस्से में आए, यानी आठ टुक्ड़े तुम ने खाए, आठ तुम्हारे साथी ने और आठ उस तीसरे शख़्स ने। अब ग़ौर से सुनो! तुम्हारी तीन रोटियों के तीन-तीन टुक्ड़े

करें तो नौ टुक्ड़े बनते हैं और तुम्हारे साथी की पांच रोटियों तीन-तीन टुक्ड़े करें तो 15 टुक्ड़े बनते हैं, तो तुम ने अपने 9 टुक्ड़ों में से 8 टुक्ड़े खुद खाए और तुम्हारा सिर्फ एक टुक्ड़ा बचा जो उस तीसरे शख़्स ने खाया लिहाज़ा तुम्हारा सिर्फ एक दिरहम हुआ। और तुम्हारे साथी ने अपने 15 टुक्ड़ों में से 8 खुद खाए और उस के 7 टुक्ड़े उस तीसरे शख़्स ने खाए लिहाज़ा 7 हिरहम उस के हुए। यह फैसला सुन कर तीन रोटी वाला हैरान हो गया, मजबूरन उसे ही एक दिरहम लेना पड़ा और दिल में कहने लगा ऐ काश! मैं ने तीन दिरहम ले लिया होता तो अच्छा होता।

एक मर्तबा आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप की करामतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रत सैयिदना अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से बहुत सी करामतों का जुहूर हुआ है, जिन में से चन्द करामतों को ज़िक्र आप लोगों के सामने किया जाता है।

हज़रत अब्दुर रहमान अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि कूफा में एक रोज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सुब्ह की नमाज़ पढ़ने के बाद एक शख़्स से फरमाया कि फुलां मक़ाम पर जाओ, वहां एक मस्जिद है जिस के पहलू में एक मकान वाक़ा है उस में एक मर्द एक औरत आपस में लड़ते हुए मिलेंगे, उन्हें हमारे पास ले आओ, वह शख़्स वहां पहुंचा तो देखा वाक़ई वह दोनों आपस में झगड़ा कर रहे हैं, आप के हुक्म के मुताबिक़ उन दोनों को साथ ले आया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फरमाया, आज रात तुम दोनों में बहुत लड़ाई हुई नौजवान ने कहा ऐ अमीरुल

मोमिनीन! मैं ने इस औरत से निकाह किया लेकिन जब मैं इसके पास आया तो इस की सूरत से मुझे सख़्त नफ़रत हो गई, अगर मेरा बस चलता तो इस औरत को मैं उसी वक़्त अपने पास से दूर कर देता, इस ने मुझ से झगड़ना शुरू कर दिया और सुब्ह तक लड़ाई होती रही, यहां तक कि आप का भेजा हुआ आदमी हमें बुलाने के लिये पहुंचा, हाज़िरीन को आप ने जाने का इशारा फरमाया, वह चले गए, उसके बाद आप ने उस औरत से पूछा, तुम इस जवान को पहचानती हो? उस ने कहा नहीं, सिर्फ इतना जानती हूं कि यह कल से मेरा शौहर है, आप ने फरमाया अब तू अच्छी तरह जान लेगी, मगर सच सच कहना, झूठ क़तई नहीं बोलना, उस ने कहा कि मैं वादा करती हूं झूठ हरगिज़ नहीं बोलूंगी, आप ने फरमाया कि तुम फुलां की बेटी फुलां हो? उस ने कहा हां हुज़ूर! मैं वही हूं, फिर आप ने फरमाया तुम्हारा चचाज़ाद भाई था जो तुमपर आशिक़ था और तू भी उस से बहुत मुहब्बत करती थी, उस ने इस बात का भी इक़रार किया, फिर आप ने फरमाया तू एक दिन किसी ज़रूरत से रात के वक़्त घर से बाहर निकली तो उसने तुझे पकड़ कर तुझसे ज़िना किया और तू हामिला हो गई, इस बात को तू ने अपने बाप से छुपा रखा, उस ने कहा बेशक ऐसा ही हुआ था, आप ने फरमाया मगर तेरी मां सारा वाक़िआ जानती थी और जब बच्चा पैदा होने का वक़्त आया तो रात थी, तेरी मां तुझे घर से बाहर ले गई, तुझे लड़का पैदा हुआ, तू ने उसे एक कपड़े में लपेट कर दीवार के पीछे डाल दिया, इत्तिफाक़ से वहां एक कुत्ता पहुंच गया, जिस ने उसे सूंघा, तू ने उस कुत्ते को एक पत्थर मारा, जो बच्चे के सर पर लगा जिस से वह ज़ख़्मी हो गया, तेरी मां ने अपने इज़ार बन्द से कुछ कपड़ा फाड़ कर उस के सर को बांध दिया फिर तुम दोनों वापस चली आईं और तुम्हें उस लड़के का कोई पता न चला, उस औरत ने जवाब दिया हां हुज़ूर ऐसा ही हुआ था, मगर ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस वाक़िआ को मैं और मेरी मां के अलावा कोई तीसरा नहीं जानता था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया जब सुबह हुई

तो फुलां क़बीला उस लड़के को उठा कर ले गया और उस की परवरिश की यहां तक कि वह जवान हो गया, कूफा शहर में आया और अब तुझ से शादी कर ली, फिर आप ने उस नौजवान से कहा अपना सर खोलो, उस ने अपना सर खोला तो ज़ख़्म का असर ज़ाहिर था, आप ने फरमाया यह तुम्हारा लड़का है, ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने इसे हराम चीज़ से महफूज़ रखा, फरमाया ले, इसे अपने साथ ले जा, तू इस की बीवी नहीं मां है और यह तेरा शौहर नहीं बेटा है।

(शवाहिदुन नुबुव्वत)

इस वाक़िआ से साफ ज़ाहिर है कि अल्लाह के महबूब बन्दे आम इंसानों की तरह नहीं होते बल्कि उन के अन्दर ऐसा कमाल होता है कि वह लोगों के सारे हालात जानते हैं। मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं: <u>हाले तू दानंद यक-यक मू-बमू-जांकि पुर हस्तंद अज़ असरारे हू</u>। यानी अल्लाह के महबूब तुम्हारे हाल से ज़र्रा-ज़र्रा आगाह हैं इस लिये कि उन के अन्दर असरारे रब्बानी भरे हुए हैं।

फुरात में तुग़यानी

कूफा वालों ने आप से अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस साल दरियाए फ़ुरात में तुग़यानी के सबब हमारी खेतियां बरबाद हो रही हैं, क्या ही अच्छा हो अगर आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि दरिया का पानी कम हो जाए, आप उठ कर मकान के अन्दर तशरीफ ले गए, लोग घर के दरवाज़े पर आपका इन्तिज़ार कर रहे थे कि अचानक आप सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का जुब्बा पहने, इमामा सर पर बांधे और असाए मुबारक हाथ में लिये हुए बाहर तशरीफ लाए, एक घोड़ा मंगा कर उस पर सवार हुए और फ़ुरात की तरफ रवाना हुए, अवाम व ख़्वास में से बहुत से लोग आप के पीछे-पीछे चले, जब आप फ़ुरात के किनारे पहुंचे तो घोड़े से उतर कर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर उठ कर असाए मुबारक हाथ में लिया और फुरात के पुल पर आ गए, उस वक़्त हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु

तआला अन्हुमा उनके साथ थे, आप ने असा से पानी की तरफ इशारा किया तो पानी की सतह एक हाथ कम हो गई, आप ने फरमाया क्या इतना काफ़ी है? लोगों ने कहा नहीं, आप ने फिर असा से पानी की तरफ इशारा किया, पानी एक हाथ फिर कम हो गया, इस तरह जब तीन फिट पानी की सतह नीचे हो गई तो लोगों ने कहा या अमीरल मोमिनीन! बस इतना काफी है। (शवाहिदुन नुबुव्वत)

सच फरमाया मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने किः

यादे ऊ गर मोनिस जानत बुवद

हर दो आलम ज़ेरे फरमानत बुवद

यानी खुदाए तआला की याद अगर तुम्हारी जान की साथी बन जाए तो दोनों आलम तुम्हारे पैरूकार हो जाएं।

पानी का चश्मा

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जंगे सिफ्फीन में मश्गूल थे, आप के साथियों को पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ी, लोगों ने बहुत दौड़ धूप की मगर पानी दस्तयाब न हुआ, आप ने फरमाया और आगे चलो, कुछ दूर चले तो एक गिरजा नज़र आया, आप ने उस गिरजा में रहने वाले से पानी के मुतअल्लिक़ दरियाफ्त किया, उस ने कहा यहां से छेः मील के फासले पर पानी मौजूद है, आप के साथियों ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप हमें इजाज़त दीजिये शायद हम अपनी कुव्वत के ख़त्म होने से पहले पानी तक पहुंच जाएं, आप ने फरमाया इस की हाजत नहीं, फिर अपनी सवारी को पच्छिम की तरफ मोड़ा और एक तरफ इशारा करते हुए फरमाया, यहां से ज़मीन खोदो, अभी थोड़ी ही ज़मीन खोदी गई थी कि नीचे एक बड़ा पत्थर ज़ाहिर हुआ जिसे हटाने के लिये कोई हथियार भी कारगर न हो सका, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि यह पत्थर पानी पर वाक़े है, किसी तरह इसे हटाओ, आप के साथियों ने बहुत कोशिश की

मगर उसे अपनी जगह से हिला न सके, अब शेरे खुदा ने अपनी आस्तीन चढ़ा कर, उंगलियां उस पत्थर के नीचे रख कर ज़ोर लगाया तो पत्थर हट गया और उस के नीचे निहायत ठंडा, मीठा और साफ पानी ज़ाहिर हुआ जो इतना अच्छा था कि पूरे सफर में उन्हों ने ऐसा पानी न पिया था, सब ने शिकम सैर होकर पिया और जितना चाहा भर लिया, फिर आप ने उस पत्थर को उठा कर चश्मह पर रख दिया और फरमाया इस पर मिट्टी डाल दो, जब राहिब ने यह देखा तो आप की ख़िदमत में खड़े होकर निहायत अदब से पूछा क्या आप पैग़म्बर हैं? फ़रमाया नहीं, पूछा क्या आप फिरिश्तए मुक़र्रब हैं? फरमाया नहीं, पूछा तो फिर आप कौन हैं? फरमाया कि मैं सैयिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का दामाद और उन का ख़लीफा हूं, राहिब ने कहा कि हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आप के हाथ पर इस्लाम क़बूल करूं, आप ने हाथ बढ़ाया तो राहिब ने कहाः اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ

आप ने राहिब से दरियाफ्त फ़रमाया क्या वजह है कि तुम मुद्दत से अपने दीन पर क़ाइम थे और अब तुम ने इस्लाम क़बूल कर लिया, उस ने कहा हुज़ूर! यह गिरजा उसी हाथ पर फतह होना था जो इस चटान को हटा कर चश्मह निकाले। और हमारी किताबों में लिखा हुआ है कि इस चटान के हटाने वाला या तो पैग़म्बर होगा और या तो पैग़म्बर का दामाद, जब मैंने देखा कि आप ने इस पत्थर को हटा दिया तो मेरी मुराद पूरी हो गई और मुझे जिस चीज़ का इन्तिज़ार था वह मिल गई। जब राहिब से आप ने यह बात सुनी तो इतना रोए कि आप की दाढ़ी के बाल तर हो गए, फिर फरमाया सब तारीफ खुदाए तआ़ला के लिये है कि मैं उस के यहां भूला बिसरा नहीं हूं बल्कि मेरा ज़िक्र उस की किताबों में मौजूद है। (शवाहिदुन नुबुव्वत)

अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दों को मालूम होता है कि ज़मीन में कहां क्या चीज़ है और यह दर हकीक़त इल्मे ग़ैब है जो सरकारे

अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सदके व तुफैल में उन्हें हासिल होता है।

आप की खिलाफत

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद दूसरे रोज़ हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के अलावा मदीना तैयिबा के सब रहने वालों ने आप के हाथ पर बैअत की, आप अमीरुल मोमिनीन हो गए। हज़रत तल्हा, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने बसरा पहुंच कर क़ातिलीने हज़रत उस्माने ग़नी से क़िसास लेने का मुतालेबा आप से शुरू किया और बहुत से लोग इस मुतालेबा में शरीक हो गए, हज़रत अली को इस बात की इत्तिला मिली तो आप भी इराक़ तशरीफ ले गए, बसरा रास्ते ही में पड़ता था, यहां "जंगे जुमल" हुई जिस में हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा शहीद हो गए, इन के अलावा और भी दोनों तरफ के आदमी काम आए। बसरा में आप ने 15 रोज़ क़ियाम फरमाया और फिर कूफा तशरीफ ले गए।

आप के कूफा पहुंचने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप पर खुरूज किया, उन के साथ शामी लश्कर था, कूफा से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी बढ़े और सिफ्फीन के मक़ाम पर कई रोज़ तक लड़ाई का सिलसिला जारी रहा, फिर यह जंग एक मुआहेदा पर ख़त्म हुई, तरफैन के लोग अपने-अपने मक़ाम को वापस हो गए। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शाम को और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कूफा वापस चले गए।

जब आप कूफा तशरीफ लाए तो एक जमाअत जिस को "ख़ारजी" कहा जाता है आप का साथ छोड़ कर अलग हो गई और आप की ख़िलाफत से इनकार करके لَا حُكْمَ إِلَّا لِلّٰهِ का नारा बुलंद किया, यहां तक कि आप से जंग करने के लिये लश्कर तैयार कर लिया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनका सर कुचलने के लिये

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सर करदगी में एक लश्कर रवाना फरमाया, तरफैन (दोनों गिरोह) में जंग हुई, ख़ारजी शिकस्त खा कर कुछ तो अली मुरतज़ा के लश्कर में शामिल हो गए और कुछ भाग कर नहरवान चले गए और वहां पहुंच कर लूट मार शुरू कर दी, आख़िर शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वहां पहुंच कर उन को तहे तेग़ (क़त्ल) किया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

ख़ारजियों की साज़िश

तीन ख़ारजी यानी अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम, बरक बिन अब्दुल्लाह और अम्र बिन बुकैर मक्का मुअ़ज़्ज़मा में जमा हुए और आपस में यह फैसला किया कि हम तीनो आदमी तीन अफराद हज़रत अली बिन अबी तालिब, मुआविया बिन अबी सुफियान और अम्र बिन आ़स को क़त्ल कर दें। चुनांचे इब्ने बल्जम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को, बरक ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को और अम्र बिन बुकैर ने हज़रत अम्र बिन अल-आ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को एक ही मुअ़य्यन तारीख़ पर क़त्ल करने का अ़हेद किया और यह तीनों बद बख़्त उन शहरों को रवाना हो गए जहां-जहां इन को अपने नामज़द करदा (किये हुए) शख़्स को क़त्ल करना था। उन में सब से पहले इब्ने मुल्जिम कूफा पहुंचा, वहां ख़ारजियों से राब्ता क़ाइम करके अपना इरादा ज़ाहिर किया कि 17 रमज़ान 40 हिजरी की रात में हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को शहीद कर देगा।

इमाम सुद्दी फरमाते हैं कि इब्ने मुल्जिम एक ख़ारजिया औरत पर आशिक़ हो गया था जिस का नाम क़ताम था उस ने अपना महर तीन हज़ार दिरहम, एक गुलाम एक बांदी और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का क़त्ल रखा था। फरज़क़ शाइर ने अपने इन अश्आ़र में इस की तरफ इशारा किया है।

فَلَمْ اَرَ مَهْرًا سَاقَهُ ذُوْ سَمَاحَةٍ ۔ كَمَهْرِ قَطَامٍ بَيِّنٍ غَيْرِ مُعْجَمٍ
ثَلٰثَةُ اٰلَافٍ وَّ عَبْدٌ وَّ قَيْنَةٌ ۔ وَضَرْبُ عَلِيٍّ بِالْحُسَامِ الْمُصَمَّمِ
فَلَا مَهْرَ اَغْلٰى مِنْ عَلِيٍّ وَّاِنْ غَلَا ۔ وَلَا فَتْكَ اِلَّا دُوْنَ فَتْكِ ابْنِ مُلْجَمٍ

यानी मैं ने किसी सख़ावत करने वाले को ऐसा मह्र देते नहीं देखा जैसा मह्र कृताम का मुक़र्रर हुआ, तीन हज़ार दिरहम, एक गुलाम, एक बांदी और हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़त्ल, तो आप के क़त्ल से बढ़कर कोई मह्र नहीं हो सकता। और इब्ने मुल्जिम ने जो आप को धोके से क़त्ल किया तो इस से बढ़ कर कोई क़त्ल नहीं हो सकता।

आप की शहादत

हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 17 रमज़ानुल मुबाकर 40 हिजरी को अलस्-सुब्ह (सुबह के वक़्त) बेदार होकर अपने बड़े साहिबज़ादे हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया आज रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, तो मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप की उम्मत ने मेरे साथ कजरवी इख़्तियार की है और सख़्त नज़ाअ् (झगड़ा) बरपा कर दिया है, हुज़ूर ने फरमाया कि तुम ज़ालिमों के लिये दुआ करो, तो मैं ने इस तरह दुआ की या इलाहल आलमीन! तू मुझे इन लोगों से बेहतर लोगों में पहुंचा दे और मेरी जगह इन लोगों पर ऐसा शख़्स मुसल्लत कर दे जो बुरा हो। अभी आप यह बयान ही फरमा रहे थे कि इब्ने नबाह मोअज़्ज़िन आवाज़ दी *अस्सलातु अस्सलातु*, हज़रत अली नमाज़ पढ़ाने के लिये घर से चले, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दे देकर आप जगाते जाते थे कि इतने में इब्ने मुल्जिम आप के सामने आ गया और उस ने अचानक आप पर तल्वार का भर पूर वार किया, वार इतना सख़्त था कि आप की पेशानी कनपटी तक कट गई और तल्वार दिमाग़ पर जाकर ठहरी, शमशीर लगते ही आप ने फरमायाः فُزْتُ بِرَبِّ الْكَعْبَةِ यानी रब्बे कअ्बा की क़सम मैं कामयाब हो गया।

आप के ज़ख़्मी होते ही चारों तरफ से लोग दौड़ पड़े और कातिल को पकड़ लिया। (तारीखुल खुलफा)

आप की वसिय्यत

हज़रत उक्बा बिन अबी सहबा कहते हैं कि जब बदबख़्त इब्ने मुलजिम ने आप पर तल्वार का वार किया यानी आप ज़ख़्मी हो गए तो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते हुए आप की ख़िदमत में आए, आप ने उन को तसल्ली दी और फरमाया बेटे! मेरी चार बातों के साथ चार बातें याद रखना, हज़रत इमाम हसन ने अर्ज़ किया वह क्या हैं, फरमाइये, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमायाः अव्वल सब से बड़ी तवंगरी (मालदारी) अक्ल की तवानाई है। दूसरे बेवकूफी से ज़्यादा कोई मुफ्लिसी और तंगदस्ती नहीं। तीसरे गुरूर और घमंड सब से सख़्त वहशत है। चौथे सब से अज़ीम खुल्क (आदत) करम है।

हज़रत इमाम हसन ने अर्ज़ किया कि दूसरी चार बातें भी बयान फरमाएं। आप ने इरशाद फरमाया कि अव्वल अहमक़ की सोहबत से बचो। इस लिये कि नफा पहुंचाने का इरादा करता है लेकिन नुक़्सान पहुंच जाता है। दूसरे झूटे से परहेज़ करो, इस लिये कि वह दूर को नज़्दीक और नज़्दीक को दूर कर देता है। तीसरे बख़ील से दूर रहो, इस लिये कि वह तुम से उन चीज़ों को छुड़ा देगा जिन की तुम को हाजत है। चौथे फाजिर से किनारा कश रहो, इस लिये कि वह तुम्हें थोड़ी सी चीज़ के बदले में फरोख़्त कर डालेगा। (तारीखुल खुलफा)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ख़्मी होने के बावजूद जुमा व सनीचर तक बक़ैदे हयात रहे लेकिन इतवार के रोज़ आप की रूह बारगाहे अक्दस में परवाज़ कर गई। और यह भी रिवायत है कि 19 रमज़ान जुमा की शब में आप ज़ख़्मी हुए और 21 रमज़ान शबे यक्शंबा (इतवार की रात) 40 हिजरी में आप की वफात हुई। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

चार बरस, आठ माह, नौ दिन आप ने उमूरे ख़िलाफ़त को अंजाम दिया और 63 साल की उम्र में आप का विसाल हुआ। हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने आप को गुस्ल दिया और आप की नमाज़े जनाज़ा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने पढ़ाई। आप के दफ़न से फ़ारिग़ होने के बाद अमीरुल मोमिनीन के क़ातिल अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम को हज़रत इमाम हसन ने क़त्ल कर दिया फिर उस के हाथ पैर काट कर एक टोकरे में डाल दिया और उस में आग लगा दी जिस से उस की लाश जल कर राख हो गई।

आप का मज़ारे मुबारक

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को रात के वक़्त दफ़्न किया गया और एक मस्लहत से आप का मज़ार लोगों पर ज़ाहिर नहीं किया गया, इस लिये वह कहां है इस में अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं। अबू बकर बिन अयाश कहते हैं कि आप की क़ब्र शरीफ़ को इस लिये नहीं ज़ाहिर किया गया था कि ख़ारजी बद बख़्त कहीं उस की भी बेहुर्मती न करें। शरीक कहते हैं कि आप के फ़र्ज़न्द हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने आप के जिस्मे मुबारक को दारुल अमारत कूफ़ा से मदीना तैयिबा की तरफ़ मुन्तक़िल कर दिया था। मुबर्रद ने मुहम्मद बिन हबीब के हवाले से लिखा है कि एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में मुन्तक़िल की जाने वाली पहली नअ़श हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की थी। और इब्ने असाकिर सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु शहीद हो गए तो आप के जिस्मे मुबारक को मदीना मुनव्वरा ले जाने लगे ताकि वहां रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के पहलू मुबारक में दफ़्न करें, नअ़श एक ऊंट पर रखी हुई थी, रात का वक़्त था वह ऊंट रास्ते में किसी तरफ़ को भाग गया और उस का पता नहीं चला, इसी लिये अहले इराक़ कहते हैं कि आप बादलों में तशरीफ़

फरमा हैं। बाज़ लोग कहते हैं कि तलाश व•जुस्तुजू के बाद वह ऊंट सर ज़मीने तय में मिल गया और आप के जिस्मे मुबारक को उसी सर ज़मीन में दफ्न कर दिया गया। (तारीखुल खुलफाः120)

आप की बीवियां और औलाद

हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वफात के बाद हज़रत अली ने मुख़्तलिफ वक़्तों में आठ औरतों से निकाह किया इस तरह आप की कुल नौ बीवियां हुईं जिन से 15 साहिब ज़ादगान और 17 साहिब ज़ादियां पैदा हुईं, उन सब के अस्माए मुबारका यह हैं:

बीवियांः हज़रत सैय्यिदा फातिमा, ख़ौला, लैला, उम्मुल बनीन, उम्मे वलद, अस्मा, उम्मे हबीब, उमामा, उम्मे सअ़द।

साहिब ज़ादगानः हसन, हुसैन, मोहसिन, मुहम्मद अकबर (अलमारूफ मुहम्मद बिन हनफिय्या), अब्दुल्लह अकबर, अबू बकर, अब्बास अकबर, उस्मान, जाफर, अब्दुल्लाह असग़र, मुहम्मद औसत, यहया, औन, उमर अकबर, मुहम्मद असग़र।

साहिब ज़ादियांः उम्मे कुल्सूम, ज़ैनबुल कुबरा, रुकैया, उम्मुल हसन, रमलतुल कुबरा, उम्मे हानी, मैमूना, रमलतुस सुग़रा, उम्मे कुल्सूम सुग़रा, फातिमा, उमामा, ख़दीजा, उम्मुल खैर, उम्मे सलमा, उम्मे जाफर, जुमाना, तक़िया। *रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अलैहि अज्मईन।*

आप के अक़्वाले ज़र्रीं

आप के बहुत से अक़्वाल हैं जो आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं, उन में से चन्द यहां पेश किये जाते हैं।

① इल्म माल से बेहतर है। इल्म तेरी हिफाज़त करता है और तू माल की। इल्म हाकिम है और माल महकूम। माल ख़र्च करने से घटता है और इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है।

② आलिम वही शख़्स है जो इल्म पर अमल भी करे और अपने अमल

को इल्म के मुताबिक़ बनाए।

③ हलाल की ख़्वाहिश उसी शख़्स में पैदा होती है जो हराम कमाई छोड़ने की मुकम्मल कोशिश करता है।

④ तक़्दीर बहुत गहरा समन्दर है उस में ग़ोता न लगाओ।

⑤ खुश अख़्लाक़ी बेहतरीन दोस्त है और अदब बेहतरीन मीरास है।

⑥ जाहिलों की दोस्ती से बचो कि बहुत से अक़लमंदों को उन्हों ने तबाह कर दिया।

⑦ अपना राज़ किसी पर ज़ाहिर न करो कि हर ख़ैर ख़्वाह के लिये कोई ख़ैर ख़्वाह होता है।

⑧ इन्साफ करने वाले को चाहिये जो अपने लिये पसंद करे वही दूसरों के लिये भी पसंद करे।

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

☆☆☆

फज़ाइले अहले बैत

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम

الحمدلله رب العالمين والصلوة والسلام على سيدالمرسلين وعلىٰ اله الطيبين الطاهرين ـ فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم۔ اِنَّمَا يُرِيْدُاللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْراً۔ (پ:۲۲،ع:۱) صَدَقَ اللّٰه مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن على ذالك لمن الشاهدين والشاكرين والحمدلله رب العالمين۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख़्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुरर बार में दुरूदो-सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आज हम अहले बैत किराम अ़ला नबिय्यिना अलैहिमुस सलातु वस्सलाम के मुतअ़ल्लिक़ बयान करने की सआ़दत हासिल करना चाहते हैं। लिहाज़ा हम्द व सलात और आयते करीमा व दुरूद शरीफ पढ़ने की बरकत हासिल करने के बाद हम आप के सामने अहले बैत की शान में अअ़्ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िले बरैलवी अ़लैहिर रहमत वर्रिज़वान के भाई हज़रत हसन ख़ां साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी हुई एक मन्क़बत पेश करते हैं उसे समाअ़त फरमाएं मगर इस से पहले एक मर्तबा और बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें.........

किस ज़बान से हो मदह ख़्वाने अहले बैत
मदह गोए मुस्तफा है मदह ख़्वाने अहले बैत

उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां
"आयए ततहीर" से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

उन के घर में बे इजाज़त जिब्रील आते नहीं
कद्र वाले जानते हैं इज़्ज़ो-शाने अहले बैत

रज़्म का मैदां बना है जल्वागाहे हुस्नो-इश्क़
करबला में हो रहा है इम्तिहाने अहले बैत

फूल ज़ख़्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
ख़ून से सींचा गया है गुलिस्ताने अहले बैत

हूरें करती हैं उरूसाने शहादत का सिंगार
ख़ूब रू दुल्हा बना है हर जवाने अहले बैत

ऐ शबाबे फ़स्ले गुल यह चल गई कैसी हवा
कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अहले बैत

किस शक़ी है हुकूमत हाए क्या अंधेर है
दिन दहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत

फातिमा के लाडले का आख़िरी दीदार है
हश्र का हंगामा बरपा है मियाने अहले बैत

वक़्ते रुख़्सत कह रहा है ख़ाक में मिलता सुहाग
लो सलाम आख़िरी ऐ बेवग़ाने अहले बैत

घर लुटाना सर कटाना कोई तुझ से सीख जाए
जाने आलम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अहले बैत

बे अदब गुस्ताख़ फ़िरक़े को सुना दे ऐ 'हसन'
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

एक मर्तबा फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ेः اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد واله واصحابه وبارك وسلم *अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिवं व आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।*

बिरादराने मिल्लत! शुरू में जिस आयते करीमा के पढ़ने का शर्फ हम ने हासिल किया है यानी: إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا इस का तर्जमा यह है: ऐ अहले बैत यानी ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी दूर फरमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे।

इस आयते करीमा में सरकारे आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत किराम की अज़मत व फज़ीलत और उन के दर्जात और मरातिब का वाज़ेह तौर पर बयान है।

हज़रत इमाम अबू जाफर मुहम्मद बिन जरीर तबरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयते करीमा की तफ्सीर में फरमाते हैं कि ऐ आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला चाहता है कि तुम से बुरी बातों और फुहश चीज़ों को दूर रखे और तुम्हें गुनाहों के मैल कुचैल से साफ रखे। (बरकाते आले रसूल तर्जमा अश्शर्फुल मोवब्बद लिआलि मुहम्मद लिल-अल्लामा अन-नबहानी रहमतुल्लाहि अलैहि:31)

और सईद बिन क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्हों ने फरमाया कि इस आयते करीमा से अहले बैत मुराद हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने हर बुराई से पाक रखा और अपनी मख़्सूस रहमत से नवाज़े।

(बरकाते आले रसूल:31)

हज़रत अल्लामा इब्ने अतिया फरमाते हैं कि इस आयते मुबारका में जो रिज्स का लफ्ज़ है वह गुनाह, अज़ाब, निजासतों और नक़ाइस के मआनी पर बोला जाता है। तो अल्लाह तआला ने यह सारी चीज़ें अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत से दूर फरमा दीं।

(बरकाते आले रसूल:32)

और इमाम ज़ुहरी ने फरमाया कि रिज्स नापसंदीदा चीज़ को कहते हैं, चाहे वह अमल हो या ग़ैर अमल। तो मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला ने अहले बैत किराम से हर क़िस्म की ना पसंदीदा चीज़ें दूर फरमा दीं।

(बरकाते आले रसूल:32)

اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِيْ فَاَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وَطَهِّرْهُمْ تَطْهِيْرًا۔ यानी या इलाही! यह मेरे अहले बैत हैं, इन से हर नापाकी दूर फ़रमा और इन्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने चादर उठाई ताकि वह भी उन के साथ दाख़िल हो जायें तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के हाथ से चादर खींच ली, उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं भी आप लोगों के साथ हूं हुज़ूर ने फरमायाः اِنَّكِ مِنْ اَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلٰى خَيْرٍ यानी तुम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की अज़्वाज में से हो भलाई पर हो। (बरकाते आले रसूलः34)

जो लोग कि अहले बैत से पंजतन पाक मुराद लेते हैं वह अपने दावे की दलील में यह भी पेश करते हैं कि हसन और सहीह तरीक़ों से मरवी है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस आयते मुबारका के नाज़िल होने के बाद जब फज्र की नमाज़ के लिये तशरीफ ले जाते तो हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान के पास से गुज़रते हुए फरमातेः اَلصَّلٰوةُ يَا اَهْلَ الْبَيْتِ यानी ऐ अहले बैत! नमाज़ पढ़ो, फिर आयते करीमाः اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ आख़िर तक तिलावत फरमाते। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस आयत के नाज़िल होने के बाद चालीस रोज़ तक सुब्ह के वक़्त हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के दरवाज़े पर तशरीफ लाए और फरमायाः اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ۔ اَلصَّلٰوةُ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ यानी ऐ अहले बैत! तुम पर खुदाए तआला की सलामती रहमत और बरकत हो। नमाज़ पढ़ो तुम लोगों पर अल्लाह तआला रहम फरमाए। फिर आयते करीमाः اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ तिलवात फरमाई। और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हुज़ूर का यह तरीक़ा सात महीने तक जारी रहा और एक रिवायत में हैं कि आठ महीने तक। और यह हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम की जानिब से तसरीह हो गई कि आयते मुबारका में अहले बैत से मुराद पंजतन पाक हैं।

(बरकाते आले रसूल:35)

बहर हाल अहले बैत से उम्महातुल मोमिनीन मुराद लेने वाले और पंजतन पाक मुराद लेने वाले दोनों गिरोह के पास दलाइल हैं लिहाज़ा जुमहूर उलमाए उम्मत ने फरमाया कि आयते मुबारका में अहले बैत से उम्महातुल मोमिनीन और पंजतन पाक दोनों मुराद हैं। और यह उन्हों ने इस लिये फरमाया ताकि सारे दलाइल पर अमल हो जाए।

इस सिलसिले में हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सैय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह ने सवानेहे कर्बला में बहुत ख़ूब लिखा है, वह फरमाते हैं कि दौलत सराए अक़्दस में सुकूनत रखने वाले इस में दाख़िल हैं क्यों कि वहीं इसके मुख़ातब हैं, चूंकि अहले बैत नसब का मुराद होना मख़्फ़ी था इस लिये आं सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम ने अपने इस फेअ़्ले मुबारक से (यानी चादर में लिप्टा कर) बयान फरमा दिया कि मुराद अहले बैत से आम हैं, ख़्वाह बैते मस्कन के अहल हों जैसे कि अज़्वाज या बैते नसब के अहल बनी हाशिम व मुत्तलिब।

चुनांचे इमाम सअ़लबी ने फरमाया कि बाज़ हज़रात ने कहा अहले बैत से मुराद बनी हाशिम हैं। इस लिये कि बैत से मुराद नसब है। लिहाज़ा हज़रत अब्बास, हुज़ूर के दूसरे मुसलमान चचा और चचा ज़ाद भाई सब अहले बैत में से होंगे। यह हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का क़ौल है। जैसा कि तफ्सीरे ख़ाज़िन वग़ैरा में है।

(बरकाते आले रसूल:41)

और अल्लामा ख़तीब ने अपनी तफ्सीर में इस से भी ज़्यादा आम फरमाया। वह लिखते हैं कि अहले बैत में इख़्तिलाफ़ है और बेहतर वह है जो इमाम बक़ाई ने फरमाया कि अहले बैत वह सब हज़रात हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम से ख़ास वाबस्तगी

रखते हैं। मर्द, औरतें अज़्वाजे मुतह्हरात, कनीज़ें और क़रीबी रिश्तेदार। इन में से जो शख़्स ज़्यादा क़रीब होगा और रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ख़ास तअल्लुक़ रखने वाला होगा, वह मुराद होने के ज़्यादा लाइक़ है। (बरकाते आले रसूल:41)

हज़रत इमाम बक़ाई के क़ौल की ताईद हदीस शरीफ से भी होती है कि तबरानी वग़ैरा कई मोहद्दिसीन की रिवायत में यूं हैं कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने चादर उठा कर अपना सर अन्दर दाख़िल कर लिया और अर्ज़ किया या रसूल्लाह! मैं भी आप लोगों के साथ हूं तो हुज़ूर ने दो मर्तबा फरमाया: اِنَّكِ عَلٰى خَيْرٍ यानी तुम भलाई पर हो। (बरकाते आले रसूल:38)

और बैहक़ी वग़ैरा की रिवायत में है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फातिमा और हसनैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को अपनी काली कमली में लिप्टाया और आयते तत्हीर तिलावत फरमाई तो हज़रत वासिला बिन अल-अस्क़अ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अस्हाबे सुफ्फा में से हैं, उन्हों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं भी आप के अहल में से हूं तो हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: وَاَنْتَ مِنْ اَهْلِىْ यानी हां तुम भी मेरे अहल में से हो। और एक रिवायत में है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ यानी सलमान हम में से अहले बैत में से हैं। (बरकाते आले रसूल:42)

इसी लिये इमामुल आरिफीन शेख़े अक्बर मुहीउद्दीन बिन अरबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फुतूहाते मक्किया के उन्नीसवें बाब में तहरीर फरमाते हैं कि क़ियामत तक सादाते किराम, हज़रत फातिमतुज़् ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद और जो अहले बैत में से हैं मसलन हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब इस आयत के हुक्म में दाख़िल हैं।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं कि

शेखे अक्बर सूफिया के इमाम हैं, उन का इरशाद हुज्जत की हैसियत रखता है। (अशरफुल मोअब्बद लिआलि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम:13)

एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से रहमते आलम नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूदो-सलाम का नज़्राना और हदिया पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی وآلہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सारे अहले बैत चाहे अहले बैत नसब हों या अहले बैत सुक्ना या अहले बैत विलादत या और किसी और को अहले बैत में शामिल कर लिया गया हो सब इज़्ज़त व अज़्मत वाले हैं लेकिन हुज़ूर जिन को हर ख़ास मौक़ा पर अलाहेदा करके फरमाते हैं वह यही चार नुफूसे कुदसिया हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन, और हज़रत हुसैन हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम इसी लिये अहले बैत का लफ्ज़ इन्हीं चार हज़रात के लिये शाए व मश्हूर है। अश्अतुल लम्आत:4/681 में है: *"इत्लाके अहले बैत बरीं चहार तने पाक शाए व मश्हूर अस्त"*।

अब आप हज़रात एक आयते करीमा और मुलाहेज़ा फरमा लें जिस से अहले बैते किराम की फज़ीलत व मंज़िलत ज़ाहिर होती है। पारा3 रुकूअ् 13 में है: فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ यानी ऐ महबूब! फिर जो लोग तुम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में झगड़ा करें बाद इसके कि तुम्हारे पास उस का इल्म आ चुका है तो उन से फरमा दो कि आओ हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों और तुम्हारी औरतों को और अपनी जांनों और तुम्हारी जानों,को फिर हम मुबाहला करें यानी गिड़ गिड़ा कर दुआ मांगें तो झूठों पर अल्लाह की लअ्नत डालें।

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल यह है कि नज्रान के ईसाइयों का एक वफ्द रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम से मुनाज़रा करने के लिये मदीना तैयिबा आया और हुज़ूर से कहा कि आप गुमान करते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे हैं, आप ने फरमाया हां, बेशक वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल और उस के कलिमा हैं जो कुंवारी मरयम की तरफ इल्क़ा किये गए, यह सुन कर ईसाई बहुत गुस्से में हुए और कहने लगे कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम)! क्या आप ने कभी बे बाप इंसान देखा है? इस से उन का मतलब यह था कि हज़रत ईसा अल्लाह के बेटे हैं (मआ़ज़ल्लाह) हुज़ूर अ़लैहिस् सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हज़रत ईसा तो सिर्फ बग़ैर बाप ही के पैदा किये गए और हज़रत आदम अ़लैहिस् सलातु वस्सलाम तो मां और बाप दोनों के बग़ैर पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का बन्दा मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम को अल्लाह का बन्दा मानने में क्या तअ़ज्जुब है?

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम ने वाज़ेह दलील के साथ हक़ को बयान फरमाया मगर ईसाई बराबर झगड़ते रहे और अपनी मुआ़निदाना रविश से बाज़ न आए तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह आयते करीमा नाज़िल फरमाई और नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम को हुक्म फरमाया कि ईसाइयों को मुबाहला की दावत दो।

जब रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फरमान के मुताबिक़ नज्रान के ईसाइयों को मुबाहला की दावत दी और आयते करीमा पढ़ कर सुनाई तो ईसाई कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें फिर कल आप को जवाब देंगे, जब वह लोग जमा हुए तो उन्हों ने अपने सब से बड़े पादरी और साहिबुर राय शख़्स आक़िब से कहा कि ऐ अब्दुल मसीह! इस मामले में आप की क्या राय है? उस ने कहा ऐ जमाअ़ते नसारा! तुम पहचान चुके हो

कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम) नबीए मुर्सल ज़रूर हैं तो अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे, अब अगर ईसाइयत पर क़ाइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ दो और घर को लौट चलो।

यह मश्वरा करने के बाद ईसाई हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि हुज़ूर की गोद में इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में इमाम हसन का हाथ है और हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा हुज़ूर के पीछे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम इन लोगों से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना, नज्रान के सब से बड़े पादरी अब्दुल मसीह ने जब इन हज़रात को देखा तो कहने लगा ऐ जमाअ़ते नसारा! اِنِّی لَاَرٰی وُجُوْھًا لَوْسَاَلُوا اللّٰہَ اَنْ یُّزِیْلَ جَبَلًا مِّنْ مَکَانِہٖ لَاَزَالَہٗ यानी बेशक मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर यह लोग अल्लाह तआ़ला से पहाड़ को हटाने की दुआ़ करें तो अल्लाह तआ़ला पहाड़ को उस की जगह से हटा दे। (तफ्सीरे ख़ाज़िन:1/360)

फिर पादरी ने कहा कि अगर इन से मुबाहला करोगे तो हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा।

ईसाइयों ने पादरी की बात मान ली और जिज़्या देना मन्ज़ूर कर लिया मगर मुबाहला के लिये हरगिज़ तैयार न हुए। रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की कि जिस के क़ब्ज़ए क़ुद्रत में मेरी जान है कि नज्रान वालों पर अज़ाब बिल्कुल क़रीब आ चुका था, अगर वह हम से मुबाहला करते तो बन्दरों और सुवरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और अज़ाबे इलाही की आग से जंगल जल जाते। नज्रान और वहां के रहने वाले चरिन्द व परिन्द तक नेस्त व नाबूद हो जाते और एक साल की मुद्दत में तमाम रूए ज़मीन के ईसाई हलाक व बरबाद हो जाते। (तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ग़ौर कीजिये कि फ़रमाने ख़ुदावन्दी के मुताबिक़ ईसाइयों से तय

यह हुआ था कि तुम अपने बेटों को लेकर निकलो और हम अपने बेटों को। तुम अपनी औरतों को लेकर मैदान में आओ और हम अपनी औरतों को और तुम खुद भी आओ और हम भी आएं। इस मौके पर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पूरी दुनियाए इस्लाम में से जिन पाक और बरगुज़ीदा हस्तियों का इन्तिख़ाब फरमाया वह हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के बारे में इरशाद फरमायाः هٰذَانِ اِبْنَایَ यानी यह दोनों मेरे बेटे हैं। (मिश्कात शरीफ:570)

यही वजह है कि जब मुबाहला के लिये अपने बेटों को लेकर मैदान में निकलना हुआ तो हसनैन करीमैन को लेकर आए और इस सबब से हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा आज तक इब्ने रसूलुल्लाह कहे जाते हैं और कियामत तक ऐसे ही कहे जायेंगे।

मुस्लिम शरीफ की हदीस है हज़रत सअ़द बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अशरए मुबश्शरा में हैं उन का बयान है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब इन हज़रात को हमराह लेकर मुबाहला के लिये मकान से बाहर निकले तो यह फरमायाः اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَیْتِیْ यानी ऐ अल्लाह! यह लोग मेरे अहले बैत हैं।

(मिश्कात शरीफ:568)

एक मर्तबा फिर आप हज़रात निहायत खुलूस व मुहब्बत के साथ सरककारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम का नज़्राना पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

अहले बैते किराम की शान में और भी आयाते मुबारका नाज़िल हुई हैं। तफ्सीरे ख़ाज़िन और मआलिमुत तंज़ील वग़ैरा में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा बीमार हुए तो सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम और सहाबए किराम अ़यादत के लिये गए, किसी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को यह मश्वरा दिया कि आप नज़्र मानें, अगर ख़ुदाए तआ़ला उन को शिफा अता फरमाए तो नज़्र पूरी कर दें। हज़रत अली ने तीन रोज़े रखने की मिन्नत मानी। इसी तरह हज़रत सैय्यिदा फातिमा और आप की कनीज़ फिज़्ज़ा ने भी तीन-तीन रोज़े रखने की नज़्र मानी, रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम। ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने हज़राते हसनैन को शिफा अता फरमाई, अब नज़्र पूरी करने का वक़्त आया, सब लोगों ने रोज़े रखे, मगर काशानए हैदरी में कोई चीज़ रोज़ा इफ्तार करने के लिये न थी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु एक यहूदी के यहां से थोड़ा जौ क़र्ज़ के तौर पर बिलऐवज़ उज्रत लाए, जौ का एक तिहाई हिस्सा पीसा गया और शाम के वक़्त रोटियां तैयार की गईं। जब इफ्तार का वक़्त आया और रोटियां खाने के लिये सामने रखी गईं तो अचानक दरवाज़े पर एक शख़्स ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते रसूलुल्लाह! मैं मिस्कीन हूं, भूका हूं, कुछ अल्लाह के नाम पर दीजिये। तो सब रोटियां उसे दे दी गईं और ख़ुद सादा पानी पी-पी कर सब लोगों ने रोज़ा इफ्तार किया। फिर दूसरे दिन एक तिहाई जौ की रोटियां बनाई गईं और जब अहले बैते किराम इफ्तार के लिये बैठे तो फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई, आवाज़ आई कि ऐ रसूलुल्लाह के घराने वालो! मैं भूका हूं, यतीम हूं तो दूसरे रोज़ भी सब रोटियां उठा कर उसे दे दी गईं और सिर्फ पानी से रोज़ा

इफ्तार कर लिया गया। तीसरे दिन फिर रोज़ा रखा गया और मा बक़िया तिहाई जौ की रोटियां बनाई गईं और जब इफ्तार के वक़्त सब लोग खाने के लिये बैठे तो फिर एक साइल ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते किराम! मैं असीर हूं, भूका हूं, तो तीसरे दिन भी जब कुल रोटियां उसे दे दी गईं और सादा पानी पी-पी कर रोज़ा इफ्तार किया गया तो अहले बैते रसूलुल्लाह की शान में यह आयाते मुबारका नाज़िल हुईं: وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا यानी और वह लोग खाना खिलाते हैं उस की मुहब्बत पर मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को। और उन से कहते हैं कि हम तुम्हें अल्लाह की रज़ा व खुश्नूदी के लिये खिलाते हैं। न हम तुम से कोई बदला चाहते हैं और न शुक्रिया। (पारा:29, रुकूअ़:18)

अल्लाह! अल्लाह! यह है सख़ावत अहले बैते रसूलुल्लाह की जिस की मिसाल दुनिया में नहीं मिलती कि तीन दिन मुसलसल सिर्फ पानी पी-पी कर रोज़ा इफ्तार करते हैं मगर साइलों को अपने दरवाज़े से महरूम नहीं फरमाते और उन पर यह बात भी वाज़ेह कर देते हैं कि इस भलाई का वह उन से कोई बदला नहीं तलब करेंगे बल्कि वह यह भी नहीं चाहते कि उन का शुक्रिया अदा किया जाए और लोगों के सामने उन की सख़ावत का चर्चा किया जाए इस लिये कि यह काम उन्हों ने ख़ालिसन लि-वज्हिल्लाह सिर्फ अपने रब्बे करीम की रज़ा और खुश्नूदी हासिल करने के लिये किया है।

अहले बैत और अहादीसे करीमा

अहले बैते किराम की तारीफ व तौसीफ और उन की मदह व सताइश में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की बहुत सी अहादीस वारिद हैं, मुस्लिम शरीफ में है, सहाबिए रसूल हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि एक रोज़ रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने मक्का मुअज़्ज़मा

और मदीना तैय्यिबा के दरमियान (मकामे जोहफा में) गदीरे ख़ुम के पास खड़े होकर खुत्बा फरमाया तो पहले आप ने अल्लाह तआला की हम्दो-सना बयान की फिर आप ने हम लोगों को वअ़ज़ो-नसीहत फरमाई उस के बाद आप ने इरशाद फरमाया। (अश्अ़तुल लमूआत:4/685 में है कि *ग़दीर हौज़ आब व ख़ुम नामे आं मौज़अ़ अस्त।*)

ऐ लोगो! मैं इंसान हूं, क़रीब है कि मेरे रब का भेजा हुआ फिरिश्ता यानी मलकुल मौत मेरे पास आए तो मैं खुदाए तआ़ला के हुक्म को कबूल करूं وَاَنَا تَارِكٌ فِيْكُمُ الثَّقَلَيْنِ और मैं तुम में दो नफीस और गरां क़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूं اَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللّٰهِ فِيْهِ الْهُدٰى وَالنُّوْرُ उन में से पहली चीज़ अल्लाह की किताब यानी कुरआन मजीद है जिस में हिदायत और नूर है तो खुदाए तआ़ला की किताब पर अमल करो और उसे मज़बूती से थाम लो।

रावीए हदीस हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने कुरआने पाक के बारे में लोगों को उभारा और रग़बत दिलाई फिर उस के बाद आप ने इरशाद फरमाया: وَاَهْلُ بَيْتِيْ اُذَكِّرُكُمُ اللّٰهَ فِيْ اَهْلِ بَيْتِيْ اُذَكِّرُكُمُ اللّٰهَ فِيْ اَهْلِ بَيْتِيْ यानी और दूसरी गरां क़द्र चीज़ मेरे अहले बैत हैं, मैं तुम्हें अहले बैत के बारे में अल्लाह की याद दिलाता हूं और उस से डराता हूं। और इस जुम्ला को हुज़ूर ने दो बार फरमाया। मतलब यह है कि मैं ताकीद के साथ तुम लोगों को वसिय्यत करता हूं कि मेरे अहले बैत के बारे में अल्लाह तआ़ला से डरो उन के हक़ की अदाइगी में हरगिज़ कोताही न करो। (मिश्कात शरीफ:568)

और तिर्मिज़ी शरीफ में है हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने हज्जतुल विदाअ़ में अरफा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस हाल में देखा कि आप ऊंटनी पर सवार थे और खुत्बा दे रहे थे, मैं ने सुना आप यह फ़रमा रहे थे: يٰاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ تَرَكْتُ فِيْكُمْ مَا اِنْ اَخَذْتُمْ بِهٖ لَنْ تَضِلُّوْا كِتَابَ اللّٰهِ وَعِتْرَتِيْ اَهْلَ بَيْتِيْ यानी ऐ लोगो! मैं

ने तुम्हारे दरमियान वह चीज़ छोड़ी है कि अगर तुम उस को पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और वह चीज़ एक तो अल्लाह की किताब है और दूसरे मेरी औलाद व ज़ुर्रियत मेरे अहले बैत।

(मिश्कात शरीफ़:569)

और तबरानी शरीफ में रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया: لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ نَّفْسِهٖ وَتَكُوْنَ عِتْرَتِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهٖ وَاَهْلِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ اَهْلِهٖ وَذَاتِىْ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ ذَاتِهٖ यानी कोई बन्दा मोमिने कामिल नहीं हो सकता जब तक कि मुझे अपनी जान से, मेरी औलाद (हसनैन वग़ैरा) को अपनी औलाद से, मेरे अहल को अपने अहल से और मेरी ज़ात को अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न रखे। (अश्शर्फ़ुल मोअब्बद:85)

और इमामे अहमद रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा के हाथों को पकड़ कर फरमाया: مَنْ اَحَبَّنِىْ وَاَحَبَّ هٰذَيْنِ وَاُمَّهُمَا وَاَبَاهُمَا كَانَ مَعِىْ فِىْ دَرَجَتِىْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ यानी जिस ने मुझ से मुहब्बत रखी और इन दोनों से और इन के वालिदैन से मुहब्बत रखी तो वह क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दर्जा में होगा। (अश्शर्फ़ुल मोअब्बद:86)

यानी पंजतन पाक से मुहब्बत रखने वाला बसूरते ख़िदमतगार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के दर्जा में दिखाई देगा, यह मतलब नहीं कि उसका मक़ाम भी वही होगा।

और हज़रत अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कअ़बा शरीफ का दरवाज़ा पकड़ कर फरमाया कि मैं ने नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम को फरमाते हुए यह सुना है कि: اَلَا اِنَّ مَثَلَ اَهْلِ بَيْتِىْ فِيْكُمْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَنْ رَكِبَهَا نَجَا وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هَلَكَ यानी आगाह हो जाओ कि मेरे अहले बैत तुम लोगों के लिये नूह (अलैहिस्सलाम) की कश्ती के मानिन्द हैं, जो शख़्स कश्ती में सवार हुआ उस ने नजात पाई और जो कश्ती में सवार होने से पीछे रह गया वह हलाक हुआ।

(मिश्कात शरीफ़:573)

और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः اَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ فَبِاَيِّهِمْ اِقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ यानी मेरे सहाबा सितारों के मानिन्द हैं, तो उन में से तुम जिस की इक़्तिदा करोगे हिदायत पाओगे। (मिश्कात शरीफ़:554)

हज़रत अल्लामा फख़्रुद्दीन राज़ी अ़लैहिर रहमत वर-रिज़्वान फरमाते हैं कि बिहम्-दिल्लाहि तआ़ला हम अहले सुन्नत व जमाअ़त मुहब्बते अहले बैत की कश्ती पर सवार हैं और हिदायत के चमकते हुए सितारे सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अज्मईन से हिदायत पाए। लिहाज़ा हम लोग क़ियामत की हवल नाकियों से और जहन्नम के अज़ाब से महफूज़ रहेंगे। (मिर्क़ात शरह मिश्कात शरीफ़:5/610)

मतलब यह है कि जो लोग मुहब्बते अहले बैत की कश्ती में सवार नहीं हुए जैसे ख़ारजी कि उन्हों ने मुहब्बत के बजाए अहले बैत से दुश्मनी की तो वह हलाक हो गए और राफ़ज़ी जो उस कश्ती में सवार तो हुए मगर हिदायत के सितारे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम से हिदायत नहीं हासिल किये तो वह भी कुफ्र व ज़लालत (गुमराही) की तारीकी में खो गए।

और हदीसे सहीह में है जिसे बहुत से अहले सुनन ने रिवायत किया है कि जब अबू लहब की साहिब ज़ादी मक्का मुअ़ज़्ज़मा से हिज्रत करके मदीना तैयिबा तशरीफ लाई तो कुछ लोगों ने उन से कहा कि तुम्हारी हिज्रत तुम्हें बेनयाज़ नहीं करेगी इस लिये कि तुम जहन्नम के ईंधन की बेटी हो, उन्हों ने यह बात रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से बयान की तो आप बहुत सख़्त नाराज़ हुए फिर मिम्बर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और फरमायाः مَابَالُ اَقْوَامٍ يُؤْذُوْنَنِیْ فِیْ نَسَبِیْ وَذَوِیْ رَحِمِیْ اَلَا وَمَنْ اٰذٰی نَسَبِیْ وَذَوِیْ رَحِمِیْ فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰهَ यानी उन लोगों का क्या हाल है जो मुझे मेरे नसब और मेरे रिश्तेदारों के बारे में अज़िय्यत (तक्लीफ) देते हैं, ख़बरदार! जिस ने मेरे नसब और रिश्तेदारों

को अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह तआला को अज़िय्यत दी। (बरकाते आले रसूल:257)

और तबरानी व हाकिम हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि रसले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: لَوْ اَنَّ رَجُلًا صَعِدَ بَيْنَ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ فَصَلّٰى وَصَامَ ثُمَّ مَاتَ وَهُوَ مُبْغِضٌ لِاَهْلِ بَيْتِ مُحَمَّدٍ (صلّى الله تعالى عليه وسلّم) دَخَلَ النَّارَ यानी अगर कोई शख़्स बैतुल्लाह शरीफ के एक गोशे और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान चला जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे फिर वह अहले बैत की दुश्मनी पर मर जाए तो वह जहन्नम में जाएगा। (अश्शर्फुल मोअब्बद:92)

अहले बैत की दुश्मनी से खुदा की पनाह कि बैतुल्लाह शरीफ के साए में मक़ामे इब्राहीम जैसी मुतबर्रक जगह पर नमाज़ें पढ़ने वाला और रोज़े रखने वाला भी अगर अहले बैते रसूलुल्लाह से दुश्मनी रखता है तो वह भी जहन्नम का ईंधन बनेगा और कोई भी नेक अमल उसे खुदा के अज़ाब से नहीं बचा सकेगा। *अल्-इयाज़ु बिल्लाह*

एक मर्तबा फिर आप हज़रात निहायत अक़ीदत व मुहब्बत के साथ आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब व अहले बैत पर दुरूदो-सलाम की डालियां निछावर करें

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

अहले बैत और अकाबिरीन सलफ व ख़लफ के इरशादात

अकाबिरीन सलफ व ख़लफ रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन अहले बैत रसूल की तारीफ व तौसीफ में हमेशा रुतबुल लिसान रहे, लोगों को उन से मुहब्बत रखने की ताकीद फरमाते रहे और खुद उन से बेइन्तिहा मुहब्बत रखते थे।

इस उम्मत के सैयिदुल अकाबिरीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फरमाते हैं कि: صِلَةُ قَرَابَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ صِلَةِ قَرَابَتِيْ यानी रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम के रिश्तेदारों की ख़िदमत करना मुझे अपने रिश्ते दारों की सिला रहमी से ज़्यादा महबूब है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:87)

और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जो जलीलुल क़द्र सहाबी और साबिक़ीनल अव्वलीन में से हैं वह फरमाते हैं: حُبُّ اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللّٰہ تعالی علیہ وسلّم خَيْرٌ مِّنْ عِبَادَةِ سَنَةٍ यानी आले रसूल की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:85)

सहाबिए रसूल के इस क़ौल से मालूम हुआ कि जो शख़्स पूरी ज़िंदगी अहले बैत की मुहब्बत में गुज़ारेगा वह क़ियामत के दिन अज़ीम ख़ूबियों वाला होगा।

हज़रत अल्लामा यूसुफ इस्माईल बिन नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह महज़ बिन हसन बिन मुसन्ना बिन हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम की हिमायत की और लोगों को फत्वा दिया कि लाज़मी तौर पर उन के साथ और उन के भाई मुहम्मद के साथ रहें। कहते हैं कि इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की क़ैदो-बन्द अस्ल में इसी बिना पर थी अगर्चे ज़ाहिर में सबब यह था कि उन्हों ने क़ाज़ी का मन्सब क़बूल करने से इनकार कर दिया था। (अश्शर्फुल मोअब्बद:88)

और रिवायत है कि जाफर बिन सुलैमान ने जब इमामे मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को कोड़े लगवाए और जो सज़ा देनी थी दी और उन्हें बेहोशी की हालत में उठा कर ले जाया गया, लोग आप के पास आए, जब इफाक़ा हुआ तो फरमाया: मैं आप लोगों को गवाह बनाता हूं कि मैं ने मारने वाले को माफ कर दिया। बाद में आप से इस का सबब पूछा गया, तो फरमाया मुझे ख़ौफ है कि मरने के बाद बारगाहे रिसालत में हाज़िरी होगी तो मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम से हया आएगी कि मेरी वजह से आप की आल के एक फर्द से मुवाख़ज़ा हो।

कहते हैं कि ख़लीफ़ा मन्सूर ने हज़रत इमामे मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से कहा कि मैं जाफर से आप का बदला दिलवाता हूं। तो इमाम ने फरमाया ख़ुदा की पनाह, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। ख़ुदा की क़सम जब चाबुक मेरे जिस्म से उठता था तो मैं उन्हें नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की वजह से माफ कर देता था। (बरकाते आले रसूल:262)

और हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमामे शाफई रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की आले पाक से बहुत मुहब्बत करने के सबब इस हाल में बग़दाद में ले जाए गए कि उन के पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं। बल्कि अहले बैते रसूलुल्लाह से उन की मुहब्बत यहां तक पहुंची कि कुछ लोगों ने उन्हें राफज़ी कह दिया तो आप ने उन को जवाब देते हुए फरमायाः

لَوْكَانَ رِفْضًا حُبُّ اٰلِ مُحَمَّدٍ
فَلْيَشْهَدِ الثَّقَلَانِ اَنِّیْ رَافِضِیْ

यानी अगर आले रसूल की मुहब्बत ही का नाम राफज़ी होता है तो जिन्न व इंसान गवाह हो जाएं कि इस मअ़्ना में बेशक मैं "राफज़ी" हूं।

और जोशे अक़ीदत व जज़्बए मुहब्बत में अहले बैते रिसालत को मुख़ातब करते हुए फरमाते हैं:

يَـااَهْلَ بَيْـتِ رَسُوْلِ اللّٰهِ حُبُّكُمْ
فَرْضٌ مِّنَ اللّٰهِ فِی الْقُرْاٰنِ اَنْزَلَهٗ

यानी ऐ रसूलुल्लाह के अहले बैत! आप लोगों की मुहब्बत अल्लाह तआ़ला की तरफ से फर्ज़ है और यह हुक्म ख़ुदाए ज़ुल जलाल ने क़ुरआन मजीद में नाज़िल फरमा दिया है। और वह आयते करीमा यह है: قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰى यानी ऐ महबूब! तुम फरमाओ कि मैं इस पर तुम लोगों से कुछ उज्रत नहीं मांगता मगर क़राबत की

मुहब्बत। (पारा:25,रुकूअ्:3)

आले रसूल की अज़मत व बुज़ुर्गी ज़ाहिर करते हुए इमामे शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं:

يَكْفِيكُمْ مِنْ عَظِيْمِ الْفَخْرِ اَنَّكُمْ
مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْكُمْ لَا صَلَاةَ لَهُ

यानी ऐ आले रसूल! आप लोगों के लिये यह अज़ीम फख़्र काफी है कि जो शख़्स आप पर दुरूद नहीं भेजता उस की नमाज़ नहीं होती।

अल्लामा सब्बान ने फरमाया कि मतलब यह है कि आले रसूल पर दुरूद न पढ़ने वाले की नमाज़ कामिल नहीं होती और इमाम शाफई के मरजूह कौल के मुताबिक़ नमाज़ सहीह नहीं होती। (अश्शर्फुल मोअब्बद:88)

और हज़रत अब्दुल वहाब शअ़रानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह सुनने कुबरा में फरमाते हैं कि मुझ पर अल्लाह तआ़ला के ऐहसानात में से एक यह है कि मैं सादाते किराम की बेहद ताज़ीम करता हूं, अगर्चे लोग उन के नसब में तअ़न करते हों। मैं इस ताज़ीम को अपने ऊपर हक़ तसव्वुर करता हूं। इसी तरह उलमा और औलिया की औलाद की ताज़ीम शरई तरीक़े से करता हूं। फिर मैं सादात की कम अज़ कम इतनी ताज़ीम व तक्रीम करता हूं जितनी वालिए मिस्र के किसी भी नाइब या लश्कर के क़ाज़ी की हो सकती है।

सादाते किराम के आदाब में से यह है कि हम उनसे उम्दा बिस्तर, अअ़्ला मर्तबा और बेहतर तरीक़े पर न बैठें। उन की मुतल्लक़ा या बेवा औरत से निकाह न करें। इसी तरह किसी सैय्यद ज़ादी से निकाह न करें, हां अगर हम में से कोई शख़्स यह समझता है कि हम उन की ताज़ीम का हक़्क़े वाजिब अदा कर सकते हैं और उन की मरज़ी के मुताबिक़ अमल कर सकते हैं तो फिर उन से निकाह कर सकता है।

(बरकाते आले रसूल:253)

और यही हज़रत अल्लामा अब्दुल वहाब शअ़रानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु *"अल्-बहरुल् मौरूद फिल्-मवासीकि वल्-उहूद"* में तहरीर

फ़रमाते हैं। हम से अहेद लिया गया है कि हम हरगिज़ सैय्यद ज़ादी से निकाह न करें मगर उस वक़्त कि हम अपने आप को उन का ख़ादिम तसव्वुर करें, क्योंकि वह नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की लख़्ते जिगर हैं, जो शख़्स अपने आप को उन का गुलाम तसव्वुर करे और यह अक़ीदा रखे कि अगर मैं उन की नाफ़रमानी करूंगा तो मैं नाफ़रमान गुलाम और गुनहगार हूंगा। तो वह निकाह करे वरना उसे लाइक़ नहीं है। जो शख़्स तबर्रुक के लिये उन से निकाह करे उसे कहा जाएगा कि सलामती ग़नीमत से मुक़द्दम है यानी यह ख़तरा बहर हाल बाक़ी रहेगा कि मुम्किन है उन की ताज़ीम कमा हक़्क़हू अदा न हो सके इस लिये बचना ही बेहतर है।

रही बरकत की बात तो वह निकाह किये बग़ैर उनकी ख़िदमत करने से भी हासिल हो सकती है। और फ़रमाते हैं कि हम से अहेद लिया गया है कि अगर हमारी बेटी या बहन का जहेज़ बेशुमार हो तो कोई ऐसे सैय्यद उस के निकाह का पैग़ाम दें जिन के पास उसके उन के महर और सुब्ह व शाम खाने के अलावा कुछ न हो तो हम उन से निकाह कर दें। और उन्हें मायूस न करें, क्यों कि फ़क्र ऐब नहीं है जिस की बिना पर पैग़ामे निकाह रद कर दिया जाए बल्कि यह तो शराफ़त है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम इस की आरज़ू की है बल्कि अपने रब्बे करीम जल्ला मजदुहू से दुआ की है कि आप को क़ियामत के दिन फ़ुक़रा व मसाकीन के गिरोह में उठाए। और दुआ की है कि ऐ अल्लाह! मेरे अहल का कूत बना यानी इतना खाना अता फ़रमा कि सुब्ह व शाम उस से कुछ न बचे।

तो जिस चीज़ को नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने अपनी औलाद और अहले बैत के लिये पसंद फ़रमाया वह इन्तिहाई फ़ज़ीलत वाली है। लिहाज़ा जो शख़्स नादार सैय्यद को अपनी बेटी का रिश्ता देने से इनकार करे उस पर ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल की नाराज़गी का ख़ौफ़ है।

और अल्लामा शअ़रानी फरमाते हैं कि इसी तरह हम से अहेद लिया गया है कि जब हम रास्ते में किसी सैय्यद या सैय्यदा के पास से गुज़रें जो लोगों से सवाल कर रहे हों तो हम उन्हें अपनी ताक़त के मुताबिक़ 'पैसे, खाना या कपड़े पेश करें। या उन से अर्ज़ करें कि हमारे पास क़ियाम कीजिये ताकि हस्बे इस्तेताअ़त आप की ज़रूरियाते शरइय्या पूरी की जाएं। जो शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का दावा रखता है उस के लिये यह बात किस क़द्र बुरी है कि वह आप की औलाद के पास से गुज़रे और वह रास्ते में सवाल कर रहे हों मगर यह शख़्स उन्हें कुछ पेश न करे।

(बरकाते आले रसूलः256)

एक मर्तबा आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैत पर दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یارسول اللہ

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

ख़ुसूसियात अहले बैत

अब आप हज़रात अहले बैते रसूलुल्लाह की वह ख़ुसूसियात मुलाहेज़ा फरमाएं जो उन के अलावा किसी दूसरे में हरगिज़ नहीं पाई जाती हैं।

पहली ख़ुसूसियत

पहली ख़ुसूसियत है ज़कात का हराम होना। यानी अहले बैते किराम को ज़कात और सद्क़ए वाजिबा देना और लेना हराम है, अगर्चे वह मालिके निसाब न हों। मुस्लिम शरीफ में हज़रत मुत्तलिब बिन रबीआ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إِنَّ هٰذِهِ الصَّدَقَاتِ إِنَّمَا هِيَ أَوْسَاخُ النَّاسِ وَإِنَّهَا لَا تَحِلُّ لِمُحَمَّدٍ وَلَا لِآلِ مُحَمَّدٍ यानी ज़कात के माल लोगों के मैल हैं और वह मुहम्मद और आले मुहम्मद बनी हाशिम के लिये जाइज़ नहीं। *सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम*। (मिश्कात शरीफ:161)

हुज़ूर के इस कलाम में बेहतरीन तश्बीह है कि आप ने ज़कात को *औसाखुन नास* यानी लोगों की मैल इस लिये फरमाया कि वह उन की आलूदगियों को पाक करती है और उन के अम्वाल व नुफूस को पाक करती है। खुदावन्दे कुद्दूस का इरशाद है: خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا यानी ऐ महबूब! उन के माल में से ज़कात लो, उस ज़कात के ज़रिये उन को पाक व साफ करो। (पारा:11,रुकूअ:2)

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि एक दिन हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ज़कात की एक खुजूर उठाई और मुंह में रख ली तो रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: كَخْ كَخْ यानी छी छी, इसे फेंक दो, इस के बाद फरमाया: أَمَا شَعَرْتَ أَنَّا لَا نَأْكُلُ الصَّدَقَةَ क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हम लोग ज़कात नहीं खाया करते।

(मिश्कात शरीफ:161)

और वलीए कबीर अब्दुल वहाब शअ्रानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु "अल्-बहरुल् मौरूद" में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत फज़्ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि मुझे ज़कात वुसूल करने पर मुक़र्रर फरमा दें तो हुज़ूर ने उन से फरमाया: مَعَاذَ اللّٰهِ أَنْ أَسْتَعْمِلَكَ عَلَى غُسَالَةِ ذُنُوبِ النَّاسِ यानी खुदा की पनाह कि मैं तुम्हें लोगों के गुनाहों के धोवन वसूल करने पर मुक़र्रर कर दूं। (अश्शर्फुल मोअब्बद:35)

और तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत अबू राफेअ् रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ने बनू मख़्ज़ूम के एक शख़्स को ज़कात वसूल करने के लिये मुक़र्रर फ़रमा के भेजा तो उन्हों ने अबू राफ़ेअ् से कहा कि आप भी मेरे साथ चलें ताकि आप को भी ज़कात में से कुछ हिस्सा हक़्कुल मेहनत मिल जाए। हज़रत अबू राफ़ेअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब तक मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क ख़िदमत में हाज़िर होकर उन से दरियाफ़्त न कर लूंगा आप के हम्राह इस काम के लिये न जाऊंगा।

इस गुफ़्तगू के बाद हज़रत अबू राफ़ेअ् रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उस शख़्स के साथ ज़कात वसूल करने के लिये जाने की इजाज़त तलब की तो हुज़ूर ने फरमायाः إنّ الصدقة لا تحل لنا وإنّ موالي القوم من أنفسهم यानी ज़कात हम बनी हाशिम के लिये जाइज़ नहीं। और बनी हाशिम का आज़ाद करदा गुलाम बनी हाशिम ही हुक्म में हैं। जब हमारे लिये ज़कात जाइज़ नहीं तो हमारे आज़ाद करदा गुलाम के लिये भी जाइज़ नहीं। (मिश्कात शरीफ़:161)

इसी लिय फ़िक़्हे हनफी की किताबों में है कि बनी हाशिम को ज़कात नहीं दे सकते। न दूसरा कोई शख़्स उन्हें दे सकता है, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को, यहां तक कि बनी हाशिम के आज़ाद किये हुए गुलाम को भी नहीं दे सकते। बनी हाशिम से मुराद हैं हज़रत अली, हज़रत जाफर, हज़रत अक़ील और हज़रत अब्बास व हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की औलाद। यानी इन सब की औलाद को ज़कात और सदक़ए वाजिबा देना जाइज़ नहीं। अल्बत्ता सदक़ए नाफ़िला और औक़ाफ की आमदनी इन को देना जाइज़ है।

दूसरी खुसूसियत

दूसरी खुसूसियत यह है कि अहले बैत हसब व नसब में सारे इंसानों से अफज़ल व अअ्ला हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि रसूले करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम

ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से कबीलए कनाना को मुन्तख़ब फरमाया, कनाना में से कुरैश को और कुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फरमाया। (बरकाते आले रसूल:91)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरफ़ूअन रिवायत है कि अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ पैदा फरमाई तो उस में से बनी आदम को मुन्तख़ब फरमाया फिर बनी आदम में से अरब को, अरब में से मुज़र को, मुज़र में से कुरैश को, कुरैश में से बनी हाशिम को फिर बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फरमाया। तो मैं बेहतरीन लोगों से बेहतरीन लोगों की तरफ मुन्तकिल होता रहा।

(बरकाते आले रसूल:91)

और इमामे अहमद उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिब्रीले अमीन ने मुझ से कहा कि मैं ने ज़मीन के मश्रिक़ व मग़रिब (पूरब पच्छिम) उलट डाले लेकिन मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अफ्ज़ल किसी को न पाया। अअ्ला हज़रत फाज़िले बरैलवी अलैहिर रहमत फरमाते हैं:

यही बोले सिदरा वाले चमने जहां के थाले
सभी मैं ने छान डाले तेरे पाए का न पाया

तुझे यक ने यक बनाया

और हज़रत जिब्रील ने कहा कि मैं ने ज़मीन के मश्रिक़ व मग़रिब छान डाले मगर मुझे बनी हाशिम से ज़्यादा फज़ीलत वाले किसी बाप के बेटे नहीं मिले। (बरकाते आले रसूल:91)

और हज़रत जाफर सादिक़ अपने वालिदे माजिद हज़रत मुहम्मद बिन बाक़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरे पास जिब्रीले

अमीन आए और कहा या रसूलल्लाह! मुझे अल्लाह तआला ने भेजा, मैं ने ज़मीन के मश्रिक़ व मग़रिब, नर्म ज़मीन और पहाड़ों में फिरा तो मैं ने अरब से अफ्ज़ल कोई ख़ानदान नहीं पाया। फिर मुझे हुक्म फरमाया तो मैं अरब में फिरा मुझे मुज़र से अफ्ज़ल कोई क़बीला नहीं मिला। फिर मुझे हुक्म दिया मैं मुज़र में फिरा तो मैं कनाना से अफ्ज़ल कोई क़बीला नहीं पाया। फिर मुझे हुक्म फरमाया तो मैं कनाना में फिरा तो मैं ने कुरैश से बेहतर कोई क़बीला न पाया। फिर मुझे हुक्म दिया मैं कुरैश में फिरा तो मैं ने बनी हाशिम से अफ्ज़ल कोई क़बीला न पाया। फिर मुझे उन में से किसी के मुन्तख़ब करने का हुक्म दिया तो मैं ने आप से अफ्ज़ल किसी को न पाया। (बरकाते आले रसूल:92)

और तबरानी व दारे कुत्नी में है, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि क़ियामत के दिन मैं अपनी उम्मत में सब से पहले अपने अहले बैत की शफाअ़त करूंगा फिर दूसरे लोगों की। और मैं जिस की पहले शफाअ़त करूंगा वह ज़्यादा फज़ीलत वाला है। مَنْ اَشْفَعُ لَهُ اَوَّلًا فَهُوَ اَفْضَلُ (अश्शर्फुल मोअब्बद:39)

यह तमाम हदीसें वाज़ेह तौर पर दलालत करती हैं कि अहले बैते किराम हसब व नसब में सब से अफ्ज़ल व आला हैं। और इसी लिये दूसरे लोग निकाह में उन के कुफ्व् नहीं। हज़रत अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ख़साइसे कुबरा में तहरीर फरमाते हैं कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक ख़ुसूसियत यह है कि कोई मख़्लूक़ निकाह में आप के अहले बैत का हमसर (बराबर) नहीं है। (बरकाते आले रसूल:93)

तीसरी ख़ुसूसियत

तीसरी ख़ुसूसियत यह है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी और नसब के आलवा क़ियामत के दिन हर रिश्तेदारी और नसब मुन्क़तअ् (ख़त्म) हो जाएगा। हदीस शरीफ है:

كُلُّ سَبَبٍ وَّ نَسَبٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلَّا سَبَبِىْ وَنَسَبِىْ (अश्शर्फुल मोअब्बद:22)

रिवायते सहीहा से साबित है कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने लिये हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु को हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्ते हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के निकाह का पैग़ाम दिया। हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु ने उन की कम सिनी का उज़्र पेश किया और यह फ़रमाया कि मैं उन का निकाह अपने भाई हज़रत जाफ़र के साहिब ज़ादे के साथ करना चाहता हूं। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्रार किया, फिर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और फ़रमायाः

ऐ लोगो! मैं ने हज़रत अली से उनकी साहिब ज़ादी के बारे में इस लिये इस्रार किया है कि मैं ने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है वह फ़रमाते थेः كُلُّ سَبَبٍ وَّ نَسَبٍ وَّ صِهْرٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِلَّا سَبَبِىْ وَنَسَبِىْ وَصِهْرِىْ यानी क़ियामत के दिन मेरे तअल्लुक़, नसब और रिश्ते के अलावा हर तअल्लुक़, नसब और रिश्ता मुन्क़तअ् हो जाएगा।

तो हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु ने हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत फ़ारूक़े आज़म से कर दिया, उन से हज़रत ज़ैद पैदा हुए जो जवान होकर इन्तेक़ाल किये। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (अश्शर्फुल मोअब्बद:39)

इस हदीस और इसी तरह दूसरी हदीसों से मालूम हुआ कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत से रिश्ता क़ाइम करने में बहुत फ़ाइदा है।

एक शुब्ह और उसका जवाब

अगर कोई शख़्स कहे कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास, अपनी फूफी हज़रत सफ़िया और दीगर अज़ीज़ व अक़ारिब से

फरमायाः لَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا यानी मैं तुम्हें खुदा के अज़ाब से कुछ बेनयाज़ नहीं कर सकता, यहां तक कि अपनी लख़्ते जिगर नूरे नज़र हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से फरमायाः يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا यानी ऐ फातिमा बिन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम) मेरे माल में से जो तुम चाहो मांग लो लेकिन खुदाए तआ़ला का अज़ाब और उस की गिरफ्त हो तो मैं तुम को कोई फाइदा नहीं पहुंचा सकता। (मिश्कात शरीफः460)

इस हदीस शरीफ का खुलासा यह हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अपने अहले बैत के काम नहीं आ सकते। और जब हुज़ूर अपने अहले बैत के काम नहीं आ सकते तो अहले बैत की रिश्तेदारी दूसरों के क्या काम आ सकती है?

इस शुब्हा के जवाब में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का यह कलाम खुदाए तआ़ला से ख़ौफ दिलाने और डराने में इन्तिहाई मुबालग़ा है इस लिये कि अहले बैत की फज़ीलत व बुज़ुर्गी, उन के लिये हुज़ूर की शफाअ़त और उनका जन्नती होना अहादीसे सहीहा से साबित है। (अश्अ़तुल् लम्आ़तः4/272)

और मुहिब्बे तबरी ने यह जवाब दिया है कि हुज़ूर पुर नूर शाफिए यौमुन्-नुशूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम अज़ खुद किसी के नफा व ज़रर (नुक़सान) के मालिक नहीं लेकिन अल्लाह तआ़ला आप को अहले बैत और अज़ीज़ व अक़ारिब बल्कि तमाम उम्मत को शफाअ़त आम्मा और ख़ास्सा से नफा पहुंचाने का मालिक बना देगा।

और बाज़ उलमा ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम का यह ख़िताब उस वक़्त का है जबकि अल्लाह तआ़ला ने आप को भी इस बात से आगाह नहीं फरमाया था कि आप की निस्बत फाइदा देने वाली है।

एक मर्तबा फिर आप लोग हुज़ूर पुर नूर शाफिए यौमुन्-नुशूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर निहायत अक़ीदत व मुहब्बत के साथ बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللّٰهمّ صَلِّ علی سیّدنا مُحمّدٍ وعلی اٰله واصحابه واهلِ بیته وبارك وسلّم

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव् व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक व सल्लिम्।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम के नसब और उन की रिश्तेदारी का फ़ाइदा बयान करने के बाद तहरीर फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नबीए करीम अलैहिस्-सलातु वत्तस्लीम की तरफ मन्सूब हो उसे मुनासिब नहीं कि जो कुछ ज़िक्र हो उस पर कुल्ली ऐतमाद करे और इल्म व अमल की ज़रूरत महसूस न करे। इस लिये कि यह सारी बातें उस के लिये हैं जो वाक़ई रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम से तअ़ल्लुक़ रखता हो और आप के अहले बैत में से हो और इसका यक़ीन कैसे हो सकता है? इस लिये कि मुम्किन है कुछ औरतों से लग़ज़िश हुई हो। और यह भी हो सकता है कि आबा व अजदाद (बाप-दादा) में से किसी शख़्स ने मन्सूब होने में ग़लत बयानी की हो अगर्चे यह ऐहतमाल ज़ाहिर के ख़िलाफ है लेकिन इसे बिल्कुल नज़र अंदाज़ भी नहीं किया जा सकता। अलावा अज़ीं अहले बैत के अकाबिर से मन्कूल है कि वह अल्लाह तआ़ला की शदीद ख़शिय्यत, उसके अज़ाब के अज़ीम ख़ौफ और मामूली कोताही पर बहुत ज़्यादा अफ्सोस करने के ख़ूगर (आ़दी) थें। (अश्शर्फुल मोअब्बद:40)

और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं कि तमाम लोगों पर उमूमन और अहले बैत पर ख़ुसूसन चन्द उमूर की रिआ़यत लाज़िम है। अव्वल उलूमे शरइय्या के हासिल करने का ऐहतमाम करना इस लिये कि इल्म के बग़ैर नसब का कामिल फाइदा नहीं है। दोम बाप दादा पर फख़्र न करना और तक़्वा व

परहेज़गारी के बग़ैर महेज़ उन पर ऐतमाद न करना इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया है: إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ यानी तुम में से बारगाहे इलाही में ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ वह है जो ज़्यादा मुत्तक़ी हो।
(पारा:26,रुकूअ़:14) (बरकाते आले रसूल, बहवाला अस्‌-सवाइकुल मुहर्रका:181)

चौथी ख़ुसूसियत

चौथी ख़ुसूसियत यह है कि सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि अजमईन के ज़माने में इस्तिलाह यह थी कि अशराफ का लफ्ज़ सिर्फ अहले बैत पर बोला जाता था, दूसरों पर नहीं। फिर यह लक़ब हसनी और हुसैनी सादात के लिये मख़्सूस हो गया। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह रिसालए ज़ैनबिय्यह में तहरीर फरमाते हैं कि सहाबए किराम के ज़माने में शरीफ (सैय्यद) का लफ्ज़ हर उस फर्द पर बोला जाता था जो अहले बैते रिसालत से हो, चाहे वह हसनी हो, हुसैनी या अल्वी। हज़रत मुहम्मद बिन हनफिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा की औलाद में से हो या हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वज्हहु की दीगर औलाद से और हज़रत जाफर या हज़रत अक़ील की औलाद से हो या हज़रत अब्बास की। रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम। फिर जब मिस्र में फातमी हज़रात तख़्त व ख़िलाफत के मालिक हुए तो उन्हों ने शरीफ यानी (सैय्यद) का लफ्ज़ हज़रते हसन व हज़रते हुसैन की औलाद के साथ ख़ास कर दिया और मिस्र में आज तक यह इस्तिलाह जारी है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:40)

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस वक़्त यह इस्तिलाह मश्रिक़ व मग़रिब के इस्लामी शहरों में मशहूर है, जब अरबी में शरीफ का लफ्ज़ बोला जाएगा तो इस से हसनी या हुसैनी सैय्यद मुराद होंगे। बहुत से शहरों में यह इस्तिलाह भी आम है कि सैय्यद का लफ्ज़ सिर्फ हसनी और हुसैनी सादात पर बोला जाता है। जब यह लफ्ज़ बोला जाएगा तो इन के

सिवा कोई दूसरा मुराद नहीं होगा। यह अहले हिजाज़ के मा सिवा की इस्तिलाह है। अहले हिजाज़ की इस्तिलाह यह है कि शरीफ का इस्तेमाल हसनी सादात के लिये और सैय्यद का इस्तेमाल हुसैनी सादात के लिये करते हैं ताकि दोनों में वाज़ेह फर्क़ हो जाए। (अश्शर्फुल मोअब्बद:41)

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि अगर कोई चीज़ अशराफ के लिये वक़्फ की गई या उनके लिये वसिय्यत की गई तो हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की औलाद के अलावा दूसरा कोई उन में दाख़िल न होगा। इस लिये कि वक़्फ और वसिय्यत का दारो-मदार शहर के उर्फ पर है। (अश्शर्फुल मोअब्बद:41)

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह का यह बयान हक़ है मगर अब शहरों का उर्फ बदल रहा है। हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह तहरीर फरमाते हैं कि कुस्तुंतुनिया में सैय्यद का लफ्ज़ अशराफ के साथ ख़ास नहीं है। इस शहर के सर्राफा बाज़ार में जाकर देखिये तो शायद ही कोई ऐसी मोहर नज़र आए कि जिस पर सैय्यद न लिखा हो सिवाए उस शख़्स के जो सैय्यद सहीहुन् नसब हो या दीनदार व बा हया अदामी हो। अशराफ अपनी मोहरों में लफ्ज़ सैय्यद नहीं लिखते इस ख़ौफ से कि उन के नसब में लोगों को शुब्ह न हो जाए। (अश्शर्फुल मोअब्बद:43)

यही हाल अन्क़रीब इस मुल्क में होने वाला है कि जो सैय्यद सहीहुन् नसब होगा वह अपने नाम के साथ सैय्यद नहीं लिखेगा, इस लिये कि अब बहुत से दूसरे लोग अपने को सैय्यद लिखने लगे हैं। तो वह अपने नसब को इश्तिबाह से बचाने के लिये अपने नाम के साथ सैय्यद लिखने से परहेज़ करेंगे, जैसे कि बहुत से लोगों ने जब अपने नाम के साथ अंसारी लिखना शुरू कर दिया तो मदीना तैयिबा का अंसारी ख़ानदान जो इस मुल्क में है उस ने अंसारी लिखना छोड़ दिया।

जो लोग अपना नसब ग़लत बताते हैं वह इस हदीस शरीफ से

नसीहत हासिल करें जो बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसई वग़ैरहुम ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम से रिवायत की है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: مَنِ ادَّعٰى اِلٰى غَيْرِ اَبِيْهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ لَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ فَرْضًا وَّلَا نَفْلًا यानी जो अपने बाप के अलावा दूसरे की तरफ अपने आप को मन्सूब करे, उस पर खुदा और सब फिरिश्तों और सब आदमियों की लअ्नत है। अल्लाह तआला कियामत के दिन उस का न फर्ज़ कुबूल करेगा और नफ्ल। (फतावा रज़विय्यह:5/667)

पांचवीं खुसूसियत

पांचवीं खुसूसियत यह है कि अहले बैत में से जो बेअमल हों उन **की ताज़ीम** का हुक्म है। मुफ्तिए आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ां अलैहिर रहमत वर-रिज़्वान तहरीर फरमाते हैं कि "सैय्यद से जब तक कुफ्र न सादिर हो वाजिबुत तअ्ज़ीम है।" (हुज्जते दाहिरा:11)

और यह इस लिये कि उन का गुनाह बख़्शा जाएगा और खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन की ग़लतियों से दरगुज़र फरमाएगा अगर्चे इस तरह कि उन्हें मौत से पहले तौबा की तौफीक़ अता फरमाए। इरशादे खुदावन्दी है: اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ऐ अहले बैत! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी को दूर फरमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे। (पारा:22, रुकूअ़:1)

और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اِنَّ فَاطِمَةَ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَحَرَّمَهَا اللّٰهُ وَذُرِّيَّتَهَا عَلَى النَّارِ यानी बेशक फातिमा ने अपनी पाक दामनी की हिफाज़त की तो अल्लाह तबारक व तआला ने उन्हें और उन की औलाद को जहन्नम पर हराम फरमा दिया।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:45)

अहले बैत के फासिक़ की इज़्ज़त उन के फिस्क़ और बेअमली की वजह से नहीं है बल्कि उन की मुबारक निस्बत की बिना पर है। और यह ख़ूबी जैसे कि उनके नेक लोगों में है वैसे ही उनके फासिक़ में

मौजूद है। यानी किसी का फासिक होना उसे अहले बैते नुबुव्वत से खारिज नहीं कर देगा। इस लिये कि अहले बैत के लिये मासूम होना शर्त नहीं। लिहाज़ा फिस्क उनके नसब में खलल अंदाज़ नहीं होगा अल्बत्ता सालेहीन के दरमियान उनके मकाम को कम कर देता है।

हज़रत अबू मुहम्मद फासी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान फरमाते हैं कि मैं मदीना तैयिबा के बाज़ हुसैनी सैय्यिदों से बुग्ज़ रखता था क्यों कि मुझे मालूम था कि वह खिलाफे सुन्नत अफआल के मुरतकिब (काम करते) हैं, मैं एक दिन मस्जिदे नबवी में रौज़ए मुबारका के सामने सो गया, मुझे नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, हुज़ूर ने मुझ से मेरा नाम लेकर फरमाया क्या बात है मैं देखता हूं कि मेरी औलाद से बुग्ज़ रखते हो? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! खुदा की पनाह! मैं उन्हें नापसंद नहीं रखता, मुझे सुन्नत के खिलाफ उनका अमल ना पसंद है। हुज़ूर ने फरमाया क्या यह फिक्ही मस्अला नहीं है कि ना फरमान औलाद नसब से वाबस्ता रहती है? मैं ने अर्ज़ किया हां, फरमाया यह ना फरमान औलाद है। हज़रत अबू मुहम्मद फासी फरमाते हैं कि जब मैं बैदार हुआ तो मेरे दिल से उन की अदावत दूर हो चुकी थी, फिर तो मैं उन में से जिस किसी से भी मिलता उन की खूब ताज़ीम व तक्रीम करता।

(बरकाते आले रसूलः104)

सैय्यद हज़रात मुलाहेज़ा फरमाएं कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सुन्नत के खिलाफ अमल करने वाले को ना फरमान औलाद फरमाया और जबकि आम वालिदैन की ना फरमानी गुनाहे कबीरा है तो सादात का अपने जद्दे करीम अलैहिस् सलातु वत्-तस्लीम की ना फरमानी पर क्या हाल होगा।

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने फतावा के खातिमा में तहरीर फरमाते हैं कि जिस शख्स की निस्बत नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले

बैत और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ानवादे से क़ाइम हो उस का बड़ा जुर्म और दयानत व परहेज़गारी से आरी (ख़ाली) होना उसें नसबे आली से ख़ारिज नहीं कर देगा। इसी लिये बाज़ मुहक़्क़िक़ीन ने फरमाया कि (खुदा ना ख़्वास्ता) अगर किसी सैय्यिद से ज़िना, शराब नौशी या चोरी सरज़द हो जाए और हम उस पर हद जारी करें तो उस की मिसाल ऐसी ही है जैसे किसी अमीर या बादशाह के पांव को ग़िलाज़त लग जाए और उस का कोई ख़ादिम उसे धो डाले।

(बरकाते आले रसूल:105)

खुलासा यह है कि जिस शख़्स की सियादत यक़ीनी हो और उसका नसब साबित हो तो सियादत के पेशे नज़र उसकी ताज़ीम व तक्रीम की जाएगी और उसके ग़लत कामों पर ना पसंदीदगी ज़ाहिर की जाएगी। और अगर उसका नसब साबित नहीं है मगर वह उस नसब का दावेदार है और उस का झूठा होना मालूम नहीं है तो उस की तक्ज़ीब में तवक़्क़ुफ किया जाएगा कि हर शख़्स अपने नसब का ज़िम्मेदार है अगर झूठ बोलता है तो मुस्तिहक़्क़े लअ्नत है, मगर दूसरे लोग उसे बग़ैर सुबूत झूठा नहीं कह सकते।

छठी खुसूसियत

छठी खुसूसियत यह है कि वह हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद होने के बा वजूद रसूले करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम की औलाद कहलाते हैं और सहीहुन नसब के साथ आप ही की तरफ मन्सूब हैं। इमाम तबरानी ने हदीस बयान की है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إِنَّ اللّٰہَ عَزَّوَجَلَّ جَعَلَ ذُرِّيَّةَ كُلِّ نَبِيٍّ فِيْ صُلْبِهٖ وَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى جَعَلَ ذُرِّيَّتِيْ فِيْ صُلْبِ عَلِيِّ بْنِ اَبِيْ طَالِبٍ यानी अल्लाह तआला ने हर नबी की औलाद उन की पुश्त में रखी और मेरी औलाद अली बिन अबी तालिब की पुश्त में रखी। (अश्शर्फुल मोअब्बद:48)

और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद

फरमाया कि हर मां की औलाद अपने पिद्री रिश्तेदारों की तरफ मन्सूब होती है, मा सिवा औलादे फ़ातिमा के कि मैं उन का वली हूं और उन का असबा हूं। (बरकाते आले रसूलः110)

अस्आफुर राग़िबीन में है कि यह खुसूसियत सिर्फ हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की औलाद के लिये है। दूसरी साहिब ज़ादियों की औलाद के लिये नहीं है (यानी अगर उन की औलाद ज़िंदा रहती तो) उन के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम उन के बाप हैं और वह आप के बेटे हैं जिस तरह कि यह बात हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की औलाद के लिये कही जाती है। (बरक़ाते आले रसूलः110)

सात्वीं खुसूसियत

सात्वीं खुसूसियत यह है कि अहले बैत का ज़मीन में मौजूद होना ज़मीन वालों के लिये बाइसे अम्न है जैसा कि हदीस शरीफ में है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः اَلنُّجُوْمُ اَمَانٌ لِاَهْلِ السَّمَاءِ وَاَهْلُ بَيْتِیْ اَمَانٌ لِاَهْلِ الْاَرْضِ यानी सितारे आसमान वालों के लिये बाइसे अम्न हैं और मेरे अहले बैत ज़मीन वालों के लिये बाइसे अम्न हैं। और एक रिवायत में हैं: اَمَانٌ لِاُمَّتِیْ यानी मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिये बाइसे अम्न हैं। (अश्शर्फुल मोअब्बदः46)

आठवीं खुसूसियत

आठवीं खुसूसियत यह है कि वह पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। इमाम सअ़लबी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्हों ने फरमाया कि मैं ने बारगाहे रिसालत में लोगों के हसद की शिकायत की तो हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया "क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम चार में से चौथे हो? सब से पहले जन्नत में, मैं, तुम और हसनैन करीमैन दाख़िल होंगे। हमारी अज़वाजे मुतहहरात (पाक बीवियां) हमारे बाएं

और दाएं होंगी और हमारी औलाद हमारी अज़्वाज के पीछे होगी।
(बरकाते आले रसूलः109)

नवीं खुसूसियत

अल्लामा सब्बान ने उन की यह खुसूसियत शुमार की है कि जो शख़्स उन में से किसी पर ऐहसान करेगा नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन उसे बदला अता फरमाएंगे जैसा कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि जो शख़्स वसीला हासिल करना चाहता है और यह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो जिस के सबब मैं क़ियमात के दिन उस की शफाअ़त करूं उसे चाहिये कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें खुश करे।
(बरकाते आले रसूलः111, सवाइक़े मोहर्रक़ाः107)

दस्वीं खुसूसियत

अल्लामा सब्बान ने फरमाया कि उन की खुसूसियत यह है कि उन की मुहब्बत दराज़िए उम्र और क़ियामत के दिन चेहरा सफेद होने का सबब है। और उन का बुग़ज़ इस के बरअक्स असर रखता है। जैसा कि सवाइक़े मोहर्रक़ा में हदीस शरीफ़ नक़ल की है कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "जो शख़्स पसंद करता हो कि उस की उम्र दराज़ हो और अपनी आरज़ुओं से बहरावर हो, उसे मेरे बाद मेरे अहले बैत से अच्छी तरह पेश आना चाहिये। और जो मेरे बाद उन से अच्छी तरह पेश नहीं आएगा उस की उम्र क़तअ़ (कम) कर दी जाएगी। और क़ियामत के दिन इस हालत में मेरे पास आएगा कि उसका चेहरा सियाह होगा। (बरकाते आले रसूलः111)

दुआ़ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब लोगों को मुहिब्बीने अहले बैत के गिरोह में शामिल फरमाए और उनके जद्दे करीम अलैहि अफ्ज़लुस् सलातु व अक्मलुत्-तस्लीम की शफाअ़त नसीब फरमाए। आमीन।

पारा हाए सुहुफ़ गुंचहाए कुदुस
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम
आबे ततहीर से जिस में पौदे जमे
उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम
ख़ूने ख़ैरुर रुसुल से है जिन का ख़मीर
उन की बैलौस तीनत पे लाखों सलाम

وصلى الله تبارك وتعالى وسلم على النبي الكريم وعلى آله واصحابه واهل بيته اجمعين

برحمتك يا ارحم الراحمين

वसल्लल्लाहु तबारक व तआला व सल्लम अलन्नबिय्यिल् करीमि व अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही अज्मईन।
बिरहमतिक या अर्हमर राहिमीन।

मनाक़िबे अहले बैत

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम

الحمدللّٰه وكفیٰ وسلام علی عباده الذين اصطفیٰ خصوصاً علی سيّدالوریٰ نبينا محمدن المجتبیٰ وعلی اله واصحابه ذوی الدرجات العلیٰ۔ امابعد فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی۔(پ:٢٥،ع:٤) صَدَقَ اللّٰه العلی العظيم وصدق رسوله الامين الكريم ونحن علی ذالك لمن الشاهدين والشاكرين والحمدللّٰه رب العالمين۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर इन्तिहाई खुसूल व मुहब्बत के साथ तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلی اللّٰه علی النبی الامی واله صلی اللّٰه عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يارسول اللّٰه

सल्लल्लाहु अ़लन् नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सलातंव् व सलामन् अ़लैक या रसूलल्लाह।

खुत्बा के बाद जिस आयते मुबारका को पढ़ने का शर्फ हमने हासिल किया है आप हज़रात पहले उस का तर्जमा सिमाअ़त फरमाएं। खुदावन्दे कुद्दूस का इरशाद है ऐ महबूब! قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا तुम फरमाओ कि मैं इस पर यानी तब्लीग़े रिसालत और इरशाद व हिदायत पर तुम से कुछ अज्र नहीं मांगता اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی मगर क़राबत की मुहब्बत। यानी मैं तुम से क़राबत की मुहब्बत का मुतालेबा करता हूं।

(पारा:25,रुकूअ़:4)

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस आयते करीमा का शाने नुज़ूल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से इस तरह मरवी है कि जब नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम मदीना तैयिबा में रौनक़ अफ्रोज़ हुए और अंसार ने देखा कि

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के ज़िम्मे मसारिफ बहुत हैं, माल कुछ भी नहीं, उन्होंने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर के हुकूक़ व ऐहसानात याद करके आप की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जमा किया और उस को लेकर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई और हम ने गुमराही से नजात पाई। हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ बहुत ज़्यादा हैं इस लिये हम यह माल खुद्दामे अस्ताना की ख़िदमत में नज़्र के लिये लाए हैं, क़बूल फरमा कर हमारी इज़्ज़त अफ्ज़ाई की जाए। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने वह अमवाल वापस फरमा दीये। (तफ्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि की मश्हूर तस्नीफ दुर्रे मन्सूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से यूं मरवी है, अंसारी सहाबा फरमाते हैं कि अहले बैते नबुव्वत ने हम लोगों के क़ौलो-फेअ़ल से फख़्र महसूस किया तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि हमें तुम लोगों पर फज़ीलत हासिल है। जब यह बात रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम को पहुंची तो आप उन लोगों की मज्लिस में तशरीफ ले गए और फरमाया ऐ गिरोहे अंसार! क्या तुम लोग बेइज़्ज़त नहीं थे, तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मेरे ज़रिया इज़्ज़त अता फरमाई? अंसार ने अर्ज़ किया हां, या रसूलल्लाह! हुज़ूर ने फरमाया, क्या तुम मुझे जवाब नहीं देते? अंसार ने अर्ज़ किया हुज़ूर हम क्या कहें? फरमाया क्या तुम लोग यह नहीं कहते कि क्या आप की क़ौम ने आप को नहीं निकाल दिया था, तो हम ने आप को पनाह दी? क्या उन्हों ने आप को नहीं झुठलाया था, तो हम ने आप की तस्दीक़ की? क्या उन्हों ने आप को नहीं छोड़ दिया था तो हम ने आप की इमदाद की? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम इस तरह फरमाते रहे, यहां तक कि अंसार घुटने के बल खड़े हो गए और अर्ज़ किया: اَمْوَالُنَا وَمَا فِیْ اَیْدِیْنَا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ यानी

हमारे माल और हमारी सब मिल्कियत अल्लाह और उसके रसूल के लिये हैं तो यह आयते मुबारका नाज़िल हुई قُلْ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی (अश्शर्फुल मोअब्बद:72)

हज़रत ताऊस फरमाते हैं कि इसके बारे में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से पूछा गया उन्हों ने फरमाया इस से नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार मुराद हैं। और मुक़रिज़ी ने फरमाया मुफस्सिरीन की एक जमाअ़त ने इस आयत की तफ्सीर में फरमायाः ऐ हबीब! अपने पैरौकार मोमिनों को फरमा दो मैं तब्लीगे़ दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता सिवाए इस के कि तुम मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत रखो। हज़रत अबुल आलिया और हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत करते हैं कि اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی यह नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं। और अबू इस्हाक़ फरमाते हैं कि मैं ने हज़रत अम्र बिन शुऐब से इस आयते करीमा के बारे में पूछा उन्हों ने फरमाया "कुर्बा से मुराद नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं।" (बरकाते आले रसूल:220)

रहा यह सवाल कि रिश्तेदार से कौन से रिश्तेदार मुराद हैं तो अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने दुर्रे मन्सूर में और बहुत से दीगर मुफस्सिरीन ने इस आयते मुबारका की तफ्सीर करते हुए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से नक़ल किया कि सहाबए किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप के कौन से रिश्तेदार हैं जिन की मुहब्बत हम पर वाजिब है? फरमाया, अली, फातिमा और उन की औलाद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम (अश्शर्फुल मोअब्बद:72)

एक ऐतराज़ और उसका जवाब

अगर कोई शख़्स कहे कि तब्लीगे़ वही पर क़ौम से मुआ़वज़ा तलब करना जाइज़ नहीं इसी लिये पाराः19 सूरए शुअ़रा में कई जगहों पर

मुख़्तलिफ अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम का यह ऐलान मज़कूर है कि: مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ यानी उन्हों ने अपनी क़ौमों से फरमाया कि मैं तब्लीग़े वही और इरशादो-हिदायत पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और जब दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम ने अपनी क़ौमों से किसी उज्रत का मुतालेबा नहीं किया और न किसी फाइदे की ख़्वाहिश की तो सैयिदुल अंबिया जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो तमाम नबियों और रसूलों से अफ्ज़ल हैं उन्हें तब्लीग़े दीन पर बदर्जए औला उज्रत नहीं तलब करनी चाहिये।

और फिर तब्लीग़ आप पर वाजिब थी जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: بَلِّغْ مَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ यानी जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया उसकी तब्लीग़ करो। (पाराः6 रुकूअ्:14) और वाजिब के अदा करने पर उज्रत का तलब करना मुनासिब नहीं।

और फिर यहूदी और ईसाई वग़ैरा हमें तअ्ना दे सकते हैं कि हमारे रहनुमाओं ने यह ऐलान किया مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ मैं तब्लीग़े दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और तुम्हारे रसूल ने रिश्तेदारों की मुहब्बत का मुतालेबा करके अपनी मेहनत व मशक़्क़त का मुआवज़ा तलब किया जैसा कि आयते करीमा قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى से ज़ाहिर होता है।

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि बेशक तब्लीग़े वही पर अज्र तलब करना जाइज़ नहीं और हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने भी इरशादो-हिदायत पर अपनी क़ौम से किसी मुआवज़ा को तलब नहीं किया और न उनसे किसी फाइदे की ख़्वाहिश की। जैसा कि पारा:23 रुकूअ्:14 की आयते मुबारका है قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ यानी तुम फरमा दो कि मैं तब्लीग़े दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ करने वालों में से हूं। रहा आयते मुबारका में اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى तो हज़रत अल्लामा इमामे राज़ी रहमतुल्लाहि

तआला अलैहि फरमाते हैं कि यह उस क़बील से है जो किसी कहने वाले ने कहा है:

لاعيب فيهم غير ان سيوفهم
بهن فلول من قراع الدارعين

यानी उन लोगों में अलावा इसके और कोई ऐब नहीं है कि उन की तल्वारों में ज़िरापोश दुश्मनों से टकराने के सबब दंदाने हैं। (यानी जबकि यह उन का ऐब है तो ऐब नहीं है, बल्कि ख़ूबी है) इसी तरह आयते मुबारका का मतलब यह है कि मैं तुम से इस के सिवा कुछ अज्र नहीं चाहता और यह हक़ीक़त में अज्र नहीं है। इस लिये मुसलमानों के दरमियान मुहब्बत वाजिब है जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया: وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ यानी ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक दसूरे के दोस्त हैं। (पारा:10,रुकूअ:15) और सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हदीस शरीफ है: وَالْمُؤْمِنُوْنَ كَالْبُنْيَانِ يَشُدُّ بَعْضُهُمْ بَعْضًا यानी मुसलमान एक इमारत की तरह हैं जिस का हर एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को ताक़त व कुव्वत देता है और मदद पहुंचाता है। और जब मुसलमानों में बाहमी मुहब्बत वाजिब हुई तो अशरफुल मुस्लिमीन और उनके अकाबिर यानी अहले बैते किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहि अजमईन की मुहब्बत बदर्जए औला वाजिब है। (तफ्सीरे इब्ने कसीर:7/390)

ख़ुलासा यह हुआ कि मैं हिदायत व इरशाद पर कोई मुआवज़ा तलब नहीं करता लेकिन मेरे रिश्तेदारों की मुहब्बत जो तुम पर वाजिब है उस का ख़्याल रखना।

और दूसरा जवाब यह है कि इस आयते करीमा में इस्तिस्ना मुन्क़तिअ् है यानी قُلْ لَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا पर कलाम पूरा हो गया, उस के बाद फरमाय اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى लेकिन मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत करो। (तफ्सीरे ख़ाज़िन:6/122)

इमाम सुद्दी अबुद् दैलम से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत इमाम

ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा को गिरफ्तार करके लाया गया और उन्हें दमिश्क़ के रास्ते में खड़ा किया गया तो वहां का एक बाशिन्दा आया और कहने लगा, खुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें क़त्ल किया, तुम्हारा इस्तीसालो-ख़ातिमा किया और फित्ने की सींग काट दी। हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने उस से फरमाया कि तू ने क़ुरआन पाक पढ़ा है? उस ने कहा हां, आप ने फरमाया, तू ने आले हा मीम पढ़ी है? उस ने कहा मैं ने क़ुरआन पढ़ा है लेकिन आले हा मीम नहीं पढ़ी, आप ने फरमाया तुम ने आयत قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى नहीं पढ़ी? उस ने कहा वह लोग आप ही हैं? आप ने फरमाया हां।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि इस वाक़िआ़ को लिखने के बाद तहरीर फरमाते हैं कि मैं उस शख़्स को ईमान वाला नहीं समझता हां, उस का ईमान बुतों और मस्नूई ख़ुदाओं पर था इस लिये कि अल्लाह और उस के रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम पर ईमान रखने वालों की ज़बान से ऐसी बकवास सादिर नहीं हो सकती। उस शख़्स के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है जो अहले बैते मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम के शहीद किये जाने पर खुदा का शुक्र अदा करे। मैं अल्लाह व रसूल का उस मुल्हिद से ज़्यादा दुश्मन अबू जहेल को नहीं समझता।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:74)

हम कहते हैं इस ज़माने में भी ऐसे लोग बहुत हैं जो अहले बैते नुबुव्वत और ख़ानदाने रिसालत से नफरत करते हैं, उन के फज़ाइल व मनाक़िब नहीं सुन सकते, अगर कोई मुहब्बत वाला इन हज़रात की तारीफ व तौसीफ बयान करता है तो उन की पेशानी में बल पड़ जाते हैं, चेहरे का रंग बदल जाता है और फौरन यज़ीद ख़बीस की हिमायत के लिये खड़े हो जाते हैं, उसे हक़ पर बताते हैं और अमीरुल मोमिनीन व रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के साथ उसे याद करते हैं और नवासए

रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर इक्तिदार की हवस का इल्ज़ाम लगाते हैं और उन्हें बाग़ी क़रार देते हैं।

(अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआ़ला)

और वह लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के प्यारे महबूब दानाए ख़िफाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ियां व बेअदबी करते है, उन के इल्म को बच्चों, पागलों और जानवरों के इल्म के बराबर बताते हैं।

(हिफ्जुल ईमान:8)

और शैतान व मलकुल मौत से हुज़ूर का इल्म कम ठहराते हैं।

(बराहीने क़ातिआ़:51)

तो ऐसे लोग अगर हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर इक्तिदार की हवस का इल्ज़ाम लगाएं और उन को बाग़ी क़रार दें तो कोई तअ़ज्जुब नहीं कि अल्लाह के प्यारों की तौहीन व गुस्ताख़ी यही उन का मज़हब है। हुज़ूर और उन के अहले बैत की मुहब्बत जो मदारे ईमान है, इस से उन के कुलूब (दिल) ख़ाली हैं, उन के दिलों में ईमान नहीं कि ईमान वाले कभी ऐसी बकवास नहीं कर सकते।

ख़ुदाए अ़ज़्ज़ व जल्ल उन को ईमान अता फरमाए, यज़ीद पलीद जैसे फासिक़ व फाजिर की मुहब्बत और हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के बुग़ज़ व अदावत से उन के दिलों को पाक फरमाए और इमामे आली मक़ाम की मुहब्बत उन को नसीब फरमाए ताकि उन की समझ में आ जाए कि:

तेग़ बहरे इज़्ज़ते दीन अस्त व बस
मक़्सदे ऊ हिफ्ज़े आईन अस्त व बस

बहरे हक़ दर ख़ाको-ख़ूं ग़ल्तीदा अस्त
पस बिनाए ला इलाह गरदीदा अस्त

(डॉ0 इक़बाल)

एक मर्तबा फिर आप हज़रात बुलंद आवाज़ से रहमते आलम, नूरे

मुजस्सम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की आल व अस्हाब पर दुरूदो-सलाम का नज़ाना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى اله واصحابه وبارك وسلم

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम।

आयते करीमा قُلْ لَّا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْراً اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى की तफ्सीर में हज़रत अल्लामा इमामे राज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहि तफ्सीर कश्शाफ से एक तवील हदीस नक्ल करते हैं कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: مَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ شَهِيْداً जो अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उस ने शहादत की मौत पाई। और फरमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مَغْفُوْراً لَّهٗ आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत में फौत हुआ वह इस हाल में फौत हुआ कि उस के गुनाह बख़्श दिये गए। फिर फरमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ تَائِباً सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ वह ताइब हो कर फौत हुआ। और फरमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مُؤْمِناً مُّسْتَكْمِلَ الْاِيْمَانِ खबरदार होकर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत होगा वह मुकम्मल ईमान के साथ फौत होगा। फिर फरमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ بَشَّرَهٗ مَلَكُ الْمَوْتِ بِالْجَنَّةِ ثُمَّ مُنْكَرٌ وَّنَكِيْرٌ कान खोल कर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे हज़रत इज़्राईल अलैहिस् सलाम और फिर मुन्कर नकीर जन्नत की बशारत देते हैं। और फरमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ يُزَفُّ اِلَى الْجَنَّةِ كَمَا تُزَفُّ الْعَرُوْسُ اِلٰى بَيْتِ زَوْجِهَا आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत रवाना किया जाता है जैसे दुल्हन दुल्हा के घर भेजी जाती है। फिर फ़रमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ فُتِحَ لَهٗ فِىْ قَبْرِهٖ بَابَانِ اِلَى الْجَنَّةِ जान लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उस की क़ब्र में जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। और फरमाया: اَلَاوَمَنْ مَاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ جَعَلَ اللّٰهُ قَبْرَهٗ مَزَارَ

مَلَائِكَةِ الرَّحْمَةِ आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ अल्लाह तआ़ला उस की क़ब्र को मलाइकए रहमत की ज़ियारत गाह बना देता है। फिर उस के बाद आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम ने फरमायाः اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى حُبِّ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ عَلَى السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ ख़बरदार होकर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ वह मस्लके अहले सुन्नत व जमाअ़त पर फौत हुआ। (तफ्सीरे कबीरः7/390)

यह सारी ख़ूबियां और बशारतें उन लोगों के लिये हैं जो अहले बैते नुबुव्वत व ख़ानदाने रिसालत से मुहब्बत रखते हैं। और जो लोग कि इन हज़रात से दुश्मनी और बुग़ज़ व अदावत रखते हैं उन का हाल क्या होगा इस के बारे में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى بُغْضِ اٰلِ مُحَمَّدٍ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَكْتُوْبًا بَيْنَ عَيْنَيْهِ اٰيِسٌ مِّنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ، اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى بُغْضِ اٰلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ كَافِرًا اَلَا وَمَنْ مَّاتَ عَلٰى بُغْضِ اٰلِ مُحَمَّدٍ لَمْ يَشُمَّ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ यानी ख़बरदार होकर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की बुग़ज़ व अदावत पर मरा, वह क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा "अल्लाह तआ़ला की रहमत से ना उम्मीद" और आगाह हो जाओ! जो शख़्स अहले बैत के बुग़ज़ व अदावत पर मरा वह काफिर मरा। और कान खोल कर सुन लो! जो शख़्स अहले बैत की बुग़ज़ व अदावत पर मरा वह जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम कर दिया जाएगा। (तफ्सीरे कबीरः7/39)

पूरी हदीस शरीफ में आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व सल्लम) का तर्जमा अहले बैत इस लिये किया गया कि अहले बैत के आले रसूल होने में किसी का इख़्तिलाफ नहीं और दूसरों का आले रसूल होना इख़्तिलाफी है।

हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह तहरीर फरमाते हैं, बाज़ लोगों ने कहा कि आल से मुराद आप के क़रीबी रिश्तेदार हैं और बाज़ लोगों ने कहा कि वह आप की उम्मत हैं। अगर

हम आल को क़रीबी रिश्तेदारों पर महमूल करें तो अहले बैत ही आले रसूल हैं और अगर उस उम्मत पर महमूल करें जिस ने आप की दअ्वत व तब्लीग़ को क़बूल किया तो भी अहले बैत आले रसूल में दाख़िल हैं। साबित हुआ कि वह बहर सूरत आले रसूल हैं। और दूसरों का हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आल में दाख़िल होना इख़्तिलाफी है। (तफ्सीरे कबीर:7/39)

खुलासए कलाम यह है कि अहले बैते किराम की मुहब्बत में फौत होने वाला अल्लाह व रसूल का प्यारा है और उन की दुश्मनी में मरने वाला अल्लाह व रसूल का दुश्मन है। जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

अहले बैते नुबुव्वत में से हज़रत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम का मुफस्सल बयान हो चुका है। अब हज़रत फातिमा ज़हरा और हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के कुछ फज़ाइल और हालात अलग-अलग मुलाहेज़ा फरमाएं।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

नाम व लक़ब और साले पैदाइश

आप का नाम "फातिमा" और लकब "ज़हरा" व "बतूल" है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की साहिब ज़ादियों में सब से छोटी लेकिन सब से ज़्यादा प्यारी और लाडली हैं। आप की पैदाइश के साल में इख़्तिलाफ है, बाज़ लोगों ने कहा कि जब नबीए करीम अलैहि अफज़लुस् सलवाति व अक्मलुत तस्लीम की उम्र शरीफ 41 बरस की थी, आप पैदा हुईं। और कुछ लोगों नें लिखा है कि ऐलाने नुबुव्वत से एक साल क़ब्ल उन की विलादत हुईं। और अल्लामा इब्ने जौज़ी ने तहरीर फरमाया है कि ऐलाने नुबुव्वत से पांच साल पहले जब ख़ानाए कअ्बा की तामीर हो रही थी, आप पैदा हुईं।